ISSN 0972-5636

भारतीय आधुनिक शिक्षा

वर्ष 45 अंक 4 अप्रैल 2025

पत्रिका के बारे में

भारतीय आधुनिक शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य, शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थी-शिक्षकों को एक मंच प्रदान करना है। शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के विभिन्न आयामों, जैसे– बाल्यावस्था में विकास, समकालीन भारत एवं शिक्षा, शिक्षा में दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य, ज्ञान के आधार एवं पाठ्यचर्या, अधिगम का आकलन, अधिगम एवं शिक्षण, समाज एवं विद्यालय के संदर्भ में जेंडर, समावेशी शिक्षा, शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा हेतु आई.सी.टी. में नवीन विकास, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा का स्वरूप, विभिन्न राज्यों में शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा की स्थिति पर मौलिक एवं आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करना तथा शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार एवं विकास को बढ़ावा देना। लेखकों द्वारा भेजे गए सभी लेख, शोध पत्र आदि का प्रकाशन करने से पूर्व संबंधित लेख, शोध पत्र आदि का समकक्ष विद्वानों द्वारा पूर्ण निष्पक्षतापूर्वक पुनरीक्षण किया जाता है। लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। अत: ये किसी भी प्रकार से परिषद् की नीतियों को प्रस्तुत नहीं करते, इसलिए इस संबंध में परिषद् का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

© 2025*. पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है, परिषद् की पूर्व अनुमति के बिना, लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. : दिनेश प्रसाद सकलानी
अध्यक्ष, अ.शि.वि. : शरद सिन्हा
आचार्य, सा.वि.शि. : एम.वी. श्रीनिवासन

सदस्य सलाहकार समिति

अपर्णा सारस्वत सारिका शर्मा मधु कुशवाह
बी.डी. सिंह रामप्रसाद भट्ट विष्णु खनाल

अकादमिक संपादकीय समिति

प्रधान संपादक : दिनेश प्रसाद सकलानी
अकादमिक संपादक : विनोद कुमार शनवाल

अन्य सदस्य

रंजना अरोड़ा बी.पी. भारद्वाज उषा शर्मा
प्रभात कुमार मिश्र जितेंद्र कुमार पाटीदार

प्रकाशन मंडल

अध्यक्ष (प्र.), प्रकाशन प्रभाग : अमिताभ कुमार
मुख्य संपादक : बिज्ञान सुतार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्र.): दीपक जैसवाल
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्र.) : भूपेन्द्र सिंह
संपादन सहायक : अतुल कुमार गुप्ता
सहायक उत्पादन अधिकारी : सायुराज ए. आर.

आवरण

अमित श्रीवास्तव

हमारे कार्यालय

प्रकाशन प्रभाग
एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
होस्केरे हेल्ली एक्सटेंशन
बनाशंकरी स्टेज III
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी. डब्ल्यू. सी. कैंपस
धनकल बस स्टॉप के सामने
पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी. डब्ल्यू. सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

मूल्य

मूल्य एक प्रति ₹ 155.00 **वार्षिक ₹ 620.00** **त्रैवार्षिक ₹ 1,860.00**

ISSN 0972-5636

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

भारतीय आधुनिक शिक्षा

वर्ष 45 अंक 4 अप्रैल 2025

इस अंक में

संपादकीय		3
दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा की पुनर्कल्पना	धनंजय जोशी सोनल छाबड़ा भागेश्वरी शर्मा	7
विकसित भारत@2047 के लिए विद्यालयी शिक्षा में परिवर्तन हेतु आवश्यकताओं का अध्ययन	अमित अग्रवाल	19
सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन	रजनी रंजन सिंह त्रिलोकी सिंह	30
विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के विशेष संदर्भ में भाषा शिक्षण की व्यवस्था	लवली सरकार सुरेंद्र यादव	45
गणित शिक्षण— गिजुभाई बधेका का शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण	रश्मि श्रीवास्तव	54
शतरंज का खेल (गद्य पाठ) तथा भाषायी नवाचार	संजय कुमार पंडागले प्रविनी पंडागले मोहसिना अंजुम ए अंसारी	68
फाउंडेशनल तथा प्रीप्रेटरी स्तर पर फील्ड-बेस्ड लर्निंग गतिविधियों का बच्चों के अधिगम पर प्रभाव	अनिल कुमार तेवतिया	77
आधुनिक शिक्षा पर वर्चुअल रियलिटी का प्रभाव	श्रुति कंवर	87
छत्तीसगढ़ के आदिवासी अंचलों में बुनियादी साक्षरता नवाचार तथा नई राहें	सुनील कुमार बागवान	99

कक्षा में विद्यार्थियों के शैक्षणिक निष्पादन का आकलन मूल्यांकन के लिए यूनिवर्सल डिजाइन के प्रति एक दृष्टिकोण	सुचिता यादव शीलू कच्छप किशोर एच. माने	117
संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध एक समीक्षात्मक विश्लेषण	विजय शर्मा शशि रंजन	129
चूड़ी बाजार में लड़की (पुस्तक समीक्षा)	मुदित त्रिपाठी सुमित गंगवार	149

संपादकीय

प्रिय पाठको! हम जानते हैं कि शिक्षा के बिना उन्नति संभव नहीं है। पढ़ने-लिखने से व्यक्ति साक्षर तो होता ही है, साथ ही उसका बौद्धिक स्तर भी विकसित होता है, जिससे व्यक्ति संसार को भली-भाँति समझ पाता है। शिक्षा व्यक्ति को प्रकृति, मानव संबंधों तथा वैश्विक मुद्दों के प्रति जागरूक करती है, जिससे वह प्रकृति के छिपे रहस्यों को समझकर, मानव विकास के लिए उनका उपयोग कर सकें। अत: बच्चों में पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि का विकास करना आवश्यक है, क्योंकि भविष्य में वही देश की बागडोर संभालते हैं। पढ़ने-लिखने से उनके सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक तथा भाषिक विकास के साथ-साथ रचनात्मकता में भी वृद्धि होती है, जिससे वे जीवन में आने वाली कठिनाइयों एवं चुनौतियों का समाधान करने हेतु तैयार हो सकें, यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य है। *भारतीय आधुनिक शिक्षा* का यह अंक शिक्षा के इन्हीं सरोकारों से संबंधित लेखों व शोधपत्रों को प्रस्तुत करता है।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन करते हुए विद्यार्थी के समग्र विकास को केंद्र में रखा है। इस शिक्षा नीति के अनुसार नवाचारी शैक्षिक पद्धतियाँ किस प्रकार उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण अधिगम, नवोन्मेष तथा समग्र विकास को प्रोत्साहित कर सकती हैं। इसी पर आधारित 'दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा की पुनर्कल्पना' नामक लेख में एक नवस्थापित विश्वविद्यालय द्वारा अपनाई गई पहलों तथा नवाचारों का उल्लेख किया गया है। यह लेख विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों की आंतरिक क्षमताओं को पहचानने, उनके लिए उच्च अपेक्षाएँ निर्धारित करने तथा उन्हें आवश्यक संसाधन तथा समर्थन प्रदान करने पर केंद्रित है। इन विचारों को व्यावहारिक रूप देने के लिए विश्वविद्यालय प्रतिबद्ध है। इस लेख में दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई है।

भारत के विकास के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है, जो विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए भी तैयार कर सके। एक विकसित भारत के लिए सक्षम, कुशल तथा नवाचारी मानव संसाधन का निर्माण शिक्षा की गुणवत्ता तथा प्रासंगिकता पर निर्भर करता है। इसलिए शिक्षा प्रणाली में समयानुसार परिवर्तन आवश्यक है। इसी पर आधारित 'विकसित भारत@2047 के लिए विद्यालयी शिक्षा में परिवर्तन हेतु आवश्यकताओं का अध्ययन' शोधपत्र में शिक्षा प्रणाली को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुकूल बनाने हेतु डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक शिक्षा, सृजनात्मकता तथा नवाचार को बढ़ावा देना, समस्या-समाधान आधारित शिक्षा, स्मार्ट क्लासरूम, मातृभाषा में शिक्षा, उद्यमिता विकास

तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों को शामिल करने की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

अच्छे विद्यार्थियों के निर्माण हेतु अच्छे शिक्षकों का होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा की गुणवत्ता, उसे प्रदान करने वाले शिक्षकों के गुणों तथा शिक्षक शिक्षा प्रणाली का संयुक्त परिणाम होती है, इसलिए शिक्षक को शिक्षण दक्षताओं में व्यावसायिक रूप से प्रतिबद्ध तथा दृढ़ होने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम अध्ययन के साथ समय-समय पर विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाएँ उनके मानसिक एवं शारीरिक विकास को बेहतर बनाती हैं। साथ ही, विद्यार्थी-अध्यापकों में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास करती हैं। इसी पर आधारित 'सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन' शोधपत्र प्रस्तुत किया गया है।

भाषा सभी मानवीय गतिविधियों की मौलिक आवश्यकता है, यह न केवल सांस्कृतिक पहचान की आधारशिला है, बल्कि बौद्धिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है, इसलिए भाषा तथा मातृभाषा के महत्व को समझना आवश्यक है। इसी पर आधारित 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के विशेष संदर्भ में भाषा शिक्षण की व्यवस्था' लेख प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित 117 प्राइमरों तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा की गई पहलों का भी विश्लेषण किया गया है। इस लेख में भाषा संरक्षण एवं संवर्धन के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

बच्चों को सभी विषयों में गणित सबसे कठिन विषय लगता है। इस विषय में उनकी रुचि कम होने लगती है। इसलिए बच्चों को केवल अंक ज्ञान प्रदान करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनमें गणितीय बुद्धि का विकास करना भी आवश्यक है, इसी पर आधारित 'गणित शिक्षण— गिजुभाई बधेका का शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण' लेख प्रस्तुत किया गया है, जिसमें गिजुभाई बधेका के गणित संबंधी शैक्षिक प्रयोगों को विस्तार से बताया गया है। इसमें गणित विषय को बच्चों के दैनिक जीवन से, कथा-कहानियों से, दैनिक क्रियाकलापों तथा उनके परिवेश से जोड़कर पढ़ाए जाने पर विशेष बल दिया गया है।

प्रत्येक शिक्षक का दृष्टिकोण रचनात्मक तथा सृजनात्मक होना चाहिए, जिससे वह सीमित संसाधनों में भी विद्यार्थियों को रचनात्मक रूप से शिक्षा प्रदान कर सकें। इसी पर आधारित 'शतरंज का खेल (गद्य पाठ) तथा भाषायी नवाचार' शोधपत्र में प्रस्तुत किया गया है कि जब शिक्षक कक्षा शिक्षण के दौरान विभिन्न नवाचार एवं क्रियाकलाप करते हैं, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी की शिक्षण में रुचि बनी रहती है तथा वे कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इस शोधपत्र में नवाचारों के माध्यम से शिक्षण-अधिगम पर बल दिया गया है, पाठ्यपुस्तक के पाठों को नवाचार के माध्यम से पढ़ाया जाए, जिससे विद्यार्थियों की पढ़ने, लिखने व बोलने की क्षमता में सुधार हो सकें।

कक्षा में बच्चे अपेक्षाकृत कम सीख पाते हैं। इसके कई कारण होते हैं, जैसे— रुचि न होना, समझ न आना, अनुभव का अभाव आदि। जब बच्चों को विभिन्न स्थानों का भ्रमण कराया जाता है, तब वे उनसे बेहतर सीखते हैं। इसी पर आधारित 'फाउंडेशनल एवं प्रीप्रेटरी स्तर पर फील्ड-बेस्ड लर्निंग गतिविधियों का बच्चों के अधिगम पर प्रभाव' शोधपत्र प्रस्तुत किया गया है, जिसमें कक्षा के बाहर की फील्ड-बेस्ड गतिविधियों द्वारा अधिगम को अधिक प्रभावी माना गया है। ये उन्हें सीखने के प्रतिफल की चिंता एवं दबाव से मुक्त करती हैं तथा बच्चों में समझ तथा सीखने की उत्सुकता को भी बढ़ाती हैं। इस शोधपत्र में फील्ड-बेस्ड गतिविधियों को बेहतर बनाने के लिए कुछ सुझाव भी साझा किए गए हैं।

शिक्षा में तकनीक का उपयोग शिक्षण-अधिगम को अधिक आधुनिक तथा प्रभावी बनाता है। वर्तमान में शिक्षण-अधिगम में विभिन्न तकनीकों का उपयोग हो रहा है। इसी पर आधारित 'आधुनिक शिक्षा पर वर्चुअल रियलिटी का प्रभाव' लेख प्रस्तुत किया गया है, यह लेख शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में वर्चुअल रियलिटी के उपयोग पर चर्चा करता है। वर्चुअल रियलिटी बहु-संवेदी अनुभव प्रदान करके, अमूर्त अवधारणाओं को समझने योग्य बनाकर तथा सक्रिय भागीदारी के माध्यम से गहन शिक्षण-अधिगम को बढ़ावा देती है तथा विविध शिक्षण शैलियों का समर्थन करती है। साथ ही, इससे संबंधित चुनौतियों और सुझावों को भी प्रस्तुत किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में प्रारंभिक शिक्षा के दौरान बच्चों के घर की भाषा तथा मातृभाषा को शिक्षा में स्थान देने की अनुशंसा की गई है। इसी पर आधारित 'छत्तीसगढ़ के आदिवासी अंचलों में बुनियादी साक्षरता— नवाचार तथा नई राहें' शोधपत्र प्रस्तुत किया गया है, जिसमें बताया गया है कि जब बच्चों की भाषिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को कक्षा शिक्षण में सम्मानपूर्वक सम्मिलित किया जाता है, तो न केवल साक्षरता कौशल विकसित होते हैं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान और सीखने की रुचि भी जागृत होती है। साथ ही, राज्य व जिला स्तर पर ऐसी शिक्षकोन्मुख नीतियों तथा सामग्री विकास की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आकलन तथा मूल्यांकन महत्वपूर्ण घटक हैं, जो विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को अधिगम के प्रतिफलों की जानकारी प्रदान करते हैं। कक्षा में विविधता के कारण वर्तमान आकलन तथा मूल्यांकन प्रणाली में कई प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु यूनिवर्सल डिजाइन फॉर एसेसमेंट (यू.डी.ए.) सहायक होता है, इसी पर आधारित 'कक्षा में विद्यार्थियों के शैक्षणिक निष्पादन का आकलन— मूल्यांकन के लिए यूनिवर्सल डिजाइन के प्रति एक दृष्टिकोण' नामक लेख प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य यू.डी.ए. के माध्यम से कक्षा में मूल्यांकन की चुनौतियों का समाधान करके, मूल्यांकन को समावेशी तथा प्रभावशाली बनाना है।

व्यक्ति प्रत्येक कार्य में अपनी बुद्धि का उपयोग करता है, लेकिन केवल बुद्धि ही उचित निर्णय लेने या कार्य करने हेतु पर्याप्त नहीं होती, व्यक्ति को अपनी भावना तथा संवेगों के आधार पर भी निर्णय लेने होते हैं, इसलिए व्यक्ति में संवेगात्मक बुद्धि का विकास होना अति-आवश्यक है। इसी पर आधारित 'संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध— एक समीक्षात्मक विश्लेषण' शोधपत्र प्रस्तुत किया गया है, जिसमें स्पष्ट किया गया है कि संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक बुद्धि, दोनों ही व्यक्ति की शैक्षिक सफलता के लिए आवश्यक है। संवेगात्मक बुद्धि के प्रत्येक तत्व का शैक्षिक उपलब्धि के साथ घनिष्ठ संबंध है।

समाज तब तक विकास नहीं कर सकता, जब तक उसमें जेंडर समावेशी मानसिकता का विकास न हो। समाज में स्त्री तथा पुरुष दोनों को समान शिक्षा प्राप्त करने के अवसर एवं स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जेंडर के लिए समान अधिकार तथा सम्मान सुनिश्चित करने की दिशा में एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने पर बल देती है। इसका उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना है, जहाँ शिक्षा के माध्यम से जेंडर समानता का विस्तार हो तथा समाज से जेंडर असमानता समाप्त हो। इसी पर आधारित 'चूड़ी बाजार में लड़की' नामक पुस्तक समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने अनुभव आधारित मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोधपत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचारी प्रयोग, क्षेत्र (फील्ड) अनुभव आदि प्रकाशन हेतु दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा की पुनर्कल्पना

धनंजय जोशी*
सोनल छाबड़ा**
भागेश्वरी शर्मा***

शिक्षा प्रणाली को किसी भी देश में सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रमुख साधन माना जाता है। एक राष्ट्र की शिक्षा नीति उसकी प्राथमिकताओं, सांस्कृतिक दृष्टिकोण तथा भविष्य की दिशा को दर्शाती है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन करते हुए गुणवत्ता, रचनात्मकता तथा समग्र विकास को केंद्र में रखा है। इस लेख के माध्यम से यह प्रयास किया गया है कि नवाचारी शैक्षिक पद्धतियाँ किस प्रकार उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण अधिगम, नवोन्मेष तथा समग्र विकास को प्रोत्साहित कर सकती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को आधार बनाते हुए इस लेख में समकालीन शैक्षिक चुनौतियों के समाधान हेतु अनुभवात्मक एवं क्रियाशील शिक्षण पद्धतियों पर विशेष बल दिया गया है। लेख में एक नवस्थापित विश्वविद्यालय द्वारा अपनाई गई पहल तथा नवाचारों का उल्लेख किया गया है, जिनसे स्पष्ट होता है कि आज के उच्च शिक्षण संस्थान कैसे नैतिक मूल्यों तथा सतत विकास के सिद्धांतों को अनुभवात्मक अधिगम के साथ एकीकृत कर सकते हैं। यह लेख आवश्यक संस्तुतियाँ प्रस्तुत करता है, जिनके माध्यम से शिक्षण पद्धतियों को इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं, जैसे— सामाजिक उत्तरदायित्व, नवाचार क्षमता तथा वैश्विक दक्षता के अनुरूप रूपांतरित किया जा सकता है।

शिक्षा सामाजिक विकास की आधारशिला है तथा शिक्षक भावी पीढ़ियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की भूमिका आदिकाल से ही महत्वपूर्ण मानी जाती रही है। महान शिक्षाविद पाउलो फ्रेरे (1970) के अनुसार, 'यदि शिक्षा जागरूकता, आलोचनात्मक सोच, प्रेरणा, आशा, सशक्तीकरण, सांस्कृतिक क्रियात्मकता और सामाजिक परिवर्तन लाने का साधन है, तो शिक्षक इसके ध्वज वाहक हैं।' एक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए व्यक्ति को न केवल विषय की गहन समझ होनी चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों को क्रियात्मक रूप से सक्रिय रखने तथा

**कुलपति*, दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 009
***विभागाध्यक्ष*, दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 009
****सहायक आचार्य*, दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 009

उनकी ज्ञानवृद्धि के लिए प्रेरित करने की क्षमता भी उसमें होनी चाहिए। ऐसे शिक्षकों को तैयार करना केवल औपचारिक शैक्षणिक संस्थानों का ही नहीं, बल्कि पूरे समुदाय का सामूहिक दायित्व है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा भी इस बात को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि— *"शिक्षक वास्तव में हमारे बच्चों के भविष्य को ही नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य को भी आकार देते हैं। भारत में शिक्षक की यह महानतम भूमिका ही थी, जिसने उन्हें समाज में सबसे सम्मानित स्थान प्रदान किया। केवल सर्वश्रेष्ठ और सबसे विद्वान व्यक्ति ही शिक्षक बनते थे। समाज ने शिक्षकों या गुरुओं को वह सब उपलब्ध कराया, जिसकी उन्हें अपने ज्ञान, कौशल और नैतिकता को विद्यार्थियों तक सर्वोत्तम तरीके से पहुँचाने के लिए आवश्यकता थी। आज शिक्षक-शिक्षा, भर्ती, नियुक्ति, सेवा शर्तों और सशक्तीकरण की गुणवत्ता उस स्तर पर नहीं है, जहाँ उसे होना चाहिए और इसके परिणामस्वरूप शिक्षकों की गुणवत्ता और उत्साह वांछित मानकों तक नहीं पहुँच पाते। शिक्षकों के प्रति उच्च सम्मान और शिक्षण व्यवसाय की उच्च स्थिति को पुनः स्थापित करना आवश्यक है, ताकि सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों को इस व्यवसाय में आने के लिए प्रेरित किया जा सके। शिक्षकों का प्रोत्साहन और सशक्तीकरण यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि हमारे बच्चों और राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम भविष्य संभव हो सके।" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 5.1)*

दिल्ली में पूर्व-सेवाकालीन एवं सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में 'दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय 'दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय अधिनियम 2022' (दिल्ली अधिनियम संख्या 02, 2022) के अंतर्गत स्थापित किया गया, जिसे 26 जनवरी 2022 से लागू किया गया। इस विश्वविद्यालय की परिकल्पना विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन, नेतृत्व तथा नीति-निर्माण के विविध पहलुओं पर आधारित एक ऐसे उत्कृष्ट केंद्र के रूप में की गई है, जो सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन दोनों स्तरों पर दक्ष तथा सजग शिक्षकों के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध हो। विश्वविद्यालय का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता से संबद्ध वास्तविकताओं तथा नवीन अवधारणाओं को दृष्टिगत रखते हुए, शिक्षक-प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं नीति-निर्माण के मध्य सेतु निर्माण करना है। अपने उद्देश्यों के अंतर्गत विश्वविद्यालय का एक प्रमुख लक्ष्य दिल्ली की शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण, पाठ्यचर्या, शिक्षाशास्त्र, विद्यालय नेतृत्व, शिक्षा नीति तथा नियोजन के क्षेत्र में मौलिक एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान का सुदृढ़ संचालन करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 'शिक्षक शिक्षा' में परिवर्तन लाने पर बल देती है, जिसमें बहु-विषयक दृष्टिकोण, व्यावहारिक अनुभव तथा योग्यता-आधारित शिक्षा को एकीकृत किया गया है। इसका उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है, जो न केवल शिक्षण के सक्षम सुविधाकर्ता हों, बल्कि आजीवन शिक्षार्थी भी बनें, ताकि वे अपने ज्ञान के आधार को निरंतर समृद्ध कर सकें। दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने समस्त शैक्षणिक कार्यक्रमों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों

के अनुरूप संरेखित करे, ताकि विद्यार्थियों के समग्र विकास के साथ इक्कीसवीं सदी के आवश्यक कौशलों का संवर्धन तथा शिक्षण के व्यवसायीकरण को सुनिश्चित किया जा सके। 'शिक्षक शिक्षा' को पुन: परिभाषित करने की इस अवधारणा में नवाचारयुक्त शिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम तथा शोध-आधारित अध्यापन विधियों का प्रभावी आंरभ भी शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लिखित मूल्यों के अनुरूप इस विश्वविद्यालय को स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य ज्ञान के सृजन को प्रोत्साहित करना तथा एक ऐसे पोषणकारी शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना है, जिसमें ज्ञान प्रस्फुटित हो और व्यक्ति सामाजिक परिवर्तन का ध्वजवाहक बनने के लिए सशक्त हो सके। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को संजोए हुए यह विश्वविद्यालय ऐसी समग्र उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है, जो वैश्विक आवश्यकताओं एवं मानकों को पूरा करने में सक्षम हो सके।

अपने स्थापना काल से ही दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुरूप स्वयं को संरेखित किया है तथा इसके प्रमुख मूल्यों को अपने संस्थागत ढाँचे और शिक्षण पद्धतियों में एकीकृत किया है। समग्र एवं बहु-विषयी शिक्षा, शिक्षकों के क्षमता निर्माण, सामुदायिक सहभागिता तथा शिक्षण विधियों में नवाचार को प्रोत्साहित करने के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता सुव्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण ढंग से निर्मित पहलों की एक शृंखला के माध्यम से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। यह शोधपत्र उन पहलों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित एक प्रगतिशील, समावेशी तथा उत्तरदायी शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

- **सक्रिय अधिगम वातावरण**— 'सक्रिय अधिगम' एक सुव्यवस्थित शैक्षिक प्रविधि है, जिसे दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों एवं शोधार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों तथा अध्ययन क्षेत्रों से प्राप्त बहुमूल्य सुझावों से प्रेरणा मिली है। पाउलो फ्रेरे (1970), वायगोत्स्की (1978) एवं बंडुरा (1986) जैसे विचारकों ने सक्रिय अधिगम के पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय सक्रिय सहभागिता, सक्रिय अधिगम तथा भागीदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने में विश्वास रखता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों तथा अन्य हितधारकों को शिक्षण, अधिगम, अनुसंधान एवं सेवा के सामूहिक प्रयासों में अपने विचारों, दृष्टिकोणों और क्षमताओं के योगदान के लिए अवसर प्रदान करना है। भागीदारीपूर्ण एवं सहयोगात्मक परियोजनाओं तथा समावेशी प्रशासनिक संरचनाओं के माध्यम से विश्वविद्यालय सभी को सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय ध्वजवाहक तथा भविष्य की साझी दृष्टि के सह-निर्माता बनने हेतु सशक्त बनाता है। विश्वविद्यालय 'सक्रिय अधिगम' के लिए व्यापक अवसर प्रदान करता है, जिसे सामान्यतः ऐसी शैक्षणिक विधि के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो विद्यार्थियों को अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से सहभागी बनाती है। वर्तमान में विश्वविद्यालय में एम.ए. (शिक्षा) तथा बी.ए. (शिक्षा) पाठ्यक्रम

संचालित किए जा रहे हैं, जिनमें सक्रिय एवं भागीदारीपूर्ण शिक्षण-अधिगम विधियों का प्रभावी उपयोग किया जा रहा है। इन पाठ्यक्रमों में दैनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं, जैसे— कक्षागत गतिविधियाँ तथा असाइनमेंट आदि में सक्रिय अधिगम के तत्व समाहित होते हैं। सभी पाठ्यक्रमों की संरचना इस प्रकार की गई है कि उनमें सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक अनुभव, समुदाय, विद्यालय एवं शैक्षिक संस्थान साथ मिलकर व्यावसायिक विकास में सहयोग कर रहे हैं।

- **सामुदायिक भागीदारी**— दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक समुदायों के साथ मजबूत तथा सतत संबंध स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सहयोग, संवाद तथा आपसी सम्मान की भावना में विश्वास रखते हुए, विश्वविद्यालय विविध हितधारकों के साथ सकारात्मक एवं पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा देने हेतु खुले संवाद, सहभागिता तथा साझेदारी आधारित पहलों को प्रोत्साहित करता है। इसका उद्देश्य समुदाय में अपनत्व, विश्वास और साझा सरोकारों की भावना को सुदृढ़ करना है। विश्वविद्यालय बाह्य हितधारकों, जैसे— शैक्षिक संस्थान, सरकारी एजेंसियाँ, गैर-लाभकारी संगठन, व्यावसायिक प्रतिष्ठान तथा सामुदायिक समूहों के साथ रणनीतिक साझेदारी एवं नेटवर्क सृजन के लिए निरंतर प्रयासरत है। संयुक्त पहलों, साझे संसाधनों और सहयोगात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से विश्वविद्यालय जटिल सामाजिक तथा शैक्षिक चुनौतियों का समाधान करना, पूरक क्षमताओं का उपयोग करना तथा शिक्षा एवं समाज पर सकारात्मक प्रभाव को अधिकतम करने का प्रयास करता है। यह मान्यता है कि 'रणनीतिक साझेदारियाँ और सहयोगात्मक नेटवर्क सामूहिक प्रयासों को सशक्त बनाते हैं', विश्वविद्यालय की कार्यनीति का मूल आधार है। यह दृष्टिकोण न केवल हमारी पहुँच को व्यापक बनाता है; बल्कि स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तरों पर परिवर्तनकारी प्रभाव उत्पन्न करने के अवसर भी प्रदान करता है। इसी सोच के अंतर्गत विश्वविद्यालय ने कई नवाचारी एवं सहयोगात्मक उपक्रमों को सफलतापूर्वक प्रारंभ किया है। ऐसे कुछ प्रयासों का वर्णन इस प्रकार है—

(i) **शिक्षक संवाद, विभिन्न परिप्रेक्ष्यों को जोड़ना**— 'शिक्षक संवाद' अथवा 'डी.ई.टी.यू. डिस्कोर्स' विश्वविद्यालय की एक प्रमुख शैक्षिक पहल है, जिसका उद्देश्य शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञों के बीच बौद्धिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करना है। यह कार्यक्रम शिक्षा से संबंधित मुद्दों, शिक्षण पद्धतियों और नवाचारों पर विचार-विमर्श को बढ़ावा देता है। 'शिक्षक संवाद' विविध दृष्टिकोणों एवं आवाजों को एक साझा मंच पर लाकर शिक्षा पर गहन तथा बहुआयामी चर्चाओं को समृद्ध करता है। इस पहल के माध्यम से जहाँ विद्यार्थियों को समसामयिक शैक्षिक चुनौतियों और उनके संभावित समाधानों की वास्तविक जानकारी प्राप्त होती है, वहीं शिक्षक अपने अनुभवों तथा विचारों को साझा कर नए दृष्टिकोणों से लाभान्वित होते हैं। यह संवाद

आधुनिक शिक्षकों में समालोचनात्मक चिंतन, संवादात्मक सहभागिता और सहयोगात्मक समस्या समाधान कौशल के विकास को भी सुदृढ़ करता है, जो वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में अत्यंत आवश्यक हैं।

"शिक्षक संवाद एक ऐसा सत्र है, जिसकी हमारे विश्वविद्यालय समुदाय के सभी सदस्य प्रत्येक गुरुवार को उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। यह सह-शिक्षण (co-teaching) की भावना को साकार करने वाला एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जिसमें विचारों का आदान-प्रदान, अनुभवों की साझेदारी और सामूहिक अधिगम को प्रोत्साहन मिलता है।"

– स्वागतिका (एम.ए. प्रथम सेमेस्टर)

"शिक्षक संवाद सभी को चिंतन तथा अनुभव साझा करने के माध्यम से सीखने और ज्ञान में वृद्धि करने का अवसर प्रदान करता है।"

– अंकिता (एम.ए. तृतीय सेमेस्टर)

यह पहल अंतःविषयक संवाद, नेटवर्किंग, सहयोगात्मक परियोजनाओं तथा व्यावसायिक विकास के अवसरों हेतु एक प्रभावी मंच के रूप में विकसित हुई है। इसके माध्यम से विचारों, श्रेष्ठ प्रथाओं तथा संसाधनों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहन मिला है, जिससे नवाचार एवं रचनात्मकता की संस्कृति का विस्तार हुआ है।

(ii) सामुदायिक भागीदारी और सामाजिक कार्य पहल— झुग्गी बस्तियों में जाकर जागरूकता फैलाना विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक है। विश्वविद्यालय का लक्ष्य अपने आस-पास के समुदायों के साथ घनिष्ठ तथा अर्थपूर्ण संबंध स्थापित करना है, ताकि वहाँ निवास करने वाले वंचित बच्चों तथा वयस्कों की शिक्षा एवं समग्र कल्याण में योगदान किया जा सके। आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली बाधाओं को कम करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय के विद्यार्थी न केवल उन्हें पढ़ाने में सहयोग करते हैं, बल्कि विद्यालय के बाद अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता भी प्रदान करते हैं। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की उन अनुशंसाओं के अनुरूप है, जो सामुदायिक ज्ञान संसाधन केंद्र के विकास तथा मार्गदर्शन-आधारित सहयोग को प्रोत्साहित करती हैं।

समुदाय के इन बच्चों के साथ जुड़ने से मुझे जीवन की कठोर वास्तविकताओं का पता चला है और कैसे हम... शिक्षा तथा आर्थिक रूप से सक्षम लोग इन मासूम बच्चों के विकास में योगदान दे सकते हैं, जो शिक्षित, विकसित वयस्क बन सकते हैं, यदि कुछ सहायता प्रदान की जाए। पहले मैं कभी इस दिशा में नहीं सोच सकता था कि मैं भी उनके जीवन में एक छोटा-सा, किंतु प्रभावी परिवर्तन ला सकता हूँ।

– अनवर (एम.ए. तृतीय सेमेस्टर)

- **पर्यावरण संरक्षण तथा सतत अभ्यास**— विश्वविद्यालय पर्यावरण संरक्षण तथा सतत जीवन शैली के प्रति जागरूकता फैलाने हेतु प्रयासरत है। चूँकि हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं, जहाँ पर्यावरणीय संकट बढ़ते जा रहे हैं, यह अत्यंत आवश्यक है कि कॉलेज स्तर पर विद्यार्थी इन मुद्दों के प्रति जागरूक तथा सक्षम बनें। इस दिशा में विश्वविद्यालय ने वृक्षारोपण,

स्वच्छता अभियान, प्रदूषण नियंत्रण से संबंधित चर्चाओं एवं प्रस्तुतियों, कचरा प्रबंधन तथा 'कबाड़ से जुगाड़' जैसी रचनात्मक गतिविधियों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति व्यावहारिक समझ तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना है। उल्लेखनीय है कि ये पहल केवल सहगामी गतिविधियाँ न होकर पाठ्यक्रम का अभिन्न एवं अनिवार्य अंग हैं। इन्हें इस प्रकार संरचित किया गया है कि विद्यार्थी न केवल इनमें प्रतिभाग करें, बल्कि पर्यावरणीय चिंताओं के समाधान हेतु सक्रिय भूमिका भी निभाएँ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण तथा सतत जीवन शैली को बढ़ावा देने पर बल देती है। इसी के अनुरूप विश्वविद्यालय ने पर्यावरण शिक्षा के विविध घटकों को पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया है तथा स्नातक स्तर पर इसके लिए एक पृथक विषय भी प्रस्तावित किया गया है, जिससे जिम्मेदार नागरिकता तथा स्थायी विकास के प्रति प्रतिबद्धता को बल मिल सके।

- **भारतीय लोकाचार, मूल्यों तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देना**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय संस्कृति, मूल्यों तथा भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्ध विरासत को प्रोत्साहित करने पर विशेष बल देती है, जिससे नागरिकों में सांस्कृतिक पहचान तथा गौरव की भावना विकसित हो सके। यह नीति सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सत्य, निष्काम कर्म तथा शांति जैसे पारंपरिक भारतीय सिद्धांतों को पाठ्यचर्या में एकीकृत करने की अनुशंसा करती है। इस नीति का उद्देश्य प्राचीन भारतीय ग्रंथों, विज्ञान, गणित, कला तथा साहित्य को आधुनिक विषयों के साथ समन्वित करना है, ताकि वैश्विक ज्ञान में भारत के योगदान को रेखांकित किया जा सके। साथ ही, योग, ध्यान तथा स्वदेशी परंपराओं को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाकर विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करना भी इसका लक्ष्य है, जिससे अनुशासन, लचीलापन तथा प्रकृति के साथ सामंजस्य जैसे मूल्य स्थापित किए जा सकें। इस दृष्टिकोण के अनुरूप दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय ने 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' पर एक ऑनलाइन फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया, जिसमें विभिन्न विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। इन विशेषज्ञों ने स्वास्थ्य, आत्मज्ञान, सत्य के मार्ग तथा जीवन में खुशहाली जैसे विषयों पर विद्यार्थियों के साथ संवाद किया। विश्वविद्यालय में शिक्षक एवं प्रशासनिक अधिकारी, परामर्शदाता तथा मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हुए विद्यार्थियों को तनाव प्रबंधन और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहयोग कर रहे हैं। माइंडफुलनेस सत्रों का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है तथा विद्यार्थियों व शिक्षकों को आध्यात्मिक अनुशीलन तथा शांतिपूर्ण जीवन के लिए अन्वेषण के अवसर भी प्रदान किए जा रहे हैं।
- **विद्यालय तथा विश्वविद्यालय के बीच की खाई को पाटना**— दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय को इस बात से प्रेरणा मिली है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालय शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के बीच की दूरी को पाटने की आवश्यकता को रेखांकित करती है, ताकि

एक सहज, निरंतर और समग्र अधिगम अनुभव सुनिश्चित किया जा सके। यह बहुविषयक दृष्टिकोण, आलोचनात्मक सोच तथा लर्निंग पाथवे में लचीलापन विकसित करने पर बल देती है, जिससे विद्यार्थी विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा के लिए तैयार हो सकें। माध्यमिक स्तर पर बुनियादी कौशल, करियर तत्परता तथा जीवन कौशल पर विशेष ध्यान देते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थी उच्च शिक्षा की चुनौतियों तथा अवसरों से प्रभावी ढंग से निपट सकें। साथ ही, व्यावसायिक शिक्षा, इंटर्नशिप तथा मार्गदर्शन कार्यक्रमों की शुरुआत विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती है, जिससे वे अपने भविष्य से जुड़े निर्णय अधिक समझदारी से ले सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा कल्पित एकीकृत शैक्षिक ढाँचा, जहाँ विद्यालय तथा विश्वविद्यालय मिलकर अनुकूलनशील समग्र विद्यार्थियों को पोषित करते हैं, को मूर्त रूप देने के लिए विश्वविद्यालय ने 'शिक्षा सेतु' नामक एक नई पहल की शुरुआत की है। यह 'सामाजिक-शैक्षिक क्लब' विद्यालयों, विद्यार्थियों तथा विश्वविद्यालय के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है। इस पहल के अंतर्गत विश्वविद्यालय के विद्यार्थी दिल्ली के दो सरकारी विद्यालयों में गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जो विद्यालय शिक्षकों के मार्गदर्शन में योजनाबद्ध रूप से चलाई जाती हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों में जेंडर समानता, सहानुभूति, करुणा, नैतिकता, रचनात्मकता, प्रकृति संरक्षण, सतत जीवन शैली तथा चरित्र निर्माण जैसे मूल्यों को विकसित करना है। साथ ही, विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विद्यार्थी ऊर्जा संरक्षण, उद्यमिता, प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा तथा व्यक्तित्व विकास जैसे समकालीन विषयों पर भी कार्यशालाओं व संवाद सत्रों का संचालन करते हैं। 'शिक्षा सेतु' पहल न केवल शैक्षिक जुड़ाव को गहरा बनाती है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मूल्य-आधारित शिक्षा को भी सशक्त बनाती है।

"दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय ने विद्यालय तथा विश्वविद्यालय के बीच की दूरी को कम करने की दिशा में सराहनीय प्रयास किया है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने मेरे विद्यालय के विद्यार्थियों को विभिन्न करियर विकल्पों से अवगत कराया है, जिन्हें वे भविष्य में अपना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने ऊर्जा संरक्षण, साइबर सुरक्षा तथा डिजिटल साक्षरता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी विद्यार्थियों के साथ प्रभावी कार्य किया है। इस उत्कृष्ट पहल के लिए मैं दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा यह आशा करता हूँ कि वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप, विद्यालय तथा विश्वविद्यालय के बीच सहयोग को और अधिक सशक्त बनाने हेतु इसी प्रकार की गतिविधियाँ आगे भी आयोजित करते रहेंगे।"

– मुकेश कुमार,
उप प्रधानाचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बालक विद्यालय, जी.टी.बी. नगर

- **ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ज्ञान-साझाकरण एवं एक समावेशी ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण पर बल देती है, जिसमें व्यक्ति तथा

संस्थान मिलकर ज्ञान के विस्तार में योगदान दे सकें। इसी भावना के अनुरूप, दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय ने विद्यालय शिक्षकों के साथ शैक्षिक संसाधनों और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान हेतु एक सुविचारित योजना तैयार की है। विश्वविद्यालय ने विशेष रूप से विद्यालय शिक्षकों के ज्ञान को समृद्ध करने तथा उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और इसके विभिन्न पहलुओं से परिचित कराने के लिए एक संगठित पहल की शुरुआत की है। इसके अंतर्गत 'शेपिंग टुमॉरो — अंडरस्टैंडिंग एन.ई.पी. 2020' नामक एक मासिक वेबिनार शृंखला चलाई जा रही है, जो हर महीने के पहले शुक्रवार को आयोजित की जाती है। इस शृंखला में शिक्षा नीति के विशेषज्ञ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उन पक्षों पर संवाद करते हैं, जो विशेष रूप से विद्यालय शिक्षकों के लिए प्रासंगिक हैं। यह मंच शिक्षकों को अपने स्थानीय एवं क्षेत्रीय अनुभवों को साझा करने तथा विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। यद्यपि वर्तमान में इस पहल को सीमित प्रतिसाद प्राप्त हो रहा है, विश्वविद्यालय को विश्वास है कि जागरूकता बढ़ने के साथ इसमें सहभागिता भी बढ़ेगी। इसके साथ ही, विश्वविद्यालय निकट भविष्य में इस शृंखला को ऑफलाइन मोड में विस्तार देने की योजना भी बना रहा है, जिससे शिक्षकों के साथ अधिक सजीव तथा संवादात्मक जुड़ाव सुनिश्चित किया जा सके।

- **शिक्षा में ज्ञान हस्तांतरण तथा प्रौद्योगिकी**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत डिजिटल शिक्षा का एकीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारतीय शिक्षा प्रणाली को इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने में सहयोग करता है। इसी परिप्रेक्ष्य में दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के बीच सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करते हुए, उन्हें नवीन डिजिटल शिक्षण विधियों, शैक्षिक ऐप्स, रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा सामग्री निर्माण के लिए सक्षम बना रहा है। डिजिटल साक्षरता विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का एक आवश्यक घटक बन चुकी है। जिस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यापक पहुँच, मिश्रित अधिगम (blended learning), वर्चुअल सिमुलेशन तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) — आधारित समाधानों को बढ़ावा देती है, उसी दृष्टिकोण के अनुरूप विश्वविद्यालय भी डिजिटल अधिगम को संस्थागत रूप से सुदृढ़ करने हेतु कार्य कर रहा है। इसी कड़ी में शिक्षकों के लिए 'पाथवेज टू प्रोग्रेस— विकसित भारत@2047 के लिए ए.आई.-आधारित शिक्षा' विषय पर एक फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफ.डी.पी.) आयोजित किया गया। इस पहल का उद्देश्य भारत में शिक्षा के क्षेत्र में ए.आई. की परिवर्तनकारी भूमिका को अन्वेषित करना था, जो 'विकसित भारत@2047' की राष्ट्रीय दृष्टि के अनुरूप है। इस कार्यक्रम में देश भर से K-12 शिक्षकों, उच्च शिक्षा संस्थानों के प्राध्यापकों तथा शोधार्थियों ने भाग लिया तथा ए.आई. की संभावनाओं एवं चुनौतियों पर गंभीर चर्चा की। कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को न केवल व्यावहारिक कौशल प्रदान किए, बल्कि शिक्षा

में ए.आई. के नैतिक, सामाजिक तथा रणनीतिक आयामों को भी समझने का अवसर दिया। इस आयोजन में एक उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई, जिसने शिक्षकों को डिजिटल परिवर्तन की दिशा में सशक्त तथा सजग बनाया तथा शिक्षा में नवाचार को गति प्रदान की।

यह एफ.डी.पी. बहुत जानकारीपूर्ण रहा, क्योंकि देश के विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने हमारे साथ अपने विशेषज्ञ अंतर्दृष्टि साझा की थी...

– ख्याति गुलाटी,
शोधार्थी, योजना एवं वास्तुकला विद्यालय

शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास— दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए निरंतर कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विश्वविद्यालय स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख सिद्धांतों तथा लक्ष्यों की गहन समझ प्रदान करना है, ताकि वे अपनी शिक्षण विधियों को नीति के उद्देश्यों के अनुरूप समायोजित कर सकें। ये प्रयास न केवल शिक्षकों को शिक्षा नीति से अवगत कराते हैं, बल्कि इसके प्रभावी कार्यान्वयन में उनकी सक्रिय भूमिका को भी सशक्त बनाते हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) के *मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय मिशन* के अंतर्गत, विश्वविद्यालय 'एन.ई.पी. ओरिएंटेशन तथा सेंसिटाइजेशन प्रोग्राम' आयोजित कर रहा है। कुछ दिन पूर्व, दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय ने हंसराज कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) के महात्मा हंसराज मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र के सहयोग से एन.ई.पी. पर 10 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस पहल का उद्देश्य शिक्षकों को एन.ई.पी. 2020 के अंतर्गत प्रस्तावित परिवर्तनकारी सुधारों को अपनाने के लिए तैयार करना था। ऑनलाइन सत्रों की शृंखला के माध्यम से, प्रतिभागियों ने नीति के प्रमुख आयामों, उसके शैक्षिक निहितार्थों तथा क्रियान्वयन की प्रभावी रणनीतियों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त की। कार्यक्रम ने शिक्षकों को उभरते उच्च शिक्षा परिदृश्य को समझने और अपनाने के लिए आवश्यक ज्ञान तथा कौशल से सुसज्जित करने का अवसर दिया।

इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय अन्य शैक्षिक संस्थानों तथा संगठनों के साथ मिलकर साझेदारी को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित कर रहा है, ताकि सर्वोत्तम प्रथाओं, शैक्षणिक संसाधनों तथा रणनीतियों का आदान-प्रदान सुनिश्चित किया जा सके। इस प्रकार, विश्वविद्यालय एन.ई.पी. 2020 के व्यापक उद्देश्य— शिक्षा की गुणवत्ता, समावेशिता तथा नवाचार को विकसित करने हेतु एक समग्र नेटवर्क के निर्माण की दिशा में कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा वर्तमान में विद्यालय शिक्षा के शिक्षणशास्त्र पर आधारित ऑनलाइन प्रमाण-पत्र कार्यक्रम भी संचालित किया जा रहा है। ये कार्यक्रम विद्यालय स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया है तथा शिक्षकों को संबंधित शैक्षिक क्षेत्रों में नवीनतम विकास से परिचित कराते हैं। यद्यपि ये कार्यक्रम ऑनलाइन हैं, फिर भी इनमें सहभागिता तथा संवादात्मक अधिगम को प्राथमिकता दी गई है। सप्ताहांत पर विशेषज्ञों द्वारा लाइव सत्र लिए जाते हैं, जिनमें शिक्षकों को सक्रिय रूप से भाग लेने तथा सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं। अब तक 25 विद्यालय शिक्षकों का एक बैच सफलतापूर्वक यह कार्यक्रम पूर्ण कर चुका है।

नागरिक शिक्षा— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांतों से प्रेरित होकर दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय, विद्यार्थियों एवं समाज के आर्थिक रूप से वंचित वर्गों के बीच सक्रिय नागरिकता तथा सामुदायिक जागरूकता को प्रोत्साहित करने हेतु अनेक प्रयास कर रहा है। इस क्रम में, विश्वविद्यालय द्वारा एक *'मतदाता जागरूकता अभियान'* आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों तथा समुदाय के सदस्यों को उनके मतदान अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना तथा भारतीय लोकतंत्र में सक्रिय भागीदारी के महत्व को रेखांकित करना था। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय ने एक '*डाक चौपाल*' अभियान भी चलाया, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों और समुदाय के सदस्यों को डाकघर की विभिन्न बचत योजनाओं एवं उनकी सामाजिक-आर्थिक उपयोगिता के विषय में जानकारी प्रदान की गई। इन पहलों का उद्देश्य केवल सूचना का प्रसार करना नहीं था, बल्कि समुदाय को सशक्त बनाना तथा उन्हें सूचित, जिम्मेदार तथा सक्रिय नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करना था। ये प्रयास एन.ई.पी. 2020 के उस व्यापक दृष्टिकोण के अनुकूल हैं, जो शिक्षा को केवल औपचारिक कक्षाओं तक सीमित न मानते हुए, उसे सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक विकास से जोड़ने पर बल देता है।

शैक्षणिक नवाचार— बदलते समय तथा शिक्षा की विकसित होती आवश्यकताओं के अनुरूप, दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय के शिक्षक शिक्षण में विविध नवीन विधियों का समावेश कर रहे हैं। 'फ्लिप्ड क्लासरूम', कला-संयोजित अधिगम, अनुभवात्मक अधिगम, कहानी-वाचन, परिस्थितिकी विश्लेषण, व्यक्तिगत एवं समूह परियोजनाएँ, बहस, संवाद, सह-पाठन, आत्म-मूल्यांकन, क्षेत्रीय यात्रा एवं शैक्षिक भ्रमण जैसे नवाचारपूर्ण तरीकों का शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा रहा है। इन विधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि उन्हें सक्रिय सहभागिता, चिंतनशीलता और व्यावहारिक ज्ञान से समृद्ध करना है। विश्वविद्यालय ने ज्ञान, सर्वोत्तम शैक्षिक प्रथाओं एवं अनुभवों के पारस्परिक आदान-प्रदान हेतु विभिन्न संस्थानों और संगठनों के साथ सहयोग की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। शैक्षिक सहयोग न केवल विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की क्षमता-वृद्धि में सहायक होता है, बल्कि यह शोध, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, प्रबंधन कौशल एवं नवाचार की संस्कृति को भी बढ़ावा देता है। इस दिशा में एक उल्लेखनीय पहल 'ब्रेन स्पार्क्स' व्याख्यान शृंखला है, जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को भारतीय शिक्षा प्रणाली से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहन जानकारी उपलब्ध कराना है। इस शृंखला के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं। शिक्षण विधियों के समानांतर, विश्वविद्यालय मूल्यांकन पद्धतियों में भी नवाचार को बढ़ावा दे रहा है। पारंपरिक मूल्यांकन, जो प्रायः रटने और सैद्धांतिक परीक्षा पर केंद्रित होते हैं, की बजाय विश्वविद्यालय निरंतर मूल्यांकन, शोध-आधारित मूल्यांकन, कक्षा अवलोकन, शिक्षण पोर्टफोलियो, सहकर्मी समीक्षा तथा वास्तविक समय फीडबैक जैसी विधियों को प्राथमिकता देता है। इन प्रयासों के माध्यम से विश्वविद्यालय का उद्देश्य एक

ऐसी शिक्षण संस्कृति को विकसित करना है, जो ज्ञान के साथ-साथ कौशल, चिंतन, सृजनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी समान रूप से महत्व दे।

गांधी तथा अरविंदो जैसी महत्वपूर्ण हस्तियों की शिक्षा एवं जीवन दर्शन को अपनाना एवं बढ़ावा देना— दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय ने महात्मा गांधी तथा श्री अरविंदो जैसे महान विचारकों द्वारा प्रतिपादित जीवन-दर्शन एवं शैक्षिक सिद्धांतों को अपनाने और बढ़ावा देने की दिशा में सराहनीय प्रयास किए हैं। विशेष प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रमों एवं फैकल्टी विकास कार्यक्रमों के माध्यम से विश्वविद्यालय इन महान व्यक्तित्वों की शिक्षाओं को अपने शैक्षिक तथा सांस्कृतिक परिवेश में समाहित कर रहा है। इन कार्यक्रमों में गांधीवादी मूल्यों, जैसे—अहिंसा, आत्मनिर्भरता और समग्र शिक्षा के साथ-साथ श्री अरविंदो की समग्र शिक्षा एवं आध्यात्मिक विकास की अवधारणा पर भी विशेष ध्यान केंद्रित किया जाता है। इन शिक्षाओं को संरचित अधिगम प्रक्रिया में एकीकृत कर विश्वविद्यालय शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सत्य, शांति, आत्मचेतना तथा नैतिक अनुशासन जैसे मूल्यों पर चिंतन हेतु प्रेरित करता है, जो आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस प्रकार की पहल न केवल पाठ्यचर्या को समृद्ध बनाती हैं, बल्कि शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास के लिए एक मूल्य-आधारित मार्गदर्शक ढाँचा भी प्रस्तुत करती हैं। ये कार्यक्रम प्रतिभागियों को गांधी तथा अरविंदो के विचारों से प्रेरणा ग्रहण करने का अवसर प्रदान करते हैं, ताकि वे इन आदर्शों को शिक्षा तथा सामाजिक जीवन में व्यावहारिक रूप से लागू कर सकें। इस प्रकार के गूढ़ चिंतनशील विषयों पर केंद्रित प्रयास प्रतिभागियों में नैतिक दृढ़ता तथा चारित्रिक विकास को पोषित करते हैं, जिससे वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन के संवाहक बन सकें। साथ ही, ये प्रयास विश्वविद्यालय की मूल्य-आधारित शिक्षा की प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि महात्मा गांधी तथा श्री अरविंदो के विचार आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देते रहें।

निष्कर्ष

इस लेख के समापन पर हमें समाजशास्त्री रॉबर्ट के. मर्टन द्वारा 1948 में प्रतिपादित 'स्व-पूर्ण करने वाली भविष्यवाणी' सिद्धांत का स्मरण होता है। मर्टन के अनुसार, यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें किसी विश्वास अथवा अपेक्षा के आधार पर व्यवहार इस प्रकार प्रभावित होता है कि अंततः वह विश्वास वास्तविकता बन जाता है। इस सिद्धांत ने यह दर्शाया कि कैसे लोगों की अपेक्षाएँ, चाहे सकारात्मक हों या नकारात्मक, वास्तविक परिणामों को आकार देने में सक्षम होती हैं। यह अवधारणा शैक्षिक वातावरण में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ शिक्षक तथा संस्थान की अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के प्रदर्शन तथा आत्मबोध को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी सिद्धांत के अनुरूप, शिक्षा के प्रति समावेशी, सकारात्मक तथा समग्र दृष्टिकोण को अपनाने पर बल देती है। यह नीति सभी विद्यार्थियों की आंतरिक क्षमताओं को पहचानने, उच्च अपेक्षाएँ निर्धारित करने तथा उन्हें आवश्यक संसाधन एवं समर्थन प्रदान करने पर केंद्रित है, ताकि निम्न

अपेक्षाओं के चक्र को तोड़ा जा सके, जो अक्सर वंचित समुदायों के विद्यार्थियों की प्रगति को सीमित करता है। दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय इस विचार को व्यवहार में लाने के लिए प्रतिबद्ध है।

विश्वविद्यालय यह समझता है कि सकारात्मक परिवर्तन की नींव उसके शिक्षकों के दृष्टिकोण, कौशल तथा समर्पण में निहित है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षकों को फ्लिप्ड क्लासरूम, प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम, गेमीफिकेशन और ए.आई.-सहायता शिक्षण विधियों से लैस किया जा रहा है। कार्यशालाएँ, संवर्धन कार्यक्रम तथा सर्वोत्तम वैश्विक शैक्षिक प्रथाओं से जुड़ाव, शिक्षकों को नवाचार के लिए प्रेरित कर रहे हैं। साथ ही, शिक्षकों को कक्षा में अनुकूल वातावरण सृजित करने, विद्यार्थियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण संबंध स्थापित करने तथा अनुभवात्मक व चिंतनशील अधिगम को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। हमारा विश्वास है कि जब शिक्षकों की अपेक्षाएँ सकारात्मक होती हैं तथा जब विद्यार्थियों को यह विश्वास कराया जाता है कि वे सक्षम हैं और उन्हें समर्थन प्राप्त है, तो वे उत्कृष्टता की ओर उन्मुख होते हैं। यही स्व-पूर्ण करने वाली भविष्यवाणी की सार्थक परिणति है।

इसके साथ ही, विश्वविद्यालय इस परिवर्तनकारी प्रक्रिया की राह में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों को भी स्वीकार करता है। पारंपरिक सोच वाले विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षण विधाओं के अनुकूल बनाना, दो परिसरों के बीच सामंजस्य स्थापित करना और नवाचारों को संस्थागत स्तर पर क्रियान्वित करना जटिल अवश्य है, लेकिन ये चुनौतियाँ विश्वविद्यालय के लिए अवसर भी हैं। अंततः दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय यह मानता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 न केवल एक दस्तावेज है, बल्कि एक दृष्टिकोण है। एक ऐसा दृष्टिकोण, जो समावेशिता, समानता, नवाचार तथा सशक्तीकरण की नींव पर एक नई शिक्षित, उत्तरदायी और संवेदनशील पीढ़ी के निर्माण की दिशा में अग्रसर है।

संदर्भ

दिल्ली सरकार. 2022. दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय अधिनियम. 2022. दिल्ली सरकार. दिल्ली. जनवरी, 2024. https://delhiteachersuniversity.edu.in/Images/Doc/ActNotificationOfDelhiTeachersUniversity.pdf से को प्राप्त किया गया है।

फ्रेरे, पा. 1970. *पेडागोजी ऑफ द ऑपरेस्ड*. न्यूयॉर्क — कॉन्टिनम बुक्स.

बंडुरा, ए. 1986. *सोशल फाउंडेशन्स ऑफ थॉट एंड एक्शन — ए सोशल कॉग्निटिव थ्योरी*. प्रेंटिस-हॉल, इंक.

मिसेयानी, ए. एवं अन्य. (सं.). 2018. *उच्च शिक्षा में सक्रिय शिक्षण रणनीतियाँ — नेतृत्व, नवाचार और रचनात्मकता के लिए शिक्षण*. एमेरल्ड पब्लिशिंग लिमिटेड.

मेर्टन, आर. के. 1968. *सामाजिक सिद्धांत और सामाजिक संरचना* (संशोधित और विस्तृत संस्करण) फ्री प्रेस.

———. 1948. द सेल्फ-फुलफिलिंग प्रोफेसी. *द एंटिओक रिव्यू*. 8(2). पृष्ठ 193–210.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जनवरी, 2024. https://www.education.gov.in से प्राप्त किया गया है।

वायगोत्स्की, एल. एस. 1978. *माइंड इन सोसाइटी — डेवेलपमेंट ऑफ हायर साइकोलोजिकल प्रोसेसेज*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

विकसित भारत@2047 के लिए विद्यालयी शिक्षा में परिवर्तन हेतु आवश्यकताओं का अध्ययन

अमित अग्रवाल*

भारत वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, जिसके लिए विद्यालयी शिक्षा में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता है। भारत @2047 के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है, जो विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए भी तैयार करे। एक विकसित राष्ट्र के लिए सक्षम, कुशल तथा नवाचारी मानव संसाधन का निर्माण शिक्षा की गुणवत्ता तथा प्रासंगिकता पर निर्भर करता है। मुख्य आवश्यकताओं में आधुनिक शिक्षण विधियों का समावेश, डिजिटल तकनीक का उपयोग, शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार तथा व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाना शामिल है। विद्यार्थियों में समस्या-समाधान, रचनात्मकता एवं आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना भी प्राथमिकता में शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत प्रस्तावित सुधारों को प्रभावी ढंग से लागू करने पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह शोध अध्ययन भारत की शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों एवं सुधारों पर केंद्रित है। वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र के लक्ष्य हेतु, शिक्षकों, विद्यार्थियों, प्रबंधन तथा शोधार्थियों से 200 उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण जाने गए। सर्वेक्षण पद्धति द्वारा एकत्रित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर व्यावहारिक रणनीतियों से संबंधित सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

भारत, वर्ष 2047 तक एक सशक्त तथा समृद्ध राष्ट्र बनने की आकांक्षा रखता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधारों की आवश्यकता है। शिक्षा किसी भी देश के विकास की आधारशिला होती है। यह समाज, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देती है। वर्तमान में शिक्षा प्रणाली का मुख्य लक्ष्य केवल विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए सक्षम बनाना भी है। यह शोध अध्ययन भारत की शिक्षा प्रणाली में आवश्यक परिवर्तनों की ओर ध्यान केंद्रित करता है, जो विद्यार्थियों को बेहतर कौशल, रचनात्मकता तथा समावेशी दृष्टिकोण प्रदान करने में सहायक हो। इस शोध अध्ययन में विभिन्न उत्तरदाताओं-विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रबंधन तथा शोधार्थियों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर समावेशी शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक शिक्षा और वैश्विक मानकों के समावेश जैसी रणनीतियों का विश्लेषण किया गया है। इस प्रक्रिया

**सहायक आचार्य*, राजकीय महाविद्यालय, रजा नगर, रामपुर, उत्तर प्रदेश 244 924

के माध्यम से यह शोध अध्ययन उन सुधारों को प्रस्तुत करता है, जो भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने में सहायता कर सकते हैं। इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इन सुधारों को लागू करने के लिए व्यावहारिक एवं प्रभावी रणनीतियों का प्रस्ताव करना है, ताकि शिक्षा प्रणाली को समृद्ध, समावेशी और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके।

शोध प्रविधि

यह शोध अध्ययन (वर्ष 2023–24 में) उत्तराखंड के कुमायूँ क्षेत्र एवं उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद मंडल के शैक्षणिक संस्थानों पर आधारित है। इस शोध अध्ययन में 200 उत्तरदाताओं को शामिल करते हुए एक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया, जिसमें 50 विद्यार्थी, 50 शिक्षक, 50 प्रशासक एवं 50 शोधार्थी शामिल थे। प्रत्येक समूह से संबंधित प्रश्नों के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए। सर्वेक्षण में 10 प्रमुख सुधार रणनीतियों के बारे में उनके दृष्टिकोण और सहमति प्रतिशत को मापा गया। उत्तरदाताओं ने शैक्षिक सुधार की आवश्यकता, वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए आवश्यक कौशल शिक्षा के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। एकत्रित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिसमें विभिन्न दृष्टिकोणों को समेकित किया तथा शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त रणनीतियों की पहचान की गई। इसके अतिरिक्त, व्यावहारिक उदाहरणों और नीति दृष्टिकोणों के संदर्भ भी शामिल किए गए।

भारत@2047 के लिए शिक्षा प्रणाली को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे— शिक्षा की गुणवत्ता में असमानता, डिजिटल विभाजन, पुरानी पाठ्यक्रम संरचना, शिक्षकों की कमी एवं समावेशी शिक्षा का अभाव। समस्या समाधान, रचनात्मकता तथा आलोचनात्मक सोच की कमी भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। प्रमुख समस्याओं में भाषा संबंधी बाधाएँ और औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप न होने वाले पाठ्यक्रम भी शामिल हैं। शिक्षा के लिए सीमित बजट और विद्यालय ड्रॉपआउट दर इन समस्याओं को और अधिक जटिल बनाते हैं।

तालिका 1— विकसित@भारत 2047 हेतु भारत की शिक्षा प्रणाली में विद्यमान चुनौतियाँ

क्र. सं.	चुनौती	विवरण
1.	रचनात्मकता तथा नवाचार पर कम ध्यान केंद्रित करना	शिक्षा प्रणाली मुख्यतः रटने तथा परीक्षा-आधारित ज्ञान पर निर्भर है। उदाहरण— विद्यार्थियों में समस्या-समाधान तथा उद्यमिता के कौशल का अभाव है।
2.	डिजिटल विभाजन	डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में असमानता, विशेषकर ग्रामीण इलाकों में यह एक प्रमुख समस्या है। उदाहरण— कई ग्रामीण विद्यालयों में इंटरनेट कनेक्शन तथा स्मार्ट क्लासरूम की अनुपलब्धता है।
3.	पुराना पाठ्यक्रम	वर्तमान पाठ्यक्रम तेजी से विकसित हो रही तकनीकी एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है। उदाहरण— विद्यालयों में प्रोग्रामिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा साइबर सुरक्षा जैसे विषयों का अभाव है।
4.	सीमित बजट	शिक्षा क्षेत्र के लिए निर्धारित बजट अपर्याप्त है। उदाहरण— विद्यालयों में आधारभूत संरचना एवं उपकरणों की कमी है।

5.	समावेशी शिक्षा का अभाव	दिव्यांग तथा वंचित वर्ग के बच्चों को शिक्षा में उचित अवसर नहीं मिल पाते हैं। उदाहरण— दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचा तथा संसाधनों की कमी है।
6.	शिक्षकों तथा प्रशिक्षण की कमी	योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी एक गंभीर चुनौती है। उदाहरण— अधिकांश सरकारी विद्यालयों में शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात उचित नहीं है।
7.	भाषायी चुनौतियाँ	विभिन्न भाषाओं में अध्ययन की कमी, ग्रामीण तथा क्षेत्रीय विद्यार्थियों के लिए कठिनाई उत्पन्न करती है। उदाहरण— अंग्रेजी भाषा में ज्ञान की कमी के कारण कई विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।
8.	विद्यालय में अवरोध एवं अवरोधन की दर	आर्थिक तथा सामाजिक कारणों से कई विद्यार्थी अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं। उदाहरण— किशोरावस्था में विशेष रूप से लड़कियों के विद्यालय छोड़ने की दर अधिक है।
9.	विभिन्न क्षेत्रों में शैक्षणिक गुणवत्ता में भिन्नता	शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण भिन्नता विद्यमान है। उदाहरण— ग्रामीण विद्यालयों में आवश्यक सुविधाओं तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है।
10.	औद्योगिक आवश्यकताओं के साथ असंगति	शिक्षा प्रणाली उद्योग तथा रोजगार की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है। उदाहरण— स्नातकों में आवश्यक कौशल की कमी के कारण बेरोजगारी की समस्या बढ़ी है।

स्रोत— स्वत: सर्वेक्षण (200 उत्तरदाताओं के 04 समूहों से प्राप्त उत्तरों पर आधारित)

तालिका 1— 10 चुनौतियों को दर्शाती है तथा इन चुनौतियों का समाधान करने की दिशा में ठोस उपायों की आवश्यकता को रेखांकित करती है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए संसाधनों, डिजिटल तकनीक, शिक्षकों के प्रशिक्षण, समावेशी शिक्षा तथा रोजगारपरक कौशल विकास की आवश्यकता है, ताकि भारत वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बन सके।

चुनौतियों का समाधान इस प्रकार हो सकता है— ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों में समान पाठ्यक्रम एवं संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है। सभी विद्यालयों में डिजिटल उपकरणों तथा इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा प्रदान करना अनिवार्य है। पाठ्यक्रम को उद्योग की आवश्यकताओं एवं भविष्य की चुनौतियों के अनुसार नियमित रूप से अद्यतन करना चाहिए। शिक्षकों की भर्ती को बढ़ावा देना तथा नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना आवश्यक है। वंचित एवं दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षण उपकरण और अनुकूलित पाठ्यक्रम विकसित करना चाहिए। रचनात्मक सोच एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए परियोजना आधारित और समस्या समाधान गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए। शिक्षा को क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराना और द्विभाषी शिक्षण को बढ़ावा देना आवश्यक है। शिक्षा को रोजगारपरक बनाने के लिए उद्योगों के साथ सहयोग स्थापित करना चाहिए। शिक्षा के लिए बजट में वृद्धि करना तथा निजी निवेश को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। विद्यार्थियों के लिए मुफ्त शिक्षा, छात्रवृत्ति एवं मध्याह्न भोजन जैसी योजनाओं का विस्तार करना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सुधारों का कार्यान्वयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत प्रस्तावित सुधारों में आयु-उपयुक्त शिक्षण, मूलभूत साक्षरता, बहुविषयक शिक्षा, क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा, कौशल आधारित प्रशिक्षण तथा डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया गया है। इन सुधारों के माध्यम से विद्यार्थियों को अधिक समग्र एवं व्यावसायिक कौशल प्रदान किए जाएँगे, जबकि समान अवसर तथा समावेशिता सुनिश्चित की जाएगी।

तालिका 2 दर्शाती है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सुधारों का कार्यान्वयन शिक्षा प्रणाली को आधुनिक तथा प्रासंगिक बनाने में सहायक है। डिजिटल शिक्षा, कौशल आधारित पाठ्यक्रम तथा

तालिका 2— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित सुधार

क्र. सं.	एन.ई.पी. 2020 द्वारा प्रस्तावित सुधार	विश्लेषण
1.	विद्यालयी शिक्षा की संरचना में परिवर्तन (5+3+3+4 मॉडल)	बच्चों की शिक्षा को आयु के अनुसार विभिन्न चरणों में विभाजित करना। उदाहरण— प्री-प्राइमरी, 01 से 12वीं कक्षा तक उम्र के अनुसार शिक्षण पद्धति को अपनाना।
2.	बहुविषयक तथा समेकित शिक्षा	शिक्षा को विषयों की सीमित परिधि से बाहर निकालना। उदाहरण— विज्ञान, कला एवं मानविकी के समन्वय से प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा का कार्यान्वयन।
3.	शिक्षकों के प्रशिक्षण और पेशेवर विकास कार्यक्रम मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर बल	शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों तथा विषय सामग्री में प्रशिक्षित करना। उदाहरण— राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करना।
4.	मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर बल	2025 तक सभी बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय कौशल सुनिश्चित करना। उदाहरण— मिशन 'निपुण भारत' के अंतर्गत प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों को पढ़ाई तथा गणना के कौशल प्रदान करना।
5.	कौशल आधारित शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण	विद्यार्थियों को व्यावसायिक तथा जीवन कौशल प्रदान करना। उदाहरण— विद्यालयों में ग्राफिक डिजाइन, बढ़ईगिरी तथा इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे कौशल विकास कार्यक्रम।
6.	समानता तथा समावेशी शिक्षा	वंचित समुदायों के बच्चों को शिक्षा में समान अवसर उपलब्ध कराना। उदाहरण— आदिवासी क्षेत्रों में विद्यालयों की स्थापना तथा विद्यार्थी वृत्ति योजनाओं का विस्तार करना।
7.	डिजिटल एवं तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहन	डिजिटल शिक्षण प्लेटफार्मों के माध्यम से शिक्षा की पहुँच को बढ़ाना। उदाहरण— 'दीक्षा' पोर्टल तथा वर्चुअल प्रयोगशालाओं का उपयोग करना।
8.	आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच का संवर्धन	शिक्षा प्रणाली में रचनात्मकता एवं तार्किक चिंतन को प्रोत्साहित करना। उदाहरण— कक्षाओं में बहस, केस अध्ययन और समस्या समाधान गतिविधियों का समावेशन करना।
9.	शिक्षा में तकनीकी सुधार और अनुसंधान पर ध्यान	शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं आँकड़ों के विश्लेषण का उपयोग करना। उदाहरण— ए.आई. आधारित लर्निंग एनालिटिक्स उपकरणों की स्थापना करना।
10.	क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा का महत्व	कक्षा 5 तक मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षण। उदाहरण— राज्य बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम का स्थानीय भाषा में अनुवाद तथा शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।

स्रोत— स्वत: सर्वेक्षण

क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के माध्यम से सभी वर्गों के लिए शिक्षा को अधिक तथा समावेशी बनाया जा सकता है। इन सुधारों का प्रभावी क्रियान्वयन भारत को 2047 में एक विकसित राष्ट्र की पहचान प्रदान करने में सहायक होगा।

विकसित भारत@2047 के तहत विद्यालयी शिक्षा का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020— यह नीति शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार का आधार है, जिसमें 5+3+3+4 संरचना, मातृभाषा में शिक्षण-अधिगम, कौशल विकास तथा डिजिटल शिक्षा शामिल हैं।

भारत सरकार के कार्यक्रम

- समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत विद्यालयों में आई.सी.टी. लैब की व्यवस्था तथा विद्यार्थियों को समावेशी शिक्षा तथा आधारभूत संरचना प्रदान की जा रही है।
- परख— परीक्षण पहल का लक्ष्य शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति का आकलन करना है। यह साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण का उपयोग करके शिक्षा की गुणवत्ता को उत्तम बनाने पर केंद्रित है।
- पीएम श्री योजना के अंतर्गत आधुनिक सुविधाओं वाले मॉडर्न विद्यालयों की स्थापना की जा रही है अथवा पुराने विद्यालयों को उन्नत किया जा रहा है।
- ई-विद्या योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को डिजिटल शिक्षा के लिए दीक्षा और स्वयं जैसे पोर्टल शुरू किए गए हैं।
- विद्या प्रवेश— ग्रेड-1 के लिए खेल-आधारित शिक्षा।

राज्य सरकारों के प्रमुख कार्यक्रम

- उत्तर प्रदेश— 'ऑपरेशन कायाकल्प' के तहत विद्यालयों के बुनियादी ढाँचे में सुधार।
- पंजाब— 'पढ़ो पंजाब, बढ़ो पंजाब' कार्यक्रम ने विद्यार्थियों की लिखने तथा पढ़ने की क्षमता में सुधार किया।
- हरियाणा— 'सुपर-100 कार्यक्रम' में मेधावी विद्यार्थियों को मुफ्त कोचिंग।
- दिल्ली— 'हैप्पीनेस करिकुलम' और 'देशभक्ति करिकुलम' से मानसिक एवं नैतिक विकास।
- महाराष्ट्र— शाला (विद्यालय) सिद्धि अभियान और ई-शिक्षा परियोजना।
- मध्य क्षेत्र— सी.एम. राइज विद्यालयों में स्मार्ट क्लास तथा लैब का प्रावधान।
- बिहार— छात्राओं को 'मुख्यमंत्री बालिका प्रोत्साहन योजना' के माध्यम से धन प्रदान करना।
- झारखण्ड— बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए साइकिल वितरण और 'विद्या धन योजना'
- छत्तीसगढ़— 'सपने साकार योजना' के माध्यम से आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षण।
- पश्चिम बंगाल— 'कन्याश्री प्रकल्प' तथा 'सबुज साथी योजना' के माध्यम से ग्रामीण विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करना।
- ओडिशा— मातृभाषा शिक्षा के लिए 'मू मिशन'
- जम्मू और कश्मीर— 'चिनार शिक्षा योजना' तथा 'सुपर-50' के माध्यम से मेधावी विद्यार्थियों की सहायता करना।

- हिमाचल प्रदेश— स्मार्ट विद्यालय , आदर्श विद्यालय योजना के तहत।
- उत्तराखंड— राजीव नवोदय विद्यालय और 'ज्ञानोदय योजना' ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए।

जनशिक्षा और आई.टी.आई. संस्थानों ने नए पाठ्यक्रम व उपकरणों को अपनाकर कौशल विकास को बढ़ावा दिया है। 60 लाख लोग स्किल इंडिया डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पंजीकृत हुए। (कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय-2024) सरकार ने कौशल विकास को समावेशी और रोजगारोन्मुख बनाया है।

विकसित भारत@2047 के लिए तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है, जो विद्यार्थियों को वैश्विक कौशल, आधुनिक शिक्षण विधियों तथा समस्या समाधान की क्षमता प्रदान करे। डिजिटल साक्षरता, रचनात्मकता एवं नवाचार को बढ़ावा देना प्राथमिकता होनी चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा, मूल्य आधारित शिक्षा व अंतरराष्ट्रीय मानकों का समावेशन अनिवार्य है।

तालिका 3— विकसित@भारत 2047 और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता

क्र. सं.	शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता	व्यावहारिक उदाहरण	सहमति प्रतिशत
1.	समस्या समाधान तथा तार्किक चिंतन का संवर्धन	प्रोजेक्ट आधारित कार्य तथा केस अध्ययन का प्रयोग।	87%
2.	आधुनिक शिक्षण तकनीकें	स्मार्ट कक्षाओं और आभासी वास्तविकता (वर्चुअल रियलिटी) पर आधारित शिक्षण विधियाँ।	85%
3.	वैश्विक अनुभव	विद्यार्थी विनिमय कार्यक्रम और अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक प्रतियोगिताएँ।	81%
4.	व्यावसायिक शिक्षा का समावेश	विद्यालयों में डिजिटल मार्केटिंग, ग्राफिक डिजाइन तथा ई-कॉमर्स पाठ्यक्रम।	82%
5.	वैश्विक कौशल पर आधारित शिक्षा	विद्यालयी पाठ्यक्रम में प्रोग्रामिंग, डेटा विश्लेषण तथा विदेशी भाषाओं का समावेश।	88%
6.	डिजिटल साक्षरता का संवर्धन	'दीक्षा' ऐप तथा वर्चुअल प्रयोगशालाओं का उपयोग।	90%
7.	अंतरराष्ट्रीय शिक्षा मानकों का समावेश	पीसा जैसे मानकों के आधार पर मूल्यांकन प्रक्रिया।	80%
8.	रचनात्मकता तथा नवाचार को बढ़ावा	विद्यालय स्तर पर हैकाथॉन एवं नवाचार प्रतियोगिताओं का आयोजन।	84%
9.	समावेशी शिक्षा प्रणाली	विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए अनुकूलित कक्षाओं का विकास।	78%
10.	मूल्य आधारित शिक्षा	कक्षाओं में नैतिक शिक्षा तथा सामुदायिक सेवा परियोजनाओं का समावेश।	75%

स्रोत— स्वत: सर्वेक्षण (200 उत्तरदाताओं के 04 समूहों से प्राप्त उत्तरों और सर्वोच्च सहमति प्रतिशत पर आधारित)

तालिका 3 दर्शाती है कि शिक्षा प्रणाली में डिजिटल साक्षरता (90 प्रतिशत), वैश्विक कौशल (88 प्रतिशत) तथा समस्या-समाधान कौशल (87 प्रतिशत) को प्राथमिकता दी गई है। साथ ही, आधुनिक शिक्षण विधियों (85 प्रतिशत), व्यावसायिक शिक्षा (82 प्रतिशत) तथा रचनात्मकता (84 प्रतिशत) को भी महत्वपूर्ण माना गया। मूल्य आधारित एवं समावेशी शिक्षा (75 प्रतिशत-78 प्रतिशत) पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

तालिका 4— विकसित@भारत 2047 के लिए विद्यालयी शिक्षा में सुधार हेतु रणनीतियाँ

क्र. सं.	सुधार की रणनीति	व्यावहारिक उदाहरण	सहमति प्रतिशत (विद्यार्थी)	सहमति प्रतिशत (शिक्षक)	सहमति प्रतिशत (विद्यालय प्रबंधन)	सहमति प्रतिशत (शोधार्थी)
1.	समान तथा समावेशी शिक्षा	एकलव्य मॉडल विद्यालय एवं दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विशेष शैक्षणिक सुविधाओं का प्रावधान।	80%	85%	82%	84%
2.	डिजिटल साक्षरता एवं तकनीकी शिक्षा	स्मार्ट क्लासरूम तथा 'दीक्षा' जैसे ई-लर्निंग प्लेटफार्मों का विस्तार किया जा रहा है।	90%	85%	86%	92%
3.	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए वित्तीय संसाधनों में वृद्धि	सी.एस.आर. (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पोन्सिब्लिटी) के अंतर्गत निजी क्षेत्र के साथ सहयोग और विद्यालयों में अवसंरचना सुधार पर ध्यान दिया जा रहा है।	70%	78%	90%	88%
4.	भाषायी तथा क्षेत्रीय विविधताओं का समर्थन	कक्षा 5 तक मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की नीति को लागू किया गया है।	78%	80%	72%	75%
5.	अंतरराष्ट्रीय शिक्षा मानकों का समावेश	पीसा (प्रोग्राम फॉर इंटरनेशनल एसेसमेंट) मानकों के अनुरूप पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रणाली का विकास किया जा रहा है।	78%	80%	88%	85%
6.	मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशल	मिशन 'फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी' का कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जा रहा है।	82%	88%	85%	87%
7.	शिक्षकों के प्रशिक्षण तथा विकास पर ध्यान केंद्रित करना	वार्षिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा डिजिटल शिक्षण कौशल के विकास पर बल दिया जा रहा है।	75%	90%	85%	88%

8.	व्यावसायिक शिक्षा का समावेश	विद्यालयों में ग्राफिक डिज़ाइन, रोबोटिक्स तथा डिजिटल मार्केटिंग पाठ्यक्रमों को शामिल किया जा रहा है।	85%	80%	88%	90%
9.	शिक्षा में रचनात्मकता तथा नवाचार को प्रोत्साहित करना	हैकाथॉन, विज्ञान मेलों तथा नवाचार परियोजनाओं का आयोजन किया जा रहा है।	88%	82%	84%	86%
10.	आलोचनात्मक सोच के विकास को बढ़ावा देना	कक्षाओं में डिबेट, केस स्टडी तथा समस्या-समाधान आधारित गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है।	85%	82%	80%	86%

स्रोत— स्वत: सर्वेक्षण (200 उत्तरदाताओं के 04 समूहों से प्राप्त सहमति प्रतिशत पर आधारित)

तालिका 4 दर्शाती है कि सर्वेक्षण के उत्तरदाताओं की सहमति के अनुसार भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए विद्यालयी शिक्षा में सुधार की एक प्रभावी रणनीति में समावेशी तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्राथमिकता दी गई है। तालिका 4 के आधार पर चार समूहों (विद्यार्थी, शिक्षक, प्रबंधन तथा शोधार्थी) के सहमति प्रतिशत में अंतर का विश्लेषण करने के लिए एनोवा परीक्षण का उपयोग किया गया। एनोवा परीक्षण के निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

एफ-सांख्यिकी— 1.735, पी-मूल्य— 0.177

विश्लेषण के अनुसार पी-मूल्य (0.177) 0.05 से अधिक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न समूहों (विद्यार्थी, शिक्षक, विद्यालय प्रबंधन तथा शोधार्थी) के सहमति प्रतिशत में सांख्यिकीय रूप से कोई विशेष भिन्नता नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि इन सभी समूहों की सहमति समान स्तर पर है, उनके बीच का अंतर मात्रात्मक रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने हेतु विद्यालयी शिक्षा में सुधार अनिवार्य है। शिक्षा प्रणाली को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप एवं रोजगारपरक बनाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करना होगा। शिक्षा में नवाचार तथा तकनीकी उन्नति के माध्यम से इसे सशक्त एवं प्रासंगिक बनाया जा सकता है।

पोस्ट-हॉक परीक्षण (जैसे टुकी टेस्ट) का उपयोग किया गया है, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि किन समूहों के बीच भिन्नता है।

तालिका 5— विकसित@भारत 2047 के लिए फ्रेमवर्क हेतु उत्तरदाताओं की सहमति प्रतिशत सीमा

उत्तरदाताओं की सहमति प्रतिशत सीमा	विद्यार्थी समूह	शिक्षक समूह	प्रबंधन समूह	शोधार्थी समूह
औसत सहमति प्रतिशत सीमा	81.10%	83.00%	84.00%	86.10%
न्यूनतम सहमति प्रतिशत सीमा	70.00%	78.00%	72.00%	75.00%
अधिकतम सहमति प्रतिशत सीमा	90.00%	90.00%	90.00%	92.00%

स्रोत— तालिका 4 के अनुसार (200 उत्तरदाताओं के 04 समूहों से प्राप्त सहमति प्रतिशत पर आधारित)

आरेख 1— टुकी टेस्ट (अधिकतम सहमति प्रतिशत, औसत सहमति प्रतिशत, न्यूनतम सहमति प्रतिशत समूह सीमा)

आरेख 1— टुकी टेस्ट के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी समूह का मानक विचलन सबसे अधिक (6.14) है, जो यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों की राय में अधिक विविधता है। प्रबंधन समूह का मानक विचलन 4.88 है, जबकि शोधार्थी समूह का मानक विचलन 4.32 है। इसका अर्थ है कि प्रबंधन समूह की राय, शोधार्थी समूह की तुलना में अधिक विविध है, लेकिन दोनों की विविधता शिक्षकों की तुलना में अधिक तथा विद्यार्थियों की तुलना में कम है। शिक्षकों की राय सबसे अधिक सुसंगत है, जिसका मानक विचलन 3.89 है। अधिकतम सहमति प्रतिशत सीमा 92.00 प्रतिशत शोधार्थी समूह का है, जबकि न्यूनतम सहमति की प्रतिशत सीमा 70.00 प्रतिशत विद्यार्थी समूह का है। बॉक्सप्लॉट विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सभी समूहों के बीच सहमति के स्तर में थोड़ी भिन्नता है, लेकिन उनके मान एक-दूसरे के निकट हैं।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार आवश्यक है। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि उत्तरदाताओं ने व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल साक्षरता तथा समावेशी शिक्षा पर बल दिया। शिक्षा में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने, शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार व समान अवसरों के माध्यम से सभी वर्गों तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। वर्ष 2047 तक एक विकसित भारत के लिए कुशल और नवाचारी मानव संसाधन का निर्माण शिक्षा की गुणवत्ता और उसकी प्रासंगिकता पर निर्भर करेगा। इसमें आधुनिक पाठ्यक्रम, व्यावहारिक शिक्षा, डिजिटल लर्निंग, शिक्षक प्रशिक्षण, उद्यमिता, समावेशी शिक्षा आदि तत्व शामिल हैं, जो विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए सक्षम बनाएँगे। विकसित भारत@2047 के लिए विद्यालयी शिक्षा प्रणाली के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास एवं सुझाव—

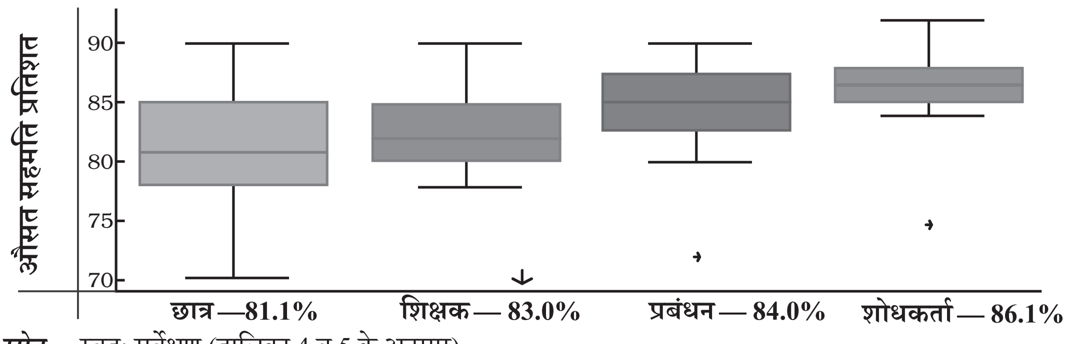

स्रोत— स्वत: सर्वेक्षण (तालिका 4 व 5 के अनुसार)

वैश्विक शैक्षिक विकास एजेंडा के 2030 तक सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना, समावेशी तथा समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना (एस.डी.जी. 4); राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस प्रमुख लक्ष्य तथा उद्देश्य (एस.डी.जी.) को प्राप्त करने के लिए संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन की आवश्यकता पर बल देती है। रा.शै.अ.प्र.प. के मार्गदर्शन में नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) तथा नई राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) द्वारा आज और कल के हमारे सभी बच्चों के लिए, भारत के भविष्य के लिए — एक शैक्षिक रूप से मजबूत और आकांक्षी, व्यावहारिक रूप से लागू करने योग्य, सिस्टम से पूर्ण समर्थन के साथ सर्वोत्तम संभव शिक्षा प्राप्त करने वाली पाठ्यचर्या विकसित करने पर निरंतर कार्य किया जा रहा है। उत्तरदाताओं द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं के परिप्रेक्ष्य में विकसित भारत@2047 के लिए विद्यालयी शिक्षा प्रणाली के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सुझाव प्राप्त हुए। इस लक्ष्य को शिक्षा प्रणाली में निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है—

- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर उच्च गुणवत्ता वाले संसाधनों का एक राष्ट्रीय भंडार डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग (DIKSHA) पर उपलब्ध कराया जाएगा। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के बीच मौजूद भाषायी अवरोध को पाटने में सहायता करने के लिए इसे शीघ्रता से चालू एवं लागू किया जाना चाहिए।
- भारत को इक्कीसवीं सदी तथा चौथी औद्योगिक क्रांति की ओर ले जाने के लिए शिक्षा की क्या आवश्यकता है? इन आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम में निरंतर परिवर्तन करने की आवश्यकता है। विभिन्न विषयों में इक्कीसवीं सदी के अनुसार दक्षता विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम में व्यावहारिक पहलुओं पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।
- शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए, जो वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप हो, जिनमें प्राचीन भारत की ज्ञान परंपरा भी निहित हो। भारतीय अपनी समृद्ध, विविध, प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति, ज्ञान प्रणालियों तथा परंपराओं पर गर्व करें, ऐसा पाठ्यक्रम होना चाहिए।
- सार्वजनिक विद्यालय तथा स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालयों में सभी स्तरों के विद्यार्थियों के लिए सभी स्थानीय तथा भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली मनोरंजक और प्रेरणादायी पुस्तकें व्यापक रूप से उपलब्ध करवाने की आवश्यकता है।
- केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय व्यावहारिक कौशल को विकसित करना होगा। तकनीकी प्लेटफार्मों और ई-लर्निंग को शैक्षणिक प्रक्रिया में शामिल करना होगा, जैसे— विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल प्रयोगशालाओं तथा ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की उपलब्धता।
- उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए विद्यार्थियों में स्टार्टअप संस्कृति व समस्या समाधान की भावना को विकसित करना आवश्यक है। शिक्षा को रोजगार के साथ जोड़ना आज की अनिवार्यता है। 'स्किल इंडिया' जैसे कार्यक्रमों को विद्यालय के पाठ्यक्रम में समाहित करना।

- इक्कीसवीं सदी में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए भारत को एक प्रबुद्ध ज्ञानी समाज की आवश्यकता है, जो नवाचार एवं अनुसंधान में रुचि रखता हो। इसके लिए नियमित वित्तीय सहायता और बुनियादी ढाँचे के तेजी से विकास पर बल दिया जाना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

विकसित भारत@2047 के लिए विद्यालयी शिक्षा में व्यापक सुधार आवश्यक हैं। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शिक्षा व्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुकूल बनाना प्राथमिकता है। डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक शिक्षा, सृजनात्मकता तथा नवाचार को बढ़ावा देना एवं समस्या समाधान आधारित शिक्षा को अपनाना आवश्यक है। शिक्षकों के सतत प्रशिक्षण तथा समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन से बहुविषयक और कौशल आधारित शिक्षा संभव होगी। सर्वेक्षण में पाठ्यक्रम में डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्मार्ट क्लासरूम, मातृभाषा में शिक्षा, उद्यमिता विकास तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों को शामिल करने की आवश्यकता बताई गई। शिक्षा में क्षेत्रीय असमानताओं, डिजिटल डिवाइड, गुणवत्ता भेद को दूर कर गुणवत्तापूर्ण, सुलभ तथा रोजगारोन्मुखी शिक्षा सुनिश्चित करनी होगी। इस तरह एक नवोन्मेषी, सक्षम, वैश्विक सोच वाली युवा पीढ़ी का निर्माण संभव होगा, जो 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सक्षम होगी।

संदर्भ

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय. 2024. भारत के कौशल परिदृश्य का मार्ग प्रशस्त करना, भारत के कौशल अंतर को पाटना, भारत के कार्यबल को सशक्त बनाना, पी.आई.बी. दिल्ली, 11 सितंबर 2024 को https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2055658 से प्राप्त किया गया.

भारत सरकार. 2023. हमारा संकल्प विकसित भारत: भारत की अमृत पीढ़ी हो रही सशक्त https://viksitbharatsankalp.gov.in/public-download 11 सितंबर 2024 को प्राप्त किया गया.

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 2013. *ड्राफ्ट नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर और शिक्षा नीति*. नई दिल्ली, 26 अप्रैल, सितंबर 2024 को https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf से प्राप्त किया गया.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. भारत सरकार, नई दिल्ली नवंबर 2024 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/infocus_slider/NCF-School-Education-Pre-Draft.pdf से प्राप्त किया गया.

———. 2024. विकसित भारत— कदम विकसित भारत की ओर— एक परिदृश्य, नई दिल्ली, नवंबर 2024 को https://ncert.nic.in/pdf/module/Vikshit_Bharat_2/4_5HSK.pdf से प्राप्त किया गया.

———. 2022. *बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*, सितंबर 2024 को https://ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf से प्राप्त किया गया.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020*, भारत सरकार, सितंबर 2024 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf से प्राप्त किया गया.

सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

रजनी रंजन सिंह*
त्रिलोकी सिंह**

विद्यालयी स्तर पर अध्यापक बनने की महत्वाकांक्षा रखने वाले किसी भी विद्यार्थी के लिए शिक्षक शिक्षा के अंतर्गत संचालित किए जा रहे विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों यथा डी.एल.एड., डी.एड., बी.एड. एवं बी.पी.एड. आदि में से किसी एक कार्यक्रम में उपाधि लेनी आवश्यक है। शिक्षक शिक्षा के इन कार्यक्रमों में प्रवेश लेने के उपरांत प्रत्येक सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिका प्रमुख विषयों के रूप में सामान्यत: शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, विभिन्न विषयों का शिक्षणशास्त्र तथा वास्तविक क्षेत्र के साथ इनकी संबद्धता का अध्ययन करते हैं। इस दौरान वह पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक विषयों के अध्ययन के साथ-साथ वास्तविक विद्यालयी परिस्थितियों में इंटर्नशिप के माध्यम से शिक्षण अभ्यास का अनुभव भी प्राप्त करता है। इस प्रकार एक शिक्षण संस्थान सेवा-पूर्व अध्यापकों के सर्वांगीण विकास पर बल देता है। पाठ्यक्रम अध्ययन के साथ समय-समय पर विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं (यथा— खेल-कूद, वार्षिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, युवा महोत्सव, योग दिवस, विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे— वाद-विवाद, भाषण, प्रश्नोत्तरी आदि एवं एन.सी.सी. तथा एन.एस.एस. इत्यादि) का भी आयोजन किया जाता है। ये पाठ्य सहगामी क्रियाएँ सेवा-पूर्व अध्यापकों के मानसिक एवं शारीरिक विकास में शैक्षिक क्रियाओं के समानांतर महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। यह शोध अध्ययन गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में नामांकित सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं (डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं) पर केंद्रित है। अतः आँकड़ा विश्लेषण के उपरांत शोधार्थियों को ज्ञात हुआ कि कुल सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिकाएँ हों या मात्र सेवा-पूर्व अध्यापक हों, उनके दोनों वर्गों (पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले तथा प्रतिभाग न करने वाले) की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर है। जबकि यहाँ कुल सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक सदैव शैक्षिक प्रक्रिया का केंद्र बिंदु रहे हैं। शिक्षक, ज्ञान के निर्माण तथा प्रसार के सबसे प्रभावी कारक हैं। इसलिए स्वतंत्रता पश्चात शिक्षकों को शिक्षा नीतियों में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में शामिल किया गया है। शिक्षक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए द रिपोर्ट ऑफ द

**आचार्य*, शिक्षा विभाग (केंद्रीय शिक्षा संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 007
***प्रवक्ता*, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिण्डारी, जालौन, उत्तर प्रदेश 285 201

यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन 1 (1948–49) में कहा गया है कि "शिक्षक उन परंपराओं तथा आदर्शों का वाहक होता है, जो सामाजिक लोकाचार का निर्माण करते हैं। उसके बिना बौद्धिक तथा नैतिक गुणों के बीच कोई वास्तविक अंतर करना संभव नहीं है।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के अनुसार "किसी समाज में अध्यापकों के दर्जे से उसकी सांस्कृतिक-सामाजिक दृष्टि का पता लगता है। यह कहा जाता है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है।" शिक्षक की यह महत्वपूर्ण भूमिका वर्तमान परिदृश्य में भी प्रासंगिक है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में उल्लेखित है कि, "शिक्षक वास्तव में बच्चों के भविष्य को आकार देते हैं, अत: हमारे राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं। इस नेक योगदान के कारण ही भारत में शिक्षक समाज के सबसे अधिक सम्मानित सदस्य थे और सिर्फ सबसे अच्छे तथा विद्वान लोग ही शिक्षक बनते थे।"

सर्वमान्य है कि शिक्षा वह उचित माध्यम है, जिससे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा विश्व की भलाई के लिए देश की समृद्ध प्रतिभा एवं संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्धन किया जा सकता है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020) शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों के गुणों और शिक्षक-शिक्षा प्रणाली का संयुक्त परिणाम होती है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में जहाँ सबसे अच्छी व्यवस्था विफल हो जाती है, वहीं अच्छे शिक्षकों के होने पर किसी भी व्यवस्था की असफलता को भी काफी हद तक दूर किया जा सकता है। इसलिए शिक्षक को शिक्षण दक्षताओं में व्यावसायिक रूप से सज्जित, सर्वाधिक रूप से प्रतिबद्ध तथा दृढ़ होने की आवश्यकता है। अत: एक शिक्षक के निर्माण में जितनी आवश्यकता उसमें प्रेरणा, सामर्थ्य तथा अपने समाज के प्रति उत्तरदायित्व आदि के भावों के होने की है, उतनी ही महत्ता शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भी होती है।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक निर्माण प्रक्रिया के अंतर्गत अनेक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इनमें विद्यालयी स्तर पर शिक्षक बनने की महत्वाकांक्षा रखने वाले किसी भी विद्यार्थी के लिए शिक्षक शिक्षा के अंतर्गत संचालित किए जा रहे डी.एल.एड., डी.एड., बी.एड. एवं बी.पी.एड. आदि प्रमुख पाठ्यक्रमों में से अपनी आवश्यकता अनुरूप कोई एक पाठ्यक्रम पूर्ण करना होता है। वर्तमान में शिक्षक शिक्षा के इन सभी पाठ्यक्रमों की अवधि लगभग दो वर्ष है। शिक्षक शिक्षा के इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के उपरांत प्रत्येक सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिका प्रमुख विषयों के रूप में सामान्यत: शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, विभिन्न विषयों के शिक्षणशास्त्र तथा वास्तविक क्षेत्र के साथ इनकी सम्बद्धता का अध्ययन करता है। इस दौरान वह पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक विषयों के अध्ययन के साथ-साथ वास्तविक विद्यालयी परिस्थितियों में इंटर्नशिप हेतु भी भेजा जाता है, जिससे वह शिक्षण अभ्यास का वास्तविक अनुभव प्राप्त कर सके। इस प्रकार एक प्रशिक्षण संस्थान सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के सर्वांगीण विकास पर बल देता है। वहाँ पाठ्यक्रम अध्ययन के साथ-साथ विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं (यथा— खेल-कूद, वार्षिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, युवा महोत्सव, योग

दिवस, विभिन्न प्रतियोगिताएँ, जैसे— वाद-विवाद, भाषण, प्रश्नोत्तरी आदि एवं एन.सी.सी. तथा एन.एस.एस. इत्यादि) का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता है। ये पाठ्य सहगामी क्रियाएँ सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के मानसिक एवं शारीरिक विकास में शैक्षिक क्रियाओं के समान महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अत: राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भी उच्चतर गुणवत्तायुक्त शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं के लिए शिक्षण संस्थानों में 'जीवंत कैंपस' होने की आवश्यकता पर बल देती है। साथ ही, यह आशा करती है कि आगे इस दिशा में विद्यार्थियों को खेल, संस्कृति या कला क्लब, पर्यावरण क्लब, गतिविधि क्लब, सामुदायिक सेवा परियोजना आदि में शामिल होने के लिए समुचित अवसर दिए जाएँगे।

साहित्य समीक्षा

अद्यतन विद्यार्थियों के जीवन में विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका को केंद्र में रखते हुए कतिपय शोध अध्ययन संपन्न किए जा चुके हैं। इन शोध अध्ययनों में विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि, स्वास्थ्य तथा मानसिक विकास आदि पर पड़ने वाले प्रभाव को देखने का प्रयास किया गया है। दोडके एवं दुबे (2022) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक होती हैं। श्रीवास्तव एवं शुक्ला (2021) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इन क्रियाओं के माध्यम से उनमें नैतिक शिक्षा, नेतृत्व की क्षमता, सदाचार की शिक्षा तथा अनुशासन एवं विद्यालय के प्रति भावनात्मक उन्नयन का विकास होता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है। शर्मा (2020) ने शोध अध्ययन से ज्ञात किया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ज्ञानात्मक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भावसर (2020) के शोध अध्ययन से ज्ञात किया कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में विषयवस्तु की समझ को समृद्ध करती है। ये क्रियाएँ विद्यार्थियों में भाषा कौशलों, सामाजिक कौशलों तथा सांगठनिक कौशलों के साथ-साथ नेतृत्व करने के गुण का विकास करती है। सामी एवं अन्य (2020) के अनुसार महाविद्यालय, विद्यार्थियों के पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सहसंबंध है। महाविद्यालय स्तर पर आयोजित की जाने वाली ये क्रियाएँ उनके ज्ञान वृद्धि में सहयोगी होती है। हबीब (2018) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, जो विद्यार्थी किसी भी स्पोर्ट्स, नाटक या साहित्यिक क्रियाकलाप में प्रतिभाग करते हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की पाई गई, जबकि टेलीविजन आदि देखेने में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तुलनात्मक रूप से कम सकारात्मक पाई गई। सिंह (2017) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन और व्यक्तित्व विकास पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रभाव सकारात्मक होता है। सिंह (2017) ने ज्ञात किया कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास करती है।

शोध की आवश्यकता

प्रत्येक शिक्षण संस्थान का मूल उद्देश्य अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देना है। जिससे विद्यार्थी भावी जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में आने वाली किसी भी प्रकार की कठिनाइयों का सामना कर सकें। यही कारण है कि शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोगत्यात्मक तीनों पक्षों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रक्रिया संपादित की जाती है। शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास के लिए जहाँ पाठ्यक्रम की विषयवस्तु उत्तरदायी है, वहीं भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों के विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सहारा लिया जाता है। अद्यतन क्रियान्वित हो रही विभिन्न नीतियाँ हों या विभिन्न आयोगों की अनुशंसाएँ, समय-समय पर सभी ने कक्षा शिक्षण के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर प्रमुखता में बल दिया है। भारत सरकार ने अपने नागरिकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 'राष्ट्रीय खेल दिवस' मनाने के साथ-साथ 'फिट इंडिया मूवमेंट', 'खेलो इंडिया' एवं 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' आदि जैसे कई अभिनव प्रयास किए हैं। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, मानसिक स्वास्थ्य, विद्यालयी समायोजन तथा शारीरिक विकास जैसे चरों के सापेक्ष किए गए विभिन्न शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के अकादमिक उन्नयन को प्रभावित करती है। अद्यतन प्राप्त शोध अध्ययनों में कतिपय शोध ऐसे हैं, जो प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर संपादित किए गए हैं, परंतु शोध समीक्षा के दौरान शोधार्थी ऐसे एक भी शोध अध्ययन को प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं, जो डी.एल.एड. कार्यक्रम में नामांकित सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं को केंद्र में रखकर संपादित किया गया हो। वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य के विभिन्न डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में हजारों प्रशिक्षु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। यहाँ यह भी विचारणीय है कि प्रतिवर्ष डी.एल.एड. प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षुओं में अधिकतर प्रशिक्षु गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों से आते हैं। अत: शोधार्थियों ने इन गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में डी.एल.एड. कार्यक्रम में नामांकित सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के संबंध में इस तरह के शोध अध्ययनों की अनुपलब्धता को देखते हुए अपने शोध अध्ययन के रूप में उपरोक्त विषय का चयन किया।

समस्या कथन

अद्यतन पूर्ण किए जा चुके शोध अध्ययनों की समीक्षा के उपरांत स्वयं तैयार किए गए शोध प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए शोधार्थियों ने अपने शोध अध्ययन हेतु जिस समस्या कथन का चयन किया, वह इस प्रकार था— "सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि (एक तुलनात्मक अध्ययन)"

समस्या कथन में प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषा

इस शोध समस्या कथन में पाठ्य सहगामी क्रिया, सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिकाएँ तथा शैक्षिक उपलब्धि आदि शब्द प्रयुक्त हुए, उनकी संक्रियात्मक परिभाषा इस प्रकार है—

- **पाठ्य सहगामी क्रिया**— शोध अध्ययन में प्रयुक्त पाठ्य सहगामी क्रिया शब्द से तात्पर्य उन क्रियाओं से है, जो शैक्षिक गतिविधियों के समानांतर शिक्षण संस्थानों में समय-समय पर आयोजित की जाती हैं। यहाँ पर 'डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूटस ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिग गाइडलाइन 1989' के अनुसार पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ सेवा-पूर्व प्रशिक्षु अध्यापकों व अध्यापिकाओं के लिए ऐच्छिक हैं। इस शोध अध्ययन हेतु इन क्रियाओं में प्रशिक्षणात्मक क्रियाएँ (राष्ट्रीय सेवा योजना एन.एस.एस. राष्ट्रीय कैडेट कोर एन.सी.सी. स्कॉउट एंड गाइड एवं रेडक्रॉस), साहित्यिक क्रियाएँ (गोष्ठी, वाद-विवाद, कवि सम्मेलन), सांस्कृतिक क्रियाएँ (संगीत, नाटक, चित्रकला, फोटोग्राफी), जनतंत्रात्मक क्रियाएँ (छात्र संघ या छात्र परिषद या छात्र सभा), पर्यटन या भ्रमण, योगाभ्यास प्रतियोगिता तथा प्रशिक्षुओं द्वारा खेले जाने वाले विभिन्न खेलों आदि को शामिल किया गया।
- **सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिका**— सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिका वह व्यक्ति (पुरुष या महिला) है, जो अध्यापक बनने की योजना में रत होकर अपने जीवन का एक निश्चित समय किसी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूर्ण करने में निवेश करता है। यहाँ सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं से तात्पर्य डी.एल.एड. कार्यक्रम में नामांकित पुरुष या महिला प्रशिक्षुओं से है, जो गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन (डी.एल.एड.) कार्यक्रम के तृतीय सेमेस्टर में प्रशिक्षणरत थे।
- **शैक्षिक उपलब्धि**— डी.एल.एड. कार्यक्रम में नामांकित सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि को उनके द्वारा गत सेमेस्टर परीक्षाओं में प्राप्त स्थिति के रूप में परिभाषित किया जाता है। इस शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिका के समग्र प्राप्तांकों या प्रतिशत अंकों से है, जो उन्होंने अपने प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा में प्राप्त किए थे।

शोध प्रश्न

शोधार्थियों ने शोध समस्या के चयन हेतु शोध प्रश्नों को तैयार किया, वे इस प्रकार थे—

1. गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे, सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर क्या है?

1. क्या विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य कोई अंतर है?

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन हेतु शोध प्रश्नों एवं समस्या कथन के आधार पर निर्धारित किए गए शोध उद्देश्य इस प्रकार थे—

1. गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के उपलब्धि स्तर को ज्ञात करना।
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य अंतर ज्ञात करना।

शोध परिकल्पना

इस शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार थीं—

1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में नामांकित सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
    - 1.1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में नामांकित सेवा-पूर्व अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
    - 1.2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाली एवं प्रतिभाग न करने वाली गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में नामांकित सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि

इस शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध विधि एवं सर्वेक्षण तकनीक का प्रयोग किया गया था—

- जनसंख्या— उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद जालौन स्थित गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में संचालित डी.एल.एड. कार्यक्रम के तृतीय सेमेस्टर (डी.एल.एड. बैच–2022) में प्रशिक्षणरत सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं को शामिल किया गया था।
- प्रतिदर्श— प्रतिदर्श के रूप में कुल 175 सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण चयन विधि द्वारा किया गया, जिनमें 70 सेवा-पूर्व अध्यापक तथा 105 सेवा-पूर्व अध्यापिकाएँ शामिल थीं।
- शोध उपकरण— शोधार्थियों द्वारा आँकड़े संगृहीत करने हेतु 'स्व-निर्मित मुक्त प्रश्नावली' का उपयोग किया गया।
- सांख्यिकीय विधियाँ— संगृहीत आँकड़ों के विश्लेषण में सांख्यिकीय विधियों के अंतर्गत 'प्रतिशत', 'माध्य', 'चतुर्थांक', 'मानक विचलन' तथा 'सी. आर. परीक्षण' आदि का उपयोग किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण

इस शोध अध्ययन (वर्ष 2024) में डी.एल. एड. कार्यक्रम में नामांकित कुल 175 सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं ने प्रतिभाग किया था, जिनमें 70 सेवा-पूर्व अध्यापक तथा 105 सेवा-पूर्व अध्यापिकाएँ थीं। (तालिका 1) कुल 175 में से 85 सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं ने स्वीकार किया कि उन्होंने अपने शिक्षाकाल में विभिन्न पाठ्यक्रमों के दौरान शिक्षण संस्थानों में समय-समय विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग किया था, जबकि शेष 90 सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिकाएँ उन पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति उदासीन थे।

तालिका 1— सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की जनसांख्यिकीय स्थिति

वर्ग	सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की संख्या		कुल संख्या
	प्रतिभाग करने वाले	प्रतिभाग न करने वाले	
सेवा-पूर्व अध्यापक	34	36	70
सेवा-पूर्व अध्यापिकाएँ	51	54	105
कुल संख्या	**85**	**90**	**175**

शोध उद्देश्य 1— गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर को ज्ञात करना।

तालिका 2 दर्शाती है कि इस शोध अध्ययन में प्रतिभाग करने वाले कुल 175 सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं ने डी.एल.एड. कार्यक्रम की प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा में कुल पूर्णांक 800 के सापेक्ष 480 से 764 तक अंक प्राप्त किए थे। परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर कुल सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं में से लगभग 48.57 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं, जिन्होंने 664 से 700 तक अंक प्राप्त किए थे, की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत पाया गया। यहाँ 27.43 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं, जिनके प्राप्तांक 701 से 764 तक थे, की शैक्षिक

तालिका 2— सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर

	शैक्षिक उपलब्धि स्तर	शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांक विस्तार	सेवा-पूर्व अध्यापकों/ अध्यापिकाओं की संख्या	सेवा-पूर्व अध्यापकों/ अध्यापिकाओं का प्रतिशत
कुल सेवा-पूर्व अध्यापक व अध्यापिकाएँ	उच्च	701–764	48	27.43
	औसत	664–700	85	48.57
	निम्न	480–663	42	24.00
	कुल	**480–764**	**175**	**100**
सेवा-पूर्व अध्यापक	उच्च	700–764	18	25.71
	औसत	662–699	34	48.57
	निम्न	503–660	18	25.71
	कुल	**503–764**	**70**	**100**
सेवा-पूर्व अध्यापिकाएँ	उच्च	702–736	27	25.71
	औसत	665–701	53	50.48
	निम्न	480–664	25	23.81
	कुल	**480–736**	**105**	**100**

उपलब्धि का स्तर उच्च पाया गया। जबकि शेष 24 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं, व जिन्होंने 480 से 663 के मध्य अंक प्राप्त किए थे, की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न पाया गया।

यहाँ कुल सेवा-पूर्व अध्यापकों से संबंधित आँकड़े प्रस्तुत करते हैं कि कुल 70 सेवा-पूर्व अध्यापकों ने परीक्षा में कुल पूर्णांक 800 के सापेक्ष 503 से 764 तक अंक प्राप्त किए थे। परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर कुल सेवा-पूर्व अध्यापकों में से लगभग 48.57 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापकों, जिन्होंने परीक्षा में 662 से 699 तक अंक प्राप्त किए थे, की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत, 25.71 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापकों (परीक्षा में प्राप्तांक 700 से 764 तक) का उच्च और 25.71 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापकों (परीक्षा में प्राप्तांक 503 से 660 तक) का निम्न पाया गया।

जबकि कुल सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं से संबंधित आँकड़े प्रस्तुत करते हैं कि कुल 105 सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं ने परीक्षा में कुल पूर्णांक 800 के सापेक्ष 480 से 736 तक अंक प्राप्त किए थे। परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर कुल सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं में से लगभग 50.48 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं, जिन्होंने परीक्षा में 665 से 701 तक अंक प्राप्त किए थे, की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत, 25.71 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं (परीक्षा में प्राप्तांक 702 से 736 तक) का उच्च तथा 23.81 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं (परीक्षा में प्राप्तांक 480 से 664 तक) का शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न पाया गया।

शोध उद्देश्य 2— पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अंतर ज्ञात करना।

परिकल्पना 1— पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले कुल सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के लिए आकलित क्रांतिक अनुपात का मान 2.34 है, जो कि स्वतंत्रता अंश 173 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.97 से अधिक है। यह परिणाम शून्य परिकल्पना 1 को अस्वीकार करता है तथा दर्शाता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। उपरोक्त परिणाम सेवा-पूर्व अध्यापकों व

तालिका 3

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अंतर	मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता अंश	सार्थकता स्तर
प्रतिभाग करने वाले	85	684	35.43	15	6.40	2.34	173	0.05 स्तर पर असार्थक
प्रतिभाग न करने वाले	90	669	48.58					

अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों (प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले) के शैक्षिक मध्यमानों के अवलोकन से भी स्पष्ट होता है। यहाँ शैक्षिक मध्यमानों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले वर्ग के सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर, प्रतिभाग न करने वाले वर्ग की तुलना में बेहतर पाया गया है।

परिकल्पना 2— पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 4

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अंतर	मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता अंश	सार्थकता स्तर
प्रतिभाग करने वाले	34	687	26.57	20	9.41	2.13	68	0.05 स्तर पर असार्थक
प्रतिभाग न करने वाले	36	667	49.42					

तालिका 4 से स्पष्ट है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए आकलित क्रांतिक अनुपात का मान 2.13 है, जो कि स्वतंत्रता अंश 68 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.00 से अधिक है। यह परिणाम शून्य परिकल्पना 2 को अस्वीकार करता है और दर्शाता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। उपरोक्त परिणाम सेवा-पूर्व अध्यापकों के दोनों वर्गों (प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले) के शैक्षिक मध्यमानों के अवलोकन से भी स्पष्ट होता है। यहाँ पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले वर्ग के सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर, प्रतिभाग न करने वाले वर्ग की तुलना में बेहतर पाया गया है।

परिकल्पना 3— पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाली एवं प्रतिभाग न करने वाली सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 5

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अंतर	मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	स्वतंत्रता अंश	सार्थकता स्तर
प्रतिभाग करने वाली	51	683	40.46	13	8.69	1.50	103	0.05 स्तर पर सार्थक
प्रतिभाग न करने वाली	54	670	48.44					

तालिका 5 के अवलोकन से ज्ञात हुआ कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाली एवं प्रतिभाग न करने वाली सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के लिए आकलित क्रांतिक अनुपात का मान 1.50 है, जो स्वतंत्रता अंश 103 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.98 से

कम है। यह परिणाम शून्य परिकल्पना 3 को स्वीकार करता है तथा दर्शाता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाली एवं प्रतिभाग न करने वाली सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। जबकि सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों (प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले) के शैक्षिक मध्यमानों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले वर्ग की सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर, प्रतिभाग न करने वाले वर्ग की तुलना में बेहतर पाया गया है। अत: सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के संदर्भ में प्राप्त उपरोक्त परिणाम की विवेचना करने हेतु सेवा-पूर्व अध्यापकों (तालिका 4) एवं अध्यापिकाओं (तालिका 5) के विभिन्न वर्गों के शैक्षिक मध्यमानों की यदि तुलना की जाए, तो प्रतीत होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों के दोनों वर्गों के शैक्षिक मध्यमानों तथा सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों के शैक्षिक मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। परंतु मानक विचलन के संदर्भ में हम पाते हैं कि सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रतिभाग न करने वाले वर्ग के मानक विचलन से, प्रतिभाग करने वाले वर्ग का मानक विचलन बहुत कम है। इसका तात्पर्य है कि प्रतिभाग न करने वाले वर्ग के सेवा-पूर्व अध्यापकों का वर्ग, प्रतिभाग करने वाले वर्ग के सेवा-पूर्व अध्यापकों की तुलना में समरूप नहीं है। यहाँ पर सेवा-पूर्व अध्यापकों तथा सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के प्रतिभाग करने वाले वर्गों के मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रतिभाग करने वाले वर्ग की तुलना में सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के प्रतिभाग करने वाले वर्ग का मानक विचलन बहुत अधिक है। इसका तात्पर्य भी यही है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रतिभाग करने वाले वर्ग की तुलना में सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के प्रतिभाग करने वाले वर्ग से प्राप्त मानों में समरूपता कम है। साथ ही, सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों के भी मानक विचलन अधिक प्राप्त हुए, जिसका तात्पर्य है कि इन दोनों वर्गों के मान भी सापेक्षिक रूप से समरूप नहीं हैं तथा समरूपता नहीं होने के कारण इनका क्रांतिक मान भी कम पाया गया है। अत: संभव है कि इसी कारण सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों (प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले) की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। आगे यदि न्यायदर्श के रूप में सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं की संख्या अधिक रखकर शोध कार्य संपादित किया जाए तो संभावना है कि इसके पीछे के वास्तविक कारणों को अधिक स्पष्ट किया जा सकेगा।

परिणाम

इस शोध अध्ययन हेतु संकलित किए गए आँकड़ों के विश्लेषण उपरांत शोधकर्ताओं को निम्नलिखित शोध परिणाम प्राप्त हुए—

- कुल सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं में से लगभग 48.57 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की डी.एल.एड. कार्यक्रम की सेमेस्टर परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि औसत स्तर की थी। जबकि 27.43 प्रतिशत सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च और 24 प्रतिशत की निम्न स्तर की। यहाँ कुल सेवा-पूर्व अध्यापकों में से लगभग 48.57

प्रतिशत की शैक्षिक उपलब्धि औसत, 25.71 प्रतिशत की उच्च और 25.71 प्रतिशत की निम्न स्तर की पाई गई। जबकि कुल सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं में से 50.48 प्रतिशत की औसत, 25.71 प्रतिशत की उच्च और 23.81 प्रतिशत की निम्न स्तर की थी।

- सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के समग्रता में प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण में पाया गया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले वर्गों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर था।
- कुल सेवा-पूर्व अध्यापकों के दोनों वर्गों (पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले) की शैक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक अंतर पाया गया।
- परंतु कुल सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों (पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले) की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जबकि यहाँ पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले वर्ग की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रतिभाग न करने वाले वर्ग के मध्यमान से अधिक पाया गया।

परिणाम का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

कक्षा शिक्षण की परिस्थितियों में पाठ्यपुस्तकें जहाँ विद्यार्थियों में सैद्धांतिक ज्ञान का विकास करती हैं, वहीं पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उनमें आवश्यक दक्षताएँ तथा कौशल विकसित करने में सहायक होती हैं। अत: विभिन्न शोध अध्ययनों के परिणामों तथा शिक्षा नीतियों की सिफारिशों के दृष्टिगत शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग स्वीकार किया गया है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षण नीति 2020 भी 'सीखने के लिए सर्वोत्तम वातावरण व विद्यार्थियों को सहयोग' के अंतर्गत प्रत्येक उच्चतर शिक्षण संस्थान में विद्यार्थियों द्वारा संकाय व अन्य विशेषज्ञों की मदद से विषय आधारित क्लब तथा गतिविधियों, जैसे— विज्ञान, गणित, कविता, भाषा, साहित्य आदि के साथ-साथ वाद-विवाद, संगीत एवं खेल आदि के लिए समर्पित क्लब व कार्यक्रम के आयोजनों के लिए अवसर एवं वित्त की व्यवस्था पर बल देती है। साथ ही, यह स्पष्ट करती है कि समय के साथ-साथ जब इन गतिविधियों के लिए विद्यार्थियों की माँग व संकाय की दक्षता हासिल हो जाए, तो इन्हें पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित किया जा सकता है।

इस शोध अध्ययन के परिणाम पूर्व में किए गए शोध अध्ययनों के परिणामों से एक सीमा तक संगत प्राप्त हुए हैं। इस शोध अध्ययन से, सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के समग्रता में प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम दर्शाते हैं कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग न करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक पाई गई है। ठीक ऐसी ही स्थिति सेवा-पूर्व अध्यापकों के व्यक्तिगत संदर्भ में पृथक रूप से प्राप्त आँकड़ों के संबंध में भी पाई गई है। ऐसे ही परिणाम, बतूल एवं अहमद (2020) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग न करने वाले विद्यार्थियों की तुलना में सक्रिय रूप से प्रतिभाग करने वाले विद्यार्थियों की

शैक्षिक उपलब्धि उच्चतम थी। सिंह (2017) एवं रेणु (2017) शोध अध्ययन में ज्ञात हुआ कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की, भाग न लेने वाले विद्यार्थियों से शैक्षिक उपलब्धि अधिक थी, परंतु सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत संदर्भ में उपरोक्त से भिन्न परिणाम प्राप्त हुआ है।

संकलित आँकड़ों के विश्लेषण उपरांत प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने वाली एवं प्रतिभाग न करने वाली सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। यद्यपि यह सिद्ध है कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में नैतिक तथा व्यावहारिक गुणों के विकास के साथ-साथ विभिन्न कौशलों के विकास में सहायक होती हैं, जो उनकी शैक्षिक उन्नति में सहायक होते हैं। अत: सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के संदर्भ में प्राप्त उक्त परिणाम की विवेचना (तालिका 4 और 5 के आधार पर) हेतु सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के विभिन्न वर्गों के शैक्षिक मध्यमानों की यदि तुलना की जाए, तो प्रतीत होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों के दोनों वर्गों के शैक्षिक मध्यमानों तथा सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों के शैक्षिक मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, परंतु मानक विचलन के संदर्भ में हम पाते हैं कि सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रतिभाग न करने वाले वर्ग के मानक विचलन से, प्रतिभाग करने वाले वर्ग का मानक विचलन बहुत कम है। इसका तात्पर्य है कि प्रतिभाग न करने वाले वर्ग के सेवा-पूर्व अध्यापकों का वर्ग, प्रतिभाग करने वाले वर्ग के सेवा-पूर्व अध्यापकों की तुलना में समरूप नहीं है।

यहाँ पर सेवा-पूर्व अध्यापकों और सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के प्रतिभाग करने वाले वर्गों के मानक विचलन द्वारा स्पष्ट होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रतिभाग करने वाले वर्ग की तुलना में सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के प्रतिभाग करने वाले वर्ग का मानक विचलन बहुत अधिक है। इसका तात्पर्य यही है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रतिभाग करने वाले वर्ग की तुलना में सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के प्रतिभाग करने वाले वर्ग से प्राप्त मानों में समरूपता कम है। साथ ही, सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों के भी मानक विचलन अधिक प्राप्त हुए, जिसका तात्पर्य है कि इन दोनों वर्गों के मान भी सापेक्षिक रूप से समरूप नहीं हैं तथा समरूपता नहीं होने के कारण इनका क्रांतिक मान भी कम पाया गया है। अत: संभव है कि इसी कारण सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के दोनों वर्गों (प्रतिभाग करने वाले एवं प्रतिभाग न करने वाले) की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। आगे यदि न्यायदर्श के रूप में सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं की संख्या अधिक रखकर शोध कार्य संपादित किया जाए, तो संभावना है कि इसके पीछे के वास्तविक कारणों को अधिक स्पष्ट किया जा सकेगा।

सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं से संबंधित उक्त परिणाम एक चिंता को जन्म देता है। सामान्यत: प्रशिक्षण के दौरान पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने से सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं के मध्य कोई भेद नहीं किया जाता है। फिर भी परिणामों की असंगतता को देखते हुए सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं से संबंधित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के स्वरूप तथा क्रियान्वयन की समीक्षा

अनुभव की जाती है। अत: यहाँ यह भी देखा जाना आवश्यक प्रतीत होता है कि डी.एल.एड. कार्यक्रम के स्तर पर सेवा-पूर्व अध्यापिकाओं के लिए किन पाठ्य सहगामी क्रियाओं को शामिल किया गया है? जिन क्रियाओं को कार्यक्रम में शामिल किया गया है, उनका प्रारूप (पैटर्न) क्या है? साथ ही, उनका क्रियान्वयन किस तरह किया जा रहा है? अत: आगे पाठ्य सहगामी क्रियाओं की पहचान, स्वरूप तथा उनके क्रियान्वयन के बारे में अध्ययन किए जाने की भी आवश्यकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की उपयोगिता को देखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन्हें केंद्रीय पाठ्यक्रम का प्रमुख अंग बनाने की बात की जा रही है, ऐसे में प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम नीतिगत निर्णयों को संबल प्रदान करते हैं। इस शोध अध्ययन के परिणामों के विश्लेषण के उपरांत निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ प्राप्त हुए हैं—

1. इस शोध अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग न करने वाले कुल सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की तुलना में, प्रतिभाग करने वाले सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च है। अत: शिक्षण संस्थान के प्रशासक, प्रशिक्षक तथा अभिभावक इस शोध अध्ययन के परिणामों का लाभ उठाकर, सेवा-पूर्व अध्यापकों व अध्यापिकाओं में पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रुचि जाग्रत करने एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार करने का प्रयास कर सकते हैं।
2. ऐसे सेवा-पूर्व अध्यापक एवं अध्यापिकाएँ, जिनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न है एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भी रुचि नहीं रखते हैं, की पहचानकर शिक्षण संस्थानों द्वारा अपने स्तर से उन्हें कुशल प्रशिक्षकों अथवा विशेष परामर्शदाताओं के द्वारा निर्देशन प्रदान कराया जाना चाहिए, जिससे वे विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रुचि लें और अपनी वांछित अकादमिक सफलता को प्राप्त कर सकें।
3. डी.एल.एड. कार्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले सेवा-पूर्व अध्यापक एवं अध्यापिकाएँ भविष्य में अपनी समझ से निर्णय लेने की स्थिति में होते हैं। अत: इस अवस्था में उनमें नए गुणों का विकास करना कठिन होता है, परंतु यदि उनमें पूर्व से विद्यमान गुणों की पहचानकर ली जाए, तो उन गुणों को विकसित करने हेतु संबंधित सहायक पाठ्य सहगामी क्रियाओं में उन्हें प्रतिभाग करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है, परंतु सेवा-पूर्व अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में विद्यमान गुणों की पहचान करने हेतु उनके प्रशिक्षकों में समझ का होना आवश्यक है। अत: उनके प्रशिक्षकों में निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यक समझ विकसित करने हेतु समय-समय पर आवश्यकता अनुरूप प्रशिक्षण प्रदान किए जाने चाहिए।
4. डी.एल.एड. प्रशिक्षण के दौरान सेवा-पूर्व अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता पूर्णता ऐच्छिक है, परंतु इनकी महत्ता को देखते हुए, सेवा-पूर्व अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं को अपनी पसंद की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने की स्वतंत्रता प्रदान करते हुए,

इन्हें अनिवार्य बनाया जा सकता है। इससे सेवा-पूर्व अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में विद्यमान विशेष गुण को पहचानने एवं विकसित करने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

5. पाठ्य सहगामी क्रियाएँ सेवा-पूर्व अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि से सहसंबंधित होने के साथ-साथ उनमें नेतृत्व एवं समायोजन जैसे कौशल विकसित करने में भी सहायक होती हैं। अत: इन क्रियाओं में सेवा-पूर्व अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अनिवार्य प्रतिभागिता, उनमें समावेशन के भाव को विकसित करने में सहायक होगी।

संदर्भ

डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट. 1989. डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूटस ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग गाइडलाइन. 1989. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, दिल्ली.

द रिपोर्ट ऑफ द यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन (दिसंबर 1948 - अगस्त 1949). https://www.educationforallinindia.com/1949%20Report%20of%20the%20University%20Education%20Commission.pdf से 22/12/2024 को प्राप्त किया गया.

दोडके, एस. और एस. दुबे. 2022. इम्पैक्ट ऑफ को-करिकुलर एक्टिविटीज ऑन अकेडमिक परफॉरमेंस एंड पर्सनालिटी डेवलपमेंट ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स. *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस एंड इनोवेटिव रिसर्च (jetir)*. https://www.jetir.org/papers/jetir2209379.pdf से 12/10/2024 को प्राप्त किया गया.

बतूल, ए. एवं अहमद, एस. 2020. को-रिलेशन बिटवीन को-करिकुलर एक्टिविटीज एंड अकादमिक अचीवमेंट ऑफ स्टूडेंट्स. *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस*. https://core.ac.uk/download/pdf/ 287193042.pdf से 21/12/2024 को प्राप्त किया गया.

भावसार, सी. 2020. *ए केस स्टडी ऑफ द स्टेटस ऑफ को-करिकुलर एक्टिविटीज इन हायर एजुकेशन (डिजर्टेशन)*. द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बडौदा. http://okgw.hmlibrary.ac.in:80 80/jspui/bitstream/123456789/885/1/chandini%20bhavsar.pdf से 15/10/ 2024 को प्राप्त किया गया.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/ nep_update/nep_final_hi_0.pdf से 22/12/2024 को प्राप्त किया गया पृष्ठ 30, 3, 63, 62, 62.

———. 1986. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/npe86-mod92.pdf से 22/12/2024 को प्राप्त किया गया.

रेणु. 2017. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन : सहगामी पाठ्य क्रियाओं में भाग लेने के आधार पर. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशनल रिसर्च*. https://themultidisciplinaryjournal.com/assets/archives/2017/vol2issue2/2-3-21-7 02.pdf से 28/12/2024 को प्राप्त किया गया.

शर्मा, यू. 2020. छात्रों के संपूर्ण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का योगदान. *चेतना इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन*. https://echetana.com/wp-content/uploads/2020/12/41.-r-h-dr.-usha-sharma-281-290.pdf से 24/12/2024 को प्राप्त किया गया.

सामी एवं अन्य. 2020. एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स बेस्ड ऑन को-करिकुलर एक्टिविटीज. *जर्नल ऑफ मैनेजमेंट इन्फो*. https://www.Researchgate.net/publication/341 445841_academic_achievement_of_college_students_based_on_co-curricular_a ctivities से 21/12/2024 को प्राप्त किया गया.

सिंह, ए. 2017. इफेक्ट ऑफ को-करिकुलर एक्टिविटीज ऑन अकेडमिक अचीवमेंट ऑफ स्टूडेंट्स. आई.आर.ए. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड मल्टीडिसप्लनरी स्टडीज*. https://www.researchgate.net/publication/315999019_effect_of_co-curricular_activities_on_academic_achievement_of_students से 19/10/2024 को प्राप्त किया गया.

———. 2017. रीवा विकासखंड के हाई स्कूल स्तर पर पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्प्लीनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट*. https://www.allsubjectjournal.com/assets/archives/2017/vol4issue 8/4-9-17-613.pdf से 19/10/2024 को प्राप्त किया गया.

हबीब, एस. के. 2018. ए स्टडी ऑन द इफेक्ट ऑफ एक्स्ट्राकरिकुलर एक्टिविटीज ऑन अकादमिक अचीवमेंट. *जर्नल ऑफ हार्मो नाइज्ड रिसर्च इन एप्लाइड साइंसेज*. https://www.johronline.com/ articles/a-study-on-the-effect-of-extracurricular-activities-on-academic-achievement.pdf से 21/12/2024 को प्राप्त किया गया.

श्रीवास्तव, एस. और डी. के. शुक्ला. 2021. छात्र-छात्राओं की विषय संदर्भित पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (मध्य प्रदेश के गुना जिले के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में). *शोध संगम*. https://shodh samagam.com/uploads/issuestbl/chatra-chatrao%20ki%20vishay%20sandarbhit %20padhya%20sahagami%20kriyawo%20ke%20vikas%20se%20unki%20saiks hanik%20uplabdhi%20par%20padne%20wale%20prabhav%20ka%20tulnatmak%20addhyan.pdf से 20/10/2024 से प्राप्त किया गया.

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के विशेष संदर्भ में भाषा शिक्षण की व्यवस्था

लवली सरकार*
सुरेंद्र यादव**

इस लेख में भाषा को विचार, संचार तथा अधिगम के एक सशक्त माध्यम के रूप में भाषा की सांस्कृतिक पहचान तथा बौद्धिक विकास में भूमिका को प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा विद्यालय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 भाषा शिक्षण पर विशेष बल देती हैं। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में भाषा अधिगम के लिए बहुभाषावाद, समावेशिता तथा संज्ञानात्मक विकास जैसे सिद्धांतों पर आधारित एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण को महत्व दिया गया है। इस लेख में भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित किए गए 117 प्रवेशिकाओं (प्राइमरों) तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा की गई पहलों का भी विश्लेषण किया गया है। यह लेख भाषा संरक्षण एवं संवर्धन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका का विश्लेषण करता है तथा विभिन्न विद्यालयी स्तरों पर भाषा शिक्षण के लिए एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 द्वारा प्रस्तुत अनुशंसाओं को स्पष्ट करता है। यह जानकारी विभिन्न शैक्षिक नीतियों, शोध पत्रिकाओं एवं समाचार स्रोतों की समीक्षा के माध्यम से एकत्रित की गई है। भाषा शिक्षण के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु यह लेख रा.शै.अ.प्र.प. व यू.जी.सी. की पहलों पर आधारित पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण, बहुभाषी संसाधन व मेंटरिंग से संबंधित सुझाव प्रस्तुत करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में विद्यालयी शिक्षा में एक मौलिक परिवर्तन की कल्पना करती है, जिसका लक्ष्य इसे और अधिक एकीकृत, अनुकूलनीय, अंतर्विषयी तथा इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाना है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के क्रियान्वयन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में कार्य करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा, विद्यालयी शिक्षा, शिक्षक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा को लक्षित करते हुए चार पाठ्यक्रम रूपरेखाओं को प्रस्तावित करती है, जिनके माध्यम से देश में शैक्षिक तथा व्यावसायिक स्तर पर क्रांतिकारी बदलाव आने की उम्मीद है। इससे देश के सभी बच्चों को उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान कर, एक निष्पक्ष, समावेशी तथा भारत के

**सहायक आचार्य*, बॉस्को कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, दीमापुर, नागालैंड 797 112
***सहायक आचार्य*, शिक्षक शिक्षा विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय, मेरिमा परिसर, कोहिमा, नागालैंड 797 004

संवैधानिक लक्ष्यों के अनुरूप समाज निर्माण में सहायता मिलेगी। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा के समग्र पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन लाना है। विद्यालयी पाठ्यक्रम को नया रूप देकर, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों में वृद्धि तथा सार्थक शैक्षिक परिवर्तन को आगे बढ़ाना है। नए पाठ्यक्रम का उद्देश्य पूर्ण विकसित, नैतिक, सहानुभूतिपूर्ण, नवोन्मेषी तथा कुशल व्यक्तियों का निर्माण करना है। इस लेख में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 द्वारा परिकल्पित भाषा शिक्षण का विश्लेषण किया गया है।

भाषा सभी मानवीय गतिविधियों के लिए मौलिक आवश्यकता है, यह सांस्कृतिक पहचान तथा बौद्धिक विकास के लिए आधार का काम करती है। पियाजे के अनुसार भाषा का विकास बच्चे के संज्ञानात्मक विकास के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह उल्लेख किया गया है कि भाषा में निपुणता बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया को बेहतर ढंग से समझने तथा उससे जुड़ने में सक्षम बनाती है, इसलिए एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 भाषा सीखने पर बहुत बल देती है। बहुभाषी दक्षता मानसिक तीक्ष्णता को बढ़ाती है, सांस्कृतिक समझ को गहरा करती है और विविधता की सराहना को बढ़ावा देती है। इसकी पुष्टि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा भी की गई है कि मातृभाषा में सीखने से बौद्धिक विकास को बढ़ावा मिलता है, दृष्टिकोण व्यापक होते हैं तथा भाषायी विविधता के माध्यम से भारत की एकता एवं विरासत मजबूत होती है, इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं के संरक्षण तथा संवर्धन की आवश्यकता व महत्व पर बल देती है।

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 अपने प्रस्तावित दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम, विधियों आदि के माध्यम से देश की विविध भाषाओं को संरक्षित तथा बढ़ावा देने की बात करता है। यह स्पष्ट है कि "जब हम एक भाषा खो देते हैं तो एक समुदाय अपनी अनूठी दृष्टि अपना इतिहास तथा संस्कृति खो देता है, हम स्थानीय दृष्टिकोण एवं कहानियाँ खो देते हैं। यह दु:खद है कि अपनी मातृभाषा खोने के साथ, लोग स्वयं को अपनी पहली भाषा बोलने में असमर्थ पाते हैं। यह एक अपूरणीय क्षति है।" (फाल्ट, 2022) फाल्ट के इस कथन से व्यक्तियों तथा समुदायों दोनों पर मातृभाषा न सीखने के नुकसान के गहन प्रभाव की जानकारी मिलती है। अत: भाषाओं को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

पूर्व की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भाषा शिक्षण की व्यवस्था

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (एन.ई.पी.) 1968 में ये उल्लिखित है कि सांस्कृतिक तथा शैक्षिक विकास के लिए भारतीय भाषाओं एवं साहित्य का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही, यह भी उल्लिखित किया गया है कि क्षेत्रीय भाषाओं को विश्वविद्यालयी शिक्षा में शामिल किया जाना चाहिए, विद्यालयों में त्रिभाषा सूत्र लागू किया जाना चाहिए तथा हिंदी को बढ़ावा देने, संस्कृत शिक्षा का विस्तार करने तथा अंग्रेजी एवं अन्य वैश्विक भाषाओं में दक्षता बढ़ाने के लिए सतत प्रयास किए जाने चाहिए, जिससे राष्ट्रीय एकता एवं अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव को बढ़ावा मिले।

एन.ई.पी. 1986 भी एन.ई.पी. 1968 की तरह उच्च शिक्षा में क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। साथ ही, एन.ई.पी. 1986 त्रिभाषा सूत्र पर भी विशेष बल देती है। भाषा कौशल को बढ़ाने, संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का समर्थन करने, संस्कृत शिक्षा को प्रोत्साहित करने, विदेशी भाषा सीखने को बढ़ावा देने तथा अनुवाद और बहुभाषी संसाधनों को आगे बढ़ाने पर बल देकर यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 की पुष्टि करती है।

अतः यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ 1968 तथा 1986, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक उन्नयन में भारतीय भाषाओं की भूमिका को रेखांकित करती हैं। उच्च शिक्षा में क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल करके, त्रिभाषा सूत्र को लागू करके तथा हिंदी, संस्कृत एवं अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के विकास को बढ़ावा देकर, ये नीतियाँ भारत की भाषायी विविधता की रक्षा करने का प्रयास करती हैं।

लेख का लक्ष्य

1. भारतीय भाषाओं के संरक्षण तथा संवर्धन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख अनुशंसाओं का वर्णन करना।
2. विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर भाषा के संबंध में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 की संस्तुतियों को रेखांकित करना।
3. भाषा शिक्षण हेतु सरकारी प्रयासों की विस्तार से चर्चा करना।

विधि

इस लेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, विषय की अच्छी समझ प्राप्त करने के लिए प्रासंगिक शोध अध्ययनों तथा पूर्व की शिक्षा नीतियों की व्यापक विवेचना की गई है।

भारतीय भाषाओं के संरक्षण तथा संवर्धन के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझाव

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, कम-से-कम कक्षा 5 तक तथा बेहतर हो कि कक्षा 8 या उससे आगे तक की पढ़ाई घरेलू भाषा, मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में होनी चाहिए। इसके बाद जहाँ भी संभव हो, घरेलू या स्थानीय भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाना जारी रखना चाहिए। यह नीति सरकारी तथा निजी दोनों विद्यालयों पर लागू की जानी चाहिए। शिक्षण में द्विभाषी दृष्टिकोण का उपयोग किया जाएगा।
2. बुनियादी स्तर पर बहुभाषी पद्धति अपनाई जाएगी, ताकि मातृभाषा को विशेष महत्व दिया जा सके। केंद्र तथा राज्य सरकारें देशभर में सभी क्षेत्रीय भाषाओं, विशेषकर भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध भाषाओं के लिए बड़ी संख्या में भाषा शिक्षकों की नियुक्ति करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास करेंगी।
3. लोगों की उम्मीदों, संविधान के नियमों तथा देश की एकता के लिए किसी राज्य पर कोई भाषा थोपे बिना उसमें लचीलेपन के साथ त्रिभाषा फार्मूला जारी रहेगा।
4. विज्ञान तथा गणित के लिए बेहतर द्विभाषीय पाठ्यपुस्तकों के निर्माण पर बल दिया जाएगा, जिससे विद्यार्थियों को अंग्रेजी के साथ-साथ अपनी मातृभाषा में भी सोचने तथा अभिव्यक्त करने में सुविधा हो।

5. 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल के एक भाग के रूप में कक्षा 6 से 8 तक के सभी विद्यार्थी प्रमुख भारतीय भाषाओं के मध्य विद्यमान आंतरिक एकता एवं समानता की खोज के लिए एक रचनात्मक परियोजना या गतिविधि में भाग लेंगे।
6. शास्त्रीय, जनजातीय, लुप्तप्राय भाषाओं तथा साहित्यिक कृतियों, सांस्कृतिक परंपराओं तथा बौद्धिक योगदानों से समृद्ध अन्य भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिए कदम उठाए जाएँगे।
7. सरकारी विद्यालय यह सुनिश्चित करेंगे कि कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों को कम-से-कम दो वर्षों तक किसी शास्त्रीय भारतीय भाषा की शिक्षा दी जाए, जिसमें नवीन तथा तकनीक-संवर्धित शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाए। माध्यमिक शिक्षा के बाद भी इन भाषाओं की शिक्षा का विकल्प दिया जाएगा, जिससे सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया जा सके।
8. समकालीन मुद्दों तथा अवधारणाओं पर प्रभावी चर्चा को सुविधाजनक बनाने के लिए भाषाओं को अपने शब्द संग्रह तथा शब्दकोशों को नियमित रूप से अद्यतन करना चाहिए, ताकि उनका व्यापक प्रसार सुनिश्चित हो सके।
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार भारत में निपुण भाषा शिक्षकों की आवश्यकता है। इस शिक्षा नीति का उद्देश्य है कि भारत में भाषा शिक्षण की स्थिति में सुधार हो। भाषा शिक्षण को अनुभवात्मक अधिगम पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिसमें केवल साहित्यिक तथा व्याकरणिक पहलुओं के अतिरिक्त भाषा में बोलने एवं बातचीत करने पर बल दिया जाना चाहिए।
10. उच्च शिक्षा संस्थान तथा उनमें होने वाले कार्यक्रमों में मातृभाषा या स्थानीय भाषाओं का उपयोग बढ़ाएँगे। ये संस्थान द्विभाषी शिक्षा प्रदान करेंगे, जिसका उद्देश्य नामांकन दरों को बढ़ाना तथा भारतीय भाषाओं को मजबूत कर उनकी प्रासंगिकता को बढ़ावा देना है।

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में भाषा शिक्षण के प्रावधान

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 पाठ्यक्रम के विकास के लिए आधार के रूप में कार्य करती है। इसके माध्यम से पाठ्यक्रम, शिक्षक पुस्तिकाएँ, पाठ्यपुस्तकें, शैक्षिक सामग्री, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सहायता सहित शिक्षण संसाधनों की एक शृंखला बनाने के लिए आवश्यक प्रमुख सिद्धांतों, उद्देश्यों, संरचना तथा तत्वों को परिभाषित करती है। यह अभिलेख विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा सुझाए गए चार स्तरों (5+3+3+4) के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रम संरचना प्रस्तुत करती है।

भाषा शिक्षण के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण को लागू करने के लिए एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की प्रमुख रणनीतियाँ प्रारंभिक शिक्षा के लिए बहुभाषी दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो शुरुआती वर्षों में मातृभाषा में शिक्षण पर बल देती हैं। पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन तथा भारतीय भाषाओं को संरक्षित करके भाषायी विविधता का संरक्षण करती है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के अनुसार भाषा शिक्षण रचनात्मकता को पोषित

करने, आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने तथा विद्यार्थियों में बहुभाषी क्षमताओं को विकसित करने पर बल देती है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में उल्लेखित भाषा शिक्षण के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

1. भाषा शिक्षण का लक्ष्य मौखिक संचार तथा पाठ्य प्रवीणता होना चाहिए, जो भाषा प्रवीणता और समग्र शिक्षा का आधार बनता है।
2. विद्यार्थियों को आलोचनात्मक ढंग से सोचने, समस्याओं के समाधान, तार्किक ढंग से संवाद करने तथा लोकतांत्रिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए भाषायी क्षमताओं का विकास करना चाहिए।
3. विद्यालयों में भाषा शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता को बढ़ावा मिलना चाहिए। भाषा के कल्पनाशील तथा सौंदर्यपरक पहलुओं को कहानियों, कविताओं, खेलों, पहेलियों और संबंधित अभ्यासों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।
4. भाषा शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों में बहुभाषी दक्षता विकसित करना होना चाहिए। इसके लिए तीन भाषाओं को सीखने की सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए तथा इन तीन भाषाओं में से दो भाषाएँ भारतीय मूल की होनी चाहिए।
5. भाषा शिक्षण से विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति तथा अन्य विविध संस्कृतियों के बारे में जानने में सहायता मिलनी चाहिए।

भाषा अधिगम को बढ़ावा देने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की पहल एवं योगदान

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), नई दिल्ली तथा केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सी.आई.आई.एल.), मैसूर ने भारतीय भाषाओं में भाषा अधिगम को बढ़ावा देने हेतु महत्वपूर्ण पहल करते हुए अब तक 117 प्रवेशिका का सावधानीपूर्वक विकास एवं प्रकाशन किया है। इन प्राइमर्स में भारत की विविध भाषाओं एवं बोलियों को सम्मिलित किया गया है। इनमें अनाल प्राइमर, कोंडा प्राइमर, अंगामी प्राइमर, कोया प्राइमर, आउ प्राइमर, कोरकू प्राइमर, असमिया प्राइमर, कुइ प्राइमर, भूटिया प्राइमर, कुकी प्राइमर, बोडो प्राइमर, कुरुख प्राइमर, देउरी प्राइमर, किसान (कुन्हू) प्राइमर, दिमसा प्राइमर, लिआंगमइ प्राइमर, गड़बा (गुटोब) प्राइमर, लिम्बू प्राइमर, गारो प्राइमर, लोथा प्राइमर, हल्बी प्राइमर, मणिपुरी प्राइमर, ह्मार प्राइमर, माओ प्राइमर, जटपु (कुवी) प्राइमर, मिश्मी (इटु) प्राइमर, जुआंग प्राइमर, मिसिंग प्राइमर, कबुई (राँगमेई) प्राइमर, मिजो प्राइमर, कर्वी प्राइमर, मोघ प्राइमर, खानदेशी प्राइमर, मुंडारी प्राइमर, खड़िया प्राइमर, नेपाली प्राइमर, कुझले (खेझा) प्राइमर, न्यीशी प्राइमर, किन्नौरी प्राइमर, राई प्राइमर, कोड़वा प्राइमर, संथाली-बंगाली प्राइमर, संथाली-ओड़िया प्राइमर, यिमखियुंग प्राइमर, शेरपा प्राइमर, कोलामी प्राइमर, सवारा (सोरा) प्राइमर, कोम प्राइमर, सुमी (सेमा) प्राइमर, कोन्याक प्राइमर, तमांग प्राइमर, लद्दाखी प्राइमर, तांगखुल प्राइमर, लेप्चा प्राइमर, तांगसा प्राइमर, मारा (लाखेर) प्राइमर, तिवा (लालुंग) प्राइमर, मरम प्राइमर, तुलु प्राइमर, नोक्ते प्राइमर, वांचो प्राइमर, पश्तो प्राइमर, देसिया प्राइमर, पोचुरी प्राइमर, कुवी प्राइमर, राभा प्राइमर, आदि प्राइमर, रेंगमा प्राइमर, भूमिज प्राइमर, शाइना प्राइमर, चांग प्राइमर, तमिल प्राइमर, गोंडी-ओड़िया प्राइमर,

तिब्बती प्राइमर, हलम प्राइमर, बंगाली प्राइमर, हो-ओड़िया प्राइमर, भीली (वासवा) प्राइमर, खियामनियुंगन प्राइमर, बिष्णुप्रिया मणिपुरी प्राइमर, कोच प्राइमर, डोगरी प्राइमर, कोडा प्राइमर, गुजराती प्राइमर, कंध (खोंड) प्राइमर, मैरिंग प्राइमर, कन्नड़ प्राइमर, मोनपा प्राइमर, खासी प्राइमर, मुंडा प्राइमर, कोंकणी प्राइमर, नॉनकउरी प्राइमर, कोरवा प्राइमर, कार निकोबारी प्राइमर, लाहुली (पट्टनी) प्राइमर, ओड़िया प्राइमर, मैथिली प्राइमर, परजी प्राइमर, मलयालम प्राइमर, फोम प्राइमर, मालतो प्राइमर, पंजाबी प्राइमर, मराठी प्राइमर, तेलुगु प्राइमर, बलती प्राइमर, भीली (वागड़ी) प्राइमर, चोकरी प्राइमर, गोंडी-तेलुगु प्राइमर, कश्मीरी (देवनागरी) प्राइमर, कश्मीरी (पर्सो-अरबी) प्राइमर, लाई (पई) प्राइमर, साङ्गतम प्राइमर, संथाली-हिंदी प्राइमर, सिंधी (देवनागरी) प्राइमर, सिंधी (पर्सो-अरबी) प्राइमर, उर्दू प्राइमर और जेमे प्राइमर शामिल हैं। यह बहुभाषिक प्रयास देश की भाषायी विविधता को मान्यता देने के साथ-साथ मातृभाषा आधारित शिक्षा को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्राइमर्स प्रारंभिक शिक्षा को आकार देने में महत्वपूर्ण हैं, जो बच्चों को आधारभूत भाषा एवं साक्षरता क्षमताएँ विकसित करने के लिए आवश्यक आधार प्रदान करते हैं। ये प्राइमर्स भारत के बहुभाषी संदर्भ में युवा विद्यार्थियों की विविध भाषायी, सांस्कृतिक तथा संज्ञानात्मक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इनके द्वारा अक्षर पहचान, ध्वनि संगठन तथा शब्द निर्माण में सहायता मिलती है, जिससे पढ़ना एवं लिखना आसान हो जाता है। कविताओं तथा अन्य साहित्यिक गतिविधियों के माध्यम से कल्पना, विश्लेषणात्मक सोच तथा मानसिक विकास में सहायता मिलती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रकाश में इन संसाधनों के द्वारा बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा मिलता है तथा सभी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की समान पहुँच सुनिश्चित होती है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी. द्वारा की गई पहल)

शिक्षा मंत्रालय, यू.जी.सी. तथा भारतीय शिक्षा समिति ने उच्च शिक्षा में भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने के लिए तीन महत्वपूर्ण पहलें की हैं—

1. **अस्मिता (अनुवाद तथा अकादमिक लेखन के माध्यम से भारतीय भाषाओं में अध्ययन सामग्री का संवर्धन)**— इसका उद्देश्य शैक्षिक तथा प्रशासनिक गतिविधियों में भारतीय भाषाओं को शामिल करके भाषायी विविधता को संरक्षित करना है।
2. **बहुभाषा शब्दकोश**— यह एक बहुभाषी शब्दकोश है, जो प्रौद्योगिकी, उद्योग, अनुसंधान तथा शिक्षा जैसे विभिन्न नए युग के क्षेत्रों के लिए भारतीय शब्दों, वाक्यांशों एवं वाक्यों का उपयोग करने में सहयोग करेगा। इसका उद्देश्य विभिन्न भारतीय भाषाओं में विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना तथा समावेशिता को बढ़ावा देना है।
3. **भारतीय भाषा पारिस्थितिकी तंत्र**— इसका उद्देश्य वास्तविक काल में अनुवाद की निर्बाध सुविधा प्रदान करना तथा शिक्षा और अनुसंधान में सहयोग एवं पहुँच को बढ़ाना है।

अतः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मंत्रालय द्वारा शुरू की गई भाषा शिक्षा से संबंधित पहल से उच्च शिक्षा में समावेशिता को बढ़ावा मिलेगा तथा साथ ही, भाषायी विविधता को संरक्षण मिलेगा।

भाषा शिक्षण से संबंधित रा.शै.अ.प्र.प. तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पहलों का विद्यालयी तथा उच्च शिक्षा में क्रियान्वयन की रणनीतियों के लिए सुझाव

रा.शै.अ.प्र.प. तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा की गई पहलों को विद्यालयी तथा उच्च शिक्षा में निम्नलिखित तरीकों से लागू किया जा सकता है—

1. पाठ्यक्रम परिमार्जन

विद्यालयी स्तर पर रा.शै.अ.प्र.प. की भाषा संबंधी पाठ्यपुस्तकों तथा प्राइमर्स का प्रयोग किया जाना चाहिए। इनके प्रयोग से संबंधित भाषा को सीखना आसान हो जाएगा। ये भाषा विकास के लिए आधारभूत साधन का कार्य करेंगे। इनके प्रयोग से अंतर-सांस्कृतिक समझ को प्रोत्साहित करने में सहायता मिल सकती है। उन स्थानीय व्यक्तियों को, जिनकी भाषा शिक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण उपलब्धि है, विद्यालयों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। यह उन व्यक्तियों के योगदान का सम्मान होगा तथा साथ ही, विद्यार्थियों के भाषायी विकास में भी सहायक होगा।

उच्च शिक्षा स्तर पर अस्मिता (अनुवाद तथा अकादमिक लेखन के माध्यम से भारतीय भाषाओं में अध्ययन सामग्री का संवर्धन) का उद्देश्य उच्च शिक्षा के विभिन्न विषयों की पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना तथा इस कार्य के लिए एक मजबूत संरचना स्थापित करना है। नव विकसित पाठ्यपुस्तकों तथा संसाधनों को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जाना चाहिए। बहुभाषी शब्दकोष को भाषा, साहित्य तथा अनुवाद अध्ययन पाठ्यक्रमों के संदर्भ संसाधन के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी विभिन्न भारतीय भाषाओं में शब्दों, वाक्यांशों तथा उनके अर्थों को देख तथा समझ सकेंगे। साथ ही, इसके द्वारा इन शैक्षणिक विषयों की समझ भी विकसित होगी। शैक्षिक सामग्री, व्याख्यान तथा चर्चाओं का वास्तविक समय में अनुवाद प्रदान करने के लिए स्वयं, दीक्षा तथा अन्य विश्वविद्यालयी-विशिष्ट पोर्टल, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का प्रयोग वास्तविक समय अनुवाद की कला को एकीकृत करेगा। रा.शै.अ.प्र.प. के द्वारा आरंभ किए गए पीएम ई-विद्या तथा अन्य ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म पर जो भी कार्यक्रम प्रसारित हों, उन्हें विविध भारतीय भाषाओं में होना चाहिए। इसके माध्यम से महत्वपूर्ण विषयों से संबंधित सूचनाएँ सभी के लिए सुनिश्चित हो पाएँगी।

2. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाषा संबंधी प्रावधानों को लागू करने के लिए सुझाव

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में तैयार किए जा रहे भविष्य के शिक्षकों (छात्राध्यापकों) का भाषा संबंधी व्यावसायिक विकास करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. तथा यू.जी.सी. के द्वारा दिए गए सुझावों को लागू करना चाहिए। छात्राध्यापकों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा तैयार किए गए भाषा संबंधी प्राइमरों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जा सकता है। यू.जी.सी. के द्वारा उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के लिए अस्मिता तथा वास्तविक समय अनुवाद पारिस्थितिकी तंत्र जैसे नए उपकरणों से परिचित कराने के लिए रिफ्रेशर कार्यक्रमों को मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित किया जा सकता है।

3. जागरूकता तथा सहयोग

विद्यालयी शिक्षकों, विश्वविद्यालयी शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, महाविद्यालय प्रशासकों, नीति-निर्माताओं तथा सभी हितधारकों को भारतीय भाषाओं को संरक्षित तथा बढ़ावा देने के उद्देश्य के बारे में बताने के लिए समय-समय पर सेमिनार तथा कार्यशालाओं के आयोजन किए जा सकते हैं। रा.शै.अ.प्र.प. तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा की गई पहलों को भी व्यापक रूप से संप्रेषित किए जाने की आवश्यकता है। इन प्रयासों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाषा शिक्षण से संबंधित, स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रा.शै.अ.प्र.प., यू.जी.सी. तथा स्थानीय शैक्षिक निकायों के बीच सहयोग से जरूरी रणनीतियों को तैयार करना चाहिए।

4. पायलट कार्यक्रम तथा प्रतिपुष्टि तंत्र का उपयोग

भाषा शिक्षण संबंधी रा.शै.अ.प्र.प. तथा यू.जी.सी. की नई पहलों की प्रभावशीलता जानने के लिए इनको पायलट कार्यक्रम के रूप में चयनित विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में लागू करके इनकी प्रभावशीलता का परीक्षण किया जा सकता है। परीक्षण से प्राप्त सूचनाओं को प्रतिपुष्टि के रूप में प्रयोग करके इन नीतियों के सफल क्रियान्वयन के संदर्भ में महत्वपूर्ण निर्णय लिए जा सकते हैं।

5. मेंटरिंग मिशन का कार्यान्वयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में, मेंटरिंग के लिए सुझाए गए राष्ट्रीय भाषा शिक्षण के प्रावधानों को लागू किया जा सकता है। इस कार्य हेतु समस्त भारतीय भाषाओं के विशेषज्ञों तथा असाधारण वरिष्ठ एवं सेवानिवृत्त उच्च शिक्षा के शिक्षकों की सहायता ली जा सकती है। ये मेंटर विश्वविद्यालय तथा कॉलेज के शिक्षकों को अल्पकालिक और दीर्घकालिक मार्गदर्शन एवं पेशेवर सहायता प्रदान करेंगे। मेंटर तथा शिक्षकों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. भारतीय भाषाओं में हैंडबुक, गाइड तथा डिजिटल संसाधन जैसी सामग्री विकसित कर सकती है। शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल को द्विभाषी तथा बहुभाषी शिक्षा को ध्यान में रखते हुए बनाया जा सकता है। शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में आयोजित किए जा सकते हैं। इन मेंटरशिप कार्यक्रमों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है। पुरस्कारों तथा फेलोशिप के माध्यम से मेंटरों, विशेष रूप से भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने वाले मेंटरों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रकाश में तथा विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में वर्णित प्रावधान भारत में भाषा शिक्षण के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण की रूपरेखा तैयार करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप भाषा शिक्षण को आगे बढ़ाने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा किए गए प्रयास भारत के शैक्षिक ढाँचे को नया आकार देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ये दोनों संस्थान बहुभाषावाद पर बल देते हैं तथा मातृभाषा में शिक्षण कार्य को संपादित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जो भारत की भाषायी विविधता की रक्षा कर सकती है तथा इसके साथ ही, वैश्विक भाषा कौशल का विकास होगा। इन दोनों दस्तावेजों

में वर्णित रणनीतियाँ एक समावेशी तथा व्यापक भाषा सीखने के वातावरण को स्थापित करती हैं तथा इनके द्वारा संज्ञानात्मक तथा सांस्कृतिक विकास को बढ़ाने एवं विद्यार्थियों को एक विविध और परस्पर जुड़े वैश्विक समुदाय में पनपने के लिए तैयार करने का प्रयास करती हैं। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता होगी। भाषा शिक्षकों को उचित रूप से प्रशिक्षित करना होगा तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सुचारु एवं सुविधाजनक बनाने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराने होंगे।

संदर्भ

नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. न्यू डेल्ही, 24 दिसंबर 2024 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/ncf_2023.pdf से प्राप्त किया गया है.

मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट. 2020. *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020*. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. 19 दिसंबर, 2024 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf से प्राप्त किया गया है.

———. *1968. नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन 1968*. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. 25 दिसंबर, 2024 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/NPE-1968.pdf से प्राप्त किया गया है.

———. 1986. *नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन 1986*. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. 25 दिसंबर, 2024 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/npe.pdf से प्राप्त किया गया है.

यू.जी.सी. एंड भारतीय भाषा समिति लॉन्च लैंग्वेज प्रमोशन प्रोजेक्ट्स. 2024, 17 जुलाई. द टाइम्स ऑफ इंडिया. 20 दिसंबर 2024 को https://timesofindia.indiatimes.com/education/news/ugc-and-bharatiya-bhasha-samiti-launch-language-promotion-projects/articleshow/111805767.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst से प्राप्त किया गया है.

यूनेस्को लॉन्चेस रिपोर्ट ऑन इंडिया’स ट्राइबल एंड इंडिजिनस लैंग्वेजेस. (2022, 22 फरवरी). यूनेस्को. 26 दिसंबर, 2024 को https://www.unesco.org/en/articles/unesco-launches-report-indias-tribal-and-indigenous-languages से प्राप्त किया गया है.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *प्राइमर्स इन इंडियन लैंग्वेजेस*. 15 दिसंबर 2024 को https://ncert.nic.in/primers.php से प्राप्त किया गया है.

सोनार, 2024. ‘गवर्नमेंट लॉन्चेस थ्री इनिशिएटिव्स टू प्रमोट मल्टीलिंगुअलिस्म इन एजुकेशन’. लैंग्वेज डाइवर्सिटी इन एजुकेशन: गवर्नमेंट इनिशिएटिव्स टू एन्हांस इनक्लूसिविटी. *एजुएडवाइज, एजु इन्फो एंड एजु न्यूज पोर्टल*. 20 दिसंबर, 2024 को https://eduadvice.in/educational-news-details/government-launches-three-initiatives-to-promote-multilingualism-in-education/6991 से प्राप्त किया गया है.

गणित शिक्षण — गिजुभाई बधेका का शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण

रश्मि श्रीवास्तव*

विषय के रूप में कक्षा में पढ़ाई जाने वाली गणित की विषय-वस्तु एक बच्चे के जीवन से जुड़ी है। हाथ पैरों के संचालन के साथ ही वह अपने हाथ के संकेत से छोटे-बड़े आकार, अनुपात एवं आकृति को समझने लग जाते हैं, लेकिन कक्षा में जाते ही एक विषय के रूप में इन आकार, प्रकार, गणना को लिखने व पढ़ने में अरुचि दिखाने लगते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार "वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान भी नहीं सीखा है जिनकी अनुमानित संख्या 5 करोड़ से भी अधिक है अर्थात ऐसे बच्चों में सामान्य लेख पढ़ने समझने तथा अंको के साथ बुनियादी जोड़ और घटाव करने की क्षमता भी नहीं है।" यहाँ संदर्भ गणित विषय की बुनियादी समझ का है। अतः प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षा में सुधार की आवश्यकता है। गिजुभाई बधेका ने प्राथमिक स्तर पर विविध विषयों के शिक्षण संदर्भ में कई सफल प्रयोग किए। गणित शिक्षण संदर्भ में उनके दिशा-निर्देशन की विशेष महत्ता है। उन्होंने कहा था कि "गणित के शिक्षण की सार्थकता सवाल हल कर पाने में नहीं, अपितु गणित-बुद्धि के विकास में निहित है। गणित बुद्धि के विकास के लिए शुरू से ही व्यवहार तथा प्रत्यक्ष अनुभव के साथ सिखाना चाहिए। गणित के प्रश्न, उसके उदाहरण उससे उत्पन्न आकृतियों को कक्षा में इस प्रकार प्रस्तुत करना होगा कि वे बुद्धि की कसरत का माध्यम बन पड़े।" प्रस्तुत लेख गणित शिक्षण संदर्भ में गिजुभाई बधेका के शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत करता है।

छोटे बच्चे से अपनी बात मनवाती माँ को देखें! वह कैसे गोद में बैठे छोटे से बच्चे को बहलाती है, दूध पी लो, तो ढेर सारी टॉफी देंगे तथा गोद में बैठा, इठलाता नखरे करता बालक, गट-गट कर दूध पी माँ के आगे हाथ फैलाकर टॉफी माँगता है। टॉफी दिए जाने पर झगड़ता भी है, एक और, आपने तो कहा था ढेर सारी, तो देखें इस नन्हे बालक ने अभी विद्यालय जाना आरंभ नहीं किया, लेकिन उसे संख्या के कम ज्यादा होने का अनुमान है। घर भर में अपने छोटे-छोटे पैरों से ठुमकते, कच्ची पक्की भाषा में बताते भी हैं। बाबा कहाँ रहते हैं? बहुत दूर! बाबा तुम्हें कितना प्यार करते हैं? खूब सारा! तुम्हारे कितने भाई हैं? एक, भाई किस कक्षा में पढ़ता है?— पाँचवीं कक्षा में और फिर भाई से विनती भी करते हैं। भाई पेंसिल दे दो बस एक। बड़ी वाली। माँ कविता सुनाती है, चंदा मामा दूर के! तो दूर होने का प्रतिबिंब उनके मस्तिष्क

* *सह-आचार्य*, (बी.एड.) महिला विद्यालय डिग्री कालेज, लखनऊ 226 018

में है, स्वयं एक तितली, अनेक तितली उसका भी प्रतिबिंब कल्पना में कहीं है अर्थात रोजमर्रा के जीवन में एक बच्चे के इर्द-गिर्द आकार, प्रकार, दूरी, संख्या, गणना कैसे छोटे-छोटे प्रतिबिंब में उसके मस्तिष्क में हैं, वह उन्हें समझ भी रहा है तथा अपने प्रतिदिन के कार्यों में उपयोग भी कर रहा है। आकार, भार, अनुमान संख्या आदि प्रकृति में है तथा एक बालक के निरीक्षण में, व्यवहार में उनका स्वरूप विद्यमान है।

कहने का आशय है कि एक विषय के रूप में कक्षा में पढ़ाई जाने वाली गणित की विषय-वस्तु एक बच्चे के जीवन की सबसे करीबी चीज है। हाथ-पैरों के संचालन के साथ ही, वह अपने हाथ के संकेत से छोटे-बड़े आकार व अनुपात आकृति को भी समझने लग जाता है। भालू, बहुत बड़ा, उसकी आँखे गोल आकार की आदि, लेकिन कक्षा में जाते ही एक विषय के रूप में इन आकार, प्रकार, गणना को लिखने, पढ़ने में आना-कानी करते हैं। थोड़े बड़े होने पर कितने बच्चे गणित विषय को पढ़ना पसंद नहीं करते हैं। कई बच्चों के सबसे कम अंक गणित में ही आते हैं तथा हमारी कक्षाओं में बड़ी संख्या उन विद्यार्थियों की है, जो गणित विषय पढ़ना नहीं चाहते हैं। गण्ति विषय को पढ़ने में विद्यार्थी बड़ी संख्या में प्राथमिक स्तर पर ही जटिलता का सामना करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लिखा है कि "वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने जिनकी अनुमानित संख्या 5 करोड़ से भी अधिक है, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान भी नहीं सीखा है अर्थात ऐसे बच्चों में सामान्य लेख पढ़ने समझने तथा अंको के साथ बुनियादी जोड़ तथा घटाव करने की क्षमता भी नहीं है।" यहाँ संदर्भ गणित विषय की बुनियादी समझ का है। अतः सीधी बात समझ में आती है कि प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षा में सुधार की आवश्यकता है।

रोजमर्रा के जीवन से जुड़ा, हमारी कल्पना हमारे मस्तिष्क में रचा-बसा गणित, कक्षा में कुछ बेहतर तरीके से पढ़ाया जाना चाहिए। छोटे बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों के लिए अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले शिक्षा चिंतक गिजुभाई बधेका ने कठिन-से-कठिन विषय-वस्तु को कक्षा में रुचिकर रूप में प्रस्तुत किए जाने, बच्चों को उन्हें सहजता से समझाने, हेतु अनेक प्रयोग किए थे। गणित विषय के शिक्षण हेतु उनके दिशा निर्देशन, संबंधी प्रयोग बड़े उपयोगी हैं। गिजुभाई ने कहा था कि— "भाषा, भूगोल, इतिहास, गणित आदि को जानना एक अलग बात है तथा दूसरों को ये विषय पढ़ाना अलग बात है, स्वयं अच्छा गाना अलग बात है तथा दूसरों को गाने योग्य बनाना अलग बात है। ज्ञाता होने तथा आचार्य होने में बहुत बड़ा अंतर है। आचार्य को विषय के ज्ञान के उपरांत शिक्षण-कला हस्तगत होनी चाहिए, जो व्यक्ति यह नहीं जानता कि अलग-अलग विषयों को कैसी-कैसी विविध पद्धतियों से सिखाया जा सकता है, वह पढ़ा नहीं सकता, वरन् वास्तव में वह दूसरों के मस्तिष्क में ठूँसता है।"

ठूँसने की ये प्रक्रिया ही आगे चलकर बच्चे में विषय विशेष के लिए अरुचि पैदा करती है। गणित शिक्षण संदर्भ में उनके दिशा-निर्देशन पर एक नजर डालते हैं। यहाँ इस क्रम में यह बहुत आवश्यक है कि उनके जीवनवृत्त, कृतित्व व व्यक्तित्व का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया जाए—

गिजुभाई बधेका का जीवनवृत्त, कृतित्व एवं व्यक्तित्व

15 नवम्बर 1885 को चित्तल, सौराष्ट्र में गिजुभाई बधेका का जन्म हुआ था। महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी तथा भारत में बाल केंद्रित शिक्षा के समर्थक गिजुभाई का पूरा नाम गिरजा शंकर भगवान जी बधेका था। स्नेहवश गिजुभाई नाम से पुकारे जाने वाले गिरजा शंकर, गिजुभाई के नाम से जाने जाने लगे। 1910 में बम्बई में कानून की पढ़ाई पूरी करने वाले गिजुभाई के अंतर्मन में अपनी बाल शिक्षा की यादें, अपनी प्रारंभिक शिक्षा के अनुभव बहुत अच्छे नहीं रहे थे। वे अक्सर अपने विद्यालयी जीवन के अनुभवों की कड़वाहट का जिक्र अपने लेखन व वक्तव्य में करते रहते थे। वकालत पढ़ने के उपरांत उन्होंने वकालत भी की, लेकिन इस काम में उनका मन नहीं लगा। उन्हें तो छोटे बच्चे, उनके क्रियाकलाप, उनके साथ समय बिताना, उन्हें पढ़ाना-लिखाना बहुत प्रिय था। संयोगवश से 1915 में उन्हें श्री दक्षिणामूर्ति भवन का कानूनी सलाहकार बनने का अवसर प्राप्त हुआ। 1916 में वह दक्षिणामूर्ति विद्यार्थी भवन से भी जुड़े। दक्षिणामूर्ति विद्यार्थी भवन गुजरात के भावनगर में स्थापित एक शैक्षिक संस्था थी। हरगोविंद पांड्या, जो कि गिजुभाई के मामा थे, उन्होंने इस संस्था से जुड़ने के लिए उन्हें प्रेरित किया, वे स्वयं भी इस संस्था से संलग्न (जुड़े) थे। हरगोविंद पांड्या द्वारा दिखाई गई इस दिशा ने गिजुभाई के जीवन की दिशा बदल दी।

गिजुभाई ने 1920 में बाल मंदिर की स्थापना की तथा वकालत छोड़कर बाल शिक्षण के क्षेत्र में सक्रिय हो गए। 1916 से 1936 के मध्य उन्होंने बाल शिक्षा के विविध आयामों पर चिंतन, मनन एवं प्रयोग किए। 'बाल देवो भवः' की धारणा पर आधारित उनके बाल मंदिर में बच्चों के इंद्रिय विकास के तमाम खेल अविष्कृत हुए। शैक्षिक खेल, भ्रमण, हाथ के काम, संगीत, नाटक, रचनात्मक कार्य, बाल संग्रहालय, कथा कहानी द्वारा शिक्षण के तमाम सफल प्रयोग उन्होंने यहाँ बच्चों के बीच किए। पहला स्वदेशी प्री-विद्यालय 1916 में गिजुभाई बधेका द्वारा स्थापित किया गया।

भावनगर में प्रथम मांटेसरी सम्मेलन 1925 में उनके संरक्षण में ही आयोजित हुआ। 1928 में द्वितीय मांटेसरी सम्मेलन उनकी अध्यक्षता में अहमदाबाद में संपन्न हुआ। 1930 में सत्याग्रह संग्राम में उन्होंने वानर परिषद सूरत अक्षरज्ञान योजना प्रारंभ की। 1938 में उन्होंने राजकोट में अध्यापन मंदिर शुरू किया। गांधी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित गिजुभाई ने सत्याग्रह आंदोलनों में भी भाग लिया। इस बीच उन्होंने बाल साहित्य की भी खूब रचना की। गुजराती भाषा में उन्होंने दो सौ से अधिक बाल-पोथियाँ लिखकर बच्चों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया। 'अध्यापन मंदिर' की स्थापना शिक्षकों को बाल शिक्षण के नूतन सिद्धांतों एवं गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित करने हेतु ही किया गया था। माता-पिता, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के दिशानिर्देशन के लिए की गई उनकी ये रचनाएँ बड़ी लोकप्रिय हुई और आज भी शिक्षकों और अभिभावकों की मार्गदर्शिका है।

'बाल पुस्तकों के प्रभावशाली लेखक होने के साथ-साथ वे एक प्रभावशाली पत्रकार भी थे। उन्होंने 'शिक्षण' पत्रिका का संपादन तो किया ही, उसमें

नियमित रूप से लिखते भी रहे। गिजुभाई का जीवन बच्चों के इंद्रिय विकास के खेलों का निर्माण करने, शैक्षिक खेलकूद, शैक्षिक भ्रमण, हाथ के काम, संगीत, नाटक, रचनात्मक कार्य, बाल कथाओं आदि के सृजन हेतु समर्पित रहा। गिजुभाई को बाल जगत का पारखी माना जाता है। बच्चों की शिक्षा को समर्पित गिजुभाई मात्र 54 वर्ष की आयु में चिरनिद्रा में लीन हो गए, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में किए गए उनके प्रयोग, उनकी पद्धतियाँ आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं। भाषा, विज्ञान, आचार-विचार, नैतिक मूल्य, इतिहास, भूगोल आदि के शिक्षक की तमाम मौलिक तकनीकों का अविष्कार करने के साथ-साथ प्राथमिक स्तर पर गणित विषय के प्रति बच्चों की रुचि बनाए रखने, उनकी आधारभूत जानकारी उन तक पहुँचाने के लिए भी गिजुभाई ने तमाम नवीन तथ्य, प्रारूप हमारे बीच रखे थे, उनका क्रमबद्ध विवेचन निम्नवत है—

प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण हेतु गिजुभाई बधेका के दिशा-निर्देश

गिजुभाई बधेका ने कहा था कि “गणित के शिक्षण की सार्थकता सवाल हल कर पाने में नहीं है, अपितु गणित-बुद्धि के विकास में निहित है। बालक एक, दो, तीन, चार आदि संख्याएँ सही-सही गिन ले, माँगने पर माँग के परिमाण में बराबर गिनती करके वस्तुएँ ला दे, फिर भी जब कभी वह संसार के परिचय में आए तथा आते ही यदि उसमें अपने आप गिनती करने का प्रश्न न उठे, यथा हाथों की अंगुलियाँ देखकर कि ये अंगुलियाँ कितनी हैं? मेरे कोट में बटन कितने होंगे? खिड़की की ये छड़ें कितनी होंगी? ऐसी जिज्ञासा न जागे, तो भले ही उसे गिनती करना आता होगा, पर उसकी गणित-बुद्धि का विकास नहीं हुआ है, यही कहा जाएगा।”

स्पष्ट है कि गणित शिक्षण अन्य विषयों से कुछ पृथक है। अतः तथ्यों को जानना एवं याद करना तो है ही उसे जीवन में शामिल भी करना है, हमें जानना होगा कि गणित सिर्फ अंकों की गणना मात्र ही नहीं है। इसमें संख्याओं तथा उनके उपयोगों के अतिरिक्त आकारों, शैक्षिक समझ, प्रतिरूपों, मानों व आँकड़ों की समझ का भी अपना महत्व है। इसका ज्ञान हमारी ज्ञानेंद्रियाँ हैं, जिन पर विश्वास किया जा सकता है। यही कारण है कि प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी गिजुभाई बधेका छोटे बच्चों की गणित शिक्षा को ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से जोड़ते हुए दैनिक जीवन के साथ समायोजित किए जाने पर बल देते हैं। उन्होंने बच्चों की गणित शिक्षण पद्धति में निम्न बिंदुओं को समाहित किए जाने की वकालत की—

1. बच्चों में गणित-बुद्धि की जागृति— गिजुभाई के अनुसार— “हम गणित के साथ व्यावहारिक एवं प्रत्यक्ष अनुभव को नहीं जोड़ते। बालकों को गणित मौखिक या पट्टी पर सिखाया जाता है, जबकि गणित बुद्धि के विकास के लिए आरंभ से ही व्यवहार तथा प्रत्यक्ष अनुभव के साथ सिखाना चाहिए।” अतः गणित शिक्षण में कक्षा में दिए जा रहे उदाहरण एवं प्रश्न आदि व्यवहारगत हों। ऐसे उदाहरण जो गणितीय परिधि में तो सही हों, किंतु शुद्ध कल्पना में नहीं हों, तो उन्हें कक्षा में प्रस्तुत ही क्यों करें। वे लिखते भी हैं कि “एक बालक से पूछें कि एक गाय के तीन पैर हैं तो सात गायों के कितने? बालक कहेगा इक्कीस यानी उसका हिसाब सही है, पर उसमें सामान्य समझ को लेकर अंधकार है। किसी बालक से पूछें एक गधे

के तीन कान? और बालक बीच में ही रोककर बोल उठे, हो ही नहीं सकता, तो इसे कहेंगे सामान्य समझ या सामान्य ज्ञान।''

गिजुभाई ने सामान्य समझ एवं शुद्ध कल्पना के विकास हेतु गणित बुद्धि के विकास का सूत्र दिया तथा गणित विषय में प्रस्तुत अंकों, आकार, जोड़ आदि क्रियाओं में गणित की सामान्य समझ को भी जगह दी, जो बालक में गणित बुद्धि विकसित करे और अंको, आकृतियों की गणना कल्पना में प्रतिबिंब भी बना सके। बालमन तभी गणित से जुड़ेगा। अँगुलियों से उन्हें लिखने के साथ उनसे संदर्भित चित्रों, संदर्भों को अनुभव भी कर सकेगा। यहाँ वे स्पष्ट उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं— ''एक आदमी के पास दो थैलियाँ थीं, एक में सात रुपए थे, दूसरी में पाँच थे, सब मिलाकर कितने रुपए हुए, व्यावहारिक गणित का ये स्पष्ट उदाहरण है। यहाँ प्रश्न से उभरने वाली कल्पनाएँ भी स्पष्ट है और गणना भी।'' गिजुभाई द्वारा वर्णित ये संदर्भ छोटे बच्चों की गणित की पाठ्यपुस्तकों में समाहित किए जा रहे हैं। उदाहरण स्वरूप रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित कक्षा 3 की पुस्तक आनंदमय गणित का संदर्भ देखें। गणित की पुस्तक के इस नवीन संस्करण में ''बच्चों को स्वयं से संबंधित अवधारणाओं को अपने संदर्भ में समझने की स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में खिलौनों तथा खेलों के माध्यम से सीखने की अलग-अलग युक्तियों के साथ-साथ अन्य गतिविधियाँ तथा प्रश्न जो बच्चों में तार्किक चिंतन तथा समस्या को सुलझाने की योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं, को भी सम्मिलित किया गया है।'' पुस्तक के पृष्ठ 49 में बच्चों की टोली के द्वारा जोड़ सिखाए जाने की क्रिया को शिक्षक कक्षा में कुछ इस प्रकार कराएँ तो परिणाम बेहतर होंगे।

शिक्षक— कक्षा में आगे की सीट पर कितने विद्यार्थी बैठे हैं?

विद्यार्थी— सर जी 4

शिक्षक— ये विद्यार्थी खड़े हो जाएँ (आगे की सीट के 4 विद्यार्थी खड़े हो गए)

शिक्षक— कक्षा में पीछे की सीट पर कितने विद्यार्थी बैठे हैं?

विद्यार्थी— सर जी 4

शिक्षक— इनमें से 2 विद्यार्थी खड़े हो जाएँ। (पीछे की सीट के 2 विद्यार्थी खड़े हो गए)

शिक्षक— गिनकर बताएँ 4 और 2 मिलकर कितने विद्यार्थी खड़े हुए?

विद्यार्थी— सर जी 6

ये छोटी-छोटी क्रियाएँ विद्यार्थियों को कक्षा में सक्रिय भी रखेगी तथा उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव से जोड़ की क्रिया का अभ्यास करने का अवसर देगी।''

2. गणित प्रश्नों का उभरना— गिजुभाई ने कहा है कि ''अगर कोई बालक सही ढंग से भाषा-विकास की दिशा में बढ़ा है, तो वह मात्र पाठ्यपुस्तक पढ़कर ही बैठा नहीं रह जाएगा। भाषा के द्वारा वह ज्ञानार्जन करता ही जाएगा। भाषा को वह माध्यम बना लेगा। उसने मात्र बारहखड़ी ही सीखी होगी, तो सड़क के साइन बोर्ड तथा अखबार के बड़े-बड़े अक्षरों को पढ़ने में अत्यंत उत्साह प्रदर्शित करेगा। यही बात गणित में होनी चाहिए। सुबह से लेकर शाम तक बालक के सामने व्यवहार में हिसाब के कितने ही विषय आते हैं। अगर उन पर सचमुच नजर पड़े, तो बालक के मन

में गणित के प्रश्न उभरने चाहिए। अगर गायों का झुंड जाता हो, तो कितनी गायें जा रही हैं? घर में बेर आए हैं तो वे कितने हैं? उनमें से इतने नहीं रहे तो कितने बचे? इतने बेर चार बालकों में बाँटे जाएँगे तो सब के हिस्से में कितने-कितने आएँगे? जब गणित विवेक ही नहीं है, तो ऐसे प्रश्न कदापि नहीं उभर सकेंगे।"

गणित की अपनी भाषा होती है। भाषा का तात्पर्य उसके पद (टर्म), प्रत्यय (कान्सेप्ट), सूत्र (फार्मूला), संकेत (साइन) तथा सिद्धांत हैं, जो कि कुछ विशेष भी हैं तथा उसकी भाषा को जन्म देते हैं, जैसे— लंबाई, चौड़ाई, त्रिभुज, लाभ-हानि, कोष्ठक, संख्याएँ, किलोग्राम आदि। अब इन सबके अपने विशिष्ट आशय, विशिष्ट माप हैं। छोटे बच्चों को इन्हें सिखाते समय इन शब्दों के साथ संदर्भित आकृतियाँ भी देनी होंगी। इनसे संदर्भित चित्र मस्तिष्क में भी अंकित करने होंगे। उन्हें व्यवहार से जोड़ना भी होगा, जब शिक्षक एक बोले तो मतलब— चाँद एक। गोल आकृति तो चाँद की गोलाकृति तथा गुब्बारे की भी, बाबा के चश्मे एवं उनकी आँखों की पुतली भी बिल्कुल गोल, शर्ट पर लगे बटन, खाने के लिए परोसी गई थाली, थाली के अंदर रखी कटोरी आदि-इत्यादि। फिर यहाँ विद्यालय से आकृतियों की रचना सीखकर आया बच्चा रिक्शे में बैठा रास्ते में दिखने वाली चीजों में विभिन्न आकृतियाँ खोजने का प्रयास करता दिखे। घर में जाकर वहाँ रखी चीजों को देखकर मन में तुलना, भेद करता रहे। रसोई में रखा गैस स्टोव आयताकार, उसका बर्तन गोल लेकिन सिलेंडर? इस प्रकार देखें कैसे कक्षा में पढ़ाई गई गणित की छोटी-सी जानकारी मस्तिष्क में अंकित होकर गणित के प्रश्नों को उभार रही है। यहाँ कक्षा में भी आकृतियों को सिखाते समय ब्लैकबोर्ड पर आकृतियाँ अंकित करने के साथ प्रतिदिन के सरल-सहज प्रश्न कक्षा में प्रस्तुत भी करने चाहिए तथा उनके उदाहरण भी। गिजुभाई ने लिखा है कि— "घर में रहते-रहते जो ज्ञान उपलब्ध है, उसे वह दिन-रात इंद्रियों तथा बुद्धि की प्रत्यक्ष-परोक्ष सहायता से तथा स्वप्रयत्न से ले लेता है, अभी उसकी जिज्ञासा तृप्त नहीं हुई। ज्ञान के अनेक प्रदेश अभी अनछुए ही पड़े हैं। बालक एक ऐसी प्रवृत्ति माँग रहा है, जो उसकी बुद्धि को कसरत देती है और उसे बढ़ाती है।"

गणित के प्रश्न, उसके उदाहरण उससे उत्पन्न आकृतियों को कक्षा में इस प्रकार प्रस्तुत करना होगा कि वे बुद्धि की कसरत का माध्यम बन जाए। हाल ही में प्रकाशित रा.शै.अ.प्र.प. की कक्षा 3 की पुस्तक 'आनंदमय' गणित के पाठ 4 में तत्संबंधी उदाहरण देखें— घरेलू वस्तुओं, जैसे—जूते के डब्बे, मेज की आकृति, सोफे के आकार, गेंद व खाने की वस्तु समोसे के चित्रों की ओर ध्यान आकर्षित कर विविध आकार वर्ग, त्रिकोण, वृत्त, आयत आदि बड़ी सहजता से सिखाए जा सकते हैं। ये आकृतियाँ तथा इन आकृतियों के आकार-प्रकार व उनके नाम वे अपने घर की चीजों में देखेंगे, उन्हें सीखेंगे।

3. रुचि का विकास— गिजुभाई लिखते हैं "हमारी वर्तमान रुचि-अरुचि, पक्ष-विपक्ष, पसंद-नापसंद के पीछे बचपन के कैसे-कैसे खट्टे-मीठे अनुभव विद्यमान रहते हैं। यह हमें खोजने की जरूरत है। आज हम जो हैं, उसकी जड़ें हमारे बाल्यकाल में हैं। हम बाल्यकाल में बंध जाते हैं।" हम जानते हैं कि रुचि किसी क्रिया को करने में दूसरी क्रिया की अपेक्षा प्रथम चयन है, जो कि वातावरण के अनुरूप

पोषित भी होती है, जिस कार्य को करने में हमारी रुचि होती है, उसे हम कठिन-से-कठिन परिस्थितियों, विपरीत दशाओं में भी कर ही डालते हैं। यहाँ ध्यान देना होगा, अपनी प्रारंभिक कक्षाओं में ही, यदि हमने कुछ ऐसी परिस्थितियाँ खड़ी की थीं कि नन्हा बालक गणित विषय के प्रारंभिक स्वरूप से ही घबरा उठे तो आगे का काम कैसे होगा?

अंको की जानकारी, जोड़, गुणा करने की क्रियाएँ श्यामपट्ट पर तो करानी ही हैं। इन अंको के साथ यदि आकृतियों का दैनिक अनुभवों का समावेशन हो तो शब्दों का जोड़-तोड़ रुचिकर बनेगा। गिजुभाई प्राथमिक कक्षाओं में छोटी-छोटी क्रिया द्वारा शिक्षण के माध्यम से पाठ को रुचिकर बनाने का सुझाव देते हैं। यहाँ वे एक शिक्षक को सचेत भी करते हैं। "बालकों को कड़वे-मीठे अनुभव कराने से पहले यह सोचने की आवश्यकता है कि उनका असर कैसे जीवनपर्यंत स्थायी रह जाता है और वह नुकसान कर बैठता है।" अतः कक्षा शिक्षण के मध्य शिक्षक अपना व्यवहार, भाषा, भाव-भंगिमा संतुलित ही रखें। बालमन बड़ा ही कोमल तथा भावुक होता है। छोटा बच्चा प्रायः अंको के जोड़, घटाने, गुणा, भाग में गलतियाँ करता ही है। शिक्षक भी जाने-अनजाने गलत उत्तर पर अपनी नकारात्मक भाव-भंगिमा, प्रतिक्रिया भी व्यक्त कर ही देता है। यहाँ ये जरूर जानना होगा कि ये प्रतिक्रिया बच्चे के बालमन पर कहाँ तक असर करेगी। उदाहरण स्वरूप बच्चे अपने दैनिक जीवन में विविध वस्तुओं के आकार-प्रकार से परिचित हैं, उन आकार के नामों से नहीं। अब वे कक्षा में त्रिभुज को आयत व आयताकार को त्रिभुज बता बैठें, तो अरे मूर्ख कहने से बेहतर है कि दूसरे उदाहरण प्रस्तुत कर उत्तरों की खोज की जाए। अब वे कक्षा में वर्गाकार (स्क्वायर) को आयताकार (रेक्टेंगल) व आयताकार को वर्गाकार बता बैठें, तो कौन-सा आसमान गिर पड़ा? यहाँ दैनिक उपयोग की वस्तु का उदाहरण लें बात को ठीक कराने का प्रयास किया जाना अधिक बेहतर है। जिस श्यामपट्ट पर शिक्षक लिख रहा है, उसी का उदाहरण लें और पूछें— अच्छा ये बोर्ड जिस पर मैं लिख रहा हूँ इसकी लंबाई-चौड़ाई में क्या अंतर है? बच्चे जरूर बोल पड़ेंगे सर इसकी विपरीत भुजाएँ समानांतर हैं। ये लंबा कम और चौड़ा अधिक है? अब इसके इतने हिस्से को अलग कर दें तो क्या हुआ? अब इसकी चारों भुजाएँ समान है, तो वर्गाकार क्या हुआ? जिसकी चारों भुजाएँ समान हैं, वह वर्गाकार हैं। श्यामपट्ट के इस हिस्से को पुनः जोड़ दिया तो क्या हुआ? वह लंबा कम चौड़ा अधिक हो गया। इसकी विपरीत भुजाएँ कैसी हैं? समानांतर, तो आयताकार क्या हुआ? जिसकी विपरीत भुजाएँ बराबर और एक-दूसरे के समानांतर वे आयताकार है।

यहाँ आयताकार से आशय के साथ संदर्भित आकृतियों का उदाहरण प्रस्तुत किया जाना भी प्रभावपूर्ण है। मेज, ब्लैकबोर्ड, लैपटाप, आपका पेंसिल बॉक्स आकार में क्या? आयताकार कुर्सी की बैठने की सीट, कैरमबोर्ड, चेसबोर्ड आदि-आदि वर्गाकार। अब यहाँ गृहकार्य भी दें— चलो कल सब अपने घर तथा विद्यालय में दिखने वाली 10–10 आयताकार एवं वर्गाकार वस्तुओं को लिखकर लाएँगे। कक्षा में छोटी-छोटी गलतियों के लिए कड़े शब्दों का प्रयोग शिक्षक द्वारा किए जाने को गिजुभाई ने कभी भी उचित नहीं माना। यहाँ वे

स्वयं के बाल्यकाल का अनुभव साझा करते हैं— "अंक गणित मुझे अच्छी नहीं लगती। मेहनत करके जितना कुछ सीखा था, वापिस भूल गया हूँ। जहाँ बहुत जरूरत थी, वहाँ भी गणित को सीखने के प्रति अनादर का भाव था। मुझे गणित की महत्ता बताने बिठा दो तो बहुत कम आँकू। ... एक बार दूसरी कक्षा में पढ़ाई चल रही थी। अध्यापक जी श्यामपट्ट पर सवाल सिखा रहे थे। लड़के उनके सामने मुँह फाड़े देख रहे थे। एक विद्यार्थी को झपकी आ गई और अध्यापक जी ने उस पर चॉक का प्रहार किया। मैं ही हूँ वह लड़का, क्या मुझे उस रोज वह सब अच्छा लगा होगा? कहीं गणित के प्रति मेरी अरुचि का कारण भले ही दूर का हो, पहला कारण वह सजा तो नहीं थी? आगे चलकर इस विषय में रुचि बढ़ाने के मार्ग में कहीं यही मूल मनोभाव विरोध का काम तो नहीं कर रहा था? खुद गणित पढ़ाने के खिलाफ मेरी शिक्षण संबंधी विचारधारा कहीं मेरे निजी कटु अनुभव की परिणति तो नहीं थी।"

4. गणित शिक्षण में नाट्य पद्धति— गिजुभाई ने बताया कि "गणित का शिक्षण नाट्य पद्धति से भी किया जा सकता है। गणित शिक्षण के समय कक्षा, कक्षा न रहकर एक दुकान, डाकघर, रेल का टिकटघर, बैंक, शेयर बाजार या सर्राफा बाजार का रूप धारण कर ले, तो गणित का शिक्षण रोचक व सरल बन सकता है और विद्यार्थियों के मन में यह भरोसा हो जाए कि इन विषयों की जीवन में क्या उपयोगिता है? विद्यार्थी बैंकरों, जमानतदारों, शेयर, ब्याज, डिस्काउंट और बिल आफ एक्सचेंज के प्रश्नों को समझने लगेंगे।" प्राथमिक शाला की ऊँची कक्षाओं में प्रतिशत, ब्याज, गुणा, रुपये पैसे की गणना आदि इन प्रक्रियाओं द्वारा सहजता से सिखाई जा सकती हैं, इसमें कोई दो राय नहीं।

5. शिक्षण सामग्रियों का उपयोग— गिजुभाई के अनुसार आचार्य को विषय के ज्ञान के उपरांत शिक्षण कला भी हस्तगत होनी चाहिए, जो व्यक्ति यह नहीं जानता कि अलग-अलग विषयों को कैसी-कैसी विविध पद्धतियों से सिखाया जा सकता है, वह पढ़ा नहीं सकता। गिजुभाई ने मांटेसरी शिक्षा-पद्धति के सिद्धांतों का गहन अध्ययन-मनन किया था। मांटेसरी शिक्षा पद्धति को पूर्णत: आत्मसात करने के बाद उन्होंने उसके सिद्धांतों को भारतीय परिवेश तथा संदर्भों में अधिकाधिक प्रभावी बनाया। आयु-वर्ग के अनुसार बच्चों के लिए अनेकानेक रोचक गतिविधियों का सूत्रपात करने में भी उन्हें आशातीत सफलता मिली। गणित शिक्षण में उन्होंने मांटेसरी पद्धति में प्रयुक्त सहायक सामग्रियों उपकरणों की महत्ता को स्वीकार किया था। वे लिखते भी हैं— सभी प्राथमिक शालाओं में, वहाँ के बाल-वर्ग में रेखाएँ खींचने की पद्धति यदि चालू की जाती है, तो वह बहुत उपयोगी रहेगी। इसके लिए उपकरण हैं— ज्यामिति की दस आकृतियाँ, पट्टी तथा बरता। आकृतियाँ लोहे की बनी होने से वर्षों तक चल सकेंगी।" गणित शिक्षण में इनका प्रयोग बच्चों को गणितीय शब्दावली के साथ आकृति का काल्पनिक चित्र भी प्रस्तुत कर सकेगा। तो बस काम आसान, आकार यदि कल्पना में है, तो उन्हें शब्द दे कर याद कर लेना है।

गिजुभाई ने बाल मंदिर में मांटेसरी के उपकरणों को प्रयुक्त किया तथा उनकी महत्ता से हमें परिचित भी कराया। गणित शिक्षण में इन उपकरणों की महत्ता का छोटा-सा उदाहरण देते हुए वे लिखते हैं— "सामान्यतः नन्हा बालक लंबी-नाटी, मोटी-पतली, चौड़ी-संकरी चीजों के परिचय में आता है, इनका स्थूल भेद उनकी समझ में आता है, यह फर्क इतना स्थूल होता है कि जिसकी आँखे होती हैं, वह स्वतः ही उसे समझ जाता है, परंतु जब बालक के सामने ब्लॉक पेटी लाकर रखी जाती है तथा वह उन ब्लॉक्स को उनके खाने में भरने लगता है, तब उसकी आँखों ब्लॉक्स को सही खाने में भरने में अक्षम दिखाई देती हैं। जब बालक चौड़े खाने में छोटा ब्लॉक भरने की या छोटे खाने में मोटा ब्लॉक भरने की भूल करता है, तब समझ में आता है कि अभी बालक की आँखों की सही शिक्षा नहीं हुई। बालक जहाँ भूल करता है, वहीं उसे शिक्षित करने की आवश्यकता है। वहीं उसे स्वशिक्षण का स्थल नजर आता है, वहीं ठिठककर खड़े रहने से वह प्रयत्न करके आगे बढ़ सकता है। खाने में ब्लॉक भरने की गलती उसे सुधारने को प्रेरित करती है। अपनी भूल सुधारने के लिए वह अनेक प्रयत्न करता है एवं अंततः उसे सही करके आगे बढ़ता है। उन्होंने कहा भी है कि गट्टा पेटी या रंग की तख्तियों में मांटेसरी पद्धति नहीं है। ड्राइंग या संगीत विषय में भी मांटेसरी पद्धति नहीं है। मांटेसरी पद्धति तो स्वतंत्र स्थिति में विचरते बालकों के अवलोकन से निष्कासित सिद्धांतों में निहित है।" गणित शिक्षण के उपकरण इस क्रिया में सहायक हो सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया— ये उपकरण अन्य खिलौनों जैसे खिलौने नहीं होते कि उनकी तरह इनसे बालकों का दिल बहलाया जा सके। ये उपकरण इंद्रिय विकास के उपकरण होते हैं। मात्र इसी के काम आते हैं, अगर इन्हें उचित तरीके से बालक के पास रखा जाए तथा बालक इनका सही-सही उपयोग करे, तभी इनका लाभ मिल सकता है।"

प्रारंभिक कक्षा का पाठ्यक्रम अंक, आकार, पहाड़ा, आकृतियाँ, जोड़, घटाना, गुणा, भाग आदि हैं, तो इनके शिक्षण में इन उपकरणों का प्रयोग बड़ा ही लाभप्रद होगा। इन्हें कक्षा में उचित रूप में प्रयुक्त करें। उन्होंने कहा भी था "उपकरणों में यही खूबी है, वे स्वाभाविक रूप में प्रवृत्ति करने को प्रेरित करते हैं तथा चाहे कितना ही परिश्रम करना पड़े, लेकिन फिर भी काम को पूरा करने हेतु बालक को संलग्न रखते हैं। बालक श्रमपूर्वक क्रिया करते हैं एवं उसमें असाधारण एकाग्रता दिखने लगती है। क्रिया शक्ति का यह प्रदर्शन अत्यंत बेहतरीन होता है। कल्पना का बल कम नहीं होता, बल्कि काम में आनंद प्राप्त होता है।" तो क्या यह उचित है कि छोटे बच्चों की गणित की कक्षाएँ इन उपकरणों से सुसज्जित हों, वे इनके साथ खेलते, क्रियाकलाप करते गणित विषय की आधारभूत जानकारी प्राप्त कर आगे अधिक बेहतर जानने की इच्छा जागृत कर सकें। उदाहरण स्वरूप कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक गणित मेला को देखें— बच्चों को सप्ताह, माह, वर्ष आदि के विषय की जानकारी यदि शब्दों के माध्यम से दें, तो वह बार-बार सप्ताह तथा माह भूलेंगे, गलतियाँ करेंगे। यहाँ यदि शिक्षण सामग्री के तौर पर कैलेंडर प्रस्तुत कर तथ्य बताएँ तथा उनसे दिन, सप्ताह व माह की गणना कराई जाए, तो काम बड़ा ही सहज बन पड़ेगा।

6. गणित शिक्षण में कहानी प्रविधि— गिजुभाई ने कहा है कि "यह बात स्वयंसिद्ध है कि कहानी आनंद देने वाली चीज है, तो निश्चय ही कहानी को विद्यालयी शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान मिल जाएगा।" गणित शिक्षण में इन्हें भी समाहित करें। अब कल्पना करें प्राथमिक शिक्षण स्तर पर कक्षा में जोड़, घटाना, गुणा, भाग की क्रियाएँ कराने के क्रम में चॉक तथा डस्टर को जरा देर परे रख बच्चों को कहानी सुनाने लग पड़ें— 'क' राजा बड़ा ताकतवर, उसका राज्य उत्तर से दक्षिण तक फैला था। बड़ी-सी सेना, सेना में 500 सैनिक, 100 हाथी, 150 घोड़े और 50 तोपें भी थी। पैदल सैनिक तलवारों से लड़ते, राजा के पास 700 तलवारें, 200 भाले थे। हथियारों की देख-रेख के लिए तकरीबन 50 सहायक भी थे। राजा को अपनी सेना तथा हथियारों से बड़ा प्यार था। एक बार पड़ोसी राजा से उसका युद्ध छिड़ गया। राजा ने अपने कुल सैनिकों में से 100 सैनिक युद्ध में भेजने की योजना बनाई। कहानी सुनाते हुए शिक्षक ने पूछा—

भला बताओ राजा के पास कुल सैनिक कितने थे?

बच्चे समूह में बोल पड़े सर 500

युद्ध में 100 सैनिक भेजने पर कितने बचे?

सर 400 सैनिक बचे

शिक्षक ने झट ब्लैकबोर्ड पर लिखा—

500–100 = 400

अब शिक्षक एक-एक कर कथा क्रम को आगे बढ़ाता गया, युद्ध की घटना के चित्र में हाथी, घोड़े, तलवार, सब की गणना, इतनी तलवार टूट गईं, इतने सैनिक घायल हो खेमे में चले गए, राजा ने इतने और सैनिक बुलवाए। अब कितने सैनिक बचे? 10–10 हाथी की चार टुकड़ी रवाना हुईं, 8–8 घोड़ों की 05 टुकड़ियाँ रवाना हुईं, कुल कितने घोड़े रवाना हुए? कितने हाथी युद्ध में गए? कहानी का घटनाक्रम स्वयं बच्चे के मन में गणना कराता चला जाएगा। कहानी कुछ नैतिक सीख भी देगी तथा गणना का अभ्यास भी।

गिजुभाई भारत की पारंपरिक शिक्षण पद्धति में कहानी की महत्ता बताते हुए कहते हैं— 'कहानी द्वारा शिक्षण की रीति बहुत पुरानी है। भारत में भी यात्रा के लिए निकले ऋषि-मुनि अगर कहीं अनुष्ठान कर रहे होते, तो वहाँ कुछ दिन विश्राम करते तथा अत्यंत उत्साह के साथ धार्मिक कक्षाओं का विनिमय करते। कहानियों का ताना-बाना अंक तथा गणितीय लेखे-जोखे में प्रस्तुत करके शिक्षक बड़े ही सहज तरीके से गणित के छोटे-छोटे पाठ विद्यार्थी को सिखा सकता है। यहाँ रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित कक्षा 3 की गणित पाठ्यपुस्तक गणित मेला के पाठ 1 में देवा तथा दीप चरवाहे की कहानी का भी उदाहरण देखें। पुस्तक में प्रस्तुत कहानी में देवा और दीप संख्या का उपयोग किए बिना वस्तुओं के बड़े समूहों को गिनने की क्रिया टैली चिह्नों के माध्यम से करते हैं। शिक्षक कक्षा में इन क्रियाओं के माध्यम से गणना की क्रियाएँ करा सकते हैं।

7. जोड़ीदार पद्धति— अपने घरों के बच्चों के बीच होने वाले छोटे-बड़े क्रियाकलापों को देखें। कैसे बड़े भाई को कॉपी में लिखता देख छोटा भाई या बहन उसकी पेंसिल लेकर आड़ी-तिरछी लाइन खींचता, पेंसिल पकड़ना सीख जाता है। उसकी किताबों में झाँकता, ताकता, प्रश्न करता, अ से अनार, बड़े आ से आम पहचानने लग जाता है। गिजुभाई इस

क्रियाकलाप को इस भाव को कक्षा के भीतर ले आना चाहते हैं। विद्यार्थियों की जोड़ी बनाकर एक-दूसरे के सहयोग से पठन-पाठन की इस क्रिया को उन्होंने जोड़ीदार पद्धति कहा। इस पद्धति को स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया— "जोड़ीदार पद्धति कुछ ऐसी है कि कक्षा के विद्यार्थियों की दो-दो की टुकड़ियाँ बने, टुकड़ियों वाले विद्यार्थी एक-दूसरे को सिखाएँ तथा जरूरत पड़े, तो शिक्षकों की मदद लेकर अपने इच्छित विषय में इच्छित समय तक शिक्षण लें।"

जोड़ीदार पद्धति को उन्होंने गणित शिक्षा में भी महत्वपूर्ण माना। 'अंक पहाड़े, माप-तौल, आकार, आकृति, जोड़, घटाने, गुणा, भाग, प्रतिशत आदि गणित की बुनियादी जानकारी प्राप्त करने में अभ्यास एक आवश्यक नियम है। ये अभ्यास जोड़े में तन्मयतापूर्वक हो सकेगा। एक की गलती को दूसरा चिह्नित करने के साथ स्वयं भी उस गलती को दुहराने से बचेगा। शिक्षक एक निर्देशक के रूप में उपलब्ध रहेगा ही।' गणित शिक्षण में इस पद्धति द्वारा छोटे-छोटे गणितीय गणनाओं को करने, आकार, प्रकार को समझने, उन्हें एक-दूसरे से पृथक करने, उनके प्रतीक मस्तिष्क में अंकित करने जैसी क्रियाओं में होने वाली गलतियों का त्वरित निराकरण होता जाएगा। एक की गलती को दूसरा पहचान कर भूल सुधार कर सकेगा। निःसंदेह इससे अभ्यास में तीव्रता आएगी और बालक सहजता से सीखता जाएगा। गणित विषय निरंतर अभ्यास माँगता है, इसमें यह पता होने पर भी कि एक संख्या को घटाने की प्रक्रिया क्या है, सवाल को हल करने में गलतियाँ हो जाती हैं। निरंतर अभ्यास गणित के सवालों को सटीकता से हल करने का कौशल विकसित करता है। जोड़ीदार पद्धति अभ्यास को सरल, सहज एवं काम को रोचक भी बनाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित है कि "जब सहपाठी एक-दूसरे से सीखते हैं तो यह काफी प्रभावी होता है। इस प्रकार प्रशिक्षित शिक्षकों की देख-रेख में तथा सुरक्षा पहलुओं का उचित ध्यान रखकर साथी विद्यार्थियों के लिए पियर ट्यूनिंग को एक स्वैच्छिक और आनंदपूर्ण गतिविधि के रूप में लिया जा सकता है।" गिजुभाई ने वर्षों पूर्व इस ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया था।

8. शिक्षक, बाल मनोविज्ञान का ज्ञाता— गिजुभाई बधेका के अनुसार— "मकान बनाने वाले राजगीर, भौतिक शास्त्र के सिद्ध नियमों को जानते हैं, तभी तो मकान बना सकते हैं। कुम्हार, प्राणी स्वभाव के अनेक नियम अपने गधे की लातें खाकर सीखता है तथा माली को अपने प्रिय पौधे को सुख देने के बजाय उनकी जरूरतों का ज्ञान अर्जित करने की आवश्यकता महसूस हुई है। अगर हम सिर्फ अपनी मर्जी के मुताबिक ही शिक्षा देना नहीं चाहते हों तो हमें बाल विकास से संबंधित अनेकानेक नियमों को जान लेना चाहिए। यानी हमें मनोविज्ञान को पढ़ना, जानना व समझना है।" घर में बालक के हाथ में छोटी-मोटी वजनी चीजें भी आती हैं। पर दो वजनों में से कौन-सा भारी है? कौन-सा हल्का? यह निर्णय करने, वजन को अपने हाथ में लेकर तौले तो बालक तभी बैठेगा जब कि उसके सामने ऐसे दो वजन आएँगे या जिन्हें हाथ में लेने पर उनके अंतर का वह सहज रूप से निर्णय नहीं ले सकेगा एवं उसके सामने समाधान के लिए प्रश्न खड़ा होगा। वह अपने मन में सोचेगा कि दोनों में अंतर है तो सही, लेकिन पता नहीं

चला, अतएव उसका शोध जारी रहेगा। गिजुभाई इस दैनिक निरीक्षण क्रिया को कक्षागत क्रिया में शामिल किए जाने के पक्षधर हैं।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में गणित में सफलता हर बच्चे का अधिकार मानते हुए गणित की शिक्षा में प्रासंगिक सवालों पर बल दिए जाने की अनुशंसा की गई है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 इस बात पर भी बल देता है कि गणित के डर को दूर करने के लिए बच्चों को स्टेप बाई स्टेप पढ़ाया जाए। गिजुभाई ने वर्षों पूर्व गणित शिक्षण के इन प्रश्नों को न केवल हमारे सामने रखा था, बल्कि तत्संबंधी दिशा-निर्देश देते हुए उन्हें क्रियान्वित भी किया था।

9. खेल आधारित शिक्षण— विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में स्पष्टता से कहा गया है कि 3 से 8 वर्ष की आयु के दौरान बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षा खासतौर पर महत्वपूर्ण है। यह खेल समूह में हो सकते हैं, व्यक्तिगत हो सकते हैं। खेल आधारित शिक्षा बच्चों की जन्मजात क्षमताओं और जिज्ञासा सृजनात्मक, आलोचनात्मक चिंतन, सहयोग, टीम वर्क, सामाजिक अंत:क्रिया, सहानुभूति, करुणा, समावेशिक संप्रेषण, संस्कृति की सराहना, हँसीखेल की भावना, आस-पास के वातावरण के प्रति जागरूकता, साथ ही साथ शिक्षक अपने साथियों व अन्य के साथ सफलतापूर्वक बातचीत की योग्यता को भी पोषित करते हैं।

संख्या ज्ञान के लिए 3–8 वर्ष की आयु सीमा को महत्वपूर्ण मानते हुए बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में लिखा भी गया है कि "यही वर्ष बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की उपलब्धि का आधार बनते हैं। गिजुभाई बधेका ने छोटे बच्चों को अंको की जानकारी देने, उन्हें गिनती, पहाड़े सिखाने तथा छोटे-छोटे जोड़-घटाने की क्रियाओं को खेल-खेल में रुचिपूर्ण ढंग से करने की अनुशंसा की थी।

"शुद्ध गणित— पचास कंकड़ लाओ एवं बताओ कि दस-दस की कितनी कतारें बनी। जोड़ की चार पर्चियाँ लिखकर लाओ।

गणित क्रीड़ा— बीस बार उछलो-कूदो, बीस बार कान पकड़ो, बीस बार हाथ ऊपर उठाओ, बीस बार नाक पकड़ो, बीस बार ताली बजाओ।"

यहाँ बच्चे हँसते-खेलते जोड़, घटाना सीखते जाते है। स्पष्ट है कि बाल जगत के पारखी गिजुभाई बधेका जीवनपर्यंत इस बात पर बल देते रहे कि बच्चों के अध्ययन का परिवेश स्वाभाविक हो। गणित शिक्षण के प्रति उनके दिशा-निर्देशन में भी ये तत्व प्रधान रहा। प्राथमिक स्तर चूँकि विषयों की बुनियादी शिक्षा है, यहाँ वे विविध विषयों की बेसिक जानकारी प्राप्त करते हैं। भाषा में अक्षर, मात्रा, शब्द, अक्षर, व्याकरण, गणित के अंक, आकार, पहाड़े, गणना, नाप-तौल, मात्रक इत्यादि तो इनके शिक्षण की अपनी बारीकियाँ हैं। यहाँ पहली जरूरत तो संदर्भित कल्पना, संदर्भित प्रश्न और रुचि की है। आ के साथ आम के चित्र के संयोजन के जैसे एक के साथ एक वस्तु और फिर आगे अंकों के घटते-बढ़ते जाने के साथ प्रतीकात्मक चित्र बालक के मस्तिष्क में जागृत करना गणित शिक्षण की प्रधान जरूरत है और उनसे खेलते रहने की वृत्ति प्राथमिक स्तर पर पहली आवश्यकता है। गणित शिक्षण इससे बड़ा

ही प्रभावपूर्ण बन सकेगा। यहाँ शिक्षक की भूमिका भी बड़ी महत्वपूर्ण है। भाषा के साथ कथा, कहानी, कविता जुड़ी है, इतिहास के राजा-रानी के किस्से, भूगोल में आस-पास की प्रकृति, मिट्टी, पृथ्वी, उपज आदि। गणित विषय की कल्पनाएँ क्रिया में है। यहाँ भी अंक, जोड़, घटाना परिवेश के आस-पास तो है, लेकिन ज्यों की त्यों नहीं। वह विचार में है। आज पिता जी 1 किलो अमरूद लाए तो 8 अमरूद परिवार में बँट गए। बचे कितने दो। अब कल ये दो बचे अमरूद आठ लोगों में बाँटे गए। एक अमरूद में कितने टुकड़े हों कि दो अमरूद काटकर आठ लोगों में बँट सकें। यहाँ भी प्रतीक इर्द-गिर्द ही है, लेकिन प्रश्न रूप में उनमें क्रियाएँ करनी होंगी।

प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण का यही सबसे प्रधान पक्ष है। शिक्षक गणित प्रश्नों को बालक के मस्तिष्क में उभारने के मौके दें। उन्हें छोटे-छोटे रुचिकर उदाहरण, क्रिया, प्रतिक्रिया, कक्षागत क्रियाकलाप घर-बाहर की घटनाओं के निरीक्षक आदि के माध्यम से गणित विषय की आधारभूत जानकारी देता जाए, तो बच्चे गणित विषय के एक-एक बिंदु को सीखेंगे भी और उसमें रुचि भी लेंगे। नदी किनारे माँ बत्तख के साथ छोटे-छोटे बत्तखों की टोली को देखें। माँ बत्तख कैसे उन्हें पानी में उतारने, उसमें तैरने को खुद आगे-आगे चलते, उन्हें स्वतः छोटे-छोटे प्रयासों से सीखने का अवसर देती है। टोली में पीछे छूटा बत्तख का बच्चा औरों को आगे देख स्वतः प्रयास करता, गिरता-पड़ता टोली में आ, सबके साथ बराबरी से चल ही पड़ता है। औरों से पीछे रह गए टोली के बत्तख को उसकी माँ द्वारा कभी छड़ी ले डाँटते देखा है क्या? नहीं तो, कभी उसे धकियाते देखा है? कभी नहीं। हमारी शिक्षण प्रविधियों में प्रकृति का ये नियम बड़ा प्रभावी है, गणित शिक्षण में इसका अपना स्थान है। आप बच्चों को अंको की गणना प्रविधियों की जानकारी दें। उनके मस्तिष्क में विचार उत्पन्न करें। ये विचार प्रश्न रूप में हों तो और फिर उन्हें इन प्रश्नों तथा अंकों से खेलने दें। देखें कैसे छोटे-छोटे बच्चे अपनी अँगुली पर गणना करते, नाप-जोख के सवाल हल करते दिख जाएँगे। गणित शिक्षण के प्रति यही गिजुभाई का दिशा-निर्देशन है और यही दुनियाभर के छोटे-छोटे बच्चों की जरूरत भी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इन संदर्भों को रेखांकित किया है, वर्षों पूर्व दिए गए गिजुभाई के दिशा-निर्देशन गणित विषय की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित हो प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को लाभान्वित करने हेतु अग्रसर हैं। अब यहाँ आगे का काम हम शिक्षकों का है। हम अपनी कक्षाओं में बच्चों के बीच गणित विषय को उनके दैनिक जीवन से जोड़, कथा, कहानियाँ, दैनिक क्रियाकलापों, उनके परिवेश से जोड़ उनके दिलों में उतर पाने दें। उन्हें अंकों की जादूगरी से खेलने, सीखने का अवसर दें।

संदर्भ

गिजुभाई, 2006. बाल शिक्षण जैसा मैं समझ पाया, अनुवाद सोनी रामनरेश, पृष्ठ 94, 169. पूर्व संदर्भित.

———. 2012. *प्राथमिक विद्यालय शिक्षक और शिक्षण पद्धतियाँ.* अनुवाद— सोनी रामनरेश, पृष्ठ 123, 133, 140. पूर्व संदर्भित.

———. 2018. *शिक्षक हो तो*. अनुवाद सोनी रामनरेश, पुनर्मुद्रण संस्करण सर्जना प्रकाशन बीकानेर. पृष्ठ 32, 33, 34.

———. 2018. *प्राथमिक विद्यालय भाषा शिक्षण और चिट्ठी वाचन*. अनुवाद सोनी रामनरेश, पुर्नमुद्रण 2019, सर्जना प्रकाशन, बीकानेर. पृष्ठ 19, 41, 207.

बधेका, गिजुभाई. 1997. *बाल शिक्षण जैसा मैं समझ पाया*. अनुवाद सोनी रामनरेश, मांटेसरी बाल शिक्षण समिति, राजदेसर, चुरू, पृष्ठ 74, 84, 94, 100, 115.

———. 2000. *दिवास्वप्न*. संस्कृति साहित्य प्रकाशन. दिल्ली पृष्ठ 7.

———. 2006. *कथा-कहानी का शास्त्र*. अनुवाद सोनी रामनरेश, मांटेसरी बाल शिक्षण-समिति राजलदेसर चुरू. पृष्ठ 19.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2022. *बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2022*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. पृष्ठ 25.

———. 2023. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. पृष्ठ16.

———. 2023. *विद्यालय स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा.* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. पृष्ठ 268–290.

———. 2024. *आनंदमय गणित कक्षा 2*, रा.शै.अ.प्र.प., पूर्व संदर्भित. पृष्ठ 30–37.

———. 2024. *गणित मेला पाठ्यपुस्तक कक्षा 3*. अध्याय 13. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. पृष्ठ 166.

———. 2024. गणित मेला, पाठ्यपुस्तक, कक्षा 3, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. पृष्ठ 1–2.

———. 2024. *आनंदमय गणित कक्षा 1*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. पृष्ठ iv, 49.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली. पृष्ठ 12.

———. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली. पृष्ठ 11.

शतरंज का खेल (गद्य पाठ) तथा भाषायी नवाचार

संजय कुमार पंडागले*
प्रविनी पंडागले**
मोहसिना अंजुम ए अंसारी***

प्रत्येक शिक्षक का दृष्टिकोण रचनात्मक तथा सृजनात्मक होना चाहिए, जिससे वह सीमित संसाधनों में भी विद्यार्थियों को सृजनात्मक रूप से शिक्षा दे सकता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति विद्यार्थियों पर केंद्रित है, इसमें अनुभव के आधार पर ज्ञान प्राप्त करने पर बल दिया गया है। पूर्व में विद्यार्थी केवल ज्ञान ग्रहण करते थे, किंतु आज शिक्षक विद्यार्थियों को रचनात्मक रूप से सीखने की प्रक्रिया में भागीदार बनाता है, जिससे विद्यार्थी लंबे समय तक उसे याद रख सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दी जाए, जो रोचक तथा अनुभव आधारित हो, जिससे विद्यार्थियों की सामाजिक, संवेगात्मक एवं संज्ञानात्मक क्षमताएँ विकसित होंगी। शिक्षक कक्षा शिक्षण के दौरान कई क्रियाकलाप करते हैं, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि बनी रहे तथा वह कक्षा में सक्रिय रूप से भाग ले सके। इस शोध अध्ययन में कक्षा 6 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक के अध्याय 'शतरंज का खेल' पाठ को नवाचार के माध्यम से पढ़ाया गया, जिससे विद्यार्थियों की पढ़ने, बोलने व लिखने की क्षमता में सुधार किया जा सके। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर इस शोधपत्र में नवाचार संबंधी क्रियाकलाप किए गए, ताकि किसी भी विषय सामग्री को विद्यार्थी सहजता से सीखकर अपने जीवन में उनका अनुभव प्राप्त कर सकें।

किसी भी वस्तु के बारे में मौलिक रूप से कुछ नया तथा अलग करना नवाचार कहलाता है। साधारणतः यह समझा जाता है कि शिक्षक कक्षा में तभी विद्यार्थियों के साथ नवाचार कर सकता है, जब उसके पास अत्याधुनिक संसाधन हों। यह सोचना उचित नहीं है कि संसाधनों के होने पर ही शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सक्षम एवं निरंतर किया जा सकता है। यदि शिक्षकों में शिक्षण-अधिगम को बेहतर बनाने के लिए नवीन दृष्टिकोण एवं सोच हो, तो कक्षा में विद्यार्थियों को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में आनंद आता है।

शोधार्थी ने कक्षा में पारंपरिक शिक्षण विधियों से कुछ अलग करने का प्रयास किया है, विद्यार्थियों को रटने की प्रवृत्ति से बाहर आकर, उन्हें अपने अनुभव के आधार पर ज्ञान को विकसित करने के लिए प्रेरित किया है, कक्षा शिक्षण को बाहर की दुनिया से जोड़ने का प्रयास किया है, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ. 2023) का मूल उद्देश्य भी यही

**सहायक आचार्य*, आर.आई.ई., भोपाल, मध्य प्रदेश 462 002
***सहायक आचार्य*, सी.टी.ई., मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, गच्चीबौली, हैदराबाद 500 032
****सहायक आचार्य*, शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, गच्चीबौली, हैदराबाद 500 032

है कि बच्चों को रटने की प्रवृत्ति से बाहर निकाला जाए, ताकि वे अनुभवों के आधार पर अपने ज्ञान का विकास कर सकें, जिससे विद्यार्थियों में जिज्ञासा, खोजवृत्ति और रचनात्मकता को बढ़ावा मिले। कक्षा में पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया को अपने आस-पास की दुनिया, दैनिक अनुभवों और सामाजिक संदर्भों से जोड़ने की विशेष कोशिश की गई है, ताकि विद्यार्थी जीवनोपयोगी और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस रूपरेखा में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है, ताकि वो न केवल भाषा के कौशल को विकसित करें, बल्कि एक पथ प्रदर्शक की तरह बच्चों को सोचने, समझने, तर्क करने की दिशा में प्रेरित करे, यह शोध का मुख्य उद्देश्य है। एन.सी.एफ. 2023 में ऐसे नवाचारी प्रयासों को ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहचान बताया गया है।

शिक्षण-अधिगम के परंपरागत तरीकों को छोड़कर जब भी कक्षा-कक्ष में नया तरीका अपनाया जाता है, तो अपेक्षाकृत सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। प्राथमिक विद्यालय से पढ़कर आने वाले विद्यार्थी जब कक्षा 6 में आते हैं, तो शिक्षकों के सामने कई चुनौतियाँ विद्यमान होती हैं। प्रत्येक शिक्षक इन चुनौतियों से जूझता है तथा अपने-अपने तरीकों से पढ़ने-पढ़ाने के तरीकों में बदलाव भी करता है। यदि समयानुसार इनमें सुधार न किया जाए, तो ये विद्यार्थी माध्यमिक कक्षाओं में भी इन समस्याओं के साथ पहुँचते हैं।

शोधार्थी को ज्ञात हुआ कि भोपाल के आस-पास दूर-दराज क्षेत्र के गाँव में कुछ शासकीय शाला के विद्यार्थियों के भाषा कौशलों का उचित विकास नहीं हुआ है। राज्य शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित 'राम मनोहर लोहिया विद्यालय', नीलबड़, भोपाल, के कुछ शिक्षकों से बातचीत करने के पश्चात ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकास की तीव्र आवश्यकता है। शोधार्थी ने (जनवरी 2023 में) कक्षा 6 के राम मनोहर लोहिया विद्यालय, नीलबड़, भोपाल, मध्य प्रदेश के 100 विद्यार्थियों को उनकी हिंदी पाठ्यपुस्तक के एक पाठ (शतरंज का खेल) को लेकर कुछ भाषा संबंधी गतिविधियाँ संचालित की गई थीं। ये गतिविधियाँ तीन महीनों में पूर्ण की गईं।

नवाचार से पहले

कक्षा 6 के विद्यार्थियों को भाषा पढ़ाते समय यह देखा गया कि उनके पढ़ने तथा लिखने में कई विविधताएँ हैं। पढ़ने के तरीकों में कुछ विद्यार्थी किसी भी शब्द को एक साथ पढ़ने के स्थान पर उसके एक-एक वर्ण को पढ़कर मिलाने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार पढ़ना बहुत धीमा होता है। इस शोधपत्र में शोधार्थी ने पहले विद्यार्थियों से पाठ पढ़वाया तथा ज्ञात किया कि वे पाठ को धीमी गति से पढ़ते हैं। उसमें जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है, उन्हें ठीक से समझ नहीं पाते हैं और इसलिए वे सही ढंग से लिख भी नहीं पाते हैं। अतः शोधार्थी ने कक्षा में जाकर किसी एक पाठ पर प्रयोग करने का विचार किया।

वह पढ़ते हैं—

एक.... किसान..... था .... इस तरीके को यदि ध्यान से सुना जाए, तो पता ही नहीं चल पाता कि आखिर विद्यार्थी पढ़ क्या रहा है। पढ़ने वाला विद्यार्थी वर्णों की पहचान में इतनी मेहनत करता है, इतना जूझता है कि वह स्वयं ही नहीं जान पाता कि उसने इन शब्दों से कोई वाक्य बनाया भी है या नहीं और

उसके द्वारा पढ़े गए अंश का अर्थ क्या है। वह बहुत धीमे-धीमे वर्णों से शब्द बनाता हुआ आगे बढ़ता है, लेकिन आगे बढ़ते-बढ़ते वह पीछे के शब्दों के अर्थ को समझ नहीं पाता।

इसी प्रकार इस कक्षा के कुछ अन्य विद्यार्थी पढ़ते समय बोलते हैं—

एक किसान था। उसने अपने....अपने...... खेत खेत में' ....। विद्यार्थी इस तरह पढ़ते-पढ़ते शब्द बना पाने में बहुत समय लेते हैं। इस प्रकार पढ़ने में प्रवाह नहीं होता। कक्षा में कई विद्यार्थी पाठ को बेहद धीमी गति से पढ़ तो लेते हैं, लेकिन इस पढ़ने के तरीके से वाक्यों में आए शब्दों का सटीक उच्चारण नहीं होता। उनका पढ़ना धारा-प्रवाह नहीं होता। पढ़ने की जल्दी में कुछ शब्दों का उच्चारण अनुमान लगाकर किया जाता है।

शोधार्थी ने स्वयं भी बार-बार पढ़कर उन्हें बताया कि पढ़ने में साफ उच्चारण, गति, भाव के साथ-साथ उतार-चढ़ाव भी होता है। पूर्ण विराम, अर्द्ध विराम तथा विस्मयादिबोधक चिह्नों में मुख की ध्वनि के साथ-साथ भाव भी शामिल होते हैं। कुछ विद्यार्थियों ने इसे अनुभव भी किया। उनमें बदलाव भी दिखाई दिया। विद्यार्थी यह तो अनुभव करते हैं कि वे जीवन में अच्छे से और बिना किसी दबाव के अपनी बात कहते हैं व दूसरों की बात सुनते हैं, परंतु वही बात यदि किताबों में है, तो वे उसे पढ़ नहीं पाते। इस प्रकार विद्यार्थियों से लगातार बातचीत की, तो उनके पढ़ने के तरीके में बदलाव दिखाई दिया। इस बदलाव की गति बहुत धीमी थी, फिर भी विद्यार्थी पढ़ते-पढ़ते जोड़ को जोड़ा, वापस को वापिस, जल को जर, अपेक्षा को उपेक्षा, गढ़ना को बढ़ना, आसमान को असमान, नाना को मामा पढ़ते हुए आगे बढ़ जाते हैं, यह पढ़ने की गति को बढ़ाने के कारण होता है।

इसी प्रकार अधिकतर विद्यार्थी छपी हुई सामग्री को तथा अध्यापक द्वारा बोले हुए वाक्य भी अपेक्षा से अधिक समय लेते हुए, लिख तो लेते हैं, लेकिन जब विद्यार्थियों को कुछ विषयों पर लिखने को कहा जाता है, जैसे— 'आग' पर कुछ लिखो, 'माचिस' पर कुछ लिखो, मोबाइल पर कुछ लिखो, तो यह सुनते ही विद्यार्थियों के हाथ रुक जाते हैं। वे एक-दूसरे की कॉपी देखने लगते हैं। सहपाठियों की मदद लेना चाहते हैं।

शोधार्थी ने अनुभव किया कि विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक के पाठ पर आधारित प्रश्नों के जवाब तो सरलता से दे देते हैं, लेकिन वे पाठ में से बनाए नए प्रश्नों के जवाब नहीं दे पाते।

यह आसानी से समझा जा सकता है कि प्रायः ये विद्यार्थी स्वतंत्र अभिव्यक्ति नहीं कर पाते। उन्हें किताब के सहारे की आदत पड़ने लगती है। उन्हें कक्षा में शिक्षक द्वारा बोला हुआ सुनकर लिखने का अभ्यास हो जाता है। वे जो सुनते हैं, उसे लिखना उन्हें सरल लगता है। वे जो छपा हुआ देखते हैं, उसे उतारना एक सरल तरीका लगता है, लेकिन अचानक उन्हें कोई नया शब्द या शीर्षक लिखने को देते ही वे लिखना भूल जाते हैं, चाहे उन्हें कितना भी समय क्यों न दिया जाए। उस नए शब्द या शीर्षक पर, चाहे वह उनके आस-पास का ही क्यों न हो, न तो वे लिख पाते हैं तथा न ही उस पर कुछ बोल पाते हैं। वे उस प्रकरण पर सोचकर, अपने निजी अनुभव से तथा सहपाठियों से बातचीत करने के बाद भी मुक्त वाक्य लिख पाने में सहज नहीं हो पाते।

ऐसा शायद इसलिए होता है कि परंपरागत रूप से कक्षा-कक्ष में 'पढ़ने तथा लिखने' के तरीके बहुत पुराने तथा नीरस हैं। विद्यार्थी उनमें नयापन नहीं देखते। यही कारण हो सकता है कि वे सरल माध्यम खोजने लगते हैं। हर विद्यार्थी के पढ़ने की जाँच व्यक्तिगत रूप से न होने के कारण भी ऐसा हो सकता है। कई बार शिक्षक स्वयं आदर्श वाचन नहीं करते, जो करते हैं, उनमें अधिकांशत: वाचन प्रभावी भी नहीं होता। विद्यार्थी जैसा सुनते हैं, वे उस वाक्य को वैसा ही बोलते हैं, इसलिए भी किसी शब्द का उच्चारण गलत तरीके से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। विद्यार्थी गलत सुनते हैं, तो गलत बोलते हैं, गलत बोलते हैं, तो गलत लिखते हैं। बात यहीं खत्म नहीं होती, किसी प्रकरण, किसी विषय या किसी सुझाए गए शीर्षक पर वह स्वतंत्र तथा रचनात्मक लेखन नहीं कर पाते हैं।

'शतरंज का खेल'— एक नवाचार

इस शोधपत्र में शोधार्थी ने सर्वप्रथम विद्यार्थियों से पाठ पढ़वाया तो ज्ञात हुआ कि विद्यार्थी पाठ को धीमी गति से पढ़ते हैं तथा पाठ में जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है, उसे ठीक से समझ नहीं पाते हैं, जिस कारण से वे सही ढंग से लिख भी नहीं पाते हैं। अतः शोधार्थी ने कक्षा में किसी एक पाठ पर प्रयोग करने का विचार किया। कक्षा 6 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक का एक पाठ 'शतरंज का खेल' है, शोधार्थी ने इस पाठ के अंतर्गत जिन शब्दों का प्रयोग किया है, जैसे– सबसे पहले 'शतरंज' किसे कहते हैं? तथा उसमें कितने चौकट होते है?, चौकट क्या है? (इसे गणित के साथ भी जोड़ा जा सकता है?) प्यादे कितने होते हैं? प्यादे का क्या अर्थ है? एक-एक प्यादे का नाम बताओ? उन प्यादों की क्या भूमिका होती है? सबकी भूमिका स्पष्ट कीजिए? हम अपने जीवन को शतरंज के खेल के साथ कैसे जोड़ सकते हैं? शतरंज के खेल में दिमाग की तीव्रता को कैसे बढ़ाया जा सकता है? आदि कई बातों को इस पाठ के साथ विद्यार्थियों को बताया गया। इसमें सभी विद्यार्थियों ने बड़ी रुचि दिखाई, जिससे उन्हें पाठ भी जल्दी समझ में आ गया।

इस नवाचार के कुछ उदाहरण (जैसा विद्यार्थियों ने लिखा, वैसा ही) यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

चौकट— चौकट में चार कोने होते हैं तथा वे चारों नब्बे डिग्री के होते हैं।

चौकट के रंग— चौकट में 2 रंग होते हैं, काले या सफेद, ये रंग एक काला व एक सफेद के क्रम में होते हैं।

राजा— राजा अपनी प्रजा की रक्षा करता है तथा उसके पास कई अधिकार होते हैं, जिससे वह अपने राज्य की प्रगति करता है। मुझे राजा-रानी की कहानी बहुत पसंद है। मेरी दादी मुझे रोज राजा-रानी की कहानी सुनाती हैं।

वजीर— वजीर राजा के कहने पर उनकी आज्ञा का पालन करता है। वह राजा के प्रति वफादार होता है, वह हर समय राजा की सेवा में तत्पर रहता है। वह अपनी जान की परवाह न करते हुए राजा के प्रति सेवा एवं त्याग का भाव रखता है।

हाथी— हाथी का शरीर विशालकाय होता है, उसकी बुद्धि तेज होती है तथा वह भावपूर्ण होता है, हाथी वैसे शांत स्वभाव के होते हैं, परंतु यदि उन्हें गुस्सा दिलाया जाए, तो वे आक्रामक हो सकते हैं।

घोड़ा— घोड़ा तेज भागता है। प्राचीन काल में घोड़े से ही यात्रा की जाती थी, उसकी आयु 24 से 30 वर्ष होती है, वह खड़े-खड़े ही सोता है।

ऊँट— ऊँट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। वह कई दिनों तक बिना पानी के जी सकता है, क्योंकि वह अपने गले की थैली में पानी बचाकर रखता है। यदि हमें रेगिस्तान की सैर करनी है, तो ऊँट सबसे अच्छा साधन है।

सैनिक— सैनिक हमारे देश की रक्षा करते हैं। वे अपने देश के लिए शहीद हो जाते हैं। यदि हम यहाँ सुरक्षित हैं, तो इसका कारण भारत की सीमा पर खड़े सैनिक हैं। हमें हमेशा सैनिकों का आदर करना चाहिए।

अगले दिन विद्यार्थी शतरंज लेकर आए। उन्होंने बताया कि शतरंज के खेल में कई अलग-अलग प्यादे हैं एवं सबके नाम अलग-अलग हैं, कोई राजा, वजीर, हाथी, घोड़ा, ऊँट, सैनिक आदि सबका इस खेल में अलग-अलग महत्व है। उन सबकी भूमिका अलग होती है। जब शोधार्थी शतरंज का खेल लेकर आए, तो सभी काफी उत्साहित नजर आ रहे थे। विद्यार्थियों से कहा गया कि सभी को ध्यान से देखें तथा इन पर बात करें। पहले-पहल तो विद्यार्थी समझ ही नहीं पाए कि इन पर क्या बात करनी है।

नवाचार के साथ

शोधार्थियों ने कोशिश की। उन्होंने खेल की ओर इशारा किया। उसमें कितने डिब्बे हैं, उनको यह गिनने के लिए कहा गया। जब विद्यार्थियों ने चौसठ गिना तो शोधार्थी ने उनसे कहा कि अंग्रेजी में इसे सिक्सटी फोर कहते हैं। यह इकाई तथा दहाई अर्थात यह यूनिट तथा टेन (इसे गणित के साथ जोड़ा गया) से मिलकर बना है।

विद्यार्थियों के लिए किसी एक शब्द से इतने सारे वाक्यों पर बात करने का यह अनुभव नया तो नहीं था, लेकिन तरीका नया था। शोधार्थी ने जो कहा, उसे फिर श्यामपट्ट पर लिखा। शोधार्थी ने विद्यार्थियों से कहा कि इसी प्रकार से शतरंज के खेल के प्यादों पर बात करनी है। बात करने से पहले उन पर सोचना है। चर्चा भी की जा सकती है। एक-दूसरे से सहयोग भी लिया जा सकता है। घर में बड़ों से भी सहयोग ले सकते हैं। शब्दकोश की सहायता भी ली जा सकती है।

बस फिर क्या था। विद्यार्थियों में मनपसंद प्यादों को उठाने की होड़ लग गई। विद्यार्थियों ने मनपसंद प्यादों को उठा लिया। शोधार्थी ने कहा उन्हें ध्यान से देखना है। लगातार चित्र के बारे में सोचना है और फिर बोलना है। बोलकर लिखना भी है। यह भी किया जा सकता है कि हम कक्षा में दो-दो का जोड़ा बना लें। एक चित्र को देखकर बोले, दूसरा सुने तथा सुनकर लिखे या फिर दोनों पहले बात करें, फिर लिखें। फिर आपस में मिलान करें।

विद्यार्थियों ने ऐसा ही किया। अब वे मध्यांतर के खाली समय में यही करने लगे। कुछ विद्यार्थियों के अभिभावकों ने शोधार्थी से भी पूछा। शोधार्थी ने उन्हें अपना उद्देश्य बताया। इस पर अभिभावकों की मिली-जुली प्रतिक्रियाएँ थीं। बहरहाल विद्यार्थियों ने शतरंज के खेल के प्यादों के आधार पर अपने मन की बातें लिखने का प्रयास किया।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' में यह उल्लेख किया गया है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भाषा को खेल आधारित शिक्षा के माध्यम से सिखाया जाए, जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मक, सृजनात्मक, बौद्धिक, नियमबद्ध एवं गतिशील खेल के विकास से शिक्षा में गुणात्मक उन्नयन विकास संभव हो सके।

नवाचार के बाद

इस नवाचार से प्रत्यक्ष बदलाव दिखाई दिए, जिनमें प्रमुख बदलाव इस प्रकार हैं—

- 'शतरंज का खेल' नवाचार द्वारा विद्यार्थियों में पढ़ने के उचित कौशल में सुधार हुआ। विद्यार्थियों में पढ़ने में हिचकिचाहट की प्रवृत्ति कम हुई। अब वे पढ़ने की अपनी बारी में उत्साह दिखाने लगे।
- 'शतरंज का खेल' पर बने चित्रों पर बातचीत करने के प्रत्यक्ष लाभ हुए। इन चित्रों पर बातचीत के बाद विद्यार्थी अपने मन से लिखने की छूट में आनंद लेने लगे। वे अपने लिखे हुए को पढ़ने लगे। उसका अभ्यास करने लगे।
- विद्यार्थियों में एक स्वस्थ होड़ देखने को मिली। वे एक-दूसरे की कॉपी पर देखने को आतुर रहे कि किसने क्या लिखा है। सभी को अलग-अलग प्यादे दिए जाने का लाभ यह हुआ कि वे स्वतंत्र अभिव्यक्ति देने में धीरे-धीरे ही सही लेकिन कुशल होने लगे।
- विद्यार्थियों द्वारा लिखे गए कार्य में गलती निकालने का कोई भी नकारात्मक कदम नहीं उठाया गया। वर्तनी तथा भाषायी अशुद्धि को नजरअंदाज किया गया, कारण यह था कि हम उन्हें व्याकरणविद् नहीं बना रहे। इस नवाचार का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी स्वयं अपने आस-पास के वातावरण को अनुभव करें, उस पर बात करें। विचार करें तथा अपने भावों को कागज पर लिखें। अपना लिखा हुआ सहपाठी को दिखाएँ और सहपाठी का लिखा हुआ पढ़ें।
- इस नवाचार के बाद विद्यार्थी चित्रों की भाषा समझने लगे। दूसरे शब्दों में कहें, तो वे यह जान चुके थे कि प्रत्येक चित्र का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। हर वस्तु या बात पर चर्चा की जा सकती है एवं बहुत सारी बातें लिखी जा सकती हैं।
- विद्यार्थी अपने आस-पास के वातावरण पर स्वतंत्र रूप से सोचने लगे। वे जान गए थे कि वे जो कुछ भी लिखेंगे, उसे काटा-पीटा नहीं जाएगा। सब सही माना जाएगा। इससे यह लाभ हुआ कि वे धीरे-धीरे वाक्य संरचना पर भी ध्यान देने लगे।
- अब वे सामान्यतः सूक्ष्म अवलोकन करने लगे। यह सूक्ष्म अवलोकन करना, वाक्य निर्माण की दिशा में बेहद कारगर है। वे मन ही मन बुदबुदाने लगे हैं। वे जो देख रहे हैं, वे जो सोच रहे हैं, उसे अपने शब्दों में लिखने को उतावले हैं। यही भाषा का उद्देश्य होता है।
- कक्षा में चुपचाप सुनने की आदत में कमी आई। अब वे प्रतिक्रिया करने लगे हैं। अब वे चाहे पाठ सुन रहे हों अथवा स्वयं पढ़ रहे हों, वे एकाग्र होकर उसमें ध्यान देने लगे हैं। पाठ में आनंद लेने लगे हैं। वे यह जानने की कोशिश करने लगे हैं कि आखिर कोई बात कैसे कही जा रही है, उसे कैसे लिखा जा रहा है?
- विद्यार्थी अब लिखे हुए को पढ़ने का अभ्यास इस दृष्टिकोण से करने लगे कि इसे वे स्वयं कैसे बोलेंगे। अब वे आम बातचीत पर ध्यान देने लगे।
- प्रातःकालीन सभा में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ने लगी। अब वे समाचार, आज का प्रश्न, आज का विचार, प्रतिज्ञा तथा महत्वपूर्ण दिनों के बारे में बोलने की पहल करने लगे।

- इससे विद्यार्थी तीव्र गति से भाषायी कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) सीख सकेंगे।
- बालकों की रचनात्मक एवं कल्पनाशीलता में वृद्धि होगी, जिसका लाभ संज्ञानात्मक विकास में होगा।
- इस नवाचार के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक एवं भावात्मक कौशल भी बढ़ेंगे तथा वे धैर्यपूर्वक साथियों के साथ अपनी समस्याओं का समाधान ढूँढने का प्रयास करेंगे, ये सभी अपरिहार्य सामाजिक कौशल हैं।
- इस नवाचार से उनमें गत्यात्मक कौशल का विकास होगा तथा वे करके सीखने पर बल देंगे।
- सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा, जैसे उन्होंने पाठ के अंतर्गत प्रत्येक शब्द के अर्थ तथा प्रयोग पर गौर किया, उसी प्रकार से वे जीवन में आने वाली समस्याओं पर ध्यान देंगे तथा उसे सुलझाने में प्रयत्नशील रहेंगे।

समूची कक्षा के विद्यार्थियों की पठन क्षमता

- शतरंज के खेल का यह नवाचार विद्यार्थियों में पठन की योग्य क्षमता के विकास का एक सशक्त माध्यम बना। पहले जो विद्यार्थी पढ़ने से बचते थे या हिचकिचाते थे, वे अब अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करने लगे।
- चित्रों के आधार पर बातचीत ने इसे मनोरंजक बनाया, जिससे विद्यार्थी पाठ सामग्री की ओर आकर्षित हुए। इससे वे चित्रों को ध्यानपूर्वक देखने, समझने तथा उनके अर्थ को शब्दों में अभिव्यक्त करने लगे, जो कि पठन समझ के लिए आवश्यक है।
- जब विद्यार्थी अपने मस्तिष्क में आने वाले विचारों को लिखने लगे, तो वे उन्हें बार-बार पढ़ने भी लगे। इससे उनका अभ्यास बढ़ा तथा पढ़ने में प्रवाह आने लगा।
- पठन की गतिविधियों में भागीदारी के कारण अब विद्यार्थी शब्दों की पहचान, शब्द भंडार में वृद्धि तथा उच्चारण में अधिक सटीकता दिखाने लगे हैं।
- चित्रों तथा पाठ के संदर्भों से जुड़ी शब्दावली के बार-बार प्रयोग ने उनकी शब्द-समृद्धि में भी वृद्धि की है, जिससे वे नए शब्दों को पढ़ने तथा समझने में सहज हो गए।
- पढ़े हुए को सहपाठियों के साथ साझा करने की प्रक्रिया में सुधार हुआ तथा इससे वे दूसरों के पढ़े हुए को ध्यान से सुनने तथा तुलना करने लगे, जिससे समालोचक पठन का अभ्यास हुआ।
- अब विद्यार्थी पाठ को केवल नियमों से पढ़ने की बजाय अर्थ ग्रहण करते हुए, भाव के साथ पढ़ने लगे, जो कि प्रभावी पठन कौशल का एक महत्वपूर्ण पहलू है।
- धीरे-धीरे वे शब्दों तथा वाक्यों को मन में दोहराने लगे, जिससे उनका मौन पठन तथा ध्यान केंद्रित कर पढ़ना भी बेहतर हुआ।
- अतः यह नवाचार विद्यार्थियों की पठन क्षमता को सशक्त करने, पढ़ने में रुचि विकसित करने, समझ, बोध तथा आत्मविश्वास बढ़ाने की दिशा में एक सफल प्रयोग सिद्ध हुआ।

नवाचार से होने वाले लाभ

नवाचार से होने वाले कई लाभ इस प्रकार हैं—

- विद्यार्थियों में नवाचार के माध्यम से उनके मन में जिज्ञासा तथा कौतूहल की भावना का विकास होगा, जिसके माध्यम से वह नए-नए

प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा तथा खोज की भावना को पूर्ण कर सकते हैं।

- सीखने की क्रिया-प्रक्रिया को सक्रिय बनाया जा सकता है तथा विद्यार्थियों को क्रियाकलाप तथा संवाद पर आधारित शिक्षा दी जा सकती है।
- प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकता को पहचान कर उन्हें शिक्षा दी जाए, जिससे समाज में समावेशिका को बढ़ावा मिल सके।
- नवाचार के अंतर्गत शिक्षण स्त्रोत या संसाधन में भी उच्च शिक्षा संभव हो सकती है, क्योंकि इसे शिक्षक महँगी दृश्य-श्रवण सामग्री के बिना भी कर सकते हैं।
- इसके अंतर्गत शिक्षा संस्कारों पर आधारित होती है, क्योंकि शिक्षक अपने क्रियाकलाप तथा व्यवहार के माध्यम से सहानुभूति, सहयोग, मदद, दया, करुणा जैसे मूल्यों को संप्रेषित कर सकता है।
- नवाचार में शिक्षक मार्गदर्शक की बेहतर भूमिका निभा सकता है।
- नवाचार शिक्षा प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थियों के भविष्य को उन्मुख बना सकते हैं, क्योंकि शिक्षक, विद्यार्थियों को आज के लिए नहीं, बल्कि उनको भविष्य के लिए तैयार करते हैं।

'शतरंज का खेल' पाठ से यह नवाचार करना बहुत रोचक है, बशर्ते हम धैर्य से काम लें तथा प्यादों को विद्यार्थियों से ही एकत्र करवाएँ। इस नवाचार से बोलना-पढ़ना-लिखना तीनों साथ-साथ चल सकते हैं। यह ध्यान रखना जरूरी होगा कि पढ़ना तथा सही पढ़ना में अंतर है। सही पढ़ना अभ्यास से आएगा। हमें विद्यार्थियों में पढ़ने तथा पढ़कर समझने में तीव्र गति से बदलाव नहीं होता। यह धीरे-धीरे ही संभव है।

किसी भी विषय सामग्री के अंतर्गत यह नवाचार संभव है। भाषा संबंधी नवाचार करते समय यदि शिक्षक विद्यार्थी में बोलने एवं पढ़ने के कौशल को शीर्ष पर रखे तथा उनके बोलने एवं पढ़ने में कमियाँ न निकाले, तो विद्यार्थी हतोत्साहित नहीं होते। फिर धीरे-धीरे इस नवाचार के माध्यम से लिखने की गतिविधि कराना श्रेयस्कर है। जब विद्यार्थी मुक्त अभिव्यक्ति में सहजता का अनुभव करने लगे, तब हम वर्तनी तथा वाक्य संरचना के कौशल की बात करें, तो कक्षा-कक्ष का समय रोचक ढंग से बीत सकता है।

निष्कर्ष

आज की हमारी शिक्षा व्यवस्था केवल 'पाठ पढ़ना' तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह विद्यार्थियों के अच्छे भविष्य की नींव भी रखती है। शिक्षक अपनी संवेदनशीलता एवं सृजनात्मक दृष्टिकोण के साथ कक्षा में प्रवेश कर, उसे विद्यार्थियों के बाहरी जीवन के साथ जोड़ देता है अर्थात विद्यार्थियों को पुस्तक से बाहर निकालकर उनके अनुभवों को नए ज्ञान के साथ जोड़ देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा विद्यालय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 भी इसी बात की पुष्टि करती है कि विद्यार्थियों की क्षमताएँ, आवश्यकताएँ, रुचि, सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए, शिक्षा दी जानी चाहिए। इसी दृष्टिकोण से प्रेरित शिक्षक, ज्ञान का संप्रेषण ही नहीं करता है, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, मूल्य, सृजनात्मकता, संवेगात्मकता, भाषा कौशल, जागरूकता जैसी

जीवनोपयोगी क्षमताएँ तथा योग्यताएँ भी विकसित करने का प्रयास करता है।

इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के अनुसार शिक्षा केवल 3 घंटे की परीक्षा पर निर्भर नहीं रह जाती, बल्कि वह प्रत्येक विद्यार्थी को जीवन जीने के लिए तैयार करती है। शिक्षक की रचनात्मकता तथा दृष्टिकोण को महत्व देना एक समावेशी, प्रगतिशील तथा न्यायपूर्ण समाज के विकास का आवश्यक पहला कदम है।

संदर्भ

पांडे, आर. 1997. *हिंदी शिक्षण*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

रावत, आर. के. 2006. *हिंदी भाषा शिक्षण*. राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

फाउंडेशनल तथा प्रीप्रेटरी स्तर पर फील्ड-बेस्ड लर्निंग गतिविधियों का बच्चों के अधिगम पर प्रभाव

अनिल कुमार तेवतिया*

इस शोधपत्र में फील्ड-बेस्ड (क्षेत्र आधारित) अनुभव का अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन किया गया है। यह बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा सामाजिक विकास में इसके योगदान पर ध्यान केंद्रित करता है। इन प्रभावों का अध्ययन करने के लिए, दिल्ली में स्थित सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों का साक्षात्कार एवं सर्वेक्षण किया गया, जिससे ज्ञात हुआ कि फील्ड-बेस्ड गतिविधियों ने बच्चों को सीखने में सहयोग दिया तथा यह बच्चों ने भी माना कि उनकी सीखने की क्षमता में सुधार हुआ है और उनके लिए सीखना अधिक आनंददायक हो गया है। अध्यापकों ने भी फील्ड-बेस्ड (क्षेत्र आधारित) गतिविधियों के लाभों को सूचीबद्ध किया। इसके मुख्य लाभ ये हुए कि इनसे बच्चों के मूड तथा ऊर्जा में सुधार होता है। यह उन्हें सीखने के परिणामों की चिंता एवं दबाव से मुक्त करते हैं। यह बच्चों में समझ और सीखने की उत्सुकता को भी बढ़ाता है। इस शोधपत्र में फील्ड-बेस्ड गतिविधियों को बेहतर बनाने के लिए कुछ सुझाव भी साझा किए गए हैं।

मानव सभ्यता के आरंभ से ही, पर्यावरण से सीखना मनुष्य के लिए लाभकारी रहा है। आउटडोर लर्निंग कक्षा की दीवारों के पारंपरिक दायरे से परे शिक्षा का विस्तार करती है। यह वास्तविक दुनिया में वातावरण के संपर्क के माध्यम से बच्चों के अनुभवों को समृद्ध करने की आकांक्षा रखती है। (डॉवेल व अन्य., 2011) आमतौर पर, इसका उपयोग कक्षा में सीखे गए कुछ कौशलों का अभ्यास करने के लिए किया जाता है। क्षेत्रीय भ्रमण (फील्ड ट्रिप), सामुदायिक परियोजनाएँ, प्रकृति की सैर या संग्रहालय की यात्राएँ समान्यतः कक्षा से बाहर सीखने का हिस्सा मानी जाती हैं। (ग्रे और थॉमसन, 2016)

पारंपरिक कक्षा की गतिविधियाँ अक्सर अध्यापक-केंद्रित ही होती हैं, जिसमें एक ही तरह से बैठने की व्यवस्था तथा मानक पाठ्यक्रम शामिल होते हैं और तथ्यों को रटकर याद करने पर बल दिया जाता है। यह सामान्यतः संरचित पाठों का पालन करती है, जिसमें केवल नीचे की दिशा में (अध्यापक से बच्चों में) ज्ञान देने के लिए एक-पदानुक्रमित अध्यापक-विद्यार्थी संबंध होता है। पारंपरिक कक्षा के ये तरीके बच्चों की

**प्राचार्य*, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, भोलानाथ नगर, दिल्ली 110 095

आलोचनात्मक रूप से सोचने तथा रचनात्मक क्षमता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। यह विद्यार्थियों को गतिविधि व सामग्री के साथ कार्य करने के अवसरों को सीमित करते हैं तथा साथ ही, ये प्रासंगिक अधिगम के महत्व को भी नजरअंदाज करते हैं एवं अध्यापक को बच्चों के साथ गहराई से प्रतिध्वनित होने में विफल करता है। (ब्रैडबरी, 2016)

दूसरी ओर, फील्ड-बेस्ड गतिविधियाँ, कक्षा के बाहर सीखने में एक प्रभावी शैक्षणिक दृष्टिकोण सिद्ध हुई हैं। शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि कक्षा के बाहर सीखना बहु-संवेदी जुड़ाव को सक्रिय करता है, सार्थक तथा व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से ज्ञान के बेहतर प्रतिधारण को बढ़ावा देता है। यह रचनावाद के सिद्धांत पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि बच्चे एक-दूसरे के साथ सीधे बातचीत करने से अधिक प्रभावी समझ में वृद्धि करते हैं। यह निष्क्रिय कक्षा निर्देशों की तुलना में उच्च संज्ञानात्मकता को सक्षम बनाता है। कई शोध अध्ययनों के माध्यम से संज्ञानात्मक विकास पर इसके प्रभाव को उजागर किया गया है, जिसमें समस्या-समाधान क्षमताओं, आलोचनात्मक सोच तथा सूचना स्मरण को बढ़ाता दिखाया गया है। (गदाड और होलेचे, 2023;)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी आउटडोर व फील्ड-बेस्ड आधारित गतिविधियों के उपयोग की अनुशंसा करती है और फाउंडेशनल स्तर एवं प्रीप्रेटेरी स्तर के बच्चों के लिए बाहर खेलना (आउटडोर-प्ले) एवं फील्ड-बेस्ड गतिविधियों के महत्व को स्वीकार करती है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 7) इस शिक्षा नीति के अनुसार छोटे बच्चों के लिए अवधारणाओं, मूल्यों तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं की गहरी समझ विकसित करने के लिए कक्षा से परे भी सीखना-सिखाना आवश्यक है। इनसे विद्यालयों में बच्चों के लिए एक सार्थक सीखने-सिखाने का वातावरण तैयार होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 फील्ड-बेस्ड गतिविधियों को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करने के महत्व को रेखांकित करती है। ('फील्ड ट्रिप्स एंड नेचर वॉक', पृष्ठ 12, एन.सी.एफ.एफ.एस. 2022) इसी तरह, एन.सी.एफ.एफ.एस.ई. 2023 में भी अनुभवात्मक तथा बहुविषयक शिक्षा में निहित एक ऐसी ही शिक्षा प्रणाली के महत्व को दर्शाता है। यह विद्यालयी पाठ्यक्रम के भीतर अनुभवात्मक शिक्षा को शामिल करने का सुझाव प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह सामुदायिक परियोजनाओं, प्रकृति-आधारित गतिविधियों तथा कॉपरेटिव फील्डवर्क को बढ़ावा देता है।

उद्देश्य तथा प्रासंगिकता— विभिन्न शोध अध्ययनों एल. चावला, (2015), सी., बेकर, एवं अन्य (2017) आदि से यह ज्ञात हुआ है कि अनुभवात्मक, व्यवहारिक और खेल-आधारित शिक्षण, जिसमें 'फील्ड-बेस्ड अधिगम' एक मुख्य उपागम के रूप में शामिल होता है, समग्र शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। हालाँकि, भारत में कक्षा से बाहर की जाने वाली गतिविधियों का प्रयोग सीखने-सिखाने में करना बहुत सीमित है। यहाँ विद्यालयों में अधिकांश शिक्षण कार्य कक्षा की चार दीवारों के भीतर ही होता है। कक्षा से

बाहर होने वाली शिक्षण गतिविधियों के प्रभावों का अध्ययन भी विशेष रूप से नहीं किया गया है।

यहाँ शोधार्थी की जिज्ञासा का विषय बना कि फील्ड-बेस्ड लर्निंग बच्चों के समग्र विकास के विभिन्न पहलुओं पर क्या प्रभाव डालती है। यह शोध अध्ययन फील्ड-बेस्ड लर्निंग की योजना बनाने व इनका प्रयोग करने में अध्यापकों के लिए सहायक होगा। साथ ही, यह अध्यापकों को फाउंडेशनल तथा प्रीप्रेटरी स्तर की कक्षाओं में इसकी भूमिका एवं उसके क्रियान्वयन को समझने में सहयोग करेगा।

इस शोध अध्ययन में, शोधार्थी यह प्रदर्शित करने का प्रयास करता है कि फील्ड-बेस्ड गतिविधियाँ बच्चों के विकासात्मक पहलू को कैसे प्रभावित करती हैं। युवा शिक्षार्थियों के लिए कक्षा के बाहर सीखने के अनुभवों की सबसे प्रभावी रणनीतियाँ क्या हैं? तथा कक्षा-कक्ष के बाहर गतिविधियाँ फाउंडेशनल तथा प्रीप्रेटरी स्तर के बच्चों में संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास को कैसे बढ़ाती हैं? अर्थात इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना था कि फील्ड-बेस्ड गतिविधियों का बच्चों की आनंददायक शिक्षा, सीखने के स्तर तथा संज्ञानात्मक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है व यह पारंपरिक शिक्षण से किस प्रकार बेहतर है।

शोध की सीमाएँ

इस शोध अध्ययन में फील्ड-बेस्ड गतिविधियाँ या आउटडोर लर्निंग के प्रभाव जानने के लिए केवल दो गतिविधियों का सहारा लिया गया है तथा बच्चों व अध्यापकों के छोटे समूह पर कार्य किया गया है, जो इसके सामान्यीकरण के लिए बाधक है। भविष्य में बड़े नमूने के साथ व अलग-अलग प्रकार की फील्ड-बेस्ड गतिविधियों का प्रयोग करके इनके प्रभावों का अध्ययन किया जाना चाहिए।

कार्यप्रणाली

इस शोध अध्ययन में, फाउंडेशनल तथा प्रीप्रेटरी स्तर के बच्चों पर फील्ड-बेस्ड अधिगम के अनुभव के प्रभाव को समझने के लिए एक मिश्रित विधि दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। मात्रात्मक डेटा सर्वेक्षण तथा अवलोकन के माध्यम से एकत्र किया गया है, जबकि गुणात्मक अंतर्दृष्टि अवलोकन एवं अर्ध-संरचित अध्यापक साक्षात्कार से प्राप्त किया गया है। इस शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा जुलाई-अगस्त 2024 में डेटा एकत्र किया गया था।

दिल्ली के नंद नगरी स्थित विद्यालय का उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि के उपयोग से चुनाव किया गया। इसमें केवल एक ही विद्यालय है, जिसमें फील्ड-बेस्ड गतिविधियों के लिए पर्याप्त स्थान है तथा बच्चों की संख्या (डबल सेक्शन) पर्याप्त है। इस विद्यालय का चुनाव शोधार्थी के निकट होने की वजह से भी किया गया था। विभिन्न पृष्ठभूमि से 80 बच्चों (प्रत्येक कक्षा से 16 बच्चे, कक्षा 1 से 5 तक) का चयन किया गया। प्राथमिक कक्षाओं के 15 अध्यापकों का भी साक्षात्कार लिया गया, जिन्हें कक्षा के बाहर की गतिविधियों का अनुभव हो। ये अध्यापकों के नमूने दिल्ली के उत्तर-पूर्वी जिले में स्थित 5 अलग-अलग प्राथमिक विद्यालयों से लिए गए हैं। ताकि विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों के अनुभव प्राप्त किए जा सकें व उनके सुझाव एकत्र किए जा सकें।

शोधार्थी ने विद्यालय के दो अध्यापकों के साथ मिलकर बच्चों के लिए विभिन्न फील्ड-बेस्ड

गतिविधियों की योजना बनाई व फाउंडेशनल तथा (अध्यापकों के स्वयं के चुनाव अनुसार) प्रीप्रेटरी स्तर पर उन्हें एक-एक गतिविधि कराने के लिए प्रोत्साहित किया। एक अध्यापक ने कक्षा 3, 4 तथा 5 के विद्यार्थियों के लिए (प्रीप्रेटरी स्तर के लिए) बागवानी की गतिविधि आयोजित की और दूसरे अध्यापक ने कक्षा 1 व 2 के लिए (फाउंडेशनल स्तर के लिए) प्रकृति की सैर गतिविधि आयोजित की।

इन दोनों गतिविधियों के दौरान शोधार्थी ने विभिन्न पहलुओं, जैसे— गतिविधि उन्हें कितनी पसंद आई, वे इससे कितना सीख पाए, क्या वे इसे दुबारा करने के लिए इच्छुक हैं? उन्हें ये पारंपरिक कक्षा की तुलना में कैसा लगा आदि पर उनके साथ बातचीत की व उनका अवलोकन भी किया। दोनों अध्यापकों से भी गतिविधि के उपरांत बातचीत की गई कि उनके अनुसार पारंपरिक कक्षा की गतिविधियों की तुलना में फील्ड-बेस्ड गतिविधियों का बच्चों पर क्या प्रभाव दिखा, जैसे— संज्ञानात्मक, सामाजिक व भावनात्मक प्रभाव व अन्य अध्यापकों से भी उनके व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर आउटडोर लर्निंग के प्रभाव से संबंधित बातचीत की गई। इस दौरान जो मात्रात्मक तथा गुणात्मक डाटा का संकलन हुआ उसका जिक्र अगले हिस्से में विस्तार से किया गया है।

परिणाम तथा विश्लेषण

इस शोध अध्ययन में, फील्ड-बेस्ड गतिविधियों के अनुभव पर अध्यापकों तथा बच्चों की प्रतिक्रिया के माध्यम से इसके प्रमुख लाभों को समझने का प्रयास किया गया है। यह जाँच की गई है कि ये गतिविधियाँ सीखने के अनुभव को कैसे बेहतर बनाती हैं, इसका उद्देश्य पारंपरिक शिक्षण-अधिगम पद्धति तथा कक्षा के बाहर (फील्ड-बेस्ड) शिक्षण-अधिगम गतिविधियों के प्रभाव की तुलना करना है। सर्वेक्षण, अवलोकन तथा साक्षात्कार की मिश्रित विधि का प्रयोग करके बच्चों के विद्यालय के पाठ्यक्रम में फील्ड-बेस्ड गतिविधियों को एकीकृत करने के लाभ तथा इसके लिए संभावित रणनीतियों पर अध्यापकों तथा बच्चों से सुझाव लिए गए हैं। फाउंडेशनल तथा प्रीप्रेटरी स्तर पर चयनित बच्चों के लिए बागवानी गतिविधि तथा प्रकृति की सैर गतिविधि का आयोजन किया गया तथा गतिविधि के बाद कक्षा के बाहर सीखने के प्रभाव को समझने के लिए सभी अध्यापकों तथा बच्चों से साक्षात्कार लिया गया। इस चर्चा में अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के सर्वेक्षणों एवं साक्षात्कारों के परिणाम एवं विश्लेषण साझा किए गए है। कक्षा के बाहर सीखने में बच्चों के अनुभव, दृष्टिकोण, सामाजिक संपर्क, आनंद का स्तर तथा इसकी समग्र प्रभावशीलता के आधार पर आँकड़े एकत्र करके इसका विश्लेषण किया गया है।

विद्यार्थी

गतिविधि के बाद बच्चों का साक्षात्कार लिया गया तथा उन पर गतिविधि के प्रभाव का पता लगाने के लिए सर्वेक्षण किया गया। सबसे पहले, गतिविधि के आनंद के बारे में बच्चों के विचारों को दर्ज किया गया और यह ज्ञात हुआ कि (आरेख— 1) 68.75 प्रतिशत विद्यार्थियों को बाहरी गतिविधि बेहद पसंद आई तथा 22.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इसका पूरा आनंद लिया। शायद ही कोई बच्चा ऐसा था, जिसे गतिविधि पसंद न आई हो। यह दर्शाता है कि कक्षा के बाहर की फील्ड-बेस्ड गतिविधियाँ विद्यार्थियों

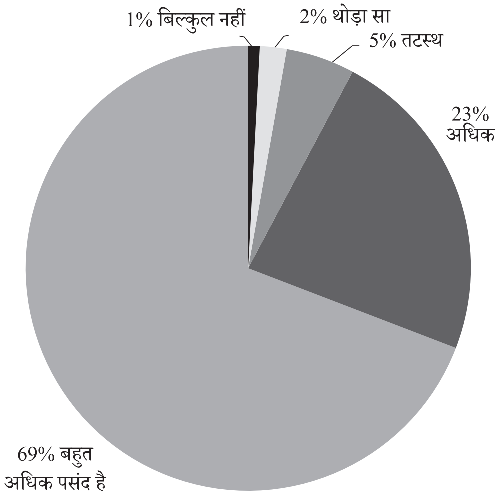

आरेख 1— गतिविधि के दौरान बच्चों को कितना मजा आया

को पसंद आती हैं। इसके अतिरिक्त, शोध अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि बच्चों को अधिगम तब अधिक पसंद आता है, जब उन्हें व्यवस्थित प्राकृतिक वातावरण दिया जाता है। इन अध्ययनों ने यह भी स्थापित किया कि प्राकृतिक वातावरण में सीखने तथा बच्चों के बढ़ते आनंद के बीच गहन संबंध है, क्योंकि आउटडोर लर्निंग की गतिविधियाँ सीखने को उत्तेजित करती हैं, ध्यान केंद्रित करने में मदद करती हैं तथा प्रकृति के साथ गहरा संबंध बनाती हैं (मान एवं अन्य, 2022) कक्षा के बाहर की गतिविधियों में बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं। बच्चों ने स्वयं माना कि कक्षा के बाहर के फील्ड-बेस्ड अनुभव आसान तरीके से सीखने के लिए मूल्यवान अवसर प्रदान करते हैं। (आरेख— 2) 85 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों ने दावा किया कि उन्होंने पारंपरिक कक्षा सेटिंग की तुलना में फील्ड-बेस्ड गतिविधियों में बेहतर शिक्षण मिला। शोध अध्ययनों से भी ज्ञात हुआ कि ये गतिविधियाँ बच्चों के समग्र शैक्षिक अनुभवों को समृद्ध करती हैं। वे शैक्षणिक अवधारणाओं के लिए वास्तविक दुनिया का संदर्भ प्रदान करती हैं, दृष्टिकोण को व्यापक बनाती हैं तथा सामाजिक और भावनात्मक विकास में सुधार करती हैं। (बेकर एवं अन्य, 2017)

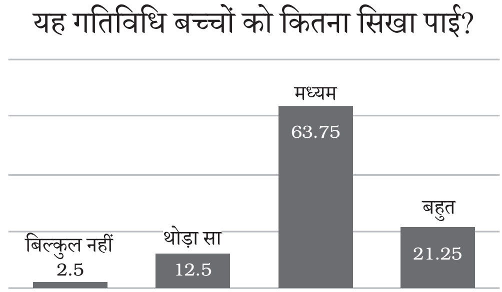

आरेख 2— बच्चों के अनुसार, यह गतिविधि उन्हें कितना सिखा पाई?

जब विद्यार्थियों से पूछा गया कि क्या उन्हें लगता है कि “क्या आउटडोर गतिविधि ने उन्हें नियमित कक्षा के पाठ की तुलना में अधिक मदद की?” तो (आरेख— 3) 73 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों ने सकारात्मक रूप से जवाब दिया।

> “ईमानदारी से कहूँ तो आउटडोर गतिविधि ने मुझे बेहतर महसूस करने तथा ज्यादा सीखने में मदद की है। कक्षा के बाहर होने से यह वास्तविक और आकर्षक बन गया। कक्षा की गतिविधियों में ऐसा महसूस नहीं होता है। हम कक्षा के बाहर अधिक ऊर्जावान हैं”— प्रशांत, पाँचवी बी।

अन्य विद्यार्थियों ने भी इसी प्रकार से जवाब दिया है। शोध अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि

कक्षा-कक्ष के बाहर के अनुभव प्रायः पारंपरिक कक्षा की गतिविधियों की तुलना में अधिक समृद्ध एवं प्रभावशाली शैक्षिक अनुभव प्रदान करते हैं। कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ आवश्यक जीवन कौशल भी विकसित करती हैं, जो अकादमिक विषयों से परे होती हैं। (किविरंटा एवं अन्य., 2024) बच्चों से पूछा गया कि "क्या वे कक्षा के बाहर अधिगम की गतिविधियों के अवसरों को बढ़ाना चाहते हैं?" 83 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी फील्ड-बेस्ड गतिविधि को दोहराने के लिए उत्साहित थे।

> "मैं निश्चित रूप से कक्षा के बाहर की गतिविधियों को अधिक-से-अधिक देखना पसंद करूँगा, क्योंकि वे मजेदार हैं। मुझे लगता है कि मैं सीखने के साथ-साथ उनका आनंद लेता हूँ। कक्षा के बाहर की गतिविधि में मेरे सभी सहपाठी न केवल पढ़ते हैं, बल्कि प्रसन्न तथा ऊर्जावान भी महसूस करते हैं।"— रजत, पाँचवी ए।

ये शोध अध्ययन भी यह बताते हैं कि कक्षा के बाहर सीखना अधिक मजेदार है तथा ये बच्चों को प्रत्ययों को बेहतर ढंग से याद रखने में भी मदद करता है। (चावला, 2015; चावला एवं अन्य, 2014)

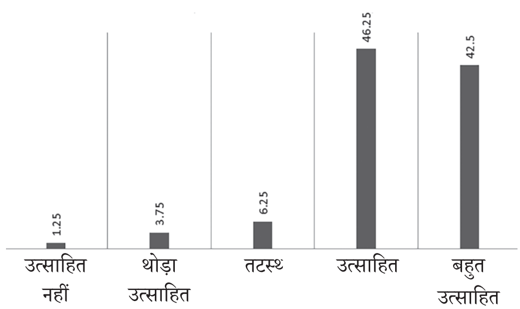

आरेख 3— गतिविधि को दोहराने के लिए बच्चों में उत्साह का स्तर

जब बच्चों से यह पूछा गया कि, "क्या वे अपनी नियमित कक्षाओं में कक्षा के बाहर की फील्ड-बेस्ड गतिविधियों को शामिल करने के लिए इच्छुक हैं?" तब तीन-चौथाई से अधिक विद्यार्थियों ने कहा कि "हाँ, उन्हें यह बहुत पसंद आया तथा वे इस तरह की और भी गतिविधियाँ करना चाहते हैं" लगभग 20 प्रतिशत बच्चों ने कहा कि वे कभी-कभी कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ करना चाहते हैं तथा केवल 3 प्रतिशत बच्चों ने कहा कि वे "नियमित कक्षा में पढ़ाई" को प्राथमिकता देते हैं, न कि कक्षा के बाहर की पढ़ाई को।

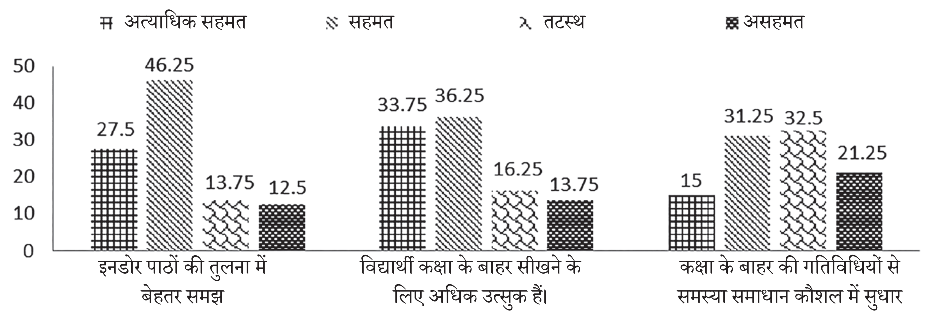

आरेख 4— संज्ञानात्मक प्रभाव

अध्यापक

अध्यापकों का साक्षात्कार लिया गया तथा सर्वेक्षण किया गया, ताकि वे दी गई गतिविधि के दौरान प्राप्त अनुभव व उनके पुराने अनुभवों के आधार पर अपने विचार साझा कर सकें। उनके जवाब निम्नलिखित ग्राफ तथा चर्चा के माध्यम से साझा किए गए हैं।

- अध्यापकों से पूछा गया कि "क्या उन्होंने तुलनात्मक रूप से कक्षा-कक्ष में की गई गतिविधियों तथा कक्षा के बाहर की फील्ड-बेस्ड गतिविधियों के दौरान अवधारणाओं की समझ में कोई सुधार देखा?" (आरेख— 4) 27.5 प्रतिशत अध्यापकों ने दृढ़ता से सहमति व्यक्त की तथा 46.25 प्रतिशत अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की कि कक्षा के बाहर की गतिविधियों ने अवधारणाओं की समझ में सुधार किया है। 13.75 प्रतिशत अध्यापक तटस्थ रहे और 12.5 प्रतिशत अध्यापक असहमत थे और उन्होंने नियमित कक्षा में सीखने का पक्ष लिया।
- 33.75 प्रतिशत अध्यापक दृढ़ता से सहमत थे और 36.25 प्रतिशत सहमत थे कि बच्चे फील्ड-बेस्ड गतिविधियों के माध्यम से सीखने के लिए अधिक उत्सुक रहे। 16.25 प्रतिशत अध्यापक तटस्थ रहे तथा 13.75 प्रतिशत अध्यापक असहमत रहे, क्योंकि इनके अनुसार बच्चे फील्ड-बेस्ड गतिविधियों से सीखने के लिए कम उत्सुक थे।
- केवल 15 प्रतिशत अध्यापक दृढ़ता से सहमत थे तथा 31.25 प्रतिशत सहमत थे कि फील्ड-बेस्ड गतिविधियों ने बच्चों के समस्या-समाधान कौशल को बढ़ाया है। 32.5 प्रतिशत अध्यापक तटस्थ रहे, जबकि 21.25 प्रतिशत अध्यापक इसके विपरीत तर्क रखते थे।
- आरेख— 5 में 35 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि उन्होंने अक्सर बच्चों की "मनोदशा तथा ऊर्जा के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन" देखा है, जबकि 28.75 प्रतिशत अध्यापकों ने इस परिवर्तन को "कभी-कभी" बताया। 22.5 प्रतिशत अध्यापकों ने बच्चों के मूड तथा ऊर्जा के स्तर में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं बताया, जबकि 13.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि फील्ड-बेस्ड गतिविधि से विद्यार्थियों के मूड तथा ऊर्जा के स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- 30 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि फील्ड-बेस्ड गतिविधियाँ विद्यार्थियों के तनाव तथा चिंता को काफी हद तक कम करती हैं,

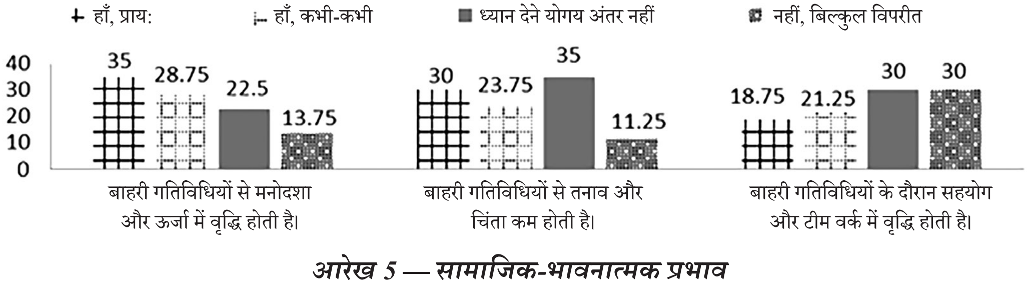

आरेख 5 — सामाजिक-भावनात्मक प्रभाव

जबकि 23.75 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि ये "कभी-कभी" तनाव एवं चिंता को कम करती हैं। दूसरी ओर 11.25 प्रतिशत अध्यापकों ने माना कि ये गतिविधियाँ सामान्यतः तनाव एवं चिंता को बढ़ाती हैं तथा 35 प्रतिशत अध्यापक इसके बारे में तटस्थ थे।

- फील्ड-बेस्ड गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों के सहयोग या टीमवर्क के बारे में चर्चा में केवल 18.75 प्रतिशत अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की कि वे प्रायः कक्षा के बाहर की गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों के सहयोग तथा टीमवर्क को देखते हैं तथा 21.25 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि वे "कभी-कभी" बेहतर सहयोग तथा टीमवर्क देखते हैं। 30 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा कि इन गतिविधियों में सहयोग तथा टीमवर्क कम हो जाता है और लगभग इतने ही अध्यापक इस पर तटस्थ थे।

अध्यापकों ने हमें बताया कि कुछ विषय फील्ड-बेस्ड गतिविधियों के लिए दूसरे विषय की तुलना में बेहतर हैं। उनके अनुसार, "प्राकृतिक आवासों में पौधों तथा पशुओं का अवलोकन करना सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है, जिसे कक्षा से बाहर आकर ही पढ़ाया जाना चाहिए।"— रीना, शिक्षिका।

"प्राथमिक वर्गों में, रात के आकाश का अवलोकन करना तथा नक्षत्रों की पहचान करना कक्षा के बाहर पढ़ाने के लिए सबसे अच्छा विषय है।"— ऋषभ, अध्यापक।

"प्रकृति कला या लैंडस्केप पेंटिंग या मूर्तिकला से संबंधित विषयों को कक्षा के बाहर की गतिविधियों के साथ ही, अच्छे से पढ़ाया जा सकता है तथा बच्चों को समुदाय के अध्ययन, यानी विभिन्न लोगों एवं संस्कृति के बारे में कक्षा के बाहर की गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए।"— प्रिया, शिक्षिका।

चर्चा

इस शोध अध्ययन में, हमने पाया कि आउटडोर लर्निंग या फील्ड-बेस्ड गतिविधियाँ सीखने को बेहतर बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं। यहाँ यह प्रदर्शित किया गया कि बच्चों को कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ पसंद हैं तथा वे अपनी नियमित कक्षा के बाहर सीखने के लिए बहुत उत्साहित हैं। आउटडोर की स्थिति में सीखने की धारणा भी बच्चों में उच्च है तथा वे इसे आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं। दूसरी ओर, अध्यापक भी फील्ड-बेस्ड गतिविधियों की पढ़ाई के पक्ष में हैं। उनके अनुसार, ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों की समझ में सुधार करती हैं तथा उनकी समस्या- समाधान क्षमताओं को भी बढ़ाती है।

इसके अतिरिक्त, अध्यापकों ने यह भी बताया कि फील्ड-बेस्ड गतिविधियाँ बच्चों के मूड तथा ऊर्जा के स्तर को बेहतर करती हैं और जब वे कक्षा के बाहर काम करते हैं, तो वे कम दबाव तथा कम चिंतित अनुभव करते हैं। यद्यपि, इसमें कुछ तार्किक चुनौतियाँ भी रहती हैं। इस शोधपत्र के अंत में फील्ड-बेस्ड गतिविधियों को सीखने के लिए अधिक लाभकारी बनाने के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं। कक्षा के बाहर की फील्ड-बेस्ड गतिविधियों के लाभों को सफलतापूर्वक शामिल करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं—

आउटडोर लर्निंग क्षेत्र आधारित (फील्ड-बेस्ड लर्निंग) गतिविधियों के लिए सुझाव

- **उद्देश्यपूर्ण योजना**— जैसा कि अध्यापकों ने सुझाव दिया है कि गतिविधियों की उद्देश्यपूर्ण योजना बनाना आवश्यक है। वे गतिविधियाँ, जो पाठ्यक्रम के उद्देश्यों तथा कक्षा के बाहर की पढ़ाई की आवश्यकता के साथ निकटता से जुड़ी हों, उनके लिए योजना बनाई जा सकती है। पूर्व नियोजन से अध्यापकों को सुरक्षित एवं तार्किक रूप से व्यवहार्य वातावरण निर्मित करने में सहायता मिल सकती है।
- **विद्यार्थियों को तैयार करें**— गतिविधियाँ आरंभ करने से पहले, अध्यापकों को सीखने के लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से बताना चाहिए तथा अधिकतम लाभ प्राप्त करने और व्यवधानों को कम करने के लिए सुरक्षा एवं सहभागिता के लिए बच्चों के साथ कुछ बुनियादी नियम स्थापित करने चाहिए।
- **अन्वेषण के लिए उपकरण**— बच्चों को आवश्यक उपकरण जैसे कला की गतिविधियों को संचालित करने के लिए बुनियादी उपकरण या जर्नल तथा नोट्स लेने के लिए लेखन पैड प्रदान करना बेहतर है, जो बच्चों को कक्षा के बाहर सीखने में मदद कर सकते हैं।
- **निर्देशित अन्वेषण**— बच्चों को उचित प्रश्न पूछने से उनके अन्वेषण में एक निर्देशन आता है। बच्चों को प्रेरित करने के माध्यम से जिज्ञासा को बढ़ावा देने वाले सवाल पूछें तथा उन्हें भी सवाल पूछने की अनुमति दें।
- **प्रतिपुष्टि**— बच्चों को सत्र के अंत में अपनी-अपनी सीख को साझा करने की अनुमति दें, ताकि उनका सीखना समेकित हो तथा सभी ज्ञान संश्लेषित हो।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन में यह पाया गया कि फील्ड-बेस्ड लर्निंग का बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक आनंदमय तथा आकर्षक बनाता है, इसलिए अध्यापक खासकर फाउंडेशनल तथा प्रीप्रेटरी स्तर पर, इनका प्रयोग अपने दैनिक अधिगम प्रक्रिया में कर सकते हैं। सभी अध्यापकों को अपने पाठ्यक्रम में उन हिस्सों को चिह्नित करना चाहिए, जिसे कक्षा के बाहर आसानी से कराया जा सकता है। अध्यापकों को अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। अध्यापकों को क्षेत्र आधारित (फील्ड-बेस्ड लर्निंग) सीखने को बढ़ावा देने के लिए विद्यालयों को बागवानी, खेल क्षेत्रों तथा सामुदायिक भागीदारी विकसित करनी चाहिए। अध्यापक अपनी कक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार गतिविधियों को अन्य अध्यापकों के साथ मिलकर नियोजित कर सकते हैं, ताकि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर अत्यधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ें।

निष्कर्ष

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के समग्र विकास में कक्षा के बाहर की फील्ड-बेस्ड गतिविधियाँ सीखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इस अध्ययन में अध्यापकों तथा बच्चों का साक्षात्कार साझा किया गया और उन पर कक्षा के बाहर की फील्ड-बेस्ड गतिविधियों द्वारा सीखने के प्रभाव को एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण किया

गया। अध्यापकों के अनुसार, कक्षा के बाहर की क्षेत्र आधारित (फील्ड-बेस्ड) गतिविधियाँ बच्चों को संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा सामाजिक रूप से लाभान्वित करती हैं। बच्चे भी मानते हैं कि ये गतिविधियाँ उनके लिए सीखने को रोचक तथा आनंददायक बनाती हैं।

संदर्भ

किविरंटा, एल. एवं अन्य. 2024. आउटडोर लर्निंग इन ए अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन— एक्सपलोरिंग बेनिफिटस एंड चैलेंज. *एजुकेशनल रिसर्च*. 66(1). पृष्ठ 102–119. https://doi.org/10.1080/00131881.2023.2285762

गदाड, जी. जी. एवं ए. बी. होलेयाचे. 2023. क्लास बेयोंड द वॉल्स — अ रीएक्सपलोरिंग मेथड ऑफ टीचिंग इन आयुर्वेद एजुकेशन ओवर कन्वेन्शनल अप्रोच. *जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड इंटीग्रेटिव मेडिसन*. 14(3). 100724. https://doi.org/10.1016/J.JAIM.2023.100724

ग्रे., टी. एवं सी. थॉमसन. 2016. ट्रांसफॉर्मिंग एनवायरमेंटल अवेयरनेस ऑफ स्टूडेंट्स थ्रू द आर्टस एंड प्लेस बेस्ड पेडागोजी. लर्निंग लैडंस्केप जर्नल, लीडिंग इंग्लिश एजुकेशन एंड रिसोर्स नेटवर्क, कनाडा. 9(2). पृष्ठ 239–260. https://doi.org/10.36510/LEARNLAND.V9I2.774

डॉवडेल, के. एवं अन्य. 2011. नेचर एंड इटस इन्फ्लूएन्स ऑन चिल्ड्रेन्स आउटडोर प्ले. *जर्नल ऑफ आउटडोर एंड एनवायरमेंटल एजुकेशन*. 15(2). पृष्ठ 24–35. https://doi.org/10.1007/BF03400925

चावला, एल. 2015. बेनेफिटस ऑफ नेचर कान्टैक्ट फॉर चिल्ड्रन. *जर्नल ऑफ प्लानिंग लिटरेचर*. सेज पब्लिकेशन, वाशिंगटन डी.सी. 30(4). पृष्ठ 433–452. https://doi.org/10.1177/0885412215595441

चावला, एल. एवं अन्य. 2014. ग्रीन स्कूल यार्ड एज हैवन फ्रॉम स्ट्रेस एंड रिसोर्सेज फॉर रिजिल्यन्स इन चाइल्डहुड एंड ऐडोलेसन्स. नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन, राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान, अमेरिका. 28. पृष्ठ 1–13. https://doi.org/10.1016/J.HEALTHPLACE.2014.03.001

बेकर, सी. एवं अन्य. 2017. इफेक्टस ऑफ रेगुलर क्लास इन आउटडोर एजुकेशन सेटिंग्स– अ सिस्टमैटिक रिव्यू ऑन स्टूडेंटस लर्निंग, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एंवाइरनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हैल्थ, एम.डी.पी.आई.,* स्विट्जरलैण्ड. https://doi.org/10.3390/ijerph14050485

ब्रैडबरी, एन. ए. 2016. अटेन्शन स्पैन डयूरिंग लेक्चर— 8 सेकंड, 10 मिनटस, ऑर मोर? *एडवान्सेज इन फिजियोलॉजी एजुकेशन*. अमेरिकन फिजियोलॉजिकल सोसाइटी, अमेरिका 40(4). पृष्ठ 509–513. https://doi.org/10.1152/advan.00109.2016

मान, जे. एवं अन्य. 2022. गेटिंग आउट ऑफ द क्लासरूम एंड ईंटों नेचर— अ सिस्टमैटिक रिव्यू ऑफ नेचर स्पेसेफिक आउटडोर लर्निंग ऑन स्कूल चिल्ड्रन लर्निंग एंड डेवलपमेंट. *फ्रंटीयर्स मीडिया एस.ए.,* स्विट्जरलैण्ड. 10. https://doi.org/10.3389/FPUBH.2022.877058

शिक्षा मंत्रालय. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार. 14–16. https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English.pdf

राष्टीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्. 2023. *विद्यालय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. नई दिल्ली.

———. 2022. *बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022*. नई दिल्ली.

आधुनिक शिक्षा पर वर्चुअल रियलिटी का प्रभाव

श्रुति कंवर*

वर्चुअल रियलिटी (आभासी वास्तविकता) शिक्षा में एक उपयोगी उपकरण बनता जा रहा है, यह गहन तथा अंतर्क्रियात्मक अधिगम प्रदान करता है, जो जुड़ाव, समझ तथा स्मृति को बढ़ाता है। यह तकनीक विद्यार्थियों को उन तरीकों से पाठों को समझने के अनुभव प्रदान करती है, जो अन्यथा असंभव हैं। प्राचीन सभ्यताओं तथा ग्रहों की खोज से लेकर जोखिम-मुक्त आभासी आकाश में जटिल वैज्ञानिक प्रयोग करने तक वर्चुअल रियलिटी (आभासी वास्तविकता) बहु-संवेदी अनुभव प्रदान करके, अमूर्त अवधारणा को समझने योग्य बनाकर तथा सक्रिय भागीदारी के माध्यम से गहन शिक्षण को बढ़ावा देकर विविध शिक्षण शैलियों का समर्थन करती है। लेख का मुख्य उद्देश्य इस उभरती हुई तकनीक की संभावनाओं, चुनौतियों तथा इसके विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग को समझाना एवं समाज को इससे होने वाले लाभ हेतु इसे प्रस्तुत करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयी तथा अध्यापक शिक्षा में आभासी वास्तविकता का एकीकरण, शिक्षा को डिजिटल युग के अनुरूप बनाने पर बल देता है। शिक्षा में आभासी वास्तविकता का एकीकरण व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव को भी सक्षम बनाता है, जिससे शिक्षकों को व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थी की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ तैयार करने में सहायता मिलती है। वर्चुअल रियलिटी वास्तविक समय प्रतिक्रिया देकर तथा वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का अनुकरण करके प्रेरणा, आलोचनात्मक सोच तथा समस्या-समाधान कौशल में सुधार कर सकती है। हालाँकि, शिक्षा में आभासी वास्तविकता को अपनाने में उच्च लागत, तकनीकी बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता तथा मोशन सिकनेस जैसी संभावित स्वास्थ्य चिंताओं सहित कई चुनौतियाँ हैं। इन बाधाओं के बावजूद, जैसे ही यह तकनीक अधिक सुलभ तथा सस्ती होती है, वैसे ही इसके माध्यम से विद्यार्थियों को एक अनुकूलनीय शिक्षण वातावरण प्रदान किया जा सकेगा।

वर्तमान में, वर्चुअल रियलिटी (आभासी वास्तविकता) शैक्षणिक संस्थानों में अधिक उपयोग होने लगी है। छोटे बच्चों से लेकर कॉलेज के विद्यार्थियों तक वर्चुअल रियलिटी तकनीक शिक्षा हेतु अधिक प्रचलित हो रही है। यह तकनीक एक संगणक-उत्पादित (Computer-generated) वातावरण बनाती है, जहाँ उपयोगकर्ता अपनी उपस्थिति को अनुभव कर सकते हैं तथा आभासी वस्तुओं एवं परिवेश के साथ बातचीत कर सकते हैं, जिससे यह उपयोगकर्ता के लिए वास्तविक तथा संवादात्मक बन जाता है। प्रायः इसके लिए एक हेड-माउंटेड डिस्प्ले (HMD) उपकरण का उपयोग करने की आवश्यकता होती है, जो उपयोगकर्ता की विभिन्न विषय संबंधी गतिविधियों को अभासी

**सहायक आचार्य*, शिक्षा विभाग, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश 201 312

रूप से समझने में सहयोग करता है, जिससे वास्तव में वर्चुअल रियलिटी में होने का अनुभव होता है। वर्चुअल रियलिटी तकनीक की उन्नति तथा इसका बढ़ता सामर्थ्य शिक्षा में इसके उपयोग में वृद्धि की ओर संकेत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुच्छेद 23.6 में उल्लिखित है कि विद्यालयी शिक्षा तथा शिक्षक-शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी के एकीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह नीति शिक्षा प्रणाली को डिजिटल युग के अनुरूप बनाने तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करती है। दीक्षा तथा स्वयं जैसे मंचों से शिक्षक व विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध कराने पर बल दिया गया है। शिक्षकों के लिए सतत व्यावसायिक विकास, ऑनलाइन प्रशिक्षण तथा वर्चुअल रियलिटी का उपयोग अनिवार्य किया गया है। साथ ही, डिजिटल डिवाइड समाप्त कर सभी तक तकनीकी पहुँच सुनिश्चित करने की बात कही गई है।

शिक्षक तथा विद्यालय विज्ञान-प्रौद्योगिकी-अभियांत्रिकी-गणित तथा अन्य विषयों, जैसे— चिकित्सा प्रशिक्षण, सांस्कृतिक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा विशेष शिक्षा जैसे कई क्षेत्रों में इसकी संभावनाओं की जाँच कर रहे हैं। वर्चुअल रियलिटी में शिक्षा प्रदान करने के तरीके को बदलने तथा इसकी गहनता, समावेशिता तथा प्रभावी गुणों को बढ़ाने की क्षमता है।

वर्चुअल रियलिटी

वर्चुअल रियलिटी एक डिजिटल तकनीक है, जो उपयोगकर्ता को कंप्यूटर द्वारा बनाए गए त्रि-आयामी (3D) वातावरण को दर्शाती है। इसमें विद्यार्थी हेडसेट, स्पेशल ग्लव्स तथा अन्य उपकरणों की सहायता से किसी विषय को प्रत्यक्ष अनुभव की तरह सीख सकते हैं। यह एक इमर्सिव तकनीक है, जिसमें विद्यार्थी विषय में साक्षात प्रवेश का अनुभव करते हैं, जैसे— सौरमंडल के ग्रहों की यात्रा या शरीर के अंगों का अध्ययन।

परंपरागत तकनीक और वर्चुअल रियलिटी का तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	परंपरागत तकनीक	वर्चुअल रियलिटी
1.	प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित	कृत्रिम डिजिटल अनुभव प्रदान करती है।
2.	सीमित संसाधनों और स्थान तक सीमित	किसी भी स्थान या समय में उपयोग संभव
3.	पाठ्यपुस्तकों तथा ब्लैकबोर्ड पर निर्भर	3डी वातावरण और इंटरैक्टिव माध्यमों का उपयोग
4.	विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति पर निर्भर	आभासी दुनिया में वास्तविक अनुभव प्रदान करती है।
5.	शिक्षक की भूमिका प्रमुख	तकनीक और कंटेंट का समावेश प्रमुख
6.	कम तकनीकी हस्तक्षेप	उच्च तकनीकी उपकरणों की आवश्यकता
7.	धीमी गति से सीखने की प्रक्रिया	तेज, रोचक तथा गहराई से सीखने का अवसर
8.	ग्रामीण क्षेत्रों में आम	तकनीकी साक्षरता तथा संसाधनों की आवश्यकता के कारण सीमित

पारंपरिक तकनीकें तथा विधियाँ वर्षों से सफलतापूर्वक उपयोग में लाई जाती रही हैं तथा उन्होंने विद्यार्थियों की मजबूत नींव तैयार की है। वहीं, वर्चुअल रियलिटी एक नई तकनीक है, जो शिक्षा को अधिक प्रभावी, रोचक एवं अनुभवात्मक बनाती है। दोनों विधाओं की अपनी-अपनी उपयोगिता है। वर्तमान में इन दोनों को मिलाकर एक हाइब्रिड शिक्षण पद्धति विकसित की जा सकती है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक समृद्ध तथा प्रभावशाली बन सके।

शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी का इतिहास तथा वर्तमान परिदृश्य

शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी का एक समृद्ध इतिहास है। सर्वप्रथम इस अवधारणा को विज्ञान की कक्षाओं में प्रस्तुत किया गया था। ओकुलस रिफ्ट यह एक वर्चुअल रियलिटी हेडसेट है, जिसे पहली बार ओकुलस वर्चुअल रियलिटी नाम की कंपनी ने विकसित किया था। यह कंपनी बाद में फेसबुक (अब मेटा) के अधीन आ गई। अकूलस रिफ्ट को विशेष रूप से आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) में एक इमर्सिव (यथार्थ) अनुभव देने के लिए बनाया गया है, विशेषकर वीडियो गेमिंग, सिमुलेशन तथा इंटरएक्टिव ऐप्लिकेशंस के जारी होने तक वर्चुअल रियलिटी एक साध्य शैक्षिक उपकरण नहीं बन पाया था। प्रारंभ में, वर्चुअल रियलिटी का उपयोग खेल, मनोरंजन तथा सेना के लिए किया जाता था, लेकिन शिक्षा में इसकी आवश्यकता को जल्द ही पहचान लिया गया।

बीसवीं सदी के मध्य या छठे दशक में, इवान सदरलैंड तथा जेरॉन लैनियर जैसे लोगों ने वर्चुअल रियलिटी तकनीक की नींव रखी। संगणक लेखाचित्र के क्षेत्र में अग्रणी सदरलैंड ने पहली बार 1960 के दशक के अंत में वर्चुअल रियलिटी की अवधारणा प्रस्तुत की। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में उनके कार्य ने एक शीर्ष-स्थापित प्रदर्शन का विकास किया, जिसका नाम 'द स्वॉर्डस ऑफ डैमोकल्स' रखा गया, जिसने उपयोगकर्ताओं को तीन-आयामी (3डी) जानकारी के साथ बातचीत करने की अनुमति दी। भारी होने के बावजूद, 'द स्वॉर्डस ऑफ डैमोकल्स' आज की वर्चुअल तथा संवर्धित वास्तविकता प्रणालियों की अग्रदूत थी। वर्चुअल रियलिटी में सदरलैंड का योगदान आधारभूत रहा है, जिसने वर्तमान में हमारे द्वारा इसका उपयोग किए जाने वाले गहन अनुभवों का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके काम ने शोधार्थियों तथा खोजकर्ताओं की पीढ़ियों को प्रेरित किया है, जिससे अडोबे तथा पिक्सर जैसी कंपनियों का निर्माण हुआ है। जेरॉन लैनियर एक कंप्यूटर वैज्ञानिक, वर्चुअल कलाकार तथा लेखक हैं, जिन्होंने वर्चुअल रियलिटी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्हें 'वर्चुअल रियलिटी' शब्द गढ़ने तथा आधुनिक वर्चुअल रियलिटी प्रतिकृति हेड-माउंटेड डिस्प्ले का आविष्कार करने का श्रेय दिया जाता है। लैनियर ने वी.पी.एल. अनुसंधान की स्थापना की, जो वर्चुअल रियलिटी उत्पादों को बेचते हैं। उन समूहों का निरीक्षण किया, जिन्होंने (सर्जिकल सिमुलेशन) और वाहन प्रतिकृति जैसे वर्चुअल रियलिटी अनुप्रयोग बनाए। वर्चुअल रियलिटी में लैनियर का योगदान आधारभूत रहा है, यह लोग वर्चुअल रियलिटी तकनीकी क्षेत्र में महत्वपूर्ण थे। 1980 तथा 1990 के दशक तक ऐसा नहीं था। वर्चुअल रियलिटी में मुख्य रूप से सैन्य तथा औद्योगिक समायोजन में

सतत अनुकरण प्रशिक्षण में तेजी आई थी, वर्चुअल रियलिटी प्रणाली जैसे 'वर्चुअल रियलिटी प्रतिरूपण भाषा (वी.आर.एम.एल.)' अस्तित्व में आई, परंतु उनकी उपयोगिता सीमित थी।

वर्चुअल रियलिटी का शिक्षा में प्रवेश

जैसे-जैसे वर्चुअल रियलिटी तकनीक आगे बढ़ी, शिक्षकों ने 2000 के दशक की शुरुआत में सीखने के अनुभवों को विस्तृत करने के लिए इसकी क्षमता का पता लगाना शुरू किया, सेकंड लाइफ, शैक्षिक समायोजन में वर्चुअल रियलिटी के महत्व को प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों को डिजिटल वातावरण में बातचीत करने में सक्षम बनाना, साथ ही पुराने वर्चुअल रियलिटी प्रयोग विशेष प्रशिक्षणों पर केंद्रित थे, जैसे कि चिकित्सीय अनुकरण और वास्तुशिल्प प्रत्यक्षीकरण आदि।

शिक्षा में प्रमुखता— 2010 के मध्य तक हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर में प्रगति के कारण वर्चुअल रियलिटी ने मुख्यधारा की शिक्षा में अपना स्थान बना लिया था। ऑकुलस रिफ्ट तथा एच.टी.सी. वाइब जैसी कंपनियों ने किफायती शीर्ष स्थापित उपकरण तथा गहन अनुभवों के साथ वर्चुअल रियलिटी को अधिक सुलभ बना दिया। शैक्षणिक संस्थानों ने वर्चुअल रियलिटी का उपयोग कई प्रकार के अनुप्रयोगों के लिए करना शुरू कर दिया, जिसमें आभासी क्षेत्र यात्राओं से लेकर ऐतिहासिक तथा आभासी प्रयोगशालाओं में विज्ञान के प्रयोग शामिल थे, उदाहरण— क्लेटन स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका ने वर्चुअल रियलिटी का उपयोग करके विद्यार्थियों को मानव शरीर के अंगों तथा प्रणालियों की गहन समझ प्रदान की है। विद्यार्थी वर्चुअल रियलिटी हेडसेट के माध्यम से मानव शरीर के अंदर 'वर्चुअल टूर' कर सकते हैं, जहाँ वे अंगों की संरचना देख सकते हैं, उनका कार्य समझ सकते हैं तथा 3डी मॉडल के साथ इंटरैक्ट कर सकते हैं। यह पारंपरिक पुस्तकों तथा चित्रों की तुलना में सीखने को अधिक प्रभावी एवं रोचक बनाता है।

वर्तमान परिदृश्य— दिल्ली पब्लिक स्कूल ने विज्ञान तथा इतिहास की कक्षाओं में वर्चुअल रियलिटी का समावेश किया है। विद्यार्थी अब वी.आर. हेडसेट के माध्यम से 'आकाशगंगा की यात्रा' कर सकते हैं, जिससे उन्हें अंतरिक्ष तथा ग्रहों के बारे में गहरा अनुभव होता है। इतिहास की कक्षा में वे प्राचीन भारत के ऐतिहासिक स्थलों जैसे अशोक स्तंभ और ताजमहल की आभासी यात्रा करते हैं, जिससे उनकी समझ एवं रुचि बढ़ती है। वर्चुअल रियलिटी शैक्षिक क्षेत्र का एक अभिन्न अंग बन गया है, जिसने विभिन्न विषयों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में क्रांति ला दी है। विद्यार्थी प्राचीन सभ्यताओं का पता लगाने, आभासी जीवों का विच्छेदन करने तथा कृत्रिम वातावरण में प्रयोग करने के लिए वर्चुअल रियलिटी हेडसेट का उपयोग करते हैं। वर्चुअल रियलिटी तकनीक विद्यार्थियों को जोड़ने वाले तथा जटिल अवधारणाओं की उनकी समझ को गहरा करने वाले परस्पर क्रियाशील शिक्षण अनुभवों की सुविधा प्रदान करती है।

शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी के लाभ

शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी के लाभ इस प्रकार हैं—

- **यह सहभागिता को बढ़ाती है**— वर्चुअल रियलिटी सीखने में गहन संलग्नता को आकर्षक रूप से बढ़ावा देती है। यह कक्षा में उत्साह

तथा सहभागिता को बढ़ाने में सहयोग करती है, विद्यार्थियों की कल्पना को प्रेरित करती है तथा उनकी समग्र प्रेरणा में सुधार करती है। (एंडरसन, 1993) शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वर्चुअल रियलिटी अंतर्क्रियात्मक आभासी वातावरण में विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित कर उन्हें प्रेरित करती है। यह विद्यार्थियों को कक्षा में अधिक व्यस्त तथा प्रेरित करने में सहयोग करने की क्षमता रखती है। इससे उनकी सीखने की रुचि और सहभागिता बढ़ती है।

- **यह अनुभवात्मक शिक्षण को सक्षम बनाती है**— वर्चुअल रियलिटी के साथ विद्यार्थी केवल अवधारणाओं के बारे में पढ़ते ही नहीं हैं, बल्कि वे उन्हें सीधे अनुभव करते हैं। चाहे ऐतिहासिक स्थलों की खोज करना हो, आभासी जीवों का विच्छेदन करना हो या वर्चुअल प्रयोगशालाओं में विज्ञान प्रयोग करना हो, वर्चुअल रियलिटी अनुभवात्मक शिक्षण को सक्षम बनाती है, जो पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों से परे है। (शर्मा और शर्मा, 2021) यह व्यावहारिक समझ को बढ़ाती है तथा विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच कौशल तथा समस्या-समाधान क्षमताओं को विकसित करती है, उन्हें वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करती है। उदाहरण के तौर पर मेडिकल विद्यार्थी वर्चुअल रियलिटी सर्जरी सिमुलेशन का उपयोग करके आभासी रूप से जटिल सर्जरी का अभ्यास करते हैं। विद्यार्थी 3डी आभासी वातावरण में ऑपरेशन करने के अनुभव से सटीकता तथा निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हैं, जो पाठ्यपुस्तकों से नहीं सीखा जा सकता।
- **यह व्यक्तिगत शिक्षा को बढ़ावा देती है**— शर्मा और शर्मा (2021) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वर्चुअल रियलिटी तकनीक विद्यार्थियों को उनकी शिक्षा में बेहतर ढंग से केंद्रित करने तथा उनके विशिष्ट शिक्षण संदर्भों के साथ संरेखित व्यक्तिगत अनुकूली शिक्षण वातावरण बनाने का एक तरीका प्रदान करती है तथा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करती है। शिक्षक, विभिन्न शिक्षण शैलियों, जैसे— दृश्य, श्रवण तथा गतिज अर्थात करके सीखना विद्यार्थियों को ऐसे अनुभव प्रदान करते हैं, जो उनकी अनूठी प्राथमिकताओं के साथ प्रतिध्वनित होते हैं, को समायोजित करते हुए आभासी पाठों को अनुकूलित कर सकते हैं। विद्यार्थियों को स्वयं के अनुरूप सीखने तथा आभासी वातावरण में रुचि के विषयों का पता लगाने की अनुमति देकर, वर्चुअल रियलिटी स्व-निर्देशित शिक्षण तथा सीखने की प्रक्रिया पर स्वामित्व की गहरी भावना को बढ़ावा देती है।
- **एक आरामदायक तथा नियंत्रित वातावरण प्रदान करती है**— कुछ क्षेत्रों में, जैसे कि स्वास्थ्य, सेवा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण में व्यवहारिक प्रशिक्षण के लिए एक सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण प्रदान करती है। विद्यार्थी सुरक्षा या महँगे संसाधनों को क्षति पहुचाएँ बिना आभासी अनुकरण में जटिल प्रक्रियाओं या जोखिम भरे कार्यों का अभ्यास कर सकते हैं। शिक्षकों के लिए, वर्चुअल रियलिटी में महँगे उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती है तथा बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुगम बनाती है, जिससे उन्हें विद्यार्थियों को विभिन्न

कौशल तथा दक्षताओं में कुशलतापूर्वक प्रशिक्षित करने की सुविधा मिलती है।

- **वैश्विक सहयोग का निर्माण**— वर्चुअल रियलिटी भौगोलिक बाधाओं से मुक्त है, जिससे विद्यार्थी साझा आभासी स्थानों में वैश्विक स्तर पर साथियों के साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं। चाहे समूह परियोजनाओं पर काम करना हो, वर्चुअल बहस में भाग लेना हो या अतिथि वक्ताओं द्वारा व्याख्यान में भाग लेना हो, वर्चुअल रियलिटी आपके भौतिक स्थान की परवाह किए बिना विद्यार्थियों के बीच आसान संचार तथा सहयोग की सुविधा प्रदान करती है। यह वैश्विक पहुँच सांस्कृतिक समझ को बढ़ाती है तथा सहानुभूति को बढ़ावा देती है, जिससे विद्यार्थी एक-दूसरे से परस्पर संबद्ध दुनिया में सफलता के लिए तैयार होते हैं।
- **शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी का भविष्य**— शर्मा और शर्मा (2021) के शोध अध्ययन बताते हैं कि जिन विद्यार्थियों वर्चुअल रियलिटी तकनीक का उपयोग किया, उन्होंने अपने अर्जित ज्ञान का 75 प्रतिशत हिस्सा बरकरार रखा, जबकि पारंपरिक शिक्षण विधियों द्वारा अर्जित ज्ञान का केवल 5 प्रतिशत ही बरकरार रखा गया। यह हमारे पढ़ाने तथा सीखने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए तैयार है। जैसे-जैसे तकनीक आगे बढ़ती है और वर्चुअल रियलिटी अधिक सुलभ होती जाती है, शिक्षा में इसका एकीकरण पारंपरिक कक्षाओं को नया रूप देने तथा गहन अधिगम अनुभवों के लिए नए रास्ते बनाने का वादा करता है।
- **निर्बाध एकीकरण**— जैसे-जैसे वर्चुअल रियलिटी तकनीक अधिक उपयोगकर्ता अनुकूल तथा सस्ती होती जाएगी, इसे आसानी से मौजूदा शैक्षणिक ढाँचों में एकीकृत किया जाएगा। वर्चुअल रियलिटी हेडसेट पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों तथा संगणक चित्रपट की जगह लेंगे, जिससे विद्यार्थी आभासी कक्षाओं में रुचि लेंगे, जहाँ वे कुंजीपटल सामग्री का उपयोग कर सकते हैं तथा वास्तविक समय में साथियों के साथ सहयोग करके कार्य कर सकते हैं। यह एकीकरण भौतिक और आभासी शिक्षण वातावरण के बीच के अंतर को कम कर देगा, जिससे शिक्षा अधिक गतिशील तथा संवादात्मक हो जाएगी।
- **विस्तारित पाठ्यक्रम**— वर्चुअल रियलिटी पारंपरिक पाठ्यक्रम की सीमाओं का विस्तार करेगी। विद्यार्थियों को अभूतपूर्व गहराई तथा विस्तार में विषयों का पता लगाने की सुविधा देगी। ऐतिहासिक घटनाओं के गहन अनुकरण से लेकर दुनिया के दूर-दराज के कोनों में आभासी अध्ययन यात्रा तक वर्चुअल रियलिटी सीखने को ऐसे तरीकों से जीवंत बनाती है, जो पहले कभी कल्पना से परे थे। विद्यार्थियों को जटिल अवधारणाओं में तल्लीन होने एवं विभिन्न विषयों में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलेगा, जो उन्हें तेजी से डिजिटल होती दुनिया में सफलता के लिए तैयार करेगा।
- **आजीवन अधिगम**— भविष्य में, वर्चुअल रियलिटी कक्षा से इतर अपना दायरा बढ़ाएगी, जिससे सभी उम्र के लोगों के लिए आजीवन सीखने के अवसर उपलब्ध होंगे। चाहे वह व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम हो, व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम हो या व्यक्तिगत संवर्धन क्रियाकलाप, वर्चुअल

रियलिटी गहन अध्ययन का अनुभव प्रदान करेगी, जो कभी भी, कहीं भी सुलभ है। शिक्षा का यह लोकतांत्रीकरण आपको अपने जुनून को आगे बढ़ाने, नए कौशल हासिल करने तथा तेजी से बदलती दुनिया के अनुकूल होने के लिए सशक्त करेगा।

- **स्टेम शिक्षा**— भविष्य में, वर्चुअल रियलिटी STEM शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, क्योंकि यह विद्यार्थियों को आभासी प्रयोगशालाओं और अनुकरण में जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं तथा इंजीनियरिंग सिद्धांतों का पता लगाने की सुविधा देती है। उन्नत वर्चुअल रियलिटी तकनीकें, जैसे कि हैप्टिक प्रतिक्रिया (यह एक तकनीक है, जो स्पर्श तथा दबाव के माध्यम से उपयोगकर्ता को फीडबैक प्रदान करती है।) और वास्तविक समय दत्त-सामग्री प्रत्यक्षीकरण, विद्यार्थियों को प्रयोग करने, डेटा का विश्लेषण करने और वास्तविक आभासी वातावरण में समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाएगी। वर्चुअल रियलिटी सहयोगी शिक्षण अनुभवों की सुविधा भी प्रदान करेगी, जिससे विद्यार्थियों को अंतःविषय परियोजनाओं पर एक साथ काम करने और विज्ञान-प्रौद्योगिकी-अभियांत्रिकी-गणित अवधारणाओं की व्यावहारिक खोज में संलग्न होने के अवसर प्रदान करेगी।
- **शिक्षक प्रशिक्षण**— शिक्षक प्रशिक्षण में वर्चुअल रियलिटी का भविष्य परिष्कृत अनुकरण के विकास को शामिल करेगा, जो वास्तविक दुनिया के कक्षा परिदृश्यों तथा निर्देशात्मक चुनौतियों को दोहराता है। शिक्षक, शिक्षण तकनीकों का अभ्यास करने, आभासी विद्यार्थियों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने तथा अनुभवी सलाहकारों के साथ आभासी कोचिंग सत्रों में भाग लेने के लिए वर्चुअल रियलिटी मंच का उपयोग करेंगे। वर्चुअल रियलिटी आधारित व्यावसायिक विकास कार्यक्रम व्यक्तिगत आवश्यकताओं तथा विकास के क्षेत्रों के अनुरूप व्यक्तिगत शिक्षण मार्ग प्रदान करेंगे। साथ ही, यह शिक्षकों को दुनियाभर के सहकर्मियों से जुड़ने, सर्वोत्तम उपलब्धियों को साझा करने तथा अभिनव शिक्षण रणनीतियों पर सहयोग करने में सक्षम बनाएगी।
- **विशेष शिक्षा**— भविष्य में वर्चुअल रियलिटी दिव्यांग विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने वाले अनुकूलित शिक्षण अनुभव प्रदान करके विशेष शिक्षा में क्रांति लाएगी। यह तकनीक वातावरण को विभिन्न शिक्षण शैलियों, संवेदी प्राथमिकताओं तथा आवश्यकताओं तक पहुँच को समायोजित करने के लिए डिजाइन की जाएगी, जिससे विद्यार्थियों को शैक्षिक सामग्री के साथ ऐसे तरीके से जुड़ने की अनुमति मिलेगी, जो उनके लिए सार्थक एवं प्रभावी हों। वर्चुअल रियलिटी आधारित हस्तक्षेप कौशल विकास के विशिष्ट क्षेत्रों, जैसे— संचार, सामाजिक संपर्क एवं संवेदी एकीकरण को लक्षित करेंगे, जिससे विद्यार्थियों को व्यक्तिगत सहायता तथा विकास के अवसर मिलेंगे।
- **भाषा सीखना**— वर्चुअल रियलिटी भाषा सीखने को ऐसे गहन संवादात्मक अनुभव प्रदान करेगी, जो विद्यार्थियों को वास्तविक आभासी वातावरण में नई भाषाओं का अभ्यास करने तथा उसमें कौशल प्राप्त करने में सक्षम

बनाती है। निसीम वाई, वीसब्लूथ, 2017 के अनुसार मांडली वर्चुअल रियलिटी तथा इमर्स मी जैसे भाषा सीखने के वर्चुअल रियलिटी मंच, प्रामाणिक सांस्कृतिक गहन अनुभव प्रदान करेंगे, जिससे विद्यार्थी आभासी बातचीत में शामिल हो सकेंगे, विदेशी शहरों का पता लगा सकेंगे तथा वहाँ के देशी वक्ताओं के साथ बात कर सकेंगे। उन्नत वाक् पहचान तथा प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण तकनीकें वास्तविक समय की प्रतिक्रिया और व्यक्तिगत निर्देश प्रदान करेंगी। यह विद्यार्थियों को उनके उच्चारण, प्रवाह एवं समझ कौशल को बेहतर बनाने में मदद करेगा।

- **ट्रेनिंग**— भविष्य में वर्चुअल रियलिटी गहन अनुकरण को सामने करके सॉफ्ट स्किल्स (संचार, समस्या, समाधान, भावात्मक बुद्धिमता और टीमवर्क) ट्रेनिंग में क्रांति लाएगी, जो आपको आवश्यक पारस्परिक तथा संचार कौशल विकसित करने एवं परिष्कृत करने की अनुमति देता है। (STRIVR) तथा मर्सन जैसे वर्चुअल रियलिटी आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम चुनौतीपूर्ण कार्यस्थल परिदृश्यों, जैसे— टीम मीटिंग, ग्राहक इंटरैक्शन एवं संघर्ष समाधान स्थितियों का अनुकरण करेंगे। यह विद्यार्थियों को सुरक्षित तथा नियंत्रित वातावरण में अभ्यास करने और प्रतिक्रिया प्राप्त करने के अवसर प्रदान करेगा। उन्नत कृत्रिम-बुद्धिमत्ता आकलन-विधि के विद्यार्थियों के व्यवहार तथा प्रदर्शन का विश्लेषण करेगा। यह कौशल विकास एवं विशेषज्ञता प्राप्त करने के समर्थन के लिए व्यक्तिगत कोचिंग व मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी को लागू करने की चुनौतियाँ एवं संबंधित समाधान लागत— प्राथमिक चुनौतियों में से एक वर्चुअल रियलिटी की धातु-सामग्री तथा प्रक्रिया-सामग्री से जुड़ी लागत है। वर्चुअल रियलिटी हेड-माउंटेड डिस्प्ले, वर्चुअल रियलिटी अनुप्रयोग चलाने में सक्षम संगणक (कंप्यूटर) तथा अंतर्निहित सामग्री का विकास बहुत महँगा है। यह संभवतः अधिक महँगा होता रहेगा तथा इससे कुछ विद्यालयों एवं विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल रियलिटी तकनीक को अपनाना निषेधात्मक हो जाएगा।

समाधान

- सरकारी या निजी साझेदारी (पी.पी.पी. मॉडल) के माध्यम से अनुदान प्राप्त किया जा सकता है।
- सस्ते तथा स्केलेबल विकल्प जैसे कि मोबाइल वी.आर. (गूगल कार्डबोर्ड जैसे उपकरण) का उपयोग करना।
- क्लाउड-आधारित वी.आर. सेवाएँ अपनाई जाएँ, जिससे हार्डवेयर निर्भरता को कम किया जा सकता है।
- **तकनीकी आवश्यकताएँ**— वर्चुअल रियलिटी के लिए विकसित तकनीकी अवसंरचना की आवश्यकता होती है, जिसमें उच्च-क्षमता अंतर्जाल संयोजन तथा शक्तिशाली संगणक या उपकरण शामिल हैं। इन तकनीकी आवश्यकताओं को सुनिश्चित करना तथा बनाए रखना स्कूलों के लिए चुनौतीपूर्ण होगा, विशेषकर उन विद्यालयों के लिए जिनके पास सीमित संसाधन या पुरानी तकनीक है।

समाधान

- केंद्र या राज्य स्तर पर आई.सी.टी. (सूचना एवं संचार तकनीक) सहायता योजनाएँ शुरू की जाएँ।
- वाई-फाई सक्षम स्मार्ट कक्षाएँ बनाना तथा चरणबद्ध रूप से तकनीकी अपग्रेड करना।
- तकनीकी साझेदार कंपनियों से सी.एस.आर. (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी) के तहत समर्थन लेना।

प्रशिक्षण एवं सहयोग— शिक्षकों को वर्चुअल रियलिटी को अपने शिक्षण अभ्यासों में प्रभावी रूप से एकीकृत करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण तथा सहायता की आवश्यकता है। प्रशिक्षण के अवसरों तथा तकनीकी सहायता की कमी से कक्षा में वर्चुअल रियलिटी तकनीक को अपनाने तथा उपयोग में बाधा आएगी, जिससे विद्यार्थियों के सीखने पर इसका प्रभाव होगा।

समाधान

- नियमित कार्यशालाएँ, ऑनलाइन कोर्स तथा माइक्रो-ट्रेनिंग मॉड्यूल उपलब्ध कराए जाएँ।
- 'वी.आर. समन्वयक शिक्षक' जैसे पद बनाएँ जाएँ, जो अन्य शिक्षकों को सहयोग करें।
- स्कूलों में तकनीकी सहायता दल नियुक्त किए जाएँ।

विषय-वस्तु का विकास— उच्च गुणवत्ता वाली, पाठ्यक्रम-संरेखित वर्चुअल रियलिटी सामग्री विकसित करना, समय लेने वाला तथा गहन संसाधन वाला कार्य बना रहेगा। शिक्षकों को ऐसे गहन अनुभव खोजने या बनाने में संघर्ष करना पड़ेगा, जो उनके शिक्षण लक्ष्यों के साथ संरेखित हों और अलग-अलग विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करें।

समाधान

- शिक्षा बोर्ड या रा.शै.अ.प्र.प. स्तर पर मानकीकृत वर्चुअल रियलिटी सामग्री का निर्माण तथा वितरण किया जाएँ।
- ओपन-सोर्स तथा स्थानीय भाषाओं में सामग्री विकसित की जाएँ।
- शिक्षकों को स्वयं सामग्री बनाने के लिए सरल टूल और टेम्पलेटस उपलब्ध कराए जाएँ।

सुलभता— वर्चुअल रियलिटी तकनीक तक समान पहुँच सुनिश्चित करना एक और चुनौती है। कुछ विद्यार्थियों को वर्चुअल रियलिटी-संगत उपकरण की अभिगम्यता नहीं हो सकती है या वर्चुअल रियलिटी हेडसेट का उपयोग करते समय उन्हें असुविधा या गति-रूग्णता का अनुभव हो सकता है। ये विशेष चुनौतियाँ वर्चुअल रियलिटी-आधारित शिक्षण गतिविधियों में उनकी भागीदारी को सीमित कर देंगी।

समाधान

- स्कूलों में साझा वर्चुअल रियलिटी लैब स्थापित किए जाएँ, जहाँ विद्यार्थी समूहों में उपयोग कर सकें।
- दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक शैक्षिक संसाधन विकसित किए जाएँ।
- वर्चुअल रियलिटी उपकरणों में आरामदायक डिजाइन तथा उपयोगकर्ता-हितैषी फीचर्स जोड़े जाएँ।

एकीकरण एवं पाठ्यक्रम— मौजूदा पाठ्यक्रम तथा अनुदेशात्मक प्रथाओं में वर्चुअल रियलिटी को एकीकृत करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना और

सीखने के उद्देश्यों के साथ संरेखण की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वर्चुअल रियलिटी के अनुभव पारंपरिक शिक्षण विधियों को प्रतिस्थापित करने के स्थान पर उनके पूरक बने और संवर्द्धन करें।

समाधान

- शिक्षकों को यह बताया जाए कि वर्चुअल रियलिटी पारंपरिक तरीकों का पूरक है, न कि प्रतिस्थापक।
- पाठ योजनाओं में वर्चुअल रियलिटी को कहाँ तथा कैसे जोड़ा जाएँ, इसके लिए दिशा-निर्देश बनें।
- वर्चुअल रियलिटी उपयोग की प्रभावशीलता को आँकने हेतु मूल्यांकन तंत्र विकसित किया जाएँ।
- वर्चुअल रियलिटी शिक्षा में नवाचार वर्चुअल रियलिटी गहराई लाने का एक शक्तिशाली माध्यम है, लेकिन इसे सफलतापूर्वक लागू करने के लिए सुनियोजित रणनीति, प्रशिक्षण, सहयोग और संसाधनों का न्यायसंगत वितरण अनिवार्य है। यदि चुनौतियों को पहचान कर समाधानात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाए, तो वर्चुअल रियलिटी शिक्षा को अधिक सुलभ, समावेशी और प्रभावी बना सकती है।

वर्चुअल रियलिटी के साथ शिक्षा का भविष्य

भविष्य में शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी को एकीकृत करने की बहुत संभावना है। यह उम्मीद की जाती है कि जैसे-जैसे तकनीक आगे बढ़ेगी, वर्चुअल रियलिटी के अनुभव अधिक सटीक, आकर्षक तथा बड़े दर्शकों के लिए सुलभ होते जाएँगे। स्पष्ट-प्रतिक्रिया, संचलन निगरानी तथा कृत्रिम-बुद्धिमत्ता में प्रगति वर्चुअल रियलिटी की शैक्षिक संभावनाओं को बेहतर बनाती रहेगी। वर्चुअल रियलिटी शैक्षिक क्षमताओं को और भी अधिक बढ़ाएगी। भविष्य में वर्चुअल रियलिटी तकनीक का विद्यालयों तथा विद्यार्थियों के लिए अधिक आसानी से उपलब्ध होने की संभावना है। वर्चुअल रियलिटी उपकरणों की कीमत में गिरावट आने की उम्मीद है, जिससे स्कूलों को अधिक लाभ होगा और इस तकनीक को पाठ्यक्रम में आसानी से शामिल किया जा सकेगा। व्यापक पैमाने पर वर्चुअल रियलिटी का उपयोग करके, अधिक से अधिक विद्यार्थी ऐसे गहन अधिगम अनुभवों तक पहुँच पाएँगे, जो पहले केवल कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए ही सुलभ थे। वर्चुअल रियलिटी की विषय-वस्तु के विकास में प्रगति का, भविष्य में शिक्षा की दिशा को प्रभावित करने पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। जैसे-जैसे विकासक अधिक आकर्षक और व्यक्तिगत वर्चुअल रियलिटी शैक्षिक अनुभव बनाने पर काम करते हैं, शिक्षकों के पास विभिन्न विषयों, ग्रेड स्तरों और सीखने की प्राथमिकताओं के अनुरूप पाठों को समायोजित करने के लिए अधिक विकल्प होंगे। संयोजन करने हेतु वर्चुअल रियलिटी का लचीलापन विद्यार्थियों को प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्ट आवश्यकताओं तथा प्राथमिकताओं के अनुरूप सीखने के समृद्ध अनुभव की रचना करने में सक्षम बनाता है।

विद्यालयी शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी का प्रभाव

वर्चुअल रियलिटी विद्यार्थियों को वर्चुअल वातावरण में सीखने का अवसर देती है, जैसे— ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा, विज्ञान प्रयोगशाला में प्रयोग या अंतरिक्ष अन्वेषण आदि। यह जटिल अवधारणाओं

को सरल तथा रोचक बनाती है। यह दूरस्थ तथा ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकती है, जहाँ पारंपरिक संसाधनों की कमी है। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल रियलिटी अनुकूलित शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकती है, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो सकती है।

अध्यापक शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी का प्रभाव

वर्चुअल रियलिटी के माध्यम से अध्यापक वास्तविक कक्षाओं का अनुभव कर सकते हैं तथा सिखाने के कौशल में सुधार कर सकते हैं। यह शिक्षकों को कठिन शिक्षण परिस्थितियों का प्रबंधन सिखाने में मदद करती है। वर्चुअल रियलिटी का उपयोग कर शिक्षक इंटरैक्टिव तथा व्यावहारिक पाठ योजना तैयार कर सकते हैं। वर्चुअल रियलिटी अध्यापकों को डिजिटल उपकरणों और नई शिक्षण पद्धतियों के उपयोग में सक्षम बनाती है।

निष्कर्ष

वर्चुअल रियलिटी में गहन तथा संवादात्मक अनुभव की अनुमति देकर शिक्षा को बदलने की क्षमता है। शिक्षक, विद्यार्थी की सहभागिता को बेहतर बनाने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने एवं सिद्धांत को व्यवहार से जोड़ने में इसकी क्षमता को उजागर करने के लिए एक जिम्मेदार तथा नैतिक तरीके से वर्चुअल रियलिटी का उपयोग कर सकते हैं। शिक्षकों, नीति निर्माताओं एवं हितधारकों को तकनीक की प्रगति के साथ शिक्षा के भविष्य को आकार देने में वर्चुअल रियलिटी के महत्व को पहचानना चाहिए। यह समझ हमें भविष्य की पीढ़ियों को एक ऐसी दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल एवं ज्ञान देने के अवसर प्रदान करेगी जो अधिक कुंजीपटल तथा परस्पर संबद्ध होती जा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार वर्चुअल रियलिटी शिक्षा को अधिक समावेशी, रोचक तथा गुणवत्तापूर्ण बना सकती है।

संदर्भ

अमृत, एम. और अन्य. 2015. ई-लर्निंग पाठ्यक्रमों में संवर्धित वास्तविकता के अनुप्रयोग में अध्ययन. ICORD' 15- सीमाओं के पार डिजाइन में अनुसंधान खंड 2 : रचनात्मकता, स्थिरता, क्रिग्, सक्षम प्रौद्योगिकियाँ, प्रबंधन और अनुप्रयोग (पृष्ठ 375–384). स्प्रिंगर इंडिया https://doi.org/10.1007/978-81-322-2236-0_34

इसडेल जे. 1993. वर्चुअल रियंलिटी क्या है? ftp://ftp.u.washington edu/public/वर्चुअल-worlds/papers/ whatisवीआर.txt.

एंडरसन आर.एल. 1993. आभासी वातावरण में एक वास्तविक प्रयोग: एक आभासी बल्लेबाजी पिंजरा. उपस्थिति। 2(1):16–33.

क्रूज-नीरा सी. वर्चुअल रियलिटी अवलोकन. SIGGRAPH'93 कोर्स. 1993; 23: 1.1-1.18 हेल्ड आर, डर्लाच एन. टेलीप्रेजेंस. उपस्थिति. 1993; 1(1): 109–113.

चौहान, एस. और अन्य. 2024, 26 जून, प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों से अवधारणः पारंपरिक तरीकों के मुकाबले वर्चुअल रियलिटी-आधारित कथानक वाचन का मूल्यांकन. सहायक वातावरण संबंधी व्यापक तकनीकों पर 17वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के संदर्भ में (पृष्ठ 619–625).

निसिम, वाई. और ई. वीसब्लूथ. 2017. शिक्षक प्रशिक्षण में आत्म-प्रभावकारिता के स्रोत के रूप में वर्चुअल रियलिटी (वर्चुअल रियलिटी). *अंतरराष्ट्रीय शिक्षा अध्ययन*. https://doi.org/10.5539/ies.v10n8p52

फुच्स एच. बिशप. 2013. आभासी वातावरण में अनुसंधान दिशाएँ. एन.एफ.एस. आमंत्रण कार्यशाला, विश्वविद्यालय. उत्तरी केरोलिना. *वैज्ञानिक एवं इंजीनियरिंग अनुसंधान के अंतरराष्ट्रीय जर्नल*. 4(4): 309. यहाँ उपलब्ध: ftp://ftp.cs.unc.edu./pub/technical-reports/92-027।

बैक, डी. 2019. शिक्षा में संवर्धित और आभासी वास्तविकताः गहन अधिगम अनुसंधान. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल कंप्यूटिंग रिसर्च*. 1619–1625. https://doi.org/10.1177/0735633118789782.

रसेल आर. 2023. "वर्चुअल रियलिटी और संवर्धित वास्तविकता: व्यापक अनुभवों के भविष्य को नेविगेट करना". https://medium.com/@russelri411/वर्चुअल-reality-and-augmented-reality-navigating-the-future-of-immersive-experiences-94475ea1ce6b।

शर्मा के. 2023. शिक्षा पर वर्चुअल रियलिटी का प्रभाव. *मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च के यूरोपीय जर्नल*. 10:19-25. https://eajournals.org/ejmer/wp-content/uploads/sites/27/2023/12/Impact-of-वर्चुअल-Reality.pdf

शर्मा, आर.सी. और वाई.पी. शर्मा. 2021. शिक्षा में वर्चुअल रियलिटी अनुभवों को डिजाइन करना. *अधिगम प्रौद्योगिकी पर तकनीकी समिति के बुलेटिन*. 21(1). 19–22. https://doi.org/10.1109/BTCLT.2021.23060212 जेल्टजर डी. स्वायत्तता, सहभागिता, उपस्थिति. उपस्थिति. 1992; 1(1): 127–132.

स्टीयर, जे. 1995. "वर्चुअल रियलिटी को परिभाषित करना: टेलीप्रेजेंस को निर्धारित करने वाले आयाम".; एफ. एल. बायोका (एड.) में, वर्चुअल रियलिटी के युग में संचार. हिल्सडेल, एनजे: लॉरेंस एर्लबैम एसोसिएटस.

सदरलैंड, आई.ई. 1965. "द अल्टीमेट डिस्प्ले". आई.एफ.आई.पी. 65 की कार्यवाही.; — 2: 506–508.

हेल्सेल, एस. 1992. वर्चुअल रियलिटी और शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी. 32(5). 38–42.

छत्तीसगढ़ के आदिवासी अंचलों में बुनियादी साक्षरता
नवाचार तथा नई राहें

सुनील कुमार बागवान*

इस शोधपत्र में छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल अंचलों में स्थित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 1 तथा 2 में मातृभाषा आधारित शिक्षण के प्रयोग तथा प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में प्रारंभिक शिक्षा के दौरान बच्चों की मातृभाषा तथा संस्कृति को शिक्षा में स्थान देने की अनुशंसा की गई है। इस शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के 6 विद्यालयों में 30 से अधिक कक्षा शिक्षण सत्रों का गहन अवलोकन किया गया तथा 12 शिक्षकों एवं 4 शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा 4 शिक्षा समन्वयकों के साक्षात्कार लिए गए। आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि शिक्षक अपनी भाषा का सहजता से उपयोग करते हुए, बच्चों को हिंदी भाषा की ओर ले जाने हेतु एक 'सेतु भाषा' के रूप में मातृभाषा का प्रयोग करते हैं। विभिन्न नवाचार पहलों का विश्लेषण करते हुए यह ज्ञात हुआ कि जब शिक्षकों को स्थानीय भाषा तथा सामग्री आधारित सहयोग मिला, तो वे शिक्षण में अधिक रचनात्मक तथा बच्चों के संदर्भानुकूल बने। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि जब बच्चों की भाषिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को कक्षा शिक्षण में सम्मानपूर्वक सम्मिलित किया जाता है, तो न केवल साक्षरता कौशल विकसित होते हैं, बल्कि बच्चों की सांस्कृतिक पहचान और सीखने की रुचि भी सशक्त होती है। इस शोधपत्र में राज्य व जिला स्तर पर ऐसी शिक्षक-उन्मुख नीति तथा सामग्री विकास की आवश्यकता को दर्शाया गया है, जो मातृभाषा आधारित शिक्षण को शैक्षिक मुख्यधारा में स्थान दे।

सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चे वंचित तबकों से आते हैं। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में इन परिवारों में अधिकांश अभिभावक असाक्षर हैं। इन परिवारों में न लिखित सामग्री होती है और न पढ़ने-लिखने का कोई समृद्ध अनुभव। ये बच्चे जब विद्यालय आते हैं, तो लिखित सामग्री से परिचय करवाने या उससे उनको जुड़ने के लिए कुछ विशेष समय नहीं दिया जाता। आरंभ में शिक्षण सीधे-सीधे अक्षर-ध्वनि संबंध बनाने पर होता है, जिसे ये बच्चे समझने में असहज होते हैं। (प्रेस्ली 2000; स्मिथ 2004; झिंगरन 2012; मेनन एवं अन्य 2017) इन परिस्थितियों से आने वाले बच्चों को विद्यालय में पढ़ना-लिखना सीखने में कई प्रकार की समस्याएँ आती हैं। मुख्य रूप से इसका कारण अपरिचित

**शोधार्थी*, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110 067

भाषा में पढ़ाई करना, लिखित भाषा से जुड़े पूर्व अनुभवों का अभाव तथा घर में गृहकार्य में मदद देने वाले लोगों अथवा समय न होना आदि है। (एस.सी.ई.आर.टी., एल.एल.ऍफ., कोर्स 2022) एक ओर बच्चों को पढ़ने-लिखने के उद्देश्य के बारे में जानकारी नहीं होती तथा विद्यालय की संस्कृति आदिवासी विद्यार्थियों की संस्कृति से नहीं मिलती है। ऐसे में प्रायः ये बच्चे विद्यालय में उपयोग होने वाली मानक भाषा तथा लिखित भाषा की शब्दावली तथा वाक्य संरचना से परिचित नहीं होते। (रा.शै.अ.प्र.प.; 2006, मेनन एवं अन्य 2017)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर छत्तीसगढ़ के द्वारा किए गए 'भाषा सर्वेक्षण (एस.सी.ई.आर.टी., एल.एल.ऍफ., कोर्स 2021) के आँकड़े दर्शाते हैं कि छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्रों में विद्यार्थियों की स्थानीय भाषाएँ, जैसे— गोंडी तथा हल्बी होती है। इसके बावजूद प्राथमिक स्तर की औपचारिक शिक्षा में 'शिक्षण का माध्यम' हिंदी तथा अंग्रेजी आदि भाषाएँ हैं। इन बहुभाषी परिस्थितियों को संबोधित करने के उद्देश्य से 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (अनुच्छेद 4.1.1, पृष्ठ 13) में साक्षरता शिक्षण में स्थानीय भाषा के उपयोग की अनुशंसा की गई है।

तालिका 1— छत्तीसगढ़ राज्य में कक्षा 1 के बच्चों द्वारा बोली जाने वाली 10 प्रमुख भाषाएँ

जिले	कक्षा 1 के बच्चों द्वारा बोली जाने वाली शीर्ष तीन भाषाएँ
बालोद, बलोदा बाजार, बेमेतरा, बिलासपुर, धमतरी, दुर्ग, जांजगीर-चांपा, कोरबा, मुंगेली, राजनांदगाँव	छत्तीसगढ़ी, हिंदी
गौरेला पेंड्रा मरवाही	छत्तीसगढ़ी, हिंदी, बघेली
कवर्धा (कबीरधाम)	छत्तीसगढ़ी, बैगानी, हिंदी
गरियाबंद, महासमुंद, रायगढ़, रायपुर	छत्तीसगढ़ी, ओड़िया, हिंदी
कांकेर	छत्तीसगढ़ी, गोंडी (कांकेर), बंगाली
बलरामपुर	सादरी, सरगुजिहा, हिंदी
कोरिया, सूरजपुर	सरगुजिहा, हिंदी, छत्तीसगढ़ी
सरगुजा	सरगुजिहा, कुड़ुख, हिंदी
बस्तर	हल्बी, भतरी, गोंडी (बस्तर)
कोंडा गाँव	हल्बी, छत्तीसगढ़ी, गोंडी (बस्तर)
बीजापुर	गोंडी (दंतेवाड़ा), दोरली, गोंडी (बस्तर)
सुकमा	गोंडी (दंतेवाड़ा), गोंडी (बस्तर), हल्बी
दंतेवाड़ा	गोंडी (दंतेवाड़ा), हल्बी, हिंदी
नारायणपुर	गोंडी (बस्तर), माड़िया, हल्बी
जशपुर	सादरी, कुड़ुख, छत्तीसगढ़ी

स्रोत— एस.सी.ई.आर.टी., समग्र शिक्षा रायपुर , यूनिसेफ तथा एल.एल.ऍफ. के द्वारा किए गए भाषा सर्वेक्षण–2021 से साभार

मातृभाषा, भाषा तथा औपचारिक विद्यालयी भाषा का अंतर विद्यार्थियों के सीखने में महत्वपूर्ण बाधाएँ उत्पन्न करता है। बच्चों की भाषा तथा संस्कृति को प्राथमिक विद्यालय में स्थान न मिल पाना एक चिंता का विषय रहा है। बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा सहायता (स्केफोल्डिंग) करने हेतु बच्चों की भाषा का प्रयोग एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में पहचाना गया है। (कुमार 2004; एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 यह सुझाते हैं कि बहुभाषिता की स्थिति में बच्चों की भाषा को कक्षाओं में स्थान देकर मातृभाषा आधारित शिक्षा तथा सांस्कृतिक समावेशिता को प्रोत्साहित कर सकते हैं। अतः इस विषय में और अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। इस शोध अध्ययन में प्रारंभिक कक्षाओं में साक्षरता विकास हेतु मातृभाषा भाषाओं के महत्व को जानने का प्रयास किया गया है, साथ ही यह किस प्रकार से आदिवासी विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करती है? यह शोध अध्ययन कक्षा अवलोकन तथा शिक्षक साक्षात्कारों का उपयोग करके यह जाँच करता है कि स्थानीय आदिवासी भाषाएँ तथा साहित्य किस प्रकार औपचारिक विद्यालयी शिक्षा एवं इनके बीच की खाई को पाटने में सहायक सिद्ध होते हैं?

साहित्य समीक्षा

पूर्व शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि मातृभाषा आधारित शिक्षा को व्यापक समर्थन प्राप्त है। अग्निहोत्री एवं अन्य (2002), झिंगरन (2005, 2020, 2024) का तर्क है कि बच्चे अपनी पहली भाषा में सबसे अच्छा सीखते हैं। यह भाषा अन्य भाषाओं को सीखने का भी आधार है। मिश्रा (2024) के शोध अध्ययन "बहुभाषी शिक्षा तथा शैक्षिक प्रणाली में स्थानीय भाषाओं को शामिल करने के महत्व" में न केवल संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि बेहतर साक्षरता परिणामों को भी सुनिश्चित करता है। भाषा सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्थानीय भाषाओं का प्रयोग बच्चों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखने, कहानियों, गीतों तथा लोक परंपराओं के माध्यम से सांस्कृतिक ज्ञान के हस्तांतरण में सहायक होता है। वार्नर (1963) तथा एकलव्य (2008) द्वारा संचालित प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका) की शैक्षिक परियोजनाओं के अनुभव दर्शाते हैं कि भाषा तथा संस्कृति अविभाज्य हैं, विशेषकर स्थानीय तथा हाशिए के समुदायों के लिए। (अग्निहोत्री एवं अन्य, 2002)

प्रेस्ली (2000, 2005), स्मिथ (2004), जयराम (2008), अग्निहोत्री एवं अन्य (2002), मेनन एवं सहयोगी (2017) तथा झिंगरन (2005, 2020, 2024) के शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि बच्चों के लिए समझते हुए पढ़ना सीखने की प्रक्रिया सामाजिक संदर्भों में निहित होती है तथा इसके लिए मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षण उपागम को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। ये बच्चों को समझ कर पढ़ने के लिए सामाजिक संदर्भों तथा मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षण उपागम (multilingual approach) को महत्व देते हैं। चूँकि सरकारी विद्यालयों में अधिकांश बच्चे ऐसे घरों से आते हैं, जहाँ उन्हें मातृभाषा में पठन सामग्री उपलब्ध नहीं

होती है। अतः उभरते हुए साक्षरता कौशलों को विकसित करने, पढ़ना-लिखना सीखने में रुचि बढ़ाने के लिए विद्यालय में प्रथम चरण से ही बच्चों की भाषा तथा संस्कृति को कक्षा में सम्मिलित करने से बहुत लाभ होता है। प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण केवल शब्दों तथा अक्षरों को पहचानना न होकर, समझ के साथ पढ़ने एवं पढ़ी गई विषय-वस्तु के बारे में चिंतन करना भी होना चाहिए।

अग्निहोत्री (2002), झिंगरन (2005, 2020, 2024) तथा रा.शै.अ.प्र.प. (2006, 2022) के अनुसार प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों द्वारा आदिवासी बच्चों की भाषाओं को कक्षा में शामिल करके एक नई भाषा सीखने के लिए गतिविधियों के माध्यम से समझ के साथ पढ़ने की कला विकसित की जा सकती है, जैसे— बच्चों की भाषा में संवाद, स्थानीय भाषाओं में पठन सामग्री का उपयोग शामिल करना, बोलकर पढ़ना, बच्चों के साथ चर्चाएँ करना, आपस में चर्चा करना तथा अर्थ समझने हेतु गतिविधियाँ करना आदि।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी. एफ.-एफ.एस. 2022 (खंड 4.1.1, पृष्ठ 225–227) जैसै नीतिगत अभिलेख सुझाते हैं कि शिक्षकों के व्यावसायिक विकास कार्यक्रम का एक प्रमुख लक्ष्य बच्चों के अभिभावकों तथा समुदाय के साथ काम की आवश्यकता तथा तरीकों को समझना भी है। अभिभावक तथा समुदाय के अन्य लोगों की सहायता से लोककथाओं, गीतों, पहेलियों एवं कविताओं का संग्रह करके उन्हें साक्षरता के अनुकूल पाठों में रूपांतरित कर, उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के अनुरूप ढालकर, मातृभाषा तथा विद्यालय की भाषा के बीच के अंतर को प्रभावी ढंग से कम किया जा सकता है। शिक्षक का यह प्रयास आदिवासी समुदायों की भाषा तथा संस्कृति को संरक्षित करने की एक पहल भी होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी. एफ.-एफ.एस. 2022 में बुनियादी स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की आवश्यकता को पहचानते हुए विद्यालय स्तर पर लागू करने के लिए ठोस प्रावधान किए गए हैं। जैसे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, "जहाँ तक संभव हो, कम-से-कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि यह ग्रेड 8 तथा उससे आगे भी हो, शिक्षा का माध्यम घर की भाषा या मातृभाषा या स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा होगी... शिक्षकों को उन विद्यार्थियों के साथ जिनके घर की भाषा या मातृभाषा, शिक्षा के माध्यम से भिन्न है, द्विभाषी शिक्षण-अधिगम सामग्री सहित द्विभाषी उपागम का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा... फाउंडेशनल स्टेज की शुरुआत तथा इसके बाद से ही बच्चों को विभिन्न भाषाओं में (लेकिन मातृभाषा पर विशेष बल देने के साथ) एक्सपोजर दिए जाएँगे।" (4.11 पृष्ठ 19–20)

इस प्रकार बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 (पृष्ठ 76–78) सभी बच्चों के लिए शिक्षा को अधिक सार्थक तथा प्रासंगिक बनाने के लिए पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक तत्वों तथा भाषाओं को एकीकृत करने की बात करती है। इसके अनुसार "पढ़ना तथा लिखना पहले एक परिचित भाषा में सिखाया जाना चाहिए, ऐसी भाषा जिसे बच्चा समझता और ठीक से बोलता हो। शुरुआती साक्षरता कौशल, एक मजबूत

मौखिक भाषा कौशल के आधार पर बेहतर तथा जल्दी विकसित होते हैं। भारत सहित पूरी दुनिया में इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि जो बच्चे मातृभाषा, घर की भाषा या परिचित भाषा से सीखते हैं, वे विज्ञान तथा गणित जैसे विषयों में भी अपने उन सहपाठियों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जिन्हें अपरिचित भाषा में पढ़ाया जाता है। (पृष्ठ 74) बच्चे के घर की भाषा का सम्मान, जहाँ तक संभव हो घर की भाषा में बातचीत तथा सीखने के लिए बच्चे को प्रोत्साहित करना, बच्चे की घर की भाषा में शिक्षण, एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 का एक और केंद्रीय पहलू है। (पृष्ठ 75) शुरुआती वर्षों में द्विभाषिक या बहुभाषिक भाषा दृष्टिकोण, जिसमें बच्चे के घर की भाषा मुख्य हो, बच्चे को भाषाओं के बीच सफल आवाजाही (do efficient code-switching across languages) में सक्षम बनाती है। (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृष्ठ 75)"

यह शोध अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 में निहित मातृभाषा आधारित शिक्षण की इन रूपरेखाओं से संबंधित है।

शोध अभिकल्प

यह शोध अध्ययन बहुभाषी शैक्षिक संदर्भों की गहराई से समझ विकसित करने के लिए गुणात्मक शोध दृष्टिकोण पर आधारित है। इसमें छत्तीसगढ़ के 6 आदिवासी बहुल प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 तथा 2 के कुल 30 कक्षा शिक्षण सत्रों का अवलोकन किया गया। इसके अतिरिक्त, 12 शिक्षकों, 4 शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा 4 शैक्षिक समन्वयकों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार भी लिए गए। शोध प्रक्रियाओं का संक्षिप्त विवरण क्रमवार रूप से प्रस्तुत किया गया है।

1. कक्षा अवलोकन

शोधार्थी द्वारा शैक्षणिक सत्र 2023–24 के दौरान चयनित 6 आदिवासी बहुल विद्यालयों में कक्षा 1 तथा 2 के कुल 30 कक्षा सत्रों का अवलोकन किया गया। साथ ही, इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया कि आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के इन चयनित विद्यालयों में विद्यार्थियों की मातृभाषा को साक्षरता निर्देश में शिक्षक द्वारा किस प्रकार एकीकृत किया गया। कक्षा अवलोकन के लिए मुख्य बिंदु इस प्रकार थे—

- साक्षरता शिक्षण सामग्री अर्थात पठन सामग्री के पाठों में जनजातीय विद्यार्थियों की मातृभाषा का उपयोग।
- साक्षरता कौशल सिखाने के लिए कविताओं, लोककथाओं तथा कहानियों का किस प्रकार उपयोग किया गया।
- इन गतिविधियों के दौरान बच्चों की सहभागिता एवं संलग्नता।
- अभिव्यक्ति के कौशल को विकसित करने की एक विधि के रूप में कहानी सुनाने तथा मौखिक चर्चाओं का उपयोग।

इन गतिविधियों के दौरान प्रयुक्त विभिन्न शिक्षण विधियों तथा विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को रिकॉर्ड करने के लिए शोधार्थी द्वारा फील्ड नोट्स सावधानीपूर्वक तैयार किए गए। विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त की गई आदिवासी अपरिचित भाषा की प्रतिक्रियाओं को समझने के लिए शिक्षकों तथा नींव परियोजना के कर्मचारियों से सहायता ली गई।

2. शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा अकादमिक समन्वयकों के साक्षात्कार

चयनित विद्यालयों के 12 शिक्षकों, 4 शिक्षक-प्रशिक्षकों और 4 शिक्षा समन्वयकों के

साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए। शिक्षकों के साथ किए गए साक्षात्कार के दौरान पूछे गए प्रश्नों का उद्देश्य था—

- कक्षा में विद्यार्थियों की मातृभाषा तथा विशेषकर जनजातीय भाषाओं का उपयोग करने की प्रेरणा।
- साक्षरता पाठों में जनजातीय कहानियों, कविताओं तथा सांस्कृतिक सामग्री को शामिल करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों को जानना।
- जनजातीय भाषा शिक्षण का विद्यार्थियों के सीखने तथा सांस्कृतिक पहचान पर प्रभाव को जानना।
- साक्षरता शिक्षण में जनजातीय भाषाओं के उपयोग के संबंध में शिक्षकों के अनुभव तथा अंतर्दृष्टि को जानने के लिए साक्षात्कारों का विश्लेषण किया गया।

परिणाम

- **साक्षरता सेतु के रूप में भाषा**

इस शोध अध्ययन के दौरान आदिवासी क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों के साथ लिए गए साक्षात्कार दर्शाते हैं कि चयनित विद्यालयों में साक्षरता निर्देश में आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र की भाषाओं के एकीकरण से विद्यार्थियों की सहभागिता तथा मौखिक भाषा कौशल में उल्लेखनीय सुधार हुआ। शिक्षक आदिवासी कविताओं, लोककथाओं तथा गीतों का उपयोग पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए करते हैं, तो विद्यार्थी सीखने में उत्साह दर्शाते हैं और वे पठन सामग्री को बेहतर ढंग से समझ पाते थे। शिक्षकों ने ज्ञात किया कि जब विद्यार्थियों को उनकी अपनी भाषा की कहानियों एवं कविताओं पर आधारित शिक्षण में भाग लेने और जोर से पढ़ने या अपनी कहानियाँ लिखने जैसे कार्य दिए गए तो विद्यार्थी इन कार्यों को करने में अधिक इच्छुक होते थे। इस सीखने-सिखाने के उत्साहित वातावरण में विद्यार्थी हिंदी भाषा सीखने में भी तत्परता दिखाते थे।

डॉ. एम. सुधीस सहायक संचालक (समग्र शिक्षा, रायपुर छत्तीसगढ़) बताते हैं कि “राज्य सरकार तथा लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली मिलकर सत्र 2022–2023 से बस्तर जिले में नींव बहुभाषी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में भाषा शिक्षण के लिए सुझाए गए चार ब्लॉक पद्धति का प्रयोग किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मंशा के अनुरूप बच्चों की भाषा हल्बी, भतरी तथा गोंडी का उपयोग कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में लगातार किया जा रहा है। संस्था द्वारा स्थानीय शिक्षकों तथा समुदाय की सहायता से बच्चों को घर की भाषा में उनके स्तर की शिक्षण सामग्री का निर्माण किया गया है।”

इस परियोजना की अकादमिक समन्वयक मधुलिका झा बताती हैं— “लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एल.एल.एफ.), नई दिल्ली ने समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.), रायपुर के सहयोग से संचालित ‘नींव’— बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बस्तर जिले में कक्षा 1 तथा 2 के बच्चों के सीखने के बुनियादी कौशलों को बेहतर बनाना है, जिसमें बच्चों की मातृभाषा को उनकी औपचारिक शिक्षा में शामिल किया गया है। इस पहल के माध्यम से राज्य में बच्चों के लिए

द्विभाषी पाठ्यपुस्तकें तैयार की जा रही हैं, जो हिंदी तथा राज्य की मातृभाषाओं को एक साथ शामिल करती हैं।"

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एस.सी.ई.आर.टी.) के बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) प्रभारी सुनील मिश्रा के अनुसार— "हमने 'नींव' बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से बस्तर जिले में बच्चों के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करने का प्रयास किया है, जो उनकी घर की भाषा तथा हिंदी को जोड़कर उन्हें सीखने के अधिक अवसर प्रदान करे। इस कार्यक्रम में बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाई का अवसर मिलता है। यह उनके लिए एक सहज तथा प्रभावी तरीका साबित हो रहा है। सामग्री निर्माण के दौरान हमें यह अनुभव हुआ कि बच्चों की समझ तथा साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए जरूरी है कि हम उनकी स्थानीय संस्कृति तथा संदर्भ को शामिल करें।"

वे आगे बताते हैं कि "हमने 'नींव' कार्यक्रम के तहत बस्तर जिले में कक्षा 1 तथा 2 के बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार की, जिसमें हिंदी तथा हल्बी जैसी स्थानीय भाषाओं को शामिल किया गया। इस प्रक्रिया में भाषा विशेषज्ञों तथा स्थानीय समुदाय के सहयोग से सामग्री का निर्माण किया गया, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि पाठ्यसामग्री बच्चों की समझ के अनुरूप हो। हमने कार्यशाला में यह देखा कि बच्चों के लिए उपयोगी तथा दिलचस्प सामग्री तैयार करने के लिए शिक्षक एवं समुदाय के सदस्य मिलकर काम कर रहे हैं। कार्यशाला में सामग्रियों के विकास में स्थानीय बाल साहित्य, कविता तथा

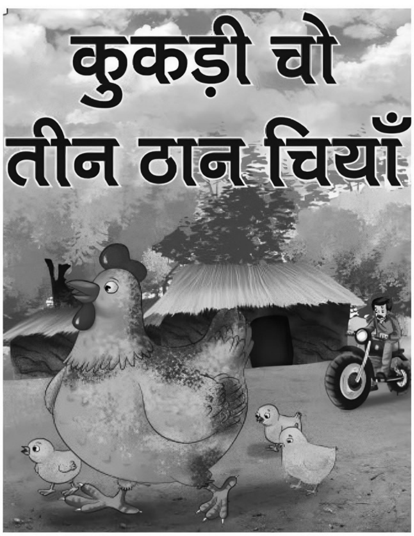

कुकड़ी चो तीन ठान चियाँ

गोटोक कुकड़ी रये। हूनचो तीन ठान चियाँ रहोत। कुकड़ी बलली- "कोको रे कोयं" तीनों चियाँ बलला- "चीव-चीव-चीव" कुकड़ी भीती ने चेगली। तीनों चियाँ बले भित्ति ने चेगुक मुरियाला। मांतर धड़ाम नाय ले गिरला। तीनों चियाँ फेरले भित्ति ने चेगुक मुरियाला। तीनों चियाँ भित्ति ने चेगला। फेर भित्ति ले सड़क लगे एउन सड़क के नहाकुक मुरियाला। नानी चियाँ पाठकुती होलो। उदली दाय गोटोक फटफटी ईली। नानी चियाँ चिचयाली। कुकड़ी बलली- "दखते जा दादा।" तीनों चियाँ बले बलला- "दखते जा दादा।" कुकड़ी पुरे गेली। तीनों चियाँ बले पुरे गेला।

मुर्गी के तीन चूज़े

एक मुर्गी थी। उसके तीन चूजे थे। मुर्गी बोली- "कूकड़ू-कू SSSS" तीनों चूजे बोले- "चीं-चीं-चीं।" मुर्गी दीवार पर चढ़ी। तीनों चूजे भी दीवार पर चढ़ने लगे। लेकिन धम्म से गिर गए। तीनों चूजे फिर से चढ़ने लगे। तीनों चूजे भी दीवार पर चढ़ गए। फिर दीवार से सड़क पर आकर सड़क पार करने लगे। छोटा चूजा पीछे रह गया। तभी एक मोटर साइकिल आई। छोटा चूजा चिल्लाया। मुर्गी बोली- "देखकर चलो भाई।" तीनों चूजे भी बोले- "देखकर चलो भाई।" मुर्गी आगे बढ़ गई। तीनों चूजे भी आगे बढ़ गए।

चित्र 1— हल्बी भाषा में तैयार 'बिग-बुक' का कवर पृष्ठ और हल्बी तथा हिंदी भाषा में कहानी का सार

कहानियों को शामिल किया गया, जो बच्चों को संदर्भपूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं।"

इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के इन आदिवासी बहुल क्षेत्रों में विद्यार्थियों के साक्षरता विकास हेतु उनकी घर की भाषा या मातृभाषा को एक सेतु के रूप में जोड़ने वाली यह शैक्षिक प्रक्रियाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 में निहित प्रावधानों के अनुरूप हैं। छत्तीसगढ़ में आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में बहुभाषी शिक्षा हेतु किए जा रहे ये प्रयास बच्चों के लिए उपयुक्त एवं संदर्भ आधारित तथा प्रभावी शिक्षा प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

सांस्कृतिक विरासत तथा पहचान

आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में विद्यार्थियों की घर की भाषाओं में कहानियों तथा कविताओं के उपयोग ने भी विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शोधार्थी द्वारा किए गए साक्षात्कारों से स्पष्ट हुआ है कि सांस्कृतिक जुड़ाव आधारित सामग्री से सीखते समय विद्यार्थियों ने अपनी विरासत पर गर्व व्यक्त किया। साथ ही, शिक्षकों ने पुष्टि की कि इससे समुदाय तथा उसकी परंपराओं के साथ उनके संबंध मजबूत हुए। कई शिक्षकों ने साझा भी किया कि अपनी भाषा तथा संस्कृति के बारे में सीखने से विद्यार्थियों की पहचान को किस तरह मान्यता मिली। इन गतिविधियों ने जनजाति की मौखिक परंपराओं को संरक्षित करने में भी मदद की, जिससे सांस्कृतिक ज्ञान का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हुआ।

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली के बहुभाषी शिक्षा सलाहकार महेंद्र मिश्रा के नेतृत्व में बस्तर तथा दुर्ग जिले में 'कहानी-कथन उत्सव' का आयोजन किया गया। साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि "कहानी सुनाना तथा सुनना, शिक्षा के सबसे पुराने और प्रभावी तरीकों में से एक है। हम देख सकते हैं कि दुनिया की हर संस्कृति ने अपनी परंपराओं, विश्वासों तथा इतिहास को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए कहानियों का सहारा लिया है। ये सिर्फ कल्पनाशीलता को ही नहीं बढ़ाती, वरन् श्रोता तथा कहानीकार के बीच गहरे मानसिक एवं भावनात्मक जुड़ाव भी स्थापित करती हैं। 'कहानी-कथन' में बच्चे संवाद की कला सीखते हैं। इससे उनका संज्ञानात्मक कौशल बेहतर बनता है। कहानी-कथन उत्सव का आयोजन बस्तर बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के तहत किया गया था, यह एक महत्वपूर्ण कदम था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों में सुनने एवं बोलने के कौशलों को विकसित करना था, ताकि यह पढ़ना-लिखना सीखने का आधार बन सके। इसका एक उद्देश्य स्थानीय समुदाय के ज्ञान को विद्यालयों से जोड़ना भी था। जब बच्चों को अपनी स्थानीय कहानियाँ सुनने-सुनाने का अवसर मिलता है, तो वे अपने समुदाय की संस्कृति तथा परंपराओं को समझते हैं। इससे वे अपने परिवेश से जुड़ते हैं।"

बस्तर जिले के शैक्षिक समन्वयक अभिजीत तायडे ने कहा कि "इस उत्सव में कक्षा 1 तथा 2 के बच्चों को चित्र बनाने की गतिविधि दी गई। कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों ने चित्रों के साथ कहानियाँ लिखीं। यह कार्य स्थानीय भाषा में किया गया, ताकि बच्चों को अपनी भाषा तथा संस्कृति से जुड़ने का अवसर मिल सके। कहानियाँ सुनने के बाद बच्चों ने अपनी कहानियाँ लिखीं या चित्र बनाए तथा उन्हें शिक्षक के पास जमा किया। इस प्रक्रिया में बच्चों को

अपने विचारों को व्यक्त करने, अपनी कल्पनाओं को आकार देने तथा समुदाय के साथ अपने संबंध को सशक्त बनाने का अवसर मिला।"

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 भी यह सुझाती है कि विद्यालय स्तर पर इस प्रकार के आयोजन शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जैसे यह निहित है कि विद्यालयों को बाहरी ज्ञान से जोड़ने की आवश्यकता है और कहानी-कथन इसे साकार करता है। जब हम समुदायों के संसाधनों का उपयोग करते हैं, तो यह न केवल बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करता है, बल्कि बच्चे शिक्षा के प्रति अधिक रुचि दिखाते हैं।

दुर्ग जिले की एक शिक्षिका मंजू साहू बताती हैं कि "जब हम बच्चों को समुदाय के लोगों से जुड़ी कहानियाँ सुनाते हैं, तो यह न केवल उनके ज्ञान को बढ़ाता है, बल्कि वे अपने आस-पास की दुनिया को समझने में भी सक्षम होते हैं। इस पहल के दौरान, स्थानीय कलाकारों तथा बुजुर्गों ने बच्चों को पुरानी लोककथाएँ सुनाईं जिससे उनमें अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान तथा समझ विकसित हुई। यह पहल बच्चों के लिए एक अद्भुत अनुभव थी, क्योंकि विद्यालय की पढ़ाई उनको अपने समाज तथा संस्कृति से भी जोड़ रही है।"

बस्तर जिले के एक शिक्षक संदीप माझी बताते हैं कि "कहानी तिहार के दौरान, बच्चों ने न केवल कहानियाँ सुनीं, बल्कि उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त भी किया। यह न केवल उनकी साहित्यिक क्षमता को बढ़ावा देता है, उन्हें समाज को समझने का भी अवसर मिलता है। हम शिक्षक, कहानी सुनाने के इस आयोजन के माध्यम से बच्चों को अपनी कक्षा से बाहर की दुनिया से जोड़ते हैं तथा उनके भीतर एक नई सोच पैदा करते हैं। इस पहल से बच्चों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक समझ में वृद्धि हुई है। उन्हें यह समझने का अवसर प्राप्त हुआ कि कहानी सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि शिक्षा का एक शक्तिशाली साधन है।"

चित्र 2— कहानी कथन उत्सव में प्रतिभाग करते विद्यार्थी

बहुभाषी शिक्षा विशेषज्ञ संजय गुलाटी ने बस्तर जिले में आयोजित 'शाला संग्रहालय' पर साक्षात्कार में बताया, 'शाला संग्रहालय' की पहल बस्तर क्षेत्र के 200 विद्यालयों में बहुभाषी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत की गई थी। इसने शिक्षा के दृष्टिकोण का विस्तार किया है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य विद्यालय तथा समुदाय के बीच मजबूत संबंध स्थापित करना तथा बच्चों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर और पारंपरिक ज्ञान से जोड़ना है। विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं में यह पहल बच्चों को उनके स्थानीय संदर्भ, संस्कृति एवं भाषा के महत्व को समझने में

मदद करती है। इसे जनवरी 2023 से अब तक 10 विद्यालयों में सफलतापूर्वक विस्तारित किया गया है। इसके लिए शिक्षकों को तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें उन्हें समुदाय के ज्ञान को शैक्षिक संसाधन के रूप में उपयोग करने के तरीके बताए गए। साथ ही, शाला संग्रहालय की प्रक्रिया, उद्देश्य तथा इसके शैक्षिक पहलुओं के बारे में जानकारी दी गई। यह प्रशिक्षण शिक्षकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसके माध्यम से उन्होंने यह समझा कि 'शाला संग्रहालय' न केवल एक शिक्षा संसाधन है, बल्कि यह उन्हें अपनी संस्कृति, धरोहर तथा लोक ज्ञान से भी जोड़ता है। इस प्रकार, शाला संग्रहालय ने न केवल बच्चों की शिक्षा में सुधार किया, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान तथा धरोहर के प्रति सम्मान की भावना को भी बढ़ाया।"

शिक्षकों एवं शिक्षा समन्वयकों के साक्षात्कारों और कक्षा अवलोकन से यह स्पष्ट हुआ कि जब शिक्षकों ने समुदाय के लोगों से कृषि उपकरण, पारंपरिक आभूषण, लोक साहित्य, पुराने संगीत यंत्र तथा विभिन्न पारंपरिक खेल उपकरणों का संग्रह किया, तो बच्चों को इनके बारे में और अधिक जानकारी मिली। वे अपनी संस्कृति से जुड़ने लगे। बच्चों ने कक्षा में इन सामग्रियों की चित्रकारी की तथा इनके बारे में लिखा। इससे उनकी लेखन, चित्रकला तथा विचार करने की क्षमता में वृद्धि हुई।

बस्तर जिले के अकादमिक समन्वयक नीरज राणा ने बताया कि "शाला संग्रहालय का आयोजन बच्चों के लिए न केवल एक शिक्षा का अवसर है, बल्कि यह उन्हें अपनी सांस्कृतिक धरोहर से भी जोड़ता है। जब बच्चे पुराने कृषि उपकरण, पारंपरिक गहनों तथा पुराने साहित्य को देखते हैं, तो वे न केवल इतिहास को समझते हैं, बल्कि उन्हें यह भी अनुभव होता है कि यह उनकी अपनी संस्कृति का हिस्सा है। 'शाला संग्रहालय' में बच्चों की भागीदारी ने उनके भीतर शोध करने की प्रवृत्ति विकसित की है तथा वे इस सामग्री के माध्यम से अपनी भाषा, लेखन तथा चित्रकला के कौशल को भी सुधार रहे हैं। जब बच्चे स्थानीय भाषा, हिंदी और अंग्रेजी में इन सामग्रियों के बारे में लिखते हैं, तो यह उनकी बहुभाषिक क्षमता को भी सशक्त करता है।"

चित्र 3 — बस्तर जिले के डेंगगुडा स्थित शासकीय प्राथमिक विद्यालय में एक विद्यालय के संग्रहालय का दृश्य

बस्तर के एक शिक्षक-प्रशिक्षक सनत कुमार बताते हैं कि 'शाला संग्रहालय' ने बच्चों को यह अवसर दिया कि वे अपने समुदाय के ज्ञान को समझें एवं उसे शिक्षण में लागू करें। बच्चों ने पारंपरिक खेल, पुरानी मुद्राएँ तथा शास्त्रीय संगीत वाद्य जैसी

सामग्री समुदाय से एकत्रित की तथा कक्षा में लाकर उनके बारे में चर्चा की। बच्चों ने इनके चित्र बनाकर इनके बारे में लिखा। इससे सबका ध्यान सामुदायिक ज्ञान पर गया। वे यह समझ पाए कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह हमारे आस-पास की दुनिया से जुड़ी होती है।"

बस्तर की शिक्षिका अर्शिया कुरैशी ने बताया कि "शाला संग्रहालय ने बच्चों को एक दृष्टिकोण दिया है, जिससे वे बाहरी दुनिया के साथ अपनी संस्कृति, धरोहर तथा इतिहास के साथ भी जुड़ते हैं। बच्चों ने जब पुरानी कलाकृतियों तथा शिल्प सामग्री को देखा, तो खुद के बारे में उनकी समझ बढ़ी। यह प्रक्रिया न केवल उनके भाषायी कौशल को बढ़ावा देती है, बल्कि उनकी सृजनात्मकता और सोचने की क्षमता को भी सशक्त बनाती है। 'शाला संग्रहालय' की पहल बच्चों के लिए एक अनमोल अनुभव साबित हो रही है। यह उन्हें अपने घर, गाँव एवं समुदाय से जोड़ती है। साथ ही, सीखने के लिए प्रेरित करती है।"

छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में 'कहानी कथन उत्सव' तथा 'शाला संग्रहालय' जैसी पहल आदिवासी सांस्कृतिक विरासत तथा पहचान को संरक्षित करने की दिशा में महत्वपूर्ण व रचनात्मक कदम है, जो कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में निहित प्रावधानों की ओर अग्रसर होने की एक ठोस पहल है।

मातृभाषा को सम्मान देने पर आधारित कक्षा शिक्षण रणनीतियाँ तथा विद्यार्थी प्रेरणा

इस शोध अध्ययन में कक्षा अवलोकनों तथा शिक्षक साक्षात्कारों से यह स्पष्ट हुआ कि आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में विद्यार्थियों की भाषाओं का सक्रिय उपयोग करने वाले शिक्षक, विद्यार्थियों में सीखने की स्व-प्रेरणा तथा कक्षा में उनकी सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। बच्चे, विशेष रूप से वे जो हिंदी माध्यम शिक्षण आधारित शैक्षिक क्रियाकलापों में अलग-थलग महसूस करते थे, शिक्षण सामग्री को उनकी भाषा तथा संस्कृति से जोड़ने पर विद्यालय क्रियाकलापों में भागीदारी के लिए उत्साहित दिखाई दिए। आदिवासी क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषाओं में कविताओं, कहानियों, मौखिक चर्चाओं आदि के उपयोग ने विद्यार्थियों को न केवल अपने साक्षरता कौशल में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया, बल्कि आदिवासी मूल्यों तथा मान्यताओं के बारे में उनकी समझ को भी गहरा किया। शिक्षक अक्सर साक्षरता कौशल को बढ़ाने के लिए समूह चर्चा और कहानी सुनाने के सत्रों का उपयोग करते थे, जिससे शिक्षण वातावरण को सकारात्मक बनाने में योगदान मिला तथा लिपि चिह्नों को सार्थक संदर्भों में सिखा पाना सरल हुआ है। (जयराम 2008; मेनन एवं अन्य, 2017, मिश्रा 2024)

स्थानीय आदिवासी भाषाओं का सक्रिय रूप से उपयोग करने वाले शिक्षकों ने बताया कि छत्तीसगढ़ राज्य में शिक्षकों द्वारा द्विभाषी शिक्षण निर्देशों के प्रयोग से हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक के पाठ विद्यार्थियों के अनुभवों से जुड़ रहे हैं।

दुर्ग जिले में कक्षा अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि इस प्रकार से शिक्षण करने पर सीखने-सिखाने के क्रियाकलापों में विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ रही है। उदाहरण के लिए दुर्ग जिले में विद्यालय 2 की कक्षा 2 के अवलोकन के दौरान पाया कि शिक्षिका को आज उनकी शिक्षण योजना के अनुसार "पाठ 10

बहुत हुआ" पर शिक्षण कार्य कराना था, उन्होंने पाठ की विषय-वस्तु से विद्यार्थियों को जोड़ने के उद्देश्य से आरंभ में बच्चों से छत्तीसगढ़ी भाषा में बरसात के मौसम से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे, जैसे— बरसात कहने पर मन में आने वाले शब्द कौन-कौन से हैं? बरसात में कहाँ खेलते हैं? बरसात में कौन-कौन से खेल खेलते हैं?

कक्षा-अवलोकन में देखा गया कि विद्यार्थियों ने इसके उत्तर में 'पानी, छाता, भीगना, फोटू का साग, गोबर का न सूखना, तलाई में पानी का ज्यादा होना, नहर में पानी बहते रहना आदि' उत्तर दिए। शिक्षिका ने इनको बोर्ड पर लिखा।

शिक्षिका (छत्तीसगढ़ी भाषा में)— बरसात होती है, तो क्या आप खुले मैदान में खेलते हैं?

कक्षा के सभी विद्यार्थी— ज्यादातर विद्यार्थियों ने तुरंत ही कहा कि बारिश में वे खुले मैदान में नहीं खेलते। कुछ विद्यार्थियों ने उत्साहित होकर कहा कि "कपड़े गीले हो जाएँगे, भीगने से बुखार आ जाएगा" आदि उत्तर छत्तीसगढ़ी तथा हिंदी भाषा में दिए। शिक्षिका ने बच्चों के उत्तरों को बोर्ड पर लिखा।

इस कक्षा अवलोकन में आगे देखने को मिला कि शिक्षिका ने बच्चों के साथ "पाठ 10 बहुत हुआ" कविता को हाव-भाव के साथ गाया। इसके अगले दिन शिक्षिका ने पाठ को पुनः हाव-भाव के साथ पढ़कर सुनाया तथा हिंदी व छत्तीसगढ़ी में मौखिक चर्चा की। इन सभी शैक्षिक प्रक्रियाओं में विद्यार्थियों का जुड़ाव तथा सक्रिय भागीदारी रही। इस शैक्षिक प्रक्रिया के बाद शिक्षिका ने ज्यादातर निर्देश हिंदी में दिए। हिंदी में शिक्षण निर्देश देते हुए बच्चों को तीन समूहों में बाँटकर पुनः अभ्यास (बारिश शब्द सुनने पर उन्हें क्या-क्या दिखाई देता है? बारिश के समय कहाँ खेलते हैं तथा कौन-कौन से खेल खेलते हैं? आदि) करने को दिए गए। कक्षा में तीन समूह में बैठे विद्यार्थियों ने इस विषय में अपने-अपने समूहों में छत्तीसगढ़ी में बातचीत की तथा उसे हिंदी और छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रयोग करते हुए इस प्रकार लिखकर दिखाया—

समूह 1 के बच्चों की बातचीत तथा उनके लेखन का नमूना—

- "बारिश कहे माँ मोर हरे हरे खेत दिखथे" → सभी बच्चे लिखते हैं— "हरे खेत"
- "बारिश कहे माँ मोर चिखला दिखथे" → सभी बच्चे लिखते हैं— "चिखला"
- "बारिश कहे माँ मोर पानी चुहित दिखथे" → सभी बच्चे लिखते हैं— "चुहित"

समूह 2 के बच्चों की बातचीत तथा उनके लेखन का नमूना—

- "बारिश होते तो विद्यालय मा पाचीटा खेलते रथे" → सभी बच्चे लिखते हैं— "विद्यालय, पाचीटा"
- "बारिश होते तो खेत मा माटी के खिलौने बनाते रथे" → सभी बच्चे लिखते हैं— "खेत, माटी के खिलौने"
- "बारिश होते तो तरिया मा मछरी पकड़ते रथे" → कुछ बच्चे लिखते हैं— मछरी पकड़ते (इस पर बच्चों में असहमति थी, लेकिन शिक्षिका ने हस्तक्षेप नहीं किया।)

उपरोक्त कक्षा-अवलोकन के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिक्षिका ने छत्तीसगढ़ी भाषा में वर्षा ऋतु से संबंधित चर्चा करके विद्यार्थियों को "पाठ 10 बहुत हुआ" शीर्षक वाले हिंदी भाषा के

पाठ से प्रभावी ढंग से जोड़ा। बारिश के बारे में प्रश्न पूछकर शिक्षिका ने विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को सक्रिय किया तथा आगामी पाठ सामग्री से संबंध स्थापित किया। शिक्षिका द्वारा जब चर्चा के मुख्य बिंदुओं को बोर्ड पर लिखा गया, तो वे हिंदी पाठ से जुड़ने व उसे समझने में सक्षम हुए। पाठ के महत्वपूर्ण शब्दों के अर्थ विद्यार्थियों को स्पष्ट हुए। यह तरीका मातृभाषा के उपयोग से सीखने में सहायता के ठोस उपयोग को दर्शाता है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को पाठ की शब्दावली के अर्थ उनके अनुभवों पर समझने की सहूलियत देता है। इसके बाद शिक्षक ने कविता को भावपूर्ण ढंग से गाया तथा अगले दिन इसे दोहराया, दोहराव के माध्यम से सीखा एवं मौखिक चर्चाओं में हिंदी और छत्तीसगढ़ी दोनों को एकीकृत किया। यह द्विभाषी दृष्टिकोण विद्यार्थियों की समझ तथा भाषा विकास का समर्थन करता है। (मिश्रा, 2024)

यहाँ शिक्षिका कक्षा 2 के स्तर पर हिंदी भाषा के मानकीकरण के कठोर पालन के बजाय कक्षा में आपसी संवाद तथा विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति को प्राथमिकता देती हैं, जो विद्यार्थियों की सहभागिता तथा भागीदारी को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। विद्यार्थियों के सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भों को पाठ में एकीकृत करके, शिक्षिका सफलतापूर्वक एक सार्थक शिक्षण वातावरण का निर्माण करती है, जो दोनों भाषाओं में साक्षरता कौशल को बढ़ाता है। कुल मिलाकर, यह अवलोकन कक्षा शिक्षण को विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ने, उनकी मातृभाषा का उपयोग करने तथा साक्षरता सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करने के लिए सहयोगात्मक चर्चाओं को बढ़ावा देने के महत्व को दर्शाता है।

उपरोक्त अवलोकन से ज्ञात हुआ कि कक्षा के बच्चे तथा शिक्षिका दोनों अर्थपूर्ण वातावरण में छत्तीसगढ़ी एवं हिंदी भाषा में चर्चा करने लगे हैं। यह उनकी मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग करने के सिद्धांत के अनुरूप है, जो हिंदी भाषा सीखने के लिए एक समावेशी तथा सहायक शिक्षण वातावरण बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ी में चर्चाओं तथा निर्देशों की सुविधा देकर, शिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि विद्यार्थी कक्षा की गतिविधियों को पूरी तरह से समझें तथा उनमें भाग ले सकें। अपनेपन तथा सांस्कृतिक पुष्टि की भावना को बढ़ावा मिले। कक्षा की गतिविधियाँ, जैसे छत्तीसगढ़ी तथा हिंदी में कविताएँ सुनाना, विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि के लिए सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हैं। इस प्रकार का द्विभाषी निर्देश विद्यार्थियों की सांस्कृतिक विरासत को स्वीकार करता है तथा उसका सम्मान करता है, जिससे उनके लिए नई भाषा तथा साक्षरता कौशलों को सीखना सार्थक व रोचक हो जाता है।

शिक्षक द्वारा छत्तीसगढ़ी तथा हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक से इतर की कविताओं का चयन स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को दर्शाता है, जिससे विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा को परिचित अनुभवों और संदर्भों से जोड़ने की अनुमति मिलती है। शिक्षक नई कविताओं को पहले स्वयं सुनाने तथा फिर विद्यार्थियों द्वारा हाव-भाव से दोहराने में मदद करने से सीखने में सहायता प्रदान करता है। इस प्रकार धीरे-धीरे पहले कविताओं के पाठ को मॉडलिंग करके तथा फिर बारी-बारी स्वतंत्र रूप से पाठ करने की अनुमति देकर उनको यह जिम्मेदारी देता है। यह ग्रेजुअल रिलीज रिसपॉन्सिब्लटी

(जी.आर.आर.) विद्यार्थियों को अपने भाषा कौशल में आत्मविश्वास तथा क्षमता विकसित करने की अनुमति देती है। (ड्यूक एंड पीयर्सन 2002)

दुर्ग जिले की एक शिक्षिका कक्षा शिक्षण के बारे में बताती हैं कि "मैंने भाषा कक्षा में पाठ्यपुस्तक तथा अभ्यास पुस्तक के अतिरिक्त हिंदी तथा छत्तीसगढ़ी भाषा की अन्य पाठ्य सामग्रियों को शामिल करके कक्षा शिक्षण में बच्चों की भागीदारी में एक बड़ा अंतर देखा है। लंबे समय से पाठ्यपुस्तक केंद्रित शिक्षण के दौरान यह जानना मेरे लिए निराशाजनक था कि कुछ विद्यार्थी शिक्षा के माध्यम हिंदी में स्वयं को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए संघर्ष करते थे। विशेषकर जब पाठ्यपुस्तक के बड़े पाठों पर या गणित के इबारती प्रश्नों पर चर्चा करते थे, इसलिए मैंने चर्चाओं तथा कहानी कहने के सत्रों के दौरान छत्तीसगढ़ी का उपयोग करने को प्राथमिकता दी और पाया कि अब अधिकतर बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं तथा हिंदी कहानियों को समझने में ज्यादा सक्षम हो रहे हैं।"

उपरोक्त साक्षात्कारों तथा अवलोकनों से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में मातृभाषा को सम्मान देने पर आधारित कक्षा-शिक्षण विधियाँ अध्ययनरत विद्यार्थी प्रेरणा में सहायक हैं। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में निहित प्रावधानों के अनुरूप साक्षरता तथा सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा भी देती हैं।

परिणामों पर चर्चा

इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष साक्षरता विकास तथा सांस्कृतिक संरक्षण दोनों में आदिवासी भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि करते हैं। प्रारंभिक कक्षा के साक्षरता निर्देश में आदिवासी भाषाओं, कविताओं तथा कहानियों को शामिल करने पर विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में अधिक सार्थक रूप से शामिल हो पाए। शिक्षण में आदिवासी भाषाओं के उपयोग ने साक्षरता को अधिक सुलभ तथा आनंददायक बनाया, क्योंकि वे विषय-वस्तु को समझ सकते थे तथा अपने ज्ञान और सीखने के अनुभव पर स्वामित्व का अनुभव कर सकते थे।

छत्तीसगढ़ की स्थानीय कविताएँ न केवल भाषा तथा साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान तथा सामुदायिक जीवन को भी दर्शाती हैं। यह शोध सिद्ध करता है कि प्राथमिक शिक्षा में इन कविताओं को शामिल करने से साक्षरता विकास, भाषा अधिगम, सांस्कृतिक जुड़ाव तथा कक्षा सहभागिता में वृद्धि हो सकती है। इस शोध अध्ययन में यह स्थापित किया गया है कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाना उनके भाषा कौशल को विकसित करने तथा साक्षरता स्तर में सुधार लाने में सहायक होता है। (मिश्रा, 2024) भारत में किए गए शोधों से भी यह प्रमाणित हुआ है कि स्थानीय साहित्य, कहानियाँ तथा कविताएँ बच्चों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाती हैं। (कुमार, 2004; एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022; मिश्रा, 2024)

स्थानीय साहित्य बच्चों को उनके पूर्व ज्ञान एवं अनुभवों से जोड़ता है, जिससे वे नए शब्दों तथा भाषा संरचनाओं को जल्दी सीखते हैं। कक्षा शिक्षण में जब कविताओं को चित्रों, पोस्टरों एवं मौखिक चर्चा के साथ प्रस्तुत किया जाता है, तो बच्चों की

सुनने, बोलने तथा समझने की क्षमताएँ अधिक विकसित होती हैं। (एल.एल.एफ., 2018, झिंगरन, 2015) जब कविता शिक्षण को कहानी सुनाने की गतिविधियों से जोड़ा जाता है, तो यह संज्ञानात्मक विकास तथा भाषायी अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है। (मिश्रा, 2013) इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि कक्षा में संवादात्मक विधियों (Interactive Methods) का उपयोग बच्चों की सीखने की क्षमता को बढ़ाता है। (रा.शै.अ.प्र.प., 2006) मातृभाषा में शिक्षण तथा संवादात्मक कक्षा तकनीकों का उपयोग विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को बढ़ाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 भी इस बात पर बल देते हैं कि भाषा शिक्षण में सांस्कृतिक तथा स्थानीय संदर्भों का समावेश विद्यार्थी-छात्राओं के सीखने को अधिक प्रभावी बना सकता है। भारत में आदिवासी समुदायों पर किए गए शोध अध्ययनों में पाया गया कि स्थानीय भाषा में शिक्षण से बच्चों में अधिक आत्मविश्वास विकसित होता है तथा वे शिक्षा से बेहतर जुड़ते हैं। (मिश्रा, 2024)

आदिवासी समुदायों की पहचान को बनाए रखने के लिए आदिवासी भाषाओं के उपयोग के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण आवश्यक है। अपनी मातृभाषा में सीखने तथा सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्रियों से जुड़ने से विद्यार्थी अपने समुदाय तथा उसकी परंपराओं से अपने संबंध को मजबूत करने में सक्षम हुए। शिक्षकों ने भी सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो बच्चों की भाषाओं तथा विरासत को महत्व देता है। (मिश्रा, 2024)

शिक्षा में स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्रियों का उपयोग एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के उद्देश्यों के अनुरूप है। ये नीतियाँ इस निष्कर्ष का समर्थन करती हैं कि मातृभाषा आधारित शिक्षा सामाजिक समावेश तथा सांस्कृतिक निरंतरता को बढ़ावा देते हुए साक्षरता परिणामों में सुधार कर सकती हैं। यह शोध अध्ययन यह दर्शाता है कि विभिन्न आदिवासी भाषाओं का समावेश कक्षा में न केवल साक्षरता के स्तर को बढ़ाता है, बल्कि बच्चों को अपनी सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूक भी करता है। आदिवासी कविताओं तथा कहानियों के माध्यम से बच्चों को उनके समुदाय के जीवन, परंपराओं तथा रीति-रिवाजों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में सहायक होती है। यह शोध अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि मातृभाषा आधारित शिक्षा केवल बच्चों के लिए भाषा अधिगम के लिए लाभदायक साधन ही नहीं है, बल्कि यह आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक संरक्षण का भी एक प्रभावी तरीका है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा नीतियाँ तथा कक्षा शिक्षण विधियाँ बच्चों की मातृभाषा और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप तैयार की जाएँ, ताकि वे एक समृद्ध एवं सांस्कृतिक रूप से सशक्त शिक्षा प्राप्त कर सकें।

शैक्षिक निहितार्थ

शोध के निष्कर्षों के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार हैं —

1. एन.ई.पी. 2020 तथा एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की मंशा अनुसार विद्यालयों को

पाठ्यक्रम में आदिवासी भाषाओं को विशेषकर साक्षरता निर्देश में तथा सामग्री विकास में शामिल करना चाहिए। राज्य द्वारा भी आदिवासी कहानियों और कविताओं जैसी सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्री को पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण संसाधनों में शामिल किया जाना चाहिए।

2. शिक्षकों को आदिवासी भाषाओं तथा सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्रियों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों को सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण विधियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिसमें मौखिक कहानी सुनाना, पारंपरिक गीत और समुदाय-आधारित शिक्षा शामिल हो।
3. स्थानीय समुदायों को शैक्षिक प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। बुजुर्ग और समुदाय के नेता पारंपरिक कहानियाँ, कविताएँ एवं गीत साझा कर सकते हैं, जिससे पाठ्यक्रम समृद्ध होगा और विद्यार्थियों को प्रामाणिक शिक्षण अनुभव प्राप्त होगा।
4. राज्य तथा स्वैच्छिक संगठन के साथ मिलकर किए जा रहे प्रयास, जैसे— 'नींव' बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम, कहानी कथन उत्सव तथा 'शाला संग्रहालय' जैसी नवाचारी पहलों को राज्य द्वारा सभी आदिवासी बहुल क्षेत्रों में लागू किया जाना चाहिए।
5. छत्तीसगढ़ की भाषायी विविधता को संबोधित करने के लिए विद्यालय आधारित पाठ्यचर्या विकास तथा शोध कार्यक्रमों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, जिससे एन.ई.पी. 2020 तथा एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अनुसार बुनियादी साक्षरता और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा दिया जा सके।

उपसंहार

यह शोध अध्ययन आदिवासी मातृभाषा भाषाओं, कविताओं तथा कहानियों को एकीकृत करने के महत्व पर बल देता है। मातृभाषा शिक्षा का उपयोग न केवल साक्षरता परिणामों को बढ़ाता है, बल्कि आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में भी मदद करता है। इस शोध अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि स्थानीय भाषाओं को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने से शैक्षिक तथा सांस्कृतिक लाभ अधिक होते हैं, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2022 में निहित मातृभाषा में शिक्षा संबंधित प्रावधानों का समर्थन करते हैं। इन प्रथाओं को अपनाकर विद्यालय अधिक समावेशी, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षा प्रदान कर सकते हैं, जो न केवल साक्षरता कौशल में सुधार करती है, बल्कि विद्यार्थियों की पहचान और अपनेपन की भावना को भी बढ़ाती है।

संदर्भ

अग्निहोत्री, आर. के. ए. खन्ना और एस. शुक्ला. 2008. प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका): एकलव्य, इनोवेटिव एक्सपेरिमेंटस इन प्राइमरी एजुकेशन. रत्ना सागर प्रा. लि., दिल्ली

ऐश्टन-वॉर्नर, एस. 1963. *टीचर*. साइमन एंड शूस्टर, न्यूयॉर्क.

एल.एल.एफ., एस.सी.ई.आर.टी., समग्र *शिक्षा, एवं यूनिसेफ. 2021. लैंग्वेज मैपिंग ऑफ स्कूल्स इन छत्तीसगढ़: अ सर्वे रिपोर्ट* 10 फरवरी 2025 को. https://cgschool.in/img/LMReportCG_Hindi_Final.pdf प्राप्त किया गया.

कुमार, के. 2004. द *चाइल्डस लैंग्वेज एंड द टीचर : अ हैंडबुक*. नेशनल बुक ट्रस्ट. नई दिल्ली.

जर्नल ऑफ एजुकेशन, 189, 107-122, सेज पब्लिकेशन, बोस्टन यूनिवर्सिटी व्हीलॉक कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड ह्यूमन डेवलपमेंट, बोस्टन, अमेरिका. https://doi.org/10.1177/0022057409189001-208

ड्यूक, एन. के. और पी. डी. पियर्सन. 2002. इफेक्टिव प्रैक्टिसेज फॉर डेवलपिंग रीडिंग कॉम्प्रिहेन्शन. 20 जनवरी, 2025 को https://www.researchgate.net/publication/254282574_Effective_Practices_for_Developing_Reading_Comprehension प्राप्त किया गया.

जयराम, के. 2008. अर्ली लिटरेसी प्रोजेक्ट— एक्सप्लोरेशन एंड रिफ्लेक्शन्स पार्ट 1: थ्योरिटिकल पर्सपेक्टिव्स. *कंटेंपररी एजुकेशन डायलॉग*. 5(2) पृष्ठ 133–174. सेज पब्लिकेशन इंडिया प्रा.लि., नई दिल्ली 20 जनवरी, 2025 को https://doi.org/10.1177/0973184913411165 प्राप्त किया गया.

———. अर्ली लिटरेसी प्रोजेक्ट — एक्सप्लोरेशन एंड रिफ्लेक्शन्स पार्ट 2: इंटरवेंशन्स इन हिंदी क्लासरूम्स. *कंटेम्पररी एजुकेशन डायलॉग*. 5(2). पृष्ठ 175–212. सेज पब्लिकेशन इंडिया प्रा.लि., नई दिल्ली 20 जनवरी, 2025 को https://doi.org/10.1177/0973184913411166 प्राप्त किया गया.

झिंगरन, डी. 2005. *लैंग्वेज डिसएडवांटेज: द लर्निंग चैलेंज इन प्राइमरी एजुकेशन*. नई दिल्ली: पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन ए.पी.एच.

———. *2012. अ स्टडी ऑफ द स्कूल-बेस्ड अकादमिक फैक्टर्स अफेक्टिंग रीडिंग अचीवमेंटस इन प्राइमरी ग्रेडस* (डॉक्टोरल थीसिस). जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली. https://jmi.ac.in/upload/research/ab_2013_es_djhingran.pdf

———. 2020. अर्ली लिटरेसी एंड मल्टीलिंगुअल एजुकेशन इन साउथ एशिया, परी: द काउंटर मीडिया ट्रस्ट. महाराष्ट्र, इंडिया 14 जनवरी 2025 को https://coilink.org/20.500.12592/r7r68q प्राप्त किया गया.

———. 2024. मल्टीलिंगुअल एजुकेशन इन प्रैक्टिस: अ रियलिटी चेक. *लैंग्वेज एंड लैंग्वेज टीचिंग*. अंक 25, आकार बुक्स इंटरनेश्नल, दिल्ली जनवरी 2024. फरवरी 2025 को https://llt.org.in/wp-content/uploads/2024/05/Multilingual-Education-in-Practice-A-Reality-Check-Issue-25.pdf प्राप्त किया गया.

नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग. 2022. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज 2022.* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली, जनवरी 2025 को https://www.ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf प्राप्त किया गया.

मेनन, एस. एवं अन्य. 2017. लिटरेसी रिसर्च इन इंडियन लैंग्वेजेस (LiRiL): रिसर्च रिपोर्ट ऑफ ए स्टडी ऑफ लिटरेसी अक्वाज़िशन इन कन्नड़ एंड मराठी (2013-2016) रिपोर्ट ऑफ अ थ्री-ईयर लॉन्गिटयूडिनल स्टडी ऑन अर्ली रीडिंग एंड राइटिंग इन मराठी एंड कन्नड़. अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी एंड टाटा ट्रस्टस. नई दिल्ली 15 फरवरी 2025 को https://publications.azimpremjiuniversity.edu.in/400/1/Liril_Final.pdf प्राप्त किया गया.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली, जनवरी 2025 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf प्राप्त किया गया.

मिश्रा, एम. के. 2024. *एरई एरई : मल्टीलिंगुअल एजुकेशन इन ट्राइबल स्कूल्स ऑफ इंडिया: वॉइसेज फ्रॉम बिलो*. नई दिल्ली: मानक पब्लिकेशन्स.

जनवरी 2025 को https://scert.cg.gov.in/pdf/manuals/LLF-Modules05-05-2022/CAC_FLN%20&%20Academic%20Support_Module_LLF_2021–22.pdf प्राप्त किया गया.

24 जनवरी 2025 को https://scert.cg.gov.in/pdf/manuals/LLF-Modules05-05-2022/SRG_FLN%20&%20Literacy_Module_2021–22.pdf प्राप्त किया गया.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *पोजिशन पेपर ऑफ द नेशनल फोकस ग्रुप ऑन टीचिंग ऑफ इंडियन लैंग्वेजेस*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली, जनवरी 2025 को https://ncert.nic.in/pdf/focus-group/Indian_Languages.pdf प्राप्त किया गया.

स्मिथ, एफ. 2004. *अंडरस्टैंडिंग रीडिंग: अ साइकोलिंग्विस्टिक एनालिसिस ऑफ रीडिंग एंड लर्निंग टू रीड* (6th ed.). रूटलेज, यूनाइटेड किंगडम.

प्रेस्ली, एम. 2002. रीडिंग इंस्ट्रक्शन दैट वर्क्स: द केस फॉर बैलेंस्ड टीचिंग. *सोलविंग प्रॉब्लेम्स इन द टीचिंग ऑफ लिटरेसी*. सैकंड एडिशन, न्यूयॉर्क: गिलफोर्ड प्रेस. https://eric.ed.gov/?id=ED465951

कक्षा में विद्यार्थियों के शैक्षणिक निष्पादन का आकलन मूल्यांकन के लिए यूनिवर्सल डिजाइन के प्रति एक दृष्टिकोण

सुचिता यादव*
शीलू कच्छप**
किशोर एच. माने***

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आकलन तथा मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण घटक है, जो विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को अधिगम परिणामों की जानकारी प्रदान करते हैं। कक्षा में विविधता के कारण वर्तमान आकलन तथा मूल्यांकन प्रणाली में कई प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। इन चुनौतियों का सामना करने में यूनिवर्सल डिजाइन फॉर एसेसमेंट (यू.डी.ए.) सहायक होता है, क्योंकि यह कक्षा की विविधता, जैसे— क्षमताओं, पृष्ठभूमियों, सीखने की शैलियों और रुचियों का ध्यान रखता है। यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (यू.डी.एल.) एक ऐसी रूपरेखा है, जिसका उद्देश्य सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने को अनुकूलित करना है तथा यू.डी.ए. कक्षा में विविधता को अपनाते हुए सभी विद्यार्थियों के सीखे हुए ज्ञान को अलग-अलग तरीकों से प्रस्तुत करने का समान अवसर प्रदान करना है, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी का सही मूल्यांकन हो सके। इसके तीन सिद्धांत एकीकृत रूप से आकलन तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया में लचीलेपन तथा विकल्पों पर आधारित हैं, जिससे सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर प्राप्त होता है। इस लेख का उद्देश्य कक्षा में मूल्यांकन की चुनौतियों का विश्लेषण करना एवं यू.डी.ए.के माध्यम से मूल्यांकन की चुनौतियों का समाधान करके, मूल्यांकन को समावेशी और प्रभावशाली बनाना है। इस लेख में दर्शाया गया है कि कैसे यू.डी.एल. के सिद्धांत, यू.डी.ए. में सम्मिलित होकर विविध विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन की सीमाओं को विस्तारित करते हैं।

भारत विविधताओं वाला देश है, जहाँ विभिन्न भाषा, धर्म तथा संस्कृति के लोग रहते हैं। जिसका एक लघु रूप कक्षा में भी दिखाई देता है। हाल के वर्षों में विविधता शब्द का उपयोग बढ़ गया है, जिनमें लोग अलग-अलग उम्र, लिंग पहचान, जातीयता, जीवन के अनुभव, शैक्षणिक तैयारी, मूल भाषा, सीखने की शैली तथा दिव्यांगता की स्थिति शामिल है। (मैकग्वायर और स्कॉट, 2006) विद्यार्थियों में स्वाभाविक रूप से आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा प्राथमिकताओं के संदर्भ में

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, कला संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002
***सहायक आचार्य*, शिक्षा विभाग, कला संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002
**** सहायक आचार्य*, शिक्षा संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221 005

अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं। ये विशेषताएँ उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं तथा सीखने के अनुभव में बहुत योगदान देती हैं। बर्गस्टाहलर (2011) ने यह प्रस्तुत किया कि विद्यार्थी विविधता में शारीरिक, संवेदी, दृश्य-श्रव्य, ध्यान तथा संचार संबंधी विशेष आवश्यकताएँ शामिल हैं। इन सीमाओं के बावजूद विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर प्राप्त करने से वंचित नहीं किया जाना चाहिए, इसलिए ऐसे परिदृश्य में 'सभी के लिए समान दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षण, व्यक्तिगत अंतरों को सफलतापूर्वक समायोजित नहीं कर सकता है। इन चुनौतियों को कम करने के लिए, दो व्यापक दृष्टिकोणों का विकास हुआ, पहला लर्निंग स्टाइल थ्योरी (एल.एस.टी.) और दूसरा यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (यू.डी.एल.)। यू.डी.एल., शैक्षिक अभ्यास का मार्गदर्शन करने के लिए एक वैज्ञानिक रूप से मान्य ढाँचा है, जो कक्षा में विविधता को स्वीकृति प्रदान करके कक्षा के वातावरण को समावेशी बनाकर, निर्देश में बाधाओं को कम करता है, इसलिए विभिन्न पृष्ठभूमि तथा विविध आवश्यकताओं के लिए अधिक सुलभ और उपयोगी है। (किंग-सीयर्स, 2014; राव एवं अन्य 2014; रोज एवं मेयर 2002) यू.डी.एल. लचीले लक्ष्यों, विधियों, सामग्रियों और आकलनों का सुझाव देकर विद्यार्थियों की परिवर्तनशीलता को संबोधित करने में मदद करता है, जो शिक्षकों को इन विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सशक्त बनाता है। यू.डी.एल. का उपयोग करके बनाया गया पाठ्यक्रम सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। जिससे खर्चीले, समय लेने वाले तथा बाद में किए जाने वाले बदलाव अनावश्यक हो जाते हैं। यू.डी.एल. ढाँचा प्रारंभ से ही लचीले डिजाइन बनाने को प्रोत्साहित करता है, जिसमें अनुकूलन योग्य विकल्प होते हैं। यू.डी.एल. पाठ्यक्रम विकास के लिए सिद्धांतों का एक समूह है, जो सभी को सीखने का समान अवसर प्रदान करता है। (यू.डी.एल. पर राष्ट्रीय केंद्र, 2012) यू.डी.एल. लक्ष्यों, विधियों, सामग्रियों तथा आकलन का मार्गदर्शन करता है, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी के लिए निर्देश उपयोगी हों। सभी विद्यार्थियों का मूल्यांकन समान तरीके से करने के स्थान पर व्यक्तिगत आवश्यकता को ध्यान रखते हुए मूल्याकंन के लिए विविध अवसरों एवं विकल्पों के साथ-साथ उसमें लचीलापन होना चाहिए, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने को अनुकूलित किया जा सके। मेयर और रोज, 2005 एक शोध से ज्ञात हुआ कि यू.डी.एल. ढाँचा मस्तिष्क अनुसंधान पर आधारित है, जिसने सीखने से संबंधित तीन नेटवर्क की पहचान की है— मान्यता अर्थात विद्यार्थी क्या सीखते हैं?, रणनीतिक अर्थात विद्यार्थी कैसे सीखते हैं? तथा भावात्मक अर्थात विद्यार्थी क्यों सीखते हैं? यू.डी.एल. के तीन मार्गदर्शक सिद्धांत प्रत्येक नेटवर्क तथा उसके विशेषज्ञता के क्षेत्र से संबंधित व्यक्तिगत अंतरों को संबोधित करने के लिए लचीलेपन और कई तरीकों की माँग करते हैं, जो इस प्रकार हैं —

सिद्धांत (I) मान्यता का समर्थन करने के लिए प्रतिनिधित्व के बहुसाधन प्रदान करें। (सूचना प्राप्त करने तथा उसका विश्लेषण करने के लिए नेटवर्क)

सिद्धांत (II) कार्यों की योजना बनाने तथा उन्हें क्रियान्वित करने के लिए रणनीतिक नेटवर्क को

समर्थन देने हेतु कार्रवाई और अभिव्यक्ति के बहुविध साधन उपलब्ध कराना।

सिद्धांत (III) प्राथमिकताओं के मूल्यांकन तथा निर्धारण के लिए भावात्मक नेटवर्क का समर्थन करने हेतु संलग्नता के बहुविध साधन प्रदान करें।

उपर्युक्त तीन दिशा-निर्देश तथा अनेक चेकपॉइंट प्रत्येक यू.डी.एल. सिद्धांत का समर्थन करते हैं। मूल्यांकन के क्षेत्र में यूनिवर्सल डिजाइन फॉर एसेसमेंट (यू.डी.ए.) एक अभिनव प्रयास है। जो यू.डी.एल. के तीन सिद्धांतों पर आधारित है। पाठ्यक्रम और पाठों को डिजाइन करने के लिए इन सिद्धांतों एवं दिशा-निर्देशों का उपयोग करके, शिक्षक सभी विद्यार्थियों की बाधाओं को उचित रूप से चुनौती दे सकते हैं, उनका समर्थन कर सकते हैं और उनसे जुड़ सकते हैं। (मेयर एवं रोज, 2005) यह ढाँचा विद्यालयों में विद्यार्थियों की बढ़ती विविधता को स्वीकृत करने तथा कंप्यूटर व डिजिटल मीडिया द्वारा प्रदान की जाने वाले लचीलेपन से लाभ उठाने के लिए निर्मित किया गया है।

आकलन

आकलन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी ज्ञात उद्देश्य या लक्ष्य से संबंधित जानकारी प्राप्त की जाती है। आकलन एक व्यापक शब्द है, जिसमें परीक्षण भी शामिल होता है। परीक्षण, आकलन का एक विशेष रूप है। परीक्षण विशेष परिस्थितियों में किया गया ऐसा आकलन होता है, जिसे प्रकाशित किया जा सके। आकलन सदैव लक्ष्य तथा उद्देश्य से जुड़ा होता है, जिसके लिए उसे डिजाइन किया गया है। हम यह निर्धारित करने के लिए आकलन करते हैं कि कोई उद्देश्य या लक्ष्य प्राप्त हुआ है या नहीं। (किजलिक, 2012) शिक्षण तथा अधिगम में आकलन को विभिन्न लेखकों द्वारा विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। सामान्यत: आकलन को विद्यार्थियों के बारे में जानकारी एकत्र करने, उसकी समीक्षा करने तथा उसका उपयोग करने की किसी भी व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है, ताकि जहाँ आवश्यक हो, सुधार किया जा सके। इसका तात्पर्य यह है कि आकलन विद्यार्थियों के सीखने के बारे में जानकारी की पहचान करने, एकत्र करने तथा उसकी व्याख्या करने की प्रक्रिया है। समान्यतः आकलन एक सतत संवादात्मक प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों शामिल होते हैं। आकलन की सभी परिभाषाएँ इस तथ्य की ओर संकेत करती हैं कि आकलन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शिक्षक, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता तथा लागू किए जा रहे पाठ्यक्रम एवं उसकी उपयुक्तता के बारे में जानकारी एकत्र करता है। यह केवल अंक या ग्रेड देने से कहीं अधिक है, यद्यपि यह उसका एक हिस्सा हो सकता है। आकलन शिक्षा प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह शिक्षकों को अधिगम कार्यों तथा उपयुक्त शिक्षण दृष्टिकोणों के चयन के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करता है। साथ ही, आकलन यह भी दर्शाता है कि पाठ्यक्रम के किन पहलुओं की समीक्षा की जा सकती है।

आकलन का कार्य तथा उद्देश्य

आकलन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की उपलब्धि तथा प्रगति के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करना, साथ ही, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में निरंतर सुधार के लिए दिशा निर्धारित करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति

हेतु मूल्यांकन के कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं—

- विद्यार्थियों के वर्तमान शैक्षणिक प्रदर्शन की पहचान करना।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सहायता प्रदान करना।
- समीक्षा, स्थानांतरण तथा प्रमाणन के लिए आधार उपलब्ध कराना।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की समग्र प्रभावशीलता का मूल्यांकन।
- किसी विशेष विद्यार्थी के विकास के स्तर का निर्धारण करना।
- विद्यार्थियों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त करना।
- उन अवधारणाओं या प्रक्रियाओं की पहचान करना, जिसे पुनः पढ़ाने या समीक्षा करने की आवश्यकता हो सकती है।

अधिगम के लिए आकलन

इक्कीसवीं सदी की शुरुआत से ही 'सीखने के लिए आकलन' पर विशेष बल दिया जा रहा है। इस प्रकार का आकलन, सीखने वाले विद्यार्थियों पर केंद्रित है। यह विद्यार्थियों के लिए मेटाकॉग्निशन (किसी की विचार प्रक्रियाओं का ज्ञान) की प्रक्रिया के रूप में आकलन को महत्व देता है। यह विचार इस पर आधारित है कि सीखना केवल जानकारी रखने वाले व्यक्ति से विचारों के स्थानांतरण का कार्य नहीं, बल्कि यह संज्ञानात्मक पुनर्गठन की एक सक्रिय प्रक्रिया है, जो तब होती है, जब कोई व्यक्ति नए विचारों के साथ संवाद करता है। सीखने के इस दृष्टिकोण में, विद्यार्थी आकलन तथा अधिगम के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं। विद्यार्थियों को अपनी समझ के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सक्षम बनाना आवश्यक है, ताकि वे ऐसे मूल्यांकनकर्ता बन सकें, जिसे पूर्ण जानकारी हों, उसे पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं तथा उसे नए अधिगम के लिए उपयोग में लाते हैं। अधिगम के लिए आकलन का मुख्य उद्देश्य समय के साथ विद्यार्थियों की क्षमताओं को इस प्रकार विकसित करना है, ताकि वे अपने स्वयं के सर्वश्रेष्ठ मूल्यांकनकर्ता बन सकें। इसके लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को आत्म-मूल्यांकन का अवसर प्रदान करें और इस प्रक्रिया का स्पष्ट मॉडल प्रस्तुत करके इसकी शुरुआत करें। (शर्मा, 2008)

मूल्यांकन

मूल्यांकन की प्रक्रिया प्राचीनतम काल से चली आ रही है। इसका उपयोग केवल शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं किया जाता है, बल्कि इसका प्रारंभ ही भौतिक विज्ञान से माना जाता है। (शर्मा, 2008) मूल्यांकन, संभवत: सबसे जटिल तथा सबसे कम समझी जाने वाली शब्दावली में से एक है। मूल्यांकन की अवधारणा में मूल्य अंतर्निहित होता है। जब हम मूल्यांकन करते हैं, तो हम एक ऐसी प्रक्रिया में शामिल होते हैं, जो किसी विशेष स्थिति के संबंध में निर्णय लेने में सहायक जानकारी प्रदान करने के लिए डिजाइन की गई होती है। साधारणतः किसी भी मूल्यांकन प्रक्रिया में उस स्थिति से संबंधित जानकारी की आवश्यकता होती है। जहाँ स्थिति एक व्यापक शब्द है, जिसमें उद्देश्यों, लक्षणों, प्रक्रियाओं आदि को शामिल किया जाता है। जब हम मूल्यांकन करते

हैं, तो यह कहा जा सकता है कि यह प्रक्रिया किसी वस्तु या गतिविधि की योग्यता, उपयुक्तता, गुणवत्ता, वैधता आदि के संबंध में जानकारी प्रदान करती है। इसके लिए एक विश्वसनीय माप या मूल्यांकन प्रणाली विकसित की जाती है। (किजलिक, 2012) मूल्यांकन, एक गुणात्मक तथा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें सभी वस्तुओं, गुणों एवं तथ्यों को उचित मूल्य प्रदान किया जाता है। (शर्मा, 2008) वर्तमान शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसके लिए विभिन्न अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों का समुचित विकास हो सके। (शर्मा, 2008) इन अधिगम क्रियाओं के माध्यम से निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में किस सीमा तक सफलता प्राप्त हुई है। यह जानना मूल्यांकन प्रक्रिया का कार्य है। मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन मुख्य घटक होते हैं— शिक्षण उद्देश्य, अधिगम क्रियाएँ तथा व्यवहार परिवर्तन। (गुप्ता एवं गुप्ता, 2018)

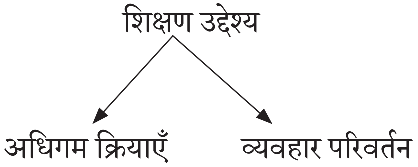

चित्र 1— मूल्यांकन प्रक्रिया

कक्षा में विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन का आकलन— वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली में समस्याएँ

मूल्यांकन शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह शिक्षण पद्धतियों, पाठ्यक्रम विकास एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करता है। यद्यपि, वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जो इसकी प्रभावशीलता को कम कर देती हैं। यह चुनौतियाँ इस प्रकार हैं—

- **निम्न गुणवत्तापूर्ण परीक्षण**— शैक्षिक मूल्यांकन के लिए उपयोग किए जाने वाले कई परीक्षण या तो मानकीकृत नहीं होते या व्यवस्थित परीक्षण विकास प्रक्रिया से गुजरते नहीं है, जिसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का समुचित रूप से उपयोग किया जाता है। ऐसे परीक्षण गुणवत्तापूर्ण नहीं माने जाते तथा वे अपने निर्धारित उद्देश्य एवं कार्य को पूरा करने में प्रायः विफल रहते हैं। परीक्षणों की गुणवत्ता कम होने का प्रमुख कारण यह भी है कि अच्छी गुणवत्ता वाले परीक्षण के निर्माण के लिए विशेषज्ञता की कमी का होना है। यह समय साध्य होती है, इसे कई अनुक्रमित प्रक्रियाओं की एक शृंखला से गुजरना पड़ता है। (अरीक्कुझियिल, 2021)
- **मानकीकृत परीक्षण एवं उसकी सीमाएँ**— मानकीकृत मूल्यांकन कई शैक्षिक प्रणालियों में मुख्य रूप से उनकी वस्तुनिष्ठता तथा तुलनात्मकता के कारण एक मानक बन गए हैं। यद्यपि ये मूल्यांकन प्रायः विविध विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में नहीं रखते हैं। अमरीन एवं बर्लिनर (2002) के शोध से यह ज्ञात हुआ है कि मानकीकृत परीक्षण विद्यार्थियों के ज्ञान तथा कौशल को, विशेष रूप से हाशिए के समूहों के लिए सटीक रूप से प्रस्तुत नहीं कर सकते। इसके परिणामस्वरूप एक असमान शैक्षिक प्रणाली बनती है, जहाँ कुछ समूहों को असमान रूप से नुकसान होता है। मानकीकृत मूल्यांकन किसी विद्यार्थी की समझ या

क्षमताओं को उचित रूप से व्यक्त नहीं कर पाते हैं। ब्लैक एवं विलियम (1998) के अनुसार, इस प्रकार के मूल्यांकन प्रायः समग्र सीखने के बजाय केवल परीक्षण प्रदर्शन पर संकीर्ण ध्यान केंद्रित करते हैं। यह सामाजिक तथा आर्थिक असमानताओं को और अधिक बढ़ा सकता है।

- **पूर्वाग्रह तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता** — मूल्यांकन में पूर्वाग्रह तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। शोध सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि मूल्यांकन उपकरण प्रायः प्रमुख संस्कृति के दृष्टिकोण से तैयार किए जाते हैं, जिससे अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को नुकसान पहुँचता है।
- **अप्रभावी मूल्यांकन**— प्रभावी मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थी को सीखने में मार्गदर्शित करना होता है, जिसके लिए उन्हें समय पर और सार्थक प्रतिक्रिया प्रदान करनी चाहिए। यद्यपि वर्तमान में प्रचलित कई पद्धतियाँ रचनात्मक प्रतिक्रिया पर योगात्मक मूल्यांकन को प्राथमिकता देती हैं। जैसा कि विगिंस (2012) बताते हैं, मूल्यांकन को केवल अधिगम को मापने के लिए नहीं, बल्कि उसे सूचित करने तथा बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए। समय पर तथा रचनात्मक प्रतिक्रिया की कमी से विद्यार्थी की प्रगति प्रभावित हो सकती है, जिससे वे अपनी क्षमता तथा सुधार के क्षेत्रों से अनभिज्ञ रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त, जब मूल्यांकन मुख्य रूप से ग्रेड या अन्य पर केंद्रित होता है, तो विद्यार्थी वास्तविक अधिगम की अपेक्षा अंकों के बारे में अधिक चिंतित हो सकते हैं।
- **प्रौद्योगिकी का अपर्याप्त प्रयोग**— प्रौद्योगिकी में मूल्यांकन प्रणाली को प्रभावशाली एवं सुगम बनाने की अपार क्षमता है। इसका उचित क्रियान्वयन कई शैक्षणिक संस्थानों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हालाँकि कई शैक्षणिक परिवेशों में इसका कार्यान्वयन अपर्याप्त है। जब ऑनलाइन मूल्यांकन, सोच-समझकर डिजाइन नहीं किए जाते, तो वे पहुँच एवं निष्पक्षता से संबंधित कई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर सकते हैं, उदाहरण के लिए— ऐसे विद्यार्थी वंचित रह सकते हैं, जिनके पास इंटरनेट की सुविधा या तकनीकी संसाधन उपलब्ध नहीं होते हैं, जिससे उपलब्धियों में अंतर और बढ़ सकता है। इसके अतिरिक्त, तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता से डेटा गोपनीयता तथा सुरक्षा के मुद्दे उत्पन्न हो सकते हैं, जो सूचना प्रबंधन से संबंधित नैतिक चिंताओं को जन्म देते हैं।
- **रूढ़िवादिता**— मूल्यांकन प्रणाली में एक और महत्वपूर्ण चुनौती है, अभिनव प्रथाओं को अपनाने का प्रतिरोध। कई शिक्षक, परिचितता तथा संस्थागत परंपराओं के कारण पारंपरिक मूल्यांकन विधियों का ही अनुसरण करते हैं। जैसा कि फुलन (2015) ने उल्लेख किया है, सार्थक परिवर्तन के लिए शिक्षकों को नए दृष्टिकोण अपनाने हेतु व्यावसायिक विकास तथा सुनियोजित समर्थन की आवश्यकता होती है। परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध यह प्रभावशाली मूल्यांकन रणनीतियों के एकीकरण में प्रतिरोध उत्पन्न कर सकता है, जैसे कि प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन और पोर्टफोलियो, जो अधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी परिणाम प्रस्तुत कर सकते हैं।
- **रटकर सीखना**— भारतीय शिक्षा प्रणाली की आलोचना प्रायः रटने की प्रवृत्ति तथा

मानकीकृत परीक्षणों पर अत्यधिक निर्भरता के कारण की जाती है, जो आलोचनात्मक सोच तथा गहरी समझ की अपेक्षा मात्र याद करने को प्राथमिकता देती है। जैसा कि रेड्डी (2020) ने उल्लेख किया है, ऐसी विधियाँ विद्यार्थियों को सार्थक रूप से सीखने में संलग्न करने में विफल रहती हैं तथा विविध शिक्षण शैलियों को समायोजित नहीं कर पाती हैं।

- **समावेशिता का अभाव**— कई विद्यार्थी, विशेष रूप से दिव्यांग या हाशिए पर रहने वाली पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थी वर्तमान मूल्यांकन विधियों को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं पाते हैं। नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ ओपन स्कूलिंग (2020) की एक रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि विद्यार्थियों का एक बड़ा हिस्सा समावेशिता की कमी के कारण पारंपरिक मूल्यांकन में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता है।
- **सभी के लिए एक जैसी सामग्री वितरण**— पारंपरिक मूल्यांकन प्रणाली प्रायः विषय-वस्तु वितरण के एक ही तरीके पर निर्भर करती है, जो विभिन्न प्रकार की अधिगम शैलियों के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है तथा उनका शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है।
- **शिक्षकों के लिए अपर्याप्त प्रशिक्षण**— यू.डी.एल. सिद्धांतों को लागू करने में एक प्रमुख बाधा यह है कि शिक्षकों के लिए विभेदित निर्देश तथा मूल्यांकन विधियों में पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिला होता है। शिक्षकों को आवश्यक कौशल प्रदान करने हेतु यू.डी.एल. पर केंद्रित व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल देते हैं।

यूनिवर्सल डिजाइन आधारित मूल्यांकन— एक समावेशी भविष्य

वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली की कई चुनौतियाँ हैं, जैसे कि विविधता का ध्यान न रखना, असमान अवसरों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों की विभिन्न क्षमताओं का सही मूल्यांकन न हो पाना। यूनिवर्सल डिजाइन फॉर एसेसमेंट (यू.डी.ए.) इन चुनौतियों का सामना करने में निम्नलिखित तरीकों से सहयोग कर सकता है—

- **विविधता का सम्मान**— यू.डी.ए. सभी विद्यार्थियों की विविधता जैसे कि उनकी भिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमियाँ, भाषाएँ तथा अधिगम की शैलियाँ आदि को ध्यान में रखता है। इससे मूल्यांकन प्रक्रिया प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अधिक समावेशी बन जाती है। उदाहरणस्वरूप रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा बरखा शृंखला में विविधता को स्वीकार करते हुए अधिगम सामग्री का प्रस्तुतीकरण किया गया है।
- **लचीली मूल्यांकन पद्धति**— यू.डी.ए. मूल्यांकन में लचीलापन, जैसे कि प्रश्नों के विभिन्न प्रकार, प्रस्तुति के विभिन्न तरीके तथा समय सीमा में भिन्नता आदि प्रदान करता है। इससे विद्यार्थी अपनी क्षमताओं के अनुसार प्रदर्शन कर सकते हैं। विद्यार्थियों को अपनी समझ एवं कौशल दिखने के लिए प्रस्तुतियाँ, परियोजनाएँ, पोर्टफोलियो या डिजिटल स्टोरी टेलिंग जैसे विभिन्न माध्यमों का विकल्प देना। उनको सीखने का अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। यू.डी.एल. सिद्धांत का लचीलापन उस दिशा-निर्देश के अनुरूप है, जो कार्यवाही तथा अभिव्यक्ति के विविध साधनों की प्रस्तुति पर बल देता है।

- **पुनरावृत्ति तथा सुधार**— यू.डी.ए. मूल्यांकन प्रक्रिया में विद्यार्थियों को अवसर देता है, जिससे वे अपने उत्तरों में सुधार कर सकें, जिससे उनकी वास्तविक क्षमताएँ उजागर होती हैं।
- **तकनीकी सहायता**— यू.डी.ए. तकनीकी साधनों का उपयोग करता है, जैसे कि ऑनलाइन टेस्टिंग तथा इंटरैक्टिव मूल्यांकन, जिससे विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन अधिक सुलभ होता है। (कास्ट 2018, 2011)
- **निरंतर प्रतिपुष्टि**— मूल्यांकन में निरंतर प्रतिपुष्टि की व्यवस्था होती है, जिससे विद्यार्थी अपनी प्रगति को समझ पाते हैं तथा सुधार कर सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समावेशी शिक्षा तथा लचीली मूल्यांकन पद्धतियों की अनुशंसा करती है। यद्यपि यू.डी.एल. को वर्तमान मूल्यांकन प्रणालियों में कैसे एकीकृत किया जा सकता है, इस पर अधिक विशिष्ट दिशा-निर्देशों की आवश्यकता है।
- **सहभागिता को बढ़ावा**— मेयर एवं रोज 2005 के अनुसार विभिन्न शिक्षण विधियों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, जैसे— प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण, गेमीफिकेशन तथा सहयोगी गतिविधियों विद्यार्थियों के बीच अधिक सहभागिता को बढ़ावा देता है। उदाहरणस्वरूप कक्षाओं में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना जैसे कि शैक्षिक ऐप तथा इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म का उपयोग करना सलंग्नता को बढ़ाता है। यह टामलिसन (2001) के लेख के अनुरूप है, जो विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभेदित निर्देश की अनुशंसा करता है।
- **उच्च गुणवत्ता युक्त परीक्षण तैयार करना**— एक परीक्षण को तैयार करते समय मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा परीक्षण को सिर्फ एक जैसा न बनाकर उसे कई रूपों में वर्गीकृत किया जाना चाहिए,

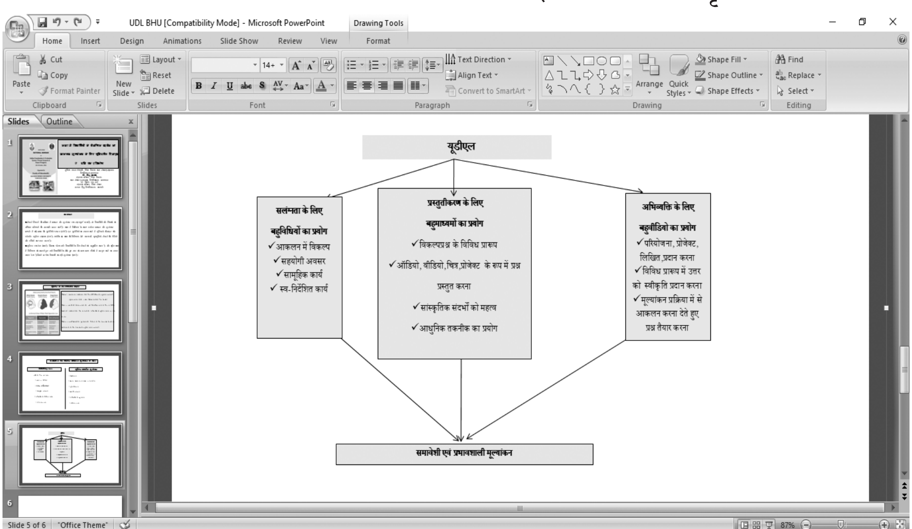

चित्र 2— यूनिवर्सल डिजाइन फॉर एसेसमेंट — समावेशी और प्रभावी मूल्यांकन

जिनके उद्देश्य समान हों। उदाहरणस्वरूप सिर्फ निबंधात्मक प्रश्न तैयार करने के अतिरिक्त बहुविकल्पीय प्रश्न, रिक्त स्थान प्रश्न, मिलान के सही जोड़े बनाने वाले प्रश्न, ऑडियो के रूप में प्रश्न, चित्र युक्त प्रश्नों को भी तैयार करना चाहिए। कास्ट (2018) के अनुसार प्रश्न को कई रूपों में प्रस्तुत करके प्रत्येक विद्यार्थी का सही मूल्यांकन करने में अत्यंत समीप होंगे।

- **विविध सामग्री प्रदान करना**— शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण विधियों को अपनाते हुए वीडियो पॉडकास्ट, इंफोग्राफिक तथा व्यावहारिक गतिविधियों जैसे कई प्रारूपों में सामग्री प्रदान करना चाहिए। विभिन्न रूपों में जानकारी प्रस्तुत करने से समझ और अवधारणा में वृद्धि होती है। जिससे विद्यार्थियों को ऐसी सामग्री प्राप्त होती है, जो उनके लिए उचित है। इससे प्रभावशाली एवं समावेशी मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है।

यूनिवर्सल डिजाइन फॉर एसेसमेंट सिद्धांतों के माध्यम से मूल्यांकन प्रणाली को समावेशी तथा प्रभावशाली बनाया जा सकता है। जिसका एक उदाहरण रा.शै.अ.प्र.प., कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान (इतिहास) की पाठ्यपुस्तक के प्रकरण— (भारतीय स्वतंत्रता संग्राम) को तालिका 1 के माध्यम से समझा जा सकता है—

तालिका 1— कक्षा 8 की रा.शै.अ.प्र.प. की सामाजिक विज्ञान (इतिहास) की पुस्तक के पाठ्यक्रम के अनुसार 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम' प्रकरण पर यू.डी.ए. आधारित मूल्यांकन

प्रकरण	आकलन क्षेत्र	प्रतिनिधित्व के विविध साधन	क्रियान्वयन एवं अभिव्यक्ति के विविध साधन	संलग्नता के विविध साधन
स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े पाँच प्रश्न	ज्ञान	**दृश्य माध्यम** स्वतंत्रता संग्राम से	**उत्तर प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत विकल्प**	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम समय रेखा परियोजना
1857 से 1947 तक के प्रमुख घटनाओं की समय रेखा	बोध	संबंधित कुछ घटना जैसे 1857 की क्रांति पर यूट्यूब से 3–5 मिनट की वीडियो	लिखित उत्तर या गूगल फॉर्म आधारित क्विज मौखिक प्रस्तुति चित्रों के माध्यम से	**(प्रोजेक्ट वर्क)** स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित ट्रेजर हंट या मैं कौन-सा स्थान हूँ या भारत के रिक्त मानचित्र पर
स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े स्थानों की पहचान	प्रयोग	क्लिप दिखाना **पाठ्य सामग्री** सरल भाषा में	स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े स्थान को दिखाना 1857 से 1947 तक की	स्थान की सूची बनाकर उन पर विद्यार्थियों से भरवाना (प्ले-वे विधि)
1857 की क्रांति बनाम 1942 भारत छोड़ो आंदोलन	विश्लेषण	विषय-वस्तु प्रदान करना, पावरप्वाइंट स्लाइड द्वारा प्रमुख	प्रमुख घटनाओं पर पोस्टर बनाना 1857 की क्रांति और	1857 की क्रांति से संबंधित क्रांतिकारियों के व्यक्तित्व पर भूमिका निर्वाह करवाना
किसी एक आंदोलन पर रचनात्मक प्रस्तुती	सृजनात्मकता	घटनाओं पर चित्र, अवधारणा मानचित्र (कॉन्सेप्ट मैप) दर्शाना	1942 भारत छोड़ो आंदोलन की तुलनात्मक तालिका प्रस्तुत करना	असहयोग आंदोलन से संबंधित कहानी लेखन

कक्षा में अपनी परियोजना और प्रेरणात्मक वीडियो क्लिप प्रस्तुत करना	प्रस्तुति कौशल	**श्रव्य सामग्री** ऑडियो क्लिप के माध्यम से इंकलाब जिंदाबाद नारे जैसे प्रसंग सुनाना **ग्राफिक प्रस्तुति** स्मार्ट बोर्ड पर तिथि संबंधित इंटरैक्टिव चार्ट दिखाना, विद्यार्थी से मानचित्र कार्य करना	1857 की क्रांति पर वाद-विवाद गतिविधि में भागीदारी 1857 की क्रांति से संबंधित एनीमेशन/ संबंधित पेंटिंग या ड्राइंग या कार्टून वीडियो बनाकर प्रस्तुत करना प्रमुख घटनाओं से संबंधित रोचक ऑडियो रिकॉर्डिंग प्रस्तुत करना	क्रांति और आंदोलन से संबंधित तिथि एवं लोगों पर प्रश्नोत्तरी खेल का आयोजन जब एक विद्यार्थी या समूह अपनी प्रस्तुति करें तो अन्य विद्यार्थी द्वारा प्रतिक्रिया देना (गूगल क्लासरूम) एन.सी.ई.आर.टी. या यूट्यूब चैनल से आजादी के दीवाने जैसे प्रेरणात्मक वीडियो दिखाना

तालिका 1 में रा.शै.अ.प्र.प. की कक्षा 8 की सामाजिक विज्ञान (इतिहास) की पाठ्यपुस्तक के पाठ्यक्रम के अनुसार, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रकरण पर यू.डी.एल. आधारित शैक्षिक मूल्यांकन का उदाहरण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है। इसमें यू.डी.एल. का अनुप्रयोग करके विभिन्न अधिगम शैलियों को समन्वित किया गया है, जिससे मूल्यांकन अधिक अर्थपूर्ण तथा प्रभावशाली बन गया है। यह प्रक्रिया विद्यार्थियों को अपनी समझ को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे उनकी अधिगम सहभागिता बढ़ती है। इक्कीसवीं सदी में विद्यार्थी अपनी सहभागी सक्रियता को विविध रूपों में प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनमें सृजनात्मकता, आत्मविश्वास, आलोचनात्मक चिंतन, संचार कौशल तथा जीवन कौशल जैसे कौशलों का विकास होता है, जो उनके सीखने को सकारात्मक दिशा प्रदान करता है। मूल्यांकन का यह दृष्टिकोण समावेशन को सशक्त रूप से प्रस्तुत करता है, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी की सक्रियता सहभागिता सुनिश्चित हो पाती है।

निष्कर्ष

कक्षा में विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन का आकलन करते समय अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं, जिनमें निम्न गुणवत्ता के परीक्षण तैयार करना, समावेशिता को बढ़ावा न देना, प्रौद्योगिकी का पर्याप्त उपयोग न करना, अप्रभावी मूल्यांकन, रूढ़िवादिता तथा सभी के लिए एक जैसी सामग्री प्रदान करना तथा मूल्यांकन के लिए विकल्प न प्रदान करना शामिल है। इन चुनौतियों के समाधान हेतु यू.डी.ए. के सिद्धांतों का वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली में उपयोग किया जा सकता है, जिससे मूल्यांकन को अधिक प्रभावशाली एवं समावेशी बनाया जा सके। इससे विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होगा। यू.डी.ए. के प्रयोग से वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली की चुनौतियों का बड़े ही आसानी से निराकरण किया जा सकता है। कक्षा में विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु भविष्य में यू.डी.ए. वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली की चुनौतियों को कम करने में निश्चित रूप से सहायक होगा।

संदर्भ

अरीक्कुझियिल, संतोष. 2021. इश्यूज एंड कंसर्न्स इन क्लासरूम असेसमेंट प्रैक्टिस. *एजुट्रेक्स*. 20(8) पृष्ठ संख्या 20–23. नीलकमल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लि., हैदराबाद. 2 अक्तूबर 2024 को https://educatorsjournal.org/issues/2021/august/classroom-assessment.pdf से प्राप्त किया गया.

अमरीन, ए., एल. और डी. सी. बर्लिनर. 2002. हाई-स्टेक्स टेस्टिंग एंड स्टूडेंट लर्निंग. एजुकेशन पॉलिसी एनालिसिस आर्काइव्स. 10(18). एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा, संयुक्त राज्य अमेरिका. अक्तूबर 2024 को https://doi.org/10.14507/epaa.v10n18.2002 से लिया गया है.

सेंटर फॉर एप्लाइड स्पेशल टेक्नोलॉजी. 2018. *यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग : गाइडलाइंस (संस्करण 2.2)*. वेकफील्ड, बोस्टन. 4 अक्तूबर 2024 को http://udlguidelines.cast.org से प्राप्त किया गया.

———. 2011. *यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग गाइडलाइंस वर्जन 2.0*. एमए:आथर. वेकफील्ड, बोस्टन. 17 मार्च, 2025 को http://udlguidelines.cast.org से प्राप्त किया गया.

किंग सीयर्स, पी. ई. 2014. इंट्रोडक्शन टू लर्निंग डिसएबिलिटी क्वॉर्टरली स्पेशल सीरीज ऑन यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग: पार्ट वन ऑफ टू. *लर्निंग डिसएबिलिटी क्वॉर्टरली*. 37(2). पृष्ठ संख्या 68–70. सेज पब्लिकेशन, संयुक्त राज्य अमेरिका. 5 अक्तूबर 2024 को DOI:10.1177/0731948714528337 से प्राप्त किया गया.

किजलिक, बॉब. 2012. मेजरमेंट, असेसमेंट एंड इवैल्युएशन इन एजुकेशन रॉबर्ट किजलिक एण्ड एसोसिएट्स, बॉका रेटन, फ्लोरिडा, यूनाइटेड स्टेट्स. 6 अक्तूबर 2024 को https://www.adprima.com/measurement.htm से प्राप्त किया गया.

गुप्ता, एस. पी. और अलका गुप्ता. 2018. *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन*. शारदा पुस्तक भवन, यू.पी.

टामलिसन, सी. ए. 2001. *हाउ टू डिफरेंशिएट इंस्ट्रक्शन इन मिक्स्ड एबिलिटी क्लासरूम्स (सेकंड एडिशन)*. अलेक्जेंड्रिया, वी.ए.: एसोसिएशन फॉर सुपरविजन एंड करिकुलम डेवलपमेंट (ए.एस.सी.डी.) यू.एस.ए. 5 अक्तूबर 2024 को https://rutamaestra.santillana.com.co/wp-content/uploads/2020/01/Classrooms-2nd-Edition-By-Carol-Ann-Tomlinson.pdf से प्राप्त किया गया है.

नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ ओपन स्कूलिंग. 2020. *समावेशी शिक्षा की स्थिति पर रिपोर्ट 2019–20*. एन.आई.ओ.एस., नई दिल्ली. 3 अक्तूबर 2024 https://nios.ac.in से प्राप्त किया गया.

फुलन, माइकल. 2015. *द न्यू मीनिंग ऑफ एजुकेशनल चेंज*. टीचर्स कॉलेज प्रेस, न्यूयॉर्क. 10 अक्तूबर 2024 को https://www.tcpress.com/the-new-meaning-of-educational-change-9780807756805 से प्राप्त किया गया.

बर्गस्टाहलर, एस. 2011. *इक्वल एक्सेस: यूनिवर्सल डिजाइन आफ स्टूडेंटस सर्विसेज*. यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन. सिएटल 6 अक्तूबर 2024 को www.uw.edu/doit/Brochurs/Acadmics/equal-access-ss.html से लिया गया है.

ब्लैक, पॉल और विलियम, डिलन. 1998. असेसमेंट एंड क्लासरूम्स लर्निंग. *असेसमेंट इन एजुकेशन: प्रिंसिपल्स, पॉलिसी एंड प्रैक्टिस*. वॉल्यूम 5(1). पृष्ठ संख्या 7–74. राउटलेज, यू.के. 8 अक्तूबर 2024 को DOI: 10.1080/0969595 से प्राप्त किया है.

मेयर, ए. और रोज, डेविड एच. 2005. *द यूनिवर्सली डिजाइंड क्लासरूम: एक्सेसिबल करिकुलम एंड डिजिटल टेक्नोलॉजीज*. हार्वर्ड एजुकेशन प्रेस, हार्वर्ड. 30 सितम्बर 2024 को https://eric.ed.gov/?id=ED568861 से प्राप्त किया गया.

मैकग्वायर, जे. एम. और स्कॉट, एस. एस. 2006. यूनिवर्सल डिजाइन फॉर इंस्ट्रक्शन: एक्सटेंडिंग द यूनिवर्सल डिजाइन पैराडाइम टू कॉलेज इंस्ट्रक्शन. *जर्नल ऑफ पोस्ट सेकेंडरी एजुकेशन एंड डिसएबिलिटी*. 19(2). पृष्ठ संख्या 124–134. *एसोसिएशन ऑन हायर एजुकेशन एंड डिसएबिलिटी*. 5 अक्तूबर 2024 को https://eric.ed.gov/?id=EJ844629 से लिया गया है.

यूनेस्को. 2020. ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट 2020: इन्क्लूजन एंड एजुकेशन–ऑल मीन्स ऑल, यूनेस्को पब्लिशिंग, 9 अक्तूबर 2024 को https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000373718 से प्राप्त किया गया है.

राव, कबिता., ओके, मिन वूक और ब्रायंट ब्रायन. 2014. ए रिव्यू ऑफ रिसर्च ऑन यूनिवर्सल डिजाइन एजुकेशनल मॉडल्स. *रिमीडियल एंड स्पेशल एजुकेशन*. वॉल्यूम 35(3). पृष्ठ 153–166. सेज पब्लिकेशन, भारत. 6 अक्तूबर 2024 को DOI:10.1177/0741932513518980 से प्राप्त किया गया.

रोज, डी.एच. और ए. मेयर. 2002. *टीचिंग एवरी स्टूडेंट इन द डिजिटल एज: यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग. एसोसिएशन फॉर सुपरविजन एंड करिकुलम डेवलपमेंट*, संयुक्त राज्य अमेरिका.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार. 9 अक्तूबर 2024 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_Hindi.pdf से प्राप्त किया गया.

रेड्डी, ए. और अन्य 2020. इनोवेटिव मेथडस ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग. आलोचना चक्र 9(6), 3567-3575, वेबफ्रेंड टेक्लोलॉजी, कलकत्ता. अक्तूबर 2024 को https://www.researchgate.net/publication/346489513_Innovative_Methods_of_Teaching_and_Learning से लिया गया है.

विगिंस, जी. 2012. सेवेन कीज टू इफेक्टिव फीडबैक एजुकेशनल लीडरशिप. 70. पृष्ठ 10–16. *एसोसिएशन फॉर सुपरविजन एंड करिकुलम डेवलपमेंट*, संयुक्त राज्य अमेरिका. 7 अक्तूबर 2024 को https://www.ascd.org/el/articles/seven-keys-to-effective-feedback से प्राप्त किया गया.

शर्मा, आर. ए. 2008. *शिक्षा मापन के मूल तत्व एवं सांख्यिकी*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

सेंट्रल इंस्टिटयूट ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग. 2024. इन्क्लूजन ऑफ स्टूडेंटस विद स्पेसिफिक लर्निंग डिसएबिलिटीज, ऑनलाइन ट्रेनिंग प्रोग्राम 14–18 अक्तूबर 2024. सी.आई.ई.टी.-एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली. 17 जून 2025 को https://www.ciet.ncert.gov.in/activity/issld24 से लिया गया है.

संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध
एक समीक्षात्मक विश्लेषण

विजय शर्मा*
शशि रंजन**

शिक्षक, विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं, ताकि वह अपने जीवन में सफल हो सकें, परंतु क्या केवल शिक्षा और बुद्धि के आधार पर विद्यार्थियों के सफल जीवन की कल्पना की जा सकती है? शोधार्थी को ऐसा लगता है कि वर्तमान परिस्थितियों में यह संभव नहीं है। आज की परिस्थिति में वही सफल है, जिसके पास बुद्धि के साथ संवेगात्मक बुद्धि भी है, जो विपरीत परिस्थितयों में भी सोच-विचार करके कार्य करता है, इसलिए संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक सफलता के क्षेत्र में शोध अध्ययन की आवश्यकता है। इस शोधपत्र में पूर्व में किए गए शोध अध्ययनों के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि की व्यापक समझ तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। समीक्षा के लिए पूर्व में किए गए कुल 58 शोध अध्ययनों को शामिल किया गया है, जिन्हें सामग्री विश्लेषण के लिए 6 अलग-अलग विषयों में वर्गीकृत किया गया है। इस शोधपत्र में विभिन्न शोधार्थियों के शोधपत्रों का अध्ययन किया गया तथा इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च कोटि की होती है। इस शोध अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि के विकास को शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा मानते हुए, शैक्षिक संस्थाओं में इसके प्रशिक्षण की आवश्यकता को उजागर किया गया है। इससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हो सकता है और उनकी समग्र विकास प्रक्रिया को भी बल मिल सकता है।

जीवन में किसी भी व्यक्ति को सफल होने के लिए उसे केवल शिक्षित होना ही आवश्यक नहीं है, बल्कि उसे बुद्धि के साथ-साथ संवेगात्मक बुद्धि का भी समायोजन करना पड़ेगा, ताकि वह व्यक्ति आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो सके। प्रश्न यह उठता है कि विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का विकास किस प्रकार होना चाहिए? तथा वे अपनी संवेगात्मक बुद्धि का प्रयोग उचित रूप से कैसे करें? क्योंकि संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि पर पड़ता है। अत: यह आवश्यक है कि शिक्षक, विद्यार्थियों में उन गुणों को विकसित करने का प्रयास करें, जो विद्यार्थियों को विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य के साथ-साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करें तथा यह तभी संभव होगा, जब

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 244 001
***सहायक आचार्य*, शिक्षा विभाग, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 244 001

विद्यार्थियों में अपने संवेगों को नियंत्रित करने की क्षमता विकसित होगी। किसी भी विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता के लिए सिर्फ उसकी बुद्धिलब्धि ही आवश्यक नहीं होती है, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डेनियल गोलमैन की प्रसिद्ध पुस्तक 'Emotional Intelligence: Why It Can Matters More Than IQ' में यह कहा गया है कि किसी भी व्यक्ति की सफलता के लिए बुद्धिलब्धि का सिर्फ 20 प्रतिशत ही योगदान है, जबकि संवेगात्मक बुद्धि का 80 प्रतिशत योगदान है। (गोलमैन, 1995) यदि विद्यार्थियों की सफलता में संवेगात्मक बुद्धि का 80 प्रतिशत योगदान है, तो इसे अनिवार्य रूप से विद्यालयी शिक्षा में सम्मिलित किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता का स्तर उच्च हो सके।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि स्वयं एवं दूसरों की भावनाओं अथवा संवेगों को व्यक्त करने, समझने तथा नियंत्रित करने की योग्यता है। प्रश्न यह है कि अत्यधिक संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति कम संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्तियों से किस प्रकार सफलता प्राप्त करने में भिन्न हैं? शिक्षक किस प्रकार विद्यार्थियों के संवेगों को नियंत्रित करके सही दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे? तथा संवेगात्मक बुद्धि के कौन-से घटकों का ज्ञान विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है? शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों को सही कार्य करने के लिए प्रेरित करना, उनके साथ सहयोग एवं मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते हुए उन्हें सही दिशा-निर्देश देना है। उन्हें केवल विषय से संबंधित जानकारी ही नहीं, बल्कि जीवन जीने के तरीके भी सिखाना है। शिक्षक, विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाली नकारात्मकता को आत्मविश्वास में परिवर्तित करने की शक्ति रखते हैं। वे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पहचानकर उन्हें सामाजिक कौशल या स्वयं के संबंध बनाना सिखाते हैं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से विद्यार्थियों की सफलता निश्चित नहीं होती है, बल्कि उसके लिए विद्यार्थियों को सांवेगिक बुद्धि की भी आवश्यकता है। (रुपन्दे, 2015) संवेगात्मक बुद्धि वाला व्यक्ति दूसरों के साथ संवाद करने, नेतृत्व करने तथा बातचीत करने में सक्षम होता है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के भावी जीवन की समृद्धि एवं संपन्नता के लिए अत्यंत आवश्यक है। गोलमैन (1995) ने संवेगात्मक बुद्धि की पाँच अलग-अलग क्षेत्रों में पहचान करते हुए उन्हें व्यक्ति की 25 विभिन्न संवेगात्मक क्षमताओं से जोड़ा है। ये क्षमताएँ जन्मजात न होकर अर्जित योग्यताएँ होती हैं, जो कि सही कार्य करने के लिए विकसित की जा सकती है। गोलमैन द्वारा प्रस्तुत संवेगात्मक बुद्धि के पाँच क्षेत्र— आत्म-जागरूकता या स्वयं की भावनाओं को समझना, स्व-नियमन या स्वयं के संवेगों का प्रबंध करना, स्व-अभिप्रेरणा या स्वयं को अभिप्रेरित करना, तदनुभूति या दूसरे के संवेगों को समझना या पहचानना, सामाजिक कौशल या स्वयं के संबंधों का प्रबंध करना है, जो विद्यार्थी इन क्षमताओं को अपने अंदर विकसित करने में सक्षम हो जाते हैं, वे निश्चित ही उच्च शैक्षिक सफलता को प्राप्त करते हैं। ठीक इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों में ये क्षमताएँ विकसित नहीं हो पाती हैं, वे जीवन भर संघर्षों में उलझे रह जाते हैं एवं उच्च शैक्षिक सफलता के क्षेत्र में पीछे रह जाते हैं। अत: विद्यार्थियों

की शैक्षिक सफलता के लिए केवल बुद्धिलब्धि ही नहीं, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि भी आवश्यक है। (सिंह टी. तथा सिंह आर, 2014)

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि, विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त उपलब्धि के स्तर का वह मूल्यांकन है, जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार, निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है। दूसरे शब्दों में, शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के किसी विषय विशेष में अर्जित की जाने वाली योग्यता का मापन है। दैनिक, मासिक एवं वार्षिक परीक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन किया जाता है। इससे यह भी जानकारी मिलती है कि विद्यार्थी किस प्रकार तैयारी करें कि वे उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त कर सकें। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक हैं, जैसे— संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक, आर्थिक स्तर, चिकित्सा, स्वास्थ्य, पारिवारिक वातावरण, मित्र, परिजनों की उम्मीदें, विद्यार्थी का स्वभाव, लोकप्रियता का स्तर आदि। साथ ही, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, तनाव को दूर करने, प्रभावी ढंग से संवाद करने, दूसरों के साथ सहानुभूति रखने, चुनौतियों का समाधान ढूँढने, सकारात्मक तरीकों से भावनाओं को पहचानने, समझने तथा नियंत्रित करने की क्षमता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

कुमार एवं कंशल (2018) के शोध अध्ययन 'किशोरावस्था के बालक-बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि पर माता-पिता के संबंधों के प्रभाव' से ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का संबंध सामाजिक बुद्धि से गहरा जुड़ा हुआ है। किसी व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि के प्रभावी उपयोग में उसकी व्यक्तिगत क्षमताएँ, जैसे— आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति एवं सामाजिक कौशल प्रमुख भूमिका निभाती हैं। यदि पारिवारिक वातावरण सहयोगात्मक, स्नेहपूर्ण तथा संवादशील हो तो यह संवेगात्मक विकास को सकारात्मक दिशा में प्रभावित करता है। इसके विपरीत तनावपूर्ण या अस्थिर पारिवारिक परिवेश किशोरों की संवेगात्मक समझ और प्रतिक्रिया प्रणाली में अवरोध उत्पन्न कर सकता है। अत: पारिवारिक और सामाजिक कारक मिलकर व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शर्मा एवं सराफ (2024) के शोध अध्ययन 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी समायोजन क्षमता एवं व्यावसायिक तनाव पर प्रभाव' से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि उनमें विद्यमान समायोजन क्षमता को बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाती है। मणिकंदन एवं कुमार (2017) के शोध अध्ययन 'ए स्टडी ऑन इमोशनल इंटेलिजेंस' से ज्ञात हुआ कि कार्यस्थल में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसी योग्यता है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं की पहचान, समझ तथा नियंत्रण करने में सक्षम होता है। विभिन्न संगठनों में कार्यरत व्यक्तियों के स्वभाव, क्षमताएँ तथा भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं, जो सामूहिक कार्य निष्पादन को प्रभावित कर सकती हैं। कई चयनकर्ता भर्ती प्रक्रिया

में ऐसे प्रश्न सम्मिलित करते हैं, जो उम्मीदवार की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा सामाजिक संवेदनशीलता का परीक्षण करते हैं, ताकि ऐसे प्रतिभागियों का चयन किया जा सके, जो कार्यस्थल पर संतुलन, सहानुभूति और नेतृत्व कौशल प्रदर्शित कर सकें। द्विवेदी एवं यादव (2024) के शोध अध्ययन "जनपद भदोही के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव" से यह ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक रूप से प्रभाव पड़ता है, जो कि विद्यार्थियों को संतोष एवं परीक्षा के दिनों में उन्हें बिना किसी भय के पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। सलीफु एवं मित्तल (2024) के शोध अध्ययन 'इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस— हाउ डज दी रिलेशनशिप वर्क अमंग प्री-सर्विस टीचर इन धना' से ज्ञात हुआ कि प्री-सर्विस शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य भी सार्थक सहसंबंध है। ओवान (2022) के शोध अध्ययन "सीनियर सेकंडरी विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर प्रभाव" से ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि के उच्च स्तर, औसत स्तर एवं निम्न स्तर के विद्यार्थियों ने अलग-अलग प्रश्नों को हल किया। उच्च स्तर के संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों ने 40 प्रश्न हल किए, औसत स्तर के संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों ने 21–29 प्रश्न हल किए जबकि निम्न स्तर के संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों ने 10–20 प्रश्न हल किए अर्थात विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का रसायन विषय में शैक्षिक सफलता के मध्य सार्थक अंतर ज्ञात किया गया। उसान एवं रोबेर्स (2023) के शोध अध्ययन "इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस— ए. सिस्टमेटिक रिव्यू एंड मेटा एनालिसिस" से ज्ञात हुआ कि विद्यालय स्तर पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों की स्थापना से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास तथा शैक्षिक निष्पादन में सकारात्मक सुधार संभव है।

शोध का औचित्य

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सबसे अधिक बल संज्ञानात्मक एवं गत्यात्मक आयामों के उद्देश्यों की प्राप्ति पर है। शिक्षक इसे पूरा करने के लिए ज्ञान एवं कौशल के आयामों को ध्यान में रखकर ही पाठ्य विषयों की योजना तैयार करते हैं, इसलिए नैतिक मूल्यों, चारित्रिक विकास, संवेग नियंत्रण आदि पर किसी का ध्यान नहीं जाता है, जिस कारण मनुष्य में मूल्यहीनता, हिंसा, द्वेष आदि प्रभावी होकर संवेदनहीनता को बढ़ा रहे हैं। अत: यह आवश्यक है कि संवेगात्मक बुद्धि के महत्व को समझा जाए तथा उससे संबंधित शोध अध्ययन किए जाएँ।

समस्या कथन

"संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध— एक समीक्षात्मक विश्लेषण"

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

संवेगात्मक बुद्धि— इस शोध अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि एक ऐसी क्षमता है, जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और प्रभावी रूप से व्यक्त करने में सक्षम होता है।

शैक्षिक उपलब्धि— इस शोध अध्ययन में शैक्षिक मनोविज्ञान का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति किस

प्रकार से सीखता है, किस प्रकार के कारक उसके सीखने को प्रभावित करते हैं। इस शोध अध्ययन में प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक, विद्यार्थियों द्वारा परीक्षाओं में प्राप्त अंक उनकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाते हैं।

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

1. इस शोध अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध विषय पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
2. इस शोध अध्ययन का उद्देश्य संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित साहित्य को एकत्रित करना है।
3. इस शोध अध्ययन का उद्देश्य संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध ज्ञात करना है।

शोध अध्ययन में सम्मिलित एवं बाहर करने हेतु मानदंड

यह शोध अध्ययन पूरी तरह से संवेगात्मक बुद्धि के शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंध पर आधारित है। इस शोध अध्ययन (वर्ष 2025) में विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय के किशोर विद्यार्थियों, बी.एड. विद्यार्थियों, उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों आदि को अध्ययन में सम्मिलित किया गया था।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन के लिए शोध साहित्य ऑनलाइन खोजा गया। इसमें पीएच.डी. शोध प्रबंध एवं जर्नल में (इंडियन एजुकेशनल रिव्यु, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च इन बिजनेस एंड सोशल साइंसेज, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थाट्स, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस एंड इनोवेटिव रिसर्च) प्रकाशित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोधपत्रों को शामिल किया गया। इस शोध अध्ययन के लिए साहित्य ऑनलाइन निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर लिया गया।

- इस शोध अध्ययन के लिए वर्ष 2013 से वर्ष 2024 तक के शोधपत्रों को शामिल किया गया।
- इस शोध अध्ययन के लिए केवल संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित प्रकाशित शोधपत्रों को सम्मिलित किया गया।
- सर्च की गई वेबसाइट— शोध गंगा, <http://sodhganga.com>, गूगल स्कॉलर <http://scholar.google.co.in>, एकेडेमियाएडू <http://academia.research.microsoft.com>, रिसर्चगेट <https://www.researchgate.net>

आँकड़ों का संकलन

साहित्य समावेशन एवं बहिष्करण के मानदंडों को ध्यान में रखते हुए, खोजे हुए साहित्य में से संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित 58 शोधपत्रों का चयन किया गया, जो शोधपत्र इस शोध अध्ययन के मानदंडो को पूरा नहीं करते थे, उन्हें हटा दिया गया था।

आँकड़ों का विश्लेषण

विषय, व्याख्या एवं परिणामों की पहचान के लिए खोजी हुई सामग्री की सावधानीपूर्वक जाँच की गई तथा प्रकरण विश्लेषण के आधार पर संबंधित सामग्री को अलग-अलग समूह में श्रेणीबद्ध करके

उसका विश्लेषण एवं संश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किया गया।

तालिका 1— विषयवस्तु के आधार पर समीक्षित अध्ययनों की संख्या

क्र. सं.	संबंधित अध्ययन	संख्या
1.	प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि	10
2.	माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि	18
3.	महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि	10
4.	विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि	10
5.	विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि तथा प्रदर्शन (परफॉर्मेंस)	10
6.	**कुल**	**58**

तालिका 2— समीक्षित अध्ययनों की वर्षवार विवरण सूची

वर्ष	अध्ययनों की संख्या	वर्ष	अध्ययनों की संख्या
2013	4	2020	7
2014	7	2021	4
2015	4	2022	8
2016	4	2023	2
2017	5	2024	4
2018	2	–	–
2019	7	**कुल**	**58**

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित बहुत से शोध अध्ययन उपलब्ध हैं, लेकिन वर्तमान समीक्षा केवल विद्यार्थियों के कक्षा स्तर को ध्यान में रखकर की गई है। वर्तमान शोध अध्ययनों के वर्षवार विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 58 शोध अध्ययनों में से केवल 24 शोध अध्ययन वर्ष 2013 से वर्ष 2017 के दौरान किए गए, जबकि 28 शोध अध्ययन वर्ष 2018 से 2022 तक किए गए तथा पिछले दो वर्षों (2023–2024) में केवल 6 शोध अध्ययन किए गए हैं, इससे ज्ञात होता है कि इस विषय पर निरंतर शोध अध्ययन किए जा रहे हैं और संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्र में शोधार्थियों की रुचि बढ़ रही है।

1. प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि

इस खंड में संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबधित 10 शोध अध्ययनों को शामिल किया गया, जो विदेश के विद्यालयों के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों से संबंधित थे। ये शोध अध्ययन ईरान के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किए गए थे, जिसका उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों की जाँच करना था। शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि तथा उपलब्धि परीक्षणों पर विद्यार्थियों के अंकों के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं था (अजीमिफर, 2013; जिरक और अहमदियान, 2015), परंतु पाकिस्तानी शोध अध्ययन में यह ज्ञात हुआ कि कक्षा 4 से 8 तक के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि तथा संवेगात्मक बुद्धिमत्ता में एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध है। ये शोध अध्ययन शिक्षाविदों, शैक्षिक मनोवैज्ञानिकों, विद्यालयी परामर्शदाताओं एवं अभिभावकों के लिए संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध को समझने में बहुत सहायक हो सकते हैं, साथ ही, पाकिस्तान से संबंधित सांस्कृतिक विशिष्ट

मुद्दों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। साथ ही अन्य शोध में ई.एल.टी. ने भी प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता प्रदर्शन में बहुत वृद्धि की और यह महत्वपूर्ण वृद्धि स्थायी रूप से बनी रही। (मलिक एवं शुजा, 2013; अबकेनर 2015; कोसकुन एवं ओकसज, 2019; संदोवल एवं रिको, 2020) अन्य शोध अध्ययन जो मलेशिया के प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में आठ ई.क्यू. के योगदान की सीमा की पहचान करने के लिए किया गया था, उनके परिणामों से ज्ञात हुआ कि प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में ई.क्यू. का स्तर 73.74 प्रतिशत था। उच्चतम प्रदर्शन के अनुसार ई.क्यू. की आध्यात्मिकता (88.60 प्रतिशत) थी तथा उसके बाद आत्म-जागरूकता और सहानुभूति (77.69 प्रतिशत), आत्म-प्रेरणा (77.22 प्रतिशत), परिपक्वता (72.58 प्रतिशत), सामाजिक कौशल (69.50 प्रतिशत), आत्मविश्वास (67.68 प्रतिशत) तथा आत्म-नियमन (63.42 प्रतिशत) थे। इस प्रकार, आठ क्षेत्रों (आत्म-प्रेरणा, आत्म-नियमन, आध्यात्मिकता, आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और आत्मविश्वास) में से छह क्षेत्र विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण रूप से योगदान करते हैं। इन निष्कर्षों का उपयोग शिक्षकों, परामर्शदाताओं, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों तथा बाल विकास से जुड़े लोगों द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में विद्यार्थियों की उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिए संवेगात्मक बुद्धि (ई.क्यू.) संबंधी कार्यक्रम विकसित करने में किया जा सकता है। (अहमद एवं ईशाक, 2018) साथ ही, चीन में हुए शोध अध्ययन, जिनका उद्देश्य संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा चीन में अरबी बुनियादी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंधों की जाँच करना था, से ज्ञात हुआ कि जेंडर, चर के अनुसार विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर ज्ञात किया गया था, लेकिन तुलनात्मक रूप से कक्षा चार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक संबंध ज्ञात किया गया। (अलकादरी एवं जाहों, 2021) यह शोध अध्ययन स्पेन के प्राथमिक विद्यालय (पी.एस.) के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (ई.आई.) एवं अध्ययन के प्रति प्रेरणा के स्तर के साथ-साथ दोनों चरों के बीच संबंधों की जानकारी प्रदान करता है। शोध परिणाम सभी कारकों (आत्म-विवेक, आत्म-नियंत्रण, भावनात्मक उपयोग, सहानुभूति और सामाजिक कौशल) में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य स्तर से उच्च स्तर तथा शैक्षिक प्रेरणा के अच्छे स्तर को बनाए रखते हैं, इसलिए वे दोनों चरों के बीच सकारात्मक और महत्वपूर्ण सहसंबंध को दर्शाते हैं। लड़कियों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता सूचकांक अधिक होता है और जेंडर के संदर्भ में शैक्षिक प्रेरणा में कोई अंतर नहीं होता है। इन परिणामों के आधार पर, ऐसे कार्यक्रमों को लागू करने का सुझाव दिया गया है, जो विद्यार्थियों के मनो-विकासात्मक विकास में संवेगात्मक क्षमताओं के महत्व तथा शैक्षिक प्रेरणा के साथ उनके संबंध को देखते हुए, उन्हें मजबूत करते हैं। (एरियस एवं कारबालों, 2022) साथ ही, इथोपिया में हुए शोध का अध्ययन किया गया, जिसका उद्देश्य साउथ इथोपिया के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (ई.आई.) तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध

ज्ञात करना था। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि उच्च उपलब्धि वाले साथियों की तुलना में आत्म-नियमन, आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और प्रेरणा ने शैक्षिक निष्पादन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त, जनसांख्यिकीय कारकों ने विद्यार्थियों के प्रदर्शन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को पोषित करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है। शिक्षकों, अभिभावकों के बीच जागरूकता बढ़ाना और विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाने के लिए रणनीतियों को लागू करना, आत्म-नियमन, आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और प्रेरणा पर बल देना शामिल है। ये शोध अध्ययन शैक्षिक उपलब्धि में ई.क्यू. के महत्व को रेखांकित करते हैं तथा शैक्षिक व्यवसायियों एवं अभिभावकों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं तथा बच्चों के समग्र विकास के समर्थन के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता पर बल देते हैं। (हैरट एवं मुलैटा, 2024) इन शोध अध्ययनों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच अलग-अलग परिणाम प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र में शोध की जटिलता को दर्शाते हैं। इस प्रकार उच्च और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के बीच संवेगात्मक बुद्धिमत्ता में अंतर था तथा इसे एक महत्वपूर्ण सहसंबंध माना गया कि जिन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता उच्च होती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर होती है। दूसरा, रचनात्मक सोच और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध था। जबकि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं था। यह दर्शाता है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध अलग-अलग परिस्थितियों में बदल सकता है। इसका कारण यह हो सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं बुद्धि दोनों अलग-अलग मनोवैज्ञानिक चर हैं। बुद्धि ज्ञानात्मक पक्ष से संबंधित है और संवेगात्मक बुद्धि संवेग एवं भावनाओं से संबंधित है। अत: दोनों स्वतंत्र रूप से अपना काम करती हैं। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में हम विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण किए गए ज्ञान का मूल्यांकन करते हैं, इसलिए शैक्षिक उपलब्धि का संबंध बुद्धि के साथ स्थापित होता है, जबकि संवेगात्मक बुद्धि का संबंध भावनात्मक पक्ष से है, इसलिए इसका संबंध शैक्षिक उपलब्धि के साथ नहीं देखा जाता है। साथ ही, संवेगात्मक अधिगम प्रशिक्षण प्रभाव को भी देखा गया, जिनसे विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई और यह स्थायी रही। इससे यह ज्ञात हुआ कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों की मानसिक तथा शैक्षिक प्रेरणा को मजबूत करने में सहायक हो सकते हैं। अत: शैक्षिक सफलता को बढ़ावा देने के लिए संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को प्राथमिकता देनी चाहिए और ऐसे कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए, जो विद्यार्थियों के मानसिक तथा शैक्षिक विकास में सहायता कर सकें।

2. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि

इस खंड में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित 18 शोध अध्ययनों को शामिल किया गया। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तनाव को दूर करने, प्रभावी ढंग से संवाद करने, दूसरों के साथ सहानुभूति रखने, चुनौतियों पर काबू पाने और संघर्ष को शांत

करने के लिए सकारात्मक तरीकों से भावनाओं को पहचानने, उपयोग करने, समझने और प्रतिबंधित करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धि एवं तनाव का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध ज्ञात किया गया। शोधार्थी ने ज्ञात किया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता तथा संवेगात्मक बुद्धि के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है। (जैनाबादी एवं अन्य, 2015; शर्मा एवं चतुर्वेदी, 2017) साथ ही, पुरकर एवं अग्रवाल के शोध अध्ययन में ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति में अपनी भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता होती है। उसके पास आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन जैसे कौशल होते हैं, जिसके आधार पर वह शैक्षिक सफलता प्राप्त करता है। क्या यह संभव है कि एक आत्म-नियंत्रित व्यक्ति एक उच्च बुद्धि वाले व्यक्ति से अधिक सफल होता है? इस प्रश्न के उत्तर में शोधार्थी ने ज्ञात किया कि जो व्यक्ति आत्म-जागरूक, आत्मविश्वास तथा संवेगात्मक रूप से मजबूत होता है, उसका कार्य प्रदर्शन उसे उच्च सफलता के शिखर पर पहुँचाता है। उसके संघर्ष प्रबंधन का उसके कार्य प्रदर्शन के साथ सकारात्मक संबंध ज्ञात किया गया। इसके साथ ही, विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के आयाम का भी उनकी शैक्षिक सफलता की आवश्यकता पर भी जेंडर एवं संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव दिखाई दिया। (पुरकर एवं अग्रवाल, 2017) साथ ही, यह प्रश्न उठता है कि क्या संवेगात्मक बुद्धि के सभी तत्वों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक संबंध है? संवेगात्मक बुद्धि के पाँच तत्व आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति, सामाजिक कौशल ऐसे तत्व हैं, जो व्यक्ति को स्वयं के नकारात्मक आवेगों को नियंत्रित कर एक स्वस्थ जीवन शैली का विकास करने में सहायता करते हैं। संज्ञानात्मक बुद्धि हमारे जीवन के एक छोटे से अनुपात का प्रतिनिधित्व करती है, परंतु संवेगात्मक बुद्धि का एक-एक तत्व व्यक्ति की सफलता में अपनी भूमिका निभाता है। संवेगात्मक बुद्धि के प्रत्येक तत्व का शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंध है। संवेगात्मक बुद्धि का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। (सिंह एवं श्रीवास्तव, 2021) कुछ अन्य शोध अध्ययनों में यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी चिंताजनक स्थितियों में भी उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करते हैं? क्या संवेगात्मक बुद्धि एवं तनाव के मध्य भी कोई संबंध है, जो शैक्षिक सफलता को प्रभावित करता हो? संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति नई चीजों को आजमाने, जोखिम उठाने एवं बिना किसी डर के नई चुनौतियों का सामना करने की अधिक संभावना रखता है तथा चिंताजनक स्थितियों में भी अपनी भावनाओं का सही प्रबंधन करके अपने कार्य को पूर्ण करता है। शोधार्थी ने शोधपत्रों के अध्ययन में ज्ञात किया कि संवेगात्मक बुद्धि एवं तनाव के मध्य आंशिक धनात्मक संबंध है, लेकिन शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि एवं तनाव का कोई प्रभाव नहीं है। (चौहन एवं टिन्ना, 2022; नामा एवं सोलंकी, 2023) क्या संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति स्वयं को खुश रख लेते हैं? जिन व्यक्तियों में संवेगात्मक बुद्धि पाई जाती है, वे स्थिति को पहचानकर, समझकर अपने संवेगों पर नियंत्रण रख कर कार्य करते हैं। वे आसानी से क्रोधित नहीं होते

हैं। वे दूसरे व्यक्तियों के संवेगों को समझकर बहुत सोच-विचार कर बातचीत करते हैं तथा सफलता और सुखी जीवन के साथ पदोन्नति भी प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को सभी से प्रेम प्राप्त होता है तथा यह भी समाज को अपना पूर्ण सहयोग देते हैं। दूसरे व्यक्तियों के मनोबल को भी ऊँचा उठाने में मदद करते हैं। बिना संवेगात्मक बुद्धि के शैक्षिक सफलता प्राप्त नहीं होती और विद्यार्थी का व्यक्तित्व भी कमबल दिखाई देता है। संवेगात्मक बुद्धि किसी भी व्यक्ति की खुशी एवं शैक्षिक सफलता पर सकरात्मक रूप से प्रभाव डालती है। (भदौरिया, 2013; सिंह, वर्मा एवं सिंह, 2014) अब प्रश्न यह है कि सफलता, खुशी एवं आजीवन उपलब्धियों के लिए वास्तव में क्या आवश्यक है? संवेगात्मक बुद्धि या बुद्धि? जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए तो संवेगात्मक बुद्धि ही आवश्यक है, क्योंकि बुद्धि से सिर्फ विषय संबंधित ज्ञान प्राप्त हो सकता है, परंतु संवेगात्मक बुद्धि ऐसी भावनाओं को पहचानने में मदद करती है, जो किसी विशिष्ट समस्या से संबंधित नहीं होती तथा उन्हें अंतिम परिणाम पर प्रभाव डालने से रोकती है। सफलता, चरित्र, खुशी एवं शैक्षिक उपलब्धियों के लिए जो चीज वास्तव में आवश्यक है, वह है संवेगात्मक कौशलों का एक निश्चित समूह जिसका शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक सहसंबंध रखता है। शोधपत्रों के अध्ययन से शोधार्थी ने ज्ञात किया कि संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सहसंबंध है। (द्विवेदी एवं चौहान, 2023; सिंह एवं गोस्वामी, 2024) संवेगात्मक बुद्धि के बिना शैक्षिक उपलब्धि के उच्च स्तर की भविष्यवाणी करना संभव नहीं है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के विद्यालय, कार्यस्थल एवं जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं क्षेत्रों में उनकी सहायता कर सकती है। संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान लोग अपने द्वारा किए गए हर कार्य में सफल होने कि संभावना रखते हैं। अत: संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। (कुमार, 2020; मुशाहिद एवं मुन्तजिन, 2019) संवेगात्मक बुद्धि, विद्यार्थियों के जीवन में कुछ अच्छा सीखने में उपयोगी सिद्ध हुई है। विद्यालय में सीखने के प्रतिफल दर्शाते हैं कि विद्यार्थी आध्यात्मिक बन रहे हैं, वे सीखने और भावनाओं को प्रबंधित करने में सक्षम हो रहे हैं। (दुले, 2022) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निर्धारण करने में संवेगात्मक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। (रानी, 2022; शर्मा 2023) ये शोध अध्ययन संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध को उजागर करते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि आत्म-जागरूकता, आत्मविश्वास एवं संवेगात्मक रूप से दृढ़ विद्यार्थी अधिक शैक्षिक उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं तथा संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के मानसिक और शैक्षिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही, यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं ज्ञात किया गया, जो यह संकेत करता है कि संवेगात्मक बुद्धि का विकास शैक्षिक सफलता को प्रभावित करता है तथा तनाव जैसी समस्याएँ इसके प्रभाव को कम नहीं करती। अतः संवेगात्मक बुद्धि का पोषण उनकी शैक्षिक सफलता में एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है।

3. महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि

इस खंड में महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित 10 शोध अध्ययनों को शामिल किया गया है, जिनमें कुछ शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि हमारे दैनिक जीवन के कई अलग-अलग पहलुओं को प्रभावित करती है। संवेगात्मक योग्यताएँ, शैक्षिक उपलब्धि सूचकांकों से सकारात्मक रूप से संबंधित पाई गई। विद्यार्थियों के विकास में संवेगात्मक योग्यताओं का कितना महत्व है? इसके सकारात्मक संकेत मिले हैं। (लैसियानो एवं कर्सी, 2014; मोहजन और हसन, 2013) संवेगात्मक बुद्धि वाला व्यक्ति निश्चित रूप से शैक्षिक सफलता को प्राप्त करता है, क्योंकि वह अपने संवेगों को भली-भाँति नियंत्रित करना सीख चुका होता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अपने संवेगों पर नियंत्रण खो देते हैं, वे जीवन भर संघर्षों से ही जूझते रहते हैं एवं शैक्षिक सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं। अत: संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। साथ ही, व्यक्ति की भावनाओं तथा उनसे युक्त संवेगात्मक घटकों का भी विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण योगदान है। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि संवेगात्मक बुद्धि शैक्षिक सफलता से सकारात्मक रूप से संबंधित है। (सिंह एवं सिंह, 2014; रमेश एवं थावराज, तिवारी, 2016; अल्जेब्रिन, 2024) साथ ही, गुजरात जिले के बी.एड. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का रचनात्मक चिंतन एवं शैक्षिक उपलब्धि के साथ अध्ययन किया गया, तो यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध ज्ञात नहीं किया गया, लेकिन रचनात्मक चिंतन एवं शैक्षिक उपलब्धि दोनों के मध्य धनात्मक सार्थक संबंध ज्ञात किया गया। (मोरे, 2017) जोशी के शोध का उद्देश्य भारत के एन.सी.आर. में एम.बी.ए. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के बीच संबंध की पहचान करना था। शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शैक्षिक उपलब्धि तथा संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न घटकों के बीच सकारात्मक सहसंबंध है। सकारात्मक सहसंबंध दर्शाते हैं कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि भावनाओं पर उच्च नियंत्रण, भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता, दूसरों के प्रति सहानुभूति, निर्णय लेने में भावनाओं का उपयोग और दूसरों के साथ खुशी साझा करने से संबंधित है, जबकि जो लोग दूसरों के साथ क्रोध, दुख एवं किसी भी अन्य नकारात्मक भावनाओं को व्यक्त करते हैं, इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। (जोशी, 2020) बैरल एवं बाकीरा के शोध अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर तथा शैक्षिक निष्पादन स्कोर की तुलना करना और विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर व शैक्षिक निष्पादन स्कोर के बीच संबंधों की जाँच करना था। शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि लगभग 6 प्रतिशत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर उच्च थे तथा 94 प्रतिशत के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर औसत से ऊपर थे। इस शोध अध्ययन में लड़के और लड़कियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर ज्ञात नहीं किया गया (बैरल

एवं बाकीरा, 2021) जिन विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि होती है, वे अपनी भावनाओं को सही तरीके से संभालना जानते हैं। वे तनावपूर्ण स्थितियों में भी शांत रहते हैं, अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं और दूसरों के साथ सकारात्मक संबंध बनाते हैं। यह सभी बातें उनकी शैक्षिक सफलता में मदद करती हैं। इसके विपरीत, जो लोग अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाते, वे पढ़ाई तथा जीवन के अन्य संघर्षों में फँसे रहते हैं। उनका गुस्सा, उदासी या नकारात्मक भावनाएँ उनके प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं और शैक्षिक सफलता की राह में रुकावट बनती हैं, जो लोग अपनी भावनाओं को सकारात्मक रूप से नियंत्रित करते हैं एवं उनका सही उपयोग करते हैं। वे न केवल बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं, बल्कि जीवन में भी अधिक सफल होते हैं।

4. विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि

इस खंड में विश्विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक सफलता से संबंधित 10 शोधपत्रों का अध्ययन किया गया है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में विद्यार्थियों तथा युवाओं की मदद करने से उनकी संवेगात्मक क्षमता में सुधार हो सकता है, मानसिक बीमारी कम हो सकती है और उनके जीवन की गुणवत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हो सकता है। (फकोरिहाजियार, 2014) अन्य शोधपत्रों से भी ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि केवल बुद्धि के संज्ञानात्मक और वैचारिक पहलुओं पर निर्भर नहीं करती है, बल्कि यह किसी व्यक्ति संवेगात्मक क्षमताओं से अधिक प्रभावित होती है। संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि एक-दूसरे से धनात्मक रूप से जुड़ी हुई हैं। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले युवा अपने शैक्षिक निष्पादन में उच्च स्तर को प्राप्त करते हैं तथा जीवन के लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। (बैनेट, एवं रिमावी एवं सडरोलिस 2014; त्यागी एवं गौतम, 2017; अनवर एवं जनउल्लाह, 2019; अहमद, अली एवं तारिक, 2019; हालिमी एवं अलशामिरी, 2020; रानी महमूद एवं तुरी 2020; मार्टिनेज, 2021) इस अध्ययन का उद्देश्य शंघाई विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, सीखने की प्रेरणा और उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर आत्म-प्रभावकारिता के प्रभाव का पता लगाना था। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता ने उनकी शैक्षिक उपलब्धि को सीधे प्रभावित नहीं किया, फिर भी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनके सीखने की प्रेरणा पर सकारात्मक प्रभाव हुआ है। (चेंगचांग, 2022) जब युवा अपनी भावनाओं को पहचान कर सीखते हैं, तो वे अधिक आत्मविश्वासी बनते हैं, जिससे चिंता और अवसाद जैसी मानसिक समस्याओं में कमी आती है। उनके जीवन की गुणवत्ता और शैक्षिक उपलब्धि में सुधार होता है। संवेगात्मक बुद्धि न केवल कार्य निष्पादन से संबंधित हैं, बल्कि उसका सीधा संबंध शैक्षिक उपलब्धि एवं लक्ष्य प्राप्ति से है। संवेगात्मक बुद्धि का विद्यार्थियों के कार्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है, जो विद्यार्थियों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सहायक है।

5. विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक निष्पादन

इस खंड में विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक सफलता से संबंधित

10 शोधपत्रों का अध्ययन किया गया है। इस शोध अध्ययन में किसी व्यक्ति की सफलता पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव की जाँच की गई तथा कैरागा स्टेट यूनिवर्सिटी के तृतीयक संकाय के शिक्षकों के शिक्षण प्रदर्शन की जाँच की गई। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का सफल शिक्षण प्रदर्शन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, जिसका अर्थ है कि भावनाएँ विशेष रूप से शैक्षिक, बौद्धिक विकास और अन्य क्षेत्रों में किसी व्यक्ति की सफलता को प्रभावित करती है। इस शोध अध्ययन ने शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा उनकी आत्म-प्रभावकारिता के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध दर्शाया। इसके अतिरिक्त, निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा उनके शिक्षण अनुभव के वर्षों के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध था, जो कि यह दर्शाता है कि अधिक अनुभवी शिक्षक अपने संवेगात्मक अनुभवों से अपने कम अनुभवी सहयोगियों को लाभान्वित कर सकते हैं। (बेहशाद एवं अमिरियन, 2016) एक अन्य शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि सांवेगिक आत्म-जागरूकता, आत्मविश्वास, उपलब्धि और संघर्ष प्रबंधन का शिक्षक के कार्य निष्पादन के साथ सकारात्मक संबंध हैं तथा शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के सभी तत्वों का उसके शैक्षिक निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। (हक उल असर एवं हसन 2017; सोलंकी, 2019; कोरडेरों, 2020; करीम एवं नैयर, 2022; रहमान एवं युसूफ, 2024; कुदाह, 2024) इस शोध का उद्देश्य पंजाब, पाकिस्तान में संवेगात्मक बुद्धि तथा विश्वविद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंध का पता लगाना था। इसके निष्कर्ष से यह ज्ञात हुआ है कि शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के साथ सकारात्मक लेकिन मध्यम संबंध है। (शहजाद, रसूल एवं अरशद, 2020) शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का विद्यार्थियों की प्रेरणा तथा सीखने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षक जब अपनी और विद्यार्थियों की भावनाओं को समझते एवं उन्हें प्रबंधित करते हैं, तो वे बेहतर तरीके से विद्यार्थियों को प्रेरित कर पाते हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संबंध में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी शिक्षा के दौरान कौशलों को बढ़ावा देकर सामाजिक तथा भावनात्मक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है। यह शिक्षा नीति विद्यालय की संरचना 10+2 से बदलकर 5+3+3+4 की अनुशंसा करती है। इस प्रकार 3 से 18 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों को शामिल किया जाता है। इस संरचना में नए शैक्षिक कौशल और पाठ्यक्रम शामिल हैं। इसमें 3 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) में शामिल किया गया है। इससे समग्र शिक्षा तथा विकास को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस प्रकार ई.सी.सी.ई. शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास प्राप्त करने में सहयोग करती है। यह बच्चों को सामाजिक-संवेगात्मक एवं नैतिक रूप से विकसित करने में भी मदद करती है। इससे बच्चों की प्रारंभिक भाषा तथा संचार में भी सुधार होता

है। यह सब बच्चों में संवेगात्मक क्षमता विकसित करने में योगदान देगा। चूँकि शिक्षा विभिन्न शैक्षिक और पाठ्यचर्या द्वारा प्रदान की जाती है, इसलिए यह विद्यार्थियों को विषयों की वास्तविक समझ की ओर ले जाती है और विद्यार्थियों की रटने की आदत को खत्म करती है। यह विद्यार्थियों को न केवल संज्ञानात्मक रूप से विकसित करने के लिए शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद करती है, बल्कि उनके चरित्र को भी विकसित करती है, जिससे उन्हें समग्र तथा सर्वांगीण व्यक्ति में बदल दिया जाता है। चूँकि यह पैटर्न विद्यार्थियों के समग्र विकास को दर्शाता है, जिसमें सामाजिक एवं भावनात्मक विकास शामिल है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह संवेगात्मक विकास करने में सहयोग करती है। विषयों के चयन में लचीलेपन की उपलब्धता के कारण विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार, स्वतंत्र रूप से विषयों का चयन कर सकते हैं। इससे वे अपने कौशल के अनुसार, अधिक सीख पाएँगे और अधिक विकसित हो पाएँगे। यह उन्हें तनाव से दूर रखेगा और इस प्रकार उन्हें भावनात्मक रूप से विकसित करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सामाजिक भावनात्मक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करती है और इसके व्यावहारिक महत्व पर बल देती है। यह शिक्षकों को प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने, तनाव की पहचान करने तथा एक सकारात्मक कक्षा वातावरण के लिए प्रशिक्षित करने पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रत्येक विद्यालय में काउंसलर या मेंटल हेल्थ गाइड की व्यवस्था पर बल देती है ताकि विद्यार्थियों की संवेगात्मक समस्याओं को समय पर पहचान कर उन्हें उचित मार्ग दर्शन दिया जा सके। विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट आधारित कार्य एवं समूह में कार्य करने के अवसर देकर, उनके अंदर करुणा, सहयोग, सामूहिक कार्य करने के कौशलों का विकास करती है। साथ ही, उन्हें संवेगात्मक रूप से मजबूत बनाने पर बल देती है। पाठ्यक्रम में कला, खेल, नृत्य, योग, संगीत जैसे विषयों को भी सम्मिलित किया गया है, क्योंकि यह सभी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के भीतर भावनाओं को समझने तथा उन्हें अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करती है। यह मूल्यांकन प्रणाली को भी ज्ञान आधारित प्रणाली से 360° प्रणाली में परवर्तित करने पर बल देती है, जिसमें आत्म-मूल्यांकन, सहपाठी मूल्यांकन और शिक्षक मूल्यांकन शामिल किया जाएगा।

निष्कर्ष

संवेगात्मक बुद्धि किसी भी व्यक्ति के जीवन जीने के तरीके में सुधार तथा उसे एक उत्तम व्यक्ति बनाने का कार्य करती है। संवेगात्मक बुद्धि के समर्थकों का कहना है कि संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा स्वयं एवं दूसरों की भावनाओं को समझना, उनका आकलन करना और उनका प्रबंधन करना, एक सफल जीवन जीने का सूत्र है। इस शोध अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि संवेगात्मक बुद्धि वाला व्यक्ति दूसरों के साथ संवाद करने, नेतृत्व करने तथा बातचीत करने में सक्षम होता है। शिक्षण-अधिगम से विद्यार्थियों की सफलता निश्चित नहीं होती है। उसके लिए विद्यार्थियों को सांवेगिक बुद्धि की भी आवश्यकता है। संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक बुद्धि दोनों ही व्यक्ति की शैक्षिक सफलता के लिए आवश्यक है। संवेगात्मक बुद्धि के प्रत्येक तत्व का शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंध है।

संवेगात्मक बुद्धि का संबंध प्रत्येक स्तर पर, जैसे—प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ पाया गया है। संवेगात्मक बुद्धि शिक्षकों एवं उनकी कार्य कुशलता को भी निश्चित तौर पर प्रभावित करती है। वहाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता निम्न स्तर की पाई गई तथा शिक्षकों को भी कक्षा प्रबंधन में कठिनाई का अनुभव हुआ। जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए संवेगात्मक बुद्धि आवश्यक है, क्योंकि बुद्धि से सिर्फ विषय संबंधित ज्ञान प्राप्त हो सकता है, परंतु संवेगात्मक बुद्धि ऐसी भावनाओं को पहचानने में मदद करती है, जो किसी विशिष्ट समस्या से संबंधित होती है तथा उन्हें अंतिम परिणाम पर प्रभाव डालने से रोकती है।

शैक्षिक निहितार्थ

संवेगात्मक बुद्धि जिन लोगों में अधिक होती है, वे शिक्षा एवं व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में उच्च प्रदर्शन करते हैं। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता में बुद्धि विद्यार्थियों के समग्र विकास में एक निवेश है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे आगे आने वाली चुनौतियों एवं अवसरों के लिए अच्छी तरह से तैयार होते हैं। संवेगात्मक बुद्धि के माध्यम से व्यक्ति अपनी वास्तविक क्षमता को पहचान सकता है। यह व्यक्ति की रचनात्मक एवं नेतृत्व क्षमता को बढ़ा सकती है। इसके लिए विद्यार्थियों को कक्षा में सीखने के लिए अनुकूल एवं सुरक्षित वातावरण प्रदान करना चाहिए। विद्यालयी क्रियाकलाप में विद्यार्थियों के सक्रिय प्रतिभाग को बढ़ावा देकर उनके अंदर संवेगात्मक बुद्धि को विकसित कर उच्च शैक्षिक निष्पादन संभव है।

शोधार्थी के संबंध में— इस शोध अध्ययन से शोधार्थी को यह समझने में सहायता मिलती है कि संवेगात्मक क्षमताएँ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को कैसे प्रभावित करती हैं। इससे वे अपने शोध अध्ययन की दिशा को स्पष्ट कर पाता है तथा सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान अर्जित करता है। पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विश्लेषण कर शोधार्थी उपयुक्त शोध पद्धति, उपकरण और डेटा विश्लेषण के तरीकों का चयन कर सकता है। साथ ही, उसे शोध में नवीन दृष्टिकोण अपनाने, शोध प्रश्नों को सुदृढ़ करने एवं निष्कर्षों को समाजोपयोगी बनाने में भी सहायता मिलती है।

शिक्षक के संबंध में— यह शोध अध्ययन शिक्षक को विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने, सहानुभूति विकसित करने और कक्षा प्रबंधन को प्रभावी बनाने में सहायता प्रदान करेगा। शिक्षक को यह जानने में मदद करते हैं कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता कैसे सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। इससे वे शिक्षा को केवल ज्ञान हस्तांतरण नहीं, बल्कि संवेगात्मक विकास का माध्यम भी बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षक अपने तनाव, संघर्ष और पेशेवर चुनौतियों को बेहतर ढंग से संभालना सीखते हैं, जिससे वे अधिक संवेदनशील, प्रेरणादायक एवं प्रभावी शिक्षक बन पाते हैं।

नीति निर्माताओं के संबंध में— इस शोध अध्ययन से नीति निर्माताओं को यह समझने में सहायता मिलेगी कि शिक्षा प्रणाली में संवेगात्मक विकास को कैसे प्रभावी रूप से शामिल किया जा सकता है। इससे वे ऐसी नीतियाँ बना सकते हैं, जो केवल शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं, बल्कि विद्यार्थियों

के समग्र विकास पर केंद्रित हों। उन्हें विद्यालयी पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण तथा मूल्य आधारित शिक्षा को पुन: संरचित करने के सुझाव देता है।

सुझाव

संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव बुद्धिलब्धि पर पड़ता है। अत: विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि को विकसित किया जाए। इसके द्वारा सामाजिक गुण विकसित होते हैं। विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि को विकसित किए जाने से सहयोग, मित्रता, सहानुभूति जैसे गुण विकसित होंगे। इसके विकास से शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है। अत: कक्षा का वातावरण ऐसा हो कि विद्यार्थी मिलकर अपना कार्य स्वयं करें। विद्यार्थियों की भलाई और सकारात्मक शैक्षिक प्रतिफलों पर उचित ध्यान देने के लिए उनके सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करने की आवश्यकता है। शैक्षिक संस्थान ऐसे कार्यक्रम को शामिल करके शैक्षिक उपलब्धि को ऊँचा उठा सकते हैं, जो संवेगात्मक बुद्धि को विकसित करते हैं।

संदर्भ

अजीमिफर, एम. 2013. दी रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक अचीवमेंट अमंग ईरानियन स्टूडेंटस इन एलीमेंट्री स्कूल्स. *यूरोपियन जर्नल ऑफ नेचुरल एंड सोशल साइंस*. 2(2). पृष्ठ 216–222. स्क्रीपता एस.आर.ओ., चेक गणराज्य.

अनवर, एम. एवं एस. जनउल्लाह. 2019. इमोशनल इंटेलिजेंस, लाइब्रेरी यूज एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंटस. *जर्नल ऑफ दी ऑस्ट्रेलियन लाइब्रेरी एंड इनफार्मेशन एसोशिएशन*. 68(1). पृष्ठ 38–55. टेलर एण्ड फ्रांसिस, ऑस्ट्रेलिया.

अबकेनर, जे. 2015. दी रिलेशनशिप बिटवीन कोगनिशन इंटेलिजेंस विद एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ स्टूडेंटस इन सिक्स ग्रेड एट प्राइमरी विद्यालय. *जर्नल ऑफ इम्प्रूविंग एक्सेप्सनल चिल्ड्रेन*. 6(4). पृष्ठ 68–77.

अमिरियन, एस. एवं बेहशाद. 2016. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड सेल्फ-एफिकेसी ऑफ इरानियन टीचर्स: ए रिसर्च स्टडी ऑन यूनिवर्सिटी डिग्री एंड टीचिंग एक्सपीरियंस, *जर्नल ऑफ लैंग्वेज टीचिंग एंड रिसर्च*. 7(3). पृष्ठ 548–558. एकेडमी पब्लिकेशन. यूनाइटेड किंगडम.

अलकादरी, ए. एवं वेन. जाहो. 2021. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड स्टूडेंटस एकेडमिक अचीवमेंट. *प्रॉब्लम्स ऑफ एजुकेशन इन दी 21 सेंचुरी*. 79(3). पृष्ठ 360–380. वैज्ञानिक सोशलिस लिमिटेड, लिथुआनिया.

अल्जेब्रीन, एम. एवं एच. अल्सुवे. 2022. कोरिलेशन बिटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एंड अकादमिक अचीवमेंट अमंग अंडर ग्रेजुएट नर्सिंग स्टूडेंटस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अफ्रीका नर्सिंग साइंसेज*. 17. एल्सेवियर लिमिटेड, यूनाइटेड किंगडम.

अहमद, आई. एवं अन्य 2018. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ प्राइमरी स्कूल स्टूडेंटस इन मलेशिया. *सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटिज जर्नल*. 2(9). पृष्ठ 594–601. एमराल्ड पब्लिशिंग, यूनाइटेड किंगडम.

एरियस, जे. एवं अन्य 2020. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक मोटिवेशन इन प्राइमरी स्कूल स्टूडेंटस. *साइकोलोजिया रिफ्लेक्सो ए क्रिटिका*. पृष्ठ 1–9. स्प्रिंगर नेचर, लंदन.

ओकसज, वाई. एवं के. कोसकुन. 2019. इम्पैक्ट ऑफ इमोशनल लिटरेसी ट्रेंनिंग ऑन स्टूडेंटस इमोशनल इंटेलिजेंस परफॉरमेंस इन प्राइमरी स्कूल्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एसिसमेंट टूल इन एजुकेशन*. 6(1). पृष्ठ 36–47. इज्जेटकारा, तुर्की.

कान्त, आर. 2019. इमोशनल इंटेलिजेंस: ए स्टडी ऑन यूनिवर्सिटी स्टूडेंटस. *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड लर्निंग*. 13(4). पृष्ठ 441–446. केनेडियन सेंटर ऑफ साइंस एंड एजुकेशन, कनाडा.

कुदाह, ई. 2024. दी इन्फ्लुएंस ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस ओंन प्रोफेसरस परफॉरमेंस इन दी न्यू नार्मल. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिलीजन*. 5(4). पृष्ठ 287–296. ट्रांसनेशनल प्रेस लंदन, लंदन.

कुमार, ए. एवं एच. कंशल, 2018. किशोरावस्था के बालक-बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि पर माता-पिता के संबंधों का प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशनल रिसर्च*. 3(2). पृष्ठ 74–78. रॉयल पब्लिकेशन्स, रोहिणी, दिल्ली.

कुमार, ए. 2020. किशोरा अवस्था के बालक बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन हिंदी*. 2(3). पृष्ठ 6–9. रॉयल पब्लिकेशन्स, रोहिणी, दिल्ली.

आर.सी. और अन्य. 2020. इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ दी टीचर एंड एकेडमिक सैटिशफेकशन ऑफ दी यूनिवर्सिटी स्टूडेंटस. रेविस्ता *डिजिटल दी इन्वेस्टीगेशन दोसेंशिया यूनिवर्सिटेरिया*. 14(1). पृष्ठ 1–16. यूनिवर्सिडैड पेरूअना डेसिएन्सियास एप्लिकडास, पेरू.

चेंग, वाई. 2022. दी इफेक्ट ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंटस इमोशनल इंटेलिजेंस, लर्निंग मोटिवेशन एंड सेल्फ एफिकेशी ऑन देयर एकेडमिक अचीवमेंट-ऑनलाइन इंग्लिश कोर्सेज. 13. पृष्ठ 818–929. *फ्रंटियर इन साइकॉलॉजी*. फ्रंटियर्स मीडिया एसए, स्विट्ज़रलैंड.

चौहान, पी. एवं ए. टिन्ना. 2022. विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि एवं मानसिक तनाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन. *जर्नल ऑफ मॉडर्न मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप*. 12(2). पृष्ठ 54–59, राजस्थान.

जिरक, एम. एवं ई. अहमदियान. 2015. द रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एंड क्रिएटिव थिंकिंग विद एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ प्राइमरी विद्यालय स्टूडेंटस ऑफ फिफ्थ ग्रेड. *मेडिटरेनियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज*. 6(1). पृष्ठ 598–611. रिचमेन पब्लिशिंग लिमिटेड, लंदन.

जैनाबादी एवं अन्य. 2015. एक्सामिन द रिलेशनशिप ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एंड क्रिएटिविटी विद एकाडमिक अचीवमेंट ऑफ सेकंड पीरियड हाई स्कूल स्टूडेंटस. *वर्ल्ड जर्नल ऑफ न्यूरोसाइंस*. 5(4). पृष्ठ 275–281. साइंटिफिक रिसर्च पब्लिशिंग, अमेरिका.

जोशी, जी. 2020. एसोशियसन बिटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ एम.बी.ए. स्टूडेंटस. एल.वी. एस.आई.एम. वर्किंग पेपर सीरीज. लाल बहादुर शास्त्री इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, दिल्ली.

तडागी, एस. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020— बहुविषयक दृष्टिकोण और उसकी प्रासंगिकता. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक इनोवेटिव रिसर्च स्टडीज*. 8. पृष्ठ 18–28. स्काई इंस्टीट्यूट, लखनऊ.

तिवारी, जी. 2016. मीडिएटिंग रोल ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस इन अकादमिक अचीवमेंट ऑफ दी ग्रेजुएट स्टूडेंटस. दी *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी*. 4(1). पृष्ठ 1–18. रेड शाइन पब्लिकेशन, भारत.

दुले, एम. 2022. दी इफेक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस ओंन दी स्टूडेंटस लर्निंग आउटकम्स इन ए स्टेट हाई स्कूल. *अल-इसहला जर्नल पेंडीडिकेन*. 14(4). पृष्ठ 5293–5298. एस.टी.ए.आई. हबुलवथन दुरी बेंगकाइल्स, रियाऊ. इंडोनेशिया.

द्विवेदी, एस. एवं डी. चौहान. 2023. रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह-संबंध का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लिटरेसी एंड एजुकेशन*. 3(2). पृष्ठ 94–97., अकीनिक पब्लिकेशंस, भारत.

नामा, वि. एवं आर. सोलंकी. 2023. संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन. *इनोवेशन द रिसर्च कांसेप्ट*. 6 (1). सोशल रिसर्च फाउंडेशन, कानपुर.

नैयर, एस. एवं एस. साहू. 2021. बाल संप्रेक्षण गृह के अपराधी बालकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन. *गुरुकुल इंटरनेशनल मल्टी डीसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल*. 10(1). पृष्ठ 3–11. गुरुकुल इंटरनेशनल पब्लिशिंग सर्विसेस, पुणे.

नैयर, पी. एवं ए. करीम. 2022. फैक्टर डैट डिटरमाईन दी रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक परफॉरमेंस ऑफ प्राइवेट यूनिवर्सिटी लेक्चर्स इन मलेशिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च इन बिजनिस एंड विद्यालय साइंसेज*. 12(12). पृष्ठ 1664–1679. नॉलेज वर्कर्स पब्लिकेशंस, पाकिस्तान.

पुरकर एवं अन्य. 2017. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के आयाम ‘शैक्षिक सफलता की आवश्यकता पर आत्म संप्रत्यय संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव. *जर्नल ऑफ रवि शंकर यूनिवर्सिटी*. 23(1). पृष्ठ 37–46. पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर.

फकोरिहाजियार, एच. एवं अन्य 2014. सर्वेइंग रिलेशनशिप ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एंड मेंटल हेल्थ विद अचीवमेंट मोटिवेशन इन यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स, प्रोसीडिंग्स ऑफ इंटरनेशनल अकेडमिक कॉफ्रेंस, *इंटरनेशनल इंस्टीटयूट ऑफ सोशल एंड इकनोमिक साइंसेज*. पृष्ठ 412. *इस्तांबुल, तुर्की*. https://econpapers.repec.org/paper/sekiacpro/0100077.

बैनेट, बी. एवं ओ. रीमावी. 2014. दी इम्पैक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस ऑन एकेडमिक अचीवमेंट अ केस स्टडी ऑफ अल कुदस यूनिवर्सिटी स्टूडेंटस. *इंटरनेशनल ह्यूमैनिटिज स्टडीज*. 1(2). पृष्ठ 12–41. फिलिस्तीन.

मलिक, एफ. एवं एस. शुजा. 2013. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक अचीवमेंट: इम्प्लिकेशंस फॉर चिल्ड्रन परफॉरमेंस इन विद्यालय. *जर्नल ऑफ दी इण्डियन एकेडमिक ऑफ एप्लाइड साइकोलोजी*. 39(1). पृष्ठ 51–59. इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, भारत.

मुंतजिम, एम. एवं एम. मुशाहिद. 2019. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडेमिक अचीवमेंट अमंग सेकंडरी विद्यालय स्टूडेंटस. *जर्नल ऑफ ईमरजिंग टेक्नोलॉजीस एंड इनोवैटिव रिसर्च*. 6(5). पृष्ठ 210–216. आई.जे.पब्लिकेशनक, हैदराबाद.

मोहजन, एम. एवं अन्य. 2013. द इनफ्लूएन्श ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट. *प्रोसेडिया सोशल एंड वीहेवियरल साइंसेज*. (90). पृष्ठ 303–312. एल्सेवियर, एम्सटरडम.

रानी, एस. 2022. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन. *इंटरनेशनल एडवांस जर्नल ऑफ इंजिनियरिंग, साइंस एंड मैनेजमेंट*. 17(1). पृष्ठ 71–74. श्रद्धा एजुकेशन एकेडमी, राजस्थान.

रुपन्दे, जी. 2015. दी इम्पैक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस ऑन स्टूडेंट लर्निंग. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजरियल स्टडीज एंड रिसर्च*. 3(9). पृष्ठ 133–136. ए.आर.सी. पब्लिकेशन्स, भारत.

लैसियानो, एल. एवं ए. कर्सी. 2014. इन्क्रीमेंटल वैलिडिटी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एबिलिटी इन प्रीडिक्टिंग अकादमिक अचीवमेंट. द *अमेरिकन जर्नल ऑफ सायकोलोजी*. 127(4). पृष्ठ 447–461. यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस प्रेस, संयुक्त राज्य अमेरिका.

शर्मा, ए. एवं एस. चर्तुवेदी. 2017. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि पर सांवेगिक बुद्धिमत्ता के प्रभाव का अध्ययन करना. *ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस*. 6(12). वर्ल्ड वाइड जर्नल्स, अहमदाबाद.

शर्मा, वाई. एवं वाई. सिंह. 2023. संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन: बरेली जिले के पाँच ब्लाकों के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स*. 11(6). पृष्ठ 731–743. आई.जे. पब्लिकेशन्स, भारत.

शर्मा, आर. एवं अन्य 2013. रिव्यू: स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन सायकोलोजी*. 1(1). पृष्ठ 28–35.

शहजाद, एस. एवं अन्य 2020. रिलेशनशिप बिटवीन यूनिवर्सिटी टीचर्स' इमोशनल इंटेलिजेंस एंड देयर टीचिंग इफेक्टिवनेस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन, क्रिएटिविटी एंड चेंज*. 14(8). पृष्ठ 568–585. ऑस्ट्रेलिया.

सडरोलिस, एल. एवं अन्य 2014. इमोशनल इंटेलिजेंस इफेक्ट ऑफ अकादमिक परफारमेन्स, एन इंपीरिकल स्टडी ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स. *जर्नल ऑफ टूरिज्म रिसर्च, वॉल्यूम - 15(1), 151-162,* टूरिज्म रिसर्च इंस्टीटयूट (ए.डी.ई.टी.टी.ई.), एथेंस.

सनदोवल, आई. एवं टी. रिको. 2020. कैन एकेडमिक अचीवमेंट इन प्राइमरी स्कूल स्टूडेंटस वी इंप्रूव्ड थ्रू टीचर ट्रेनिंग ऑन इमोशनल इंटेलिजेंस एज ए की एकेडमिक कॉम्पिटेंसी. *फ्रंटियर इन साइकोलोजी*. 10(2976). पृष्ठ 1–8. फ्रंटीयर मीडिया एस.ए., स्विट्जरलैंड.

सिंह, टी. एवं अन्य 2014. रोल ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस इन अकादमिक अचीवमेन्ट: एन. इम्पेरिकल स्टडी ऑन इंजीनियरिंग स्टूडेन्टस. *स्ट्रेटजिक एप्रोचिस फॉर ह्यूमन कैपिटल मैनेजमेंट एंण्ड डेवलपमेंट इन ए टरबुलेंट इकोनॉमी*,. पृष्ठ 255–263. आई.जी.आई. ग्लोबल, यू.एस.

सिंह, पी. एवं एम. पासवान. 2022. संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लिटरेसी एंड एजुकेशन*. 2(2). पृष्ठ 107–110. अकीनिक पब्लिकेशंस, भारत.

सिंह, एन. एवं ए. श्रीवास्तव. 2021. सतना जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*. 7(6). पृष्ठ 175–178. अकीनिक पब्लिकेशंस. रोहिणी, भारत.

सिंह. आर. एवं एस. गोस्वामी. 2024. माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉटस*. 12(3). पृष्ठ 332–339. आई.जे.पब्लिकेशंस, भारत.

सोलंकी, एस. 2019. ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एंड प्रोफेशनल परफॉरमेंस ऑफ अस्सिस्टेंट प्रोफेसर टीचिंग एट टीचर ट्रेनिंग इंस्टिटयूटस. *जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च*. 14(1). पृष्ठ 21–24. रामा-ईश चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली.

हसन, एम. 2017. इम्पैक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस ऑन टीचर परफॉर्मेंस इन हायर एजुकेशन इंस्टिटयूसंस ऑफ पाकिस्तान. *फ्यूचर बिजनेस जर्नल*. 3(2). पृष्ठ 87–9. स्प्रिंगर, संयुक्त राज्य अमेरिका.

हालिमी, एफ. एवं अन्य 2020. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक अचीवमेंट इन हायर एजुकेशन. *जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च इन हायर एजुकेशन*. वॉल्यूम-13(2) पृष्ठ 1–19. एमराल्ड ग्रुप पब्लिशिंग लिमिटेड, यूनाइटेड किंगडम.

हैरट, ए. एवं एच. मुलैटा. 2024. इमोशनल इंटेलिजेंस एज ए. प्रीडिक्टर फॉर एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ चिल्ड्रन: एविडेंस फ्रॉम प्राइमरी विद्यालयस ऑफ साउथर्न इथोपिया. *सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटिज ओपन*. 9(1). पृष्ठ 1–8. एल्सेवियर लिमिटेड, यूनाइटेड किंगडम.

शर्मा. एस. एवं एस. सराफ. 2024. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी समायोजन क्षमता एवं व्यवसायिक तनाव पर प्रभाव का अध्ययन. *शोध कोष जर्नल ऑफ विज़ुअल एंड परफॉर्मेंस आर्टस*. 5(4). पृष्ठ 1420–1426. ग्रंथालय प्रकाशन एवं प्रिंटर, इंदौर.

दिवेदी, एस. एवं के. आर. यादव. 2024. जनपद भदोही के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नोवल रिसर्च एंड डेवलेपमेंट*. 9(8). पृष्ठ 440–448. आई.जे. पब्लिकेशंस, भारत.

सलिफु, आई. एवं सी.पी. मित्ताह. 2024. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस: हाउ डज दी रिलेशनशिप वर्क अमंग प्री. सर्विस टीचर इन घाना. *कोजेंट एजुकेशन जर्नल*. 11(1). पृष्ठ 1–14. टेलर एंड फ्रांसिस लिमिटेड, यूनाइटेड किंगडम.

भारती वि. एवं एम. पारीक. 2025. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. *शोध समागम*. 8(2). पृष्ठ 407–412. अदिति पब्लिकेशन, रायपुर.

उसान, पी. एवं अन्य 2023. इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस: ए सिस्टेमैटिक रिव्यू एंड मेटा एनालिसिस.थिंकिंग स्किल एंड क्रिएटिविटी. 49(2023). पृष्ठ 1–14. एल्सेवियर, नीदरलैड.

मणिकंदन बी. एवं आर. शशिकुमार. 2017. ए स्टडी ऑन इमोशनल इंटेलिजेंस. *इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च ट्रेंडस एंड इनोवेशन*. 2(5). पृष्ठ 199–204. आई.जे. पब्लिकेशन्स. भारत.

पुस्तक समीक्षा

चूड़ी बाजार में लड़की

पुस्तक (2022)	–	*चूड़ी बाजार में लड़की*
लेखक	–	कृष्ण कुमार
प्रकाशक	–	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दरियागंज, दिल्ली
मूल्य	–	₹ 199

मुदित त्रिपाठी*
सुमित गंगवार**

कृष्ण कुमार की पुस्तक 'चूड़ी बाजार में लड़की' का स्त्री विमर्श की कड़ी में एक बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। पाँच अध्यायों को समाहित करती हुई यह पुस्तक लड़कियों के मानस पर डाली जाने वाली सामाजिक छाप की जाँच करती है। वैसे तो छोटी लड़की को बच्ची कहने का चलन है, पर उसके दैनिक जीवन की छानबीन ही यह बता सकती है कि लड़कियों के संदर्भ में 'बचपन' शब्द की व्यंजनाएँ क्या हैं। लेखक ने इन व्यंजनाओं की टोह लेने के लिए दो परिधियाँ चुनी हैं। पहली परिधि घर के संदर्भ में परिवार तथा बिरादरी द्वारा किए जाने वाले समाजीकरण की है। इस परिधि की जाँच संस्कृति के उन कठोर नियमों पर केंद्रित है, जिनके प्रयोग से लड़की को समाज द्वारा स्वीकृत औरत के साँचे में ढाला जाता है। दूसरी परिधि शिक्षा की है, जहाँ विद्यालय तथा राज्य अपने सीमित दृष्टिकोण एवं संकुचित सोच के भीतर ही लड़की को एक शिक्षित नागरिक बनाते हैं। बाल्यावस्था में लड़कियों का संघर्ष इन दो परिधियों के भीतर ही जारी रहता है। यह पुस्तक इसी संघर्ष की वैचारिक चेतना को प्रस्तुत करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विद्यालयी पाठ्यचर्या तथा पाठ्यपुस्तकों में जेंडर समानता, महिलाओं के अधिकार और जेंडर भेदभाव के विरुद्ध जागरूक करने वाले विषय शामिल किए जाने की संस्तुति की है। इससे बच्चों में प्रारंभ से ही समानता की भावना विकसित होगी। इसके अतिरिक्त सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों में जेंडर रूढ़िवादिता से संबंधित उदाहरणों अथवा उपाख्यानों को भी संशोधित करके परिवर्तित किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ग्रामीण क्षेत्रों, अनुसूचित जाति या जनजाति,

**एम. एड. विद्यार्थी*, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007
***सहायक आचार्य*, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007

आर्थिक रूप से कमजोर, दिव्यांग तथा ट्रांसजेंडर स्त्रियों पर विशेष ध्यान दिया गया। इस शिक्षा नीति की एक मुख्य विशेषता है कि यह सभी जेंडर के लिए समान अधिकार तथा सम्मान सुनिश्चित करने की दिशा में एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने पर बल देती है। इसका उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना है, जहाँ शिक्षा के माध्यम से जेंडर समानता का विस्तार हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के अंतर्गत जेंडर असमानता को दूर करने के लिए विशेष सुझावों को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, 'जेंडर इन्क्लूजन फंड' की स्थापना का सुझाव दिया गया है, जिसका उद्देश्य लड़कियों तथा ट्रांसजेंडर बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, उन्हें विद्यालयों में आवश्यक सुविधाएँ, जैसे— शौचालय, सैनिटरी सुविधाएँ, सुरक्षा आदि उपलब्ध करवाना है। (अनुभाग, 6.8) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयों तथा महाविद्यालयों को जेंडर-संवेदनशील (जेंडर सेंसिटिव) बनाना अनिवार्य किया गया है। इसमें यौन शोषण, भेदभाव तथा असुरक्षा के विरुद्ध कठोर नियम लागू करने की बात की गई है। अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को जेंडर संवेदनशीलता पर प्रशिक्षण देने की बात भी की गई है। (अनुभाग, 6.13)

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के अनुसार बच्चों में जेंडर समानता की समझ पूर्व-प्राथमिक स्तर से ही विकसित की जानी चाहिए। खेलों, कहानियों तथा संवादों के माध्यम से बच्चों में सम्मान, समानता एवं गैर-भेदभाव के भाव जागृत किए जाएँ। पाठ्यचर्या की इस रूपरेखा में जेंडर मुद्दों को बहुत ही गंभीरता और समावेशी दृष्टिकोण से लिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा को समानता, समावेशन और सामाजिक न्याय का माध्यम बनाना है। यह दस्तावेज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप विकसित किया गया है, जो कि इसमें बताए गए जेंडर समानता के लक्ष्यों को पाठ्यचर्या तथा शिक्षण में साकार रूप देने का प्रयास करता है। जेंडर समानता को शिक्षा का मूल आधार माना गया है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य जेंडर रूढ़ियों को समाप्त करना है, छात्र-छात्राओं को समान अवसर, आत्म-सम्मान तथा उन्हें निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए एवं पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण विधियों व कक्षा वातावरण में जेंडर संवेदनशीलता होनी चाहिए।

'चूड़ी बाजार में लड़की' पुस्तक का बीज लेखक की फिरोजाबाद यात्रा के दौरान पड़ा, जो उन्होंने (अध्यापक के रूप में) अपनी कुछ छात्राओं के साथ की थी। इस शैक्षिक भ्रमण का उद्देश्य फिरोजाबाद के चूड़ी उद्योग में कार्यरत बच्चों के जीवन का निरीक्षण करना था, चूँकि यह एक सोद्देश्य यात्रा थी, इसलिए इसकी उपलब्धियों को जानना भी आवश्यक था। इस दल ने फिरोजाबाद से वापसी के समय यह काम आगरा में ताजमहल के चबूतरे पर बैठकर किया। इस यात्रा के दौरान और उसके तदुपरांत इस ताज की कथा का विस्तृत विवरण इस पुस्तक में दिया गया है, जिससे पता चलता है कि वे कौन-से उद्दीपक थे, जिन्होंने लेखक को इस बात की प्रेरणा दी कि वे लड़कियों के मानस का अन्वेषण करें। ताजमहल के प्रांगण में बैठकर अपनी छात्राओं से उनके अनुभवों के विश्लेषण को सुनते हुए उन्हें जो अनुभव हुआ, वही इस पुस्तक की रचना के निमित्त कारण बना।

लेखक ने इस विचारात्मक पुस्तक को पाँच अध्यायों में बाँटकर नारी जीवन से जुड़े विविध आयामों को दर्शाने का प्रयास किया है तथा जीवन के हर पड़ाव से गुजरते हुए नारी की संवेदनाओं तथा अस्मिताओं को केंद्र में लाने का प्रयास किया है। 'समता का मिथक, भिन्नता के ध्रुव', 'अंतर्जगत और चारों ओर', 'चूड़ी का चिह्नशास्त्र', 'ताज की कक्षा', 'अभिमन्यु की शिक्षा', इन कुल पाँच अध्यायों में अत्यंत सक्षम, संप्रेषणशील तथा आत्मीय भाषा में भारतीय स्त्री के जीवन की उन आरंभिक रूढ़ियों का विवेचन किया गया है, जब वह समाज, शिक्षा तथा संस्कृति की सूक्ष्म निगरानी में स्त्री बनने की दिशा में अग्रसर हो रही होती है।

पहला अध्याय— 'समता का मिथक, भिन्नता के ध्रुव'

इस अध्याय में लेखक ने स्त्री-पुरुष समानता के प्रश्नों को उठाया गया है। समान परिवेश में जन्म लेने के बावजूद भी लड़की तथा लड़के में भिन्नता या भेदभाव उत्पन्न कर हमारा समाज हमेशा से ही संकीर्ण मानसिकता का परिचायक बना हुआ है। लड़के तथा लड़कियाँ एक ही परिवेश में जन्म अवश्य लेते हैं, परंतु उनकी परवरिश एक समान नहीं होती। जहाँ एक ओर लड़कों को बचपन से ही अपनी प्रतिभा दिखाने के स्वतंत्र तथा समान अवसर दिए जाते हैं, वहीं माता-पिता लड़की को जन्म के बाद विरासत के रूप में पालते हैं। जैसे-जैसे वह बड़ी होती है, उसे माता-पिता द्वारा नैतिक तथा सांस्कृतिक शिक्षा दी जाती है। साथ ही, उसे अपनी शारीरिक बनावट के प्रति भी सदैव सजग रहना पड़ता है। उसे हमेशा अपने दैहिक आकर्षण के प्रति डर बना रहता है, चाहे वह त्वचा का रंग हो, चेतना के स्तर पर अंग विभाजन या किसी भी प्रकार की दैहिक विकृति से संबंधित हो, ताकि विवाह के पश्चात कोई उसमें कमी न ढूँढ़ सके, इसलिए उसे स्वयं को सँभालकर रखना है, जिससे उसमें कहीं कोई विकार न आने पाए। इस क्रम में ऐसा प्रतीत होता है कि लड़की दुकान में पड़ी ऐसी वस्तु हो। इस संबंध में प्रभा खेतान का कथन है— "पितृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था पर आधारित पुरुष प्रधान संस्थाओं और आर्थिक सामाजिक जगत में उनके वर्चस्व के कारण स्त्री अधीनस्थ स्थिति में रहने को बाध्य है। सत्ता की भाषा तथा संस्कृति के पुरुष प्रधान होने से पुरुष के यौन अनुभवों को ही प्रधान माना गया है। ऐसी सत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री का अपनी यौनिकता के प्रति वस्तुपरक दृष्टिकोण होना स्वाभाविक है। चूँकि संस्कृति उसे एक 'चीज' मानती है। अत: वह खुद भी अपनी देह को वस्तु में ही आँकती है, उसे सजाती-सँवारती है। यहाँ तक कि बचपन से वृद्धावस्था तक वह दूसरों की नजर से ही स्वयं को तोलने की इतनी आदी हो जाती है कि देह ही उसके कर्तव्य की इतिश्री हो जाती है। (खेतान, 2003)"

खेल-कूद, पढ़ाई-लिखाई या सामाजिक गतिविधि के हर क्षेत्र में स्त्रियों के साथ सामान्य स्थिति नहीं होती है। एक लड़की के जन्म के साथ-साथ यह नियम भी लागू कर दिया जाता है कि उसे बचपन में पिता, विवाह के बाद पति और वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहना चाहिए, यही उसकी नियति है। एक लड़की को बचपन से ही सामाजिक मर्यादा, नैतिक

शिक्षा, गृह कार्यों के प्रति जिम्मेदार बनाया जाता है। इस तरह उसका संपूर्ण जीवन बंधनयुक्त घेरे से घिरा रहता है। (जॉन, 2009) इस संबंध में सिमोन बोउआर ब्रोवायर बूवा का कथन है — "स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बना दी जाती है। (खेतान, 2002)"

सार्वजनिक मानस का यह संज्ञान लड़कियों तक सैकड़ों रास्तों से पहुँचता है, जैसे— परिवार तथा उससे जुड़ी भूमिकाएँ, कुछ धर्म और उससे संबंधित रीति-रिवाजों, त्योहारों तथा प्रतीकों से और कुछ पड़ोस व वृहत्तर परिवेश में प्रदर्शित व्यवहारों से। लड़की के शरीर तथा जीवन की केंद्रीयता यौन-व्यवहार में स्थापित हो जाना, बचपन से स्त्री पुरुष के बीच अंतर का एक शक्तिशाली आयाम है। यौन-व्यवहार की प्रतीक-रचना एक व्यापक प्रक्रिया है, जो स्त्री के जगत को डर तथा असुरक्षा से घिरी हुई आकृति देती है।

स्त्री तथा पुरुष के परिवेश के प्रभाव का विश्लेषण करें, तो परिवेश दोनों का एक ही होता है, परंतु उनका यथार्थ अलग-अलग होता है। समानता की अधिकारी होते हुए भी स्त्री को समानता की श्रेणी में नहीं रखा जाता है। (आर्य, मेनन एवं लोकनीता, 2012) स्वयं लेखक का कथन है— "स्त्री और पुरुष अथवा लड़की या लड़का एक-दूसरे से भिन्न हैं, किंतु समता के अधिकारी हैं।"

आज भारत विकास की दौड़ में आगे तो जरूर बढ़ रहा है, पर इतिहास की दृष्टि से देखें, तो ऐसा लगता है जैसे भारत पीछे की ओर लौटकर अपनी नई अस्मिता तथा भौतिक समृद्धि के लिए सज्जा-सामग्री तलाश रहा है। बाल-विवाह कम हुआ है, पर उसमें निहित मानसिक दृष्टि कमजोर नहीं पड़ी है। वह दृष्टि अब नए साधनों से प्राप्त वैधता लेकर लौट रही है। लेखक ने 'बालिका वधू' जैसे धारावाहिकों, 'तीसरी कसम', 'पाकीजा', 'दामिनी', 'दबंग' जैसी फिल्मों के गानों व बेतुके रूपकों और सौंदर्य प्रसाधनों का व्यापार करने वाली कंपनियों के विज्ञापनों आदि उदाहरणों के माध्यम से यह बताने की कोशिश की है कि किस प्रकार टेलीविजन और इंटरनेट स्त्री के जीवन-चक्र को परंपरा में स्वीकृत विषमता के साँचे में नए गहनों, घर के साजो-सामान तथा ससुराल के नियंत्रण की वैधता के साथ मनोरंजन के माध्यम के रूप में देख रहे हैं। इस तरह बाल-विवाह, काले-गोरे का भेद जैसी अनेक अवैध परंपराओं को मनोरंजक शैली में प्रस्तुत करके इन्हें बढ़ावा दिया जा रहा है।

स्त्री-पुरुष पारस्परिकता के संबंध में लेखक कहता है— "जेंडर की भिन्नता स्त्री-पुरुष के अदम्य आकर्षण का आधार है और इसी पर उनकी पारस्परिकता का विचार टिका है। पारस्परिकता महज एक पूरकता नहीं है, जिसे यांत्रिक ढंग से विभाजित युग्म की समग्रता का नाम दे दिया जाए।" पारस्परिकता का अर्थ साझापन भी है। पुरुष के मानस में स्त्रीभाव और स्त्री के मानस में पुरुषभाव (जिसे कार्ल युंग ने क्रमशः 'एनिमा' और 'एनिमस' की संज्ञा दी है।) की उपस्थिति की संकल्पना उनके बीच सहभाव व संवाद को संभव बनाती है। (युंग, 1994) आज के सामाजिक परिवेश में पारस्परिकता की इस अवधारणा को कमजोर बनाने तथा स्त्री-पुरुष भिन्नताओं का ध्रुवीकरण करने वाले तत्व हावी होते दिखाई देते हैं।

दूसरा अध्याय— 'अंतर्जगत और चारों ओर'

समीक्षाकर्ता का व्यक्तिगत विचार है कि लेखक ने इस अध्याय का उपर्युक्त शीर्षक संभवतः सुधीर काकर (1982) द्वारा लिखित पुस्तक 'द इनर वर्ड—ए साइको-एनालिटिकल स्टडी ऑफ चाइल्डहुड एंड सोसाइटी इन इंडिया' से प्रभावित होकर दिया है। इस अध्याय में स्त्री के अंतर्मन, उसकी यौनिकता और सौंदर्य प्रसाधनों की आड़ में किस प्रकार पूँजीवादी सभ्यता और सामंतवादी व्यवस्था हावी होने का प्रयास कर रही है इत्यादि का विश्लेषण किया गया है। इन साधनों के छलावे का अभीष्ट यही है कि स्त्री मुक्ति तथा बंधन की कैद में जकड़ी रहे तथा 'बंधन में मुक्ति की आस' और 'मुक्ति में बंधन की आशंका' से ग्रस्त रहे। लेखक का मानना है कि त्याग शब्द स्वयं में एक व्यापक शब्द है, जिसका पुरुषों के लिए जो आशय है, वह महिलाओं के लिए कदापि नहीं है। पुरुषों के लिए त्याग किसी अभीष्ट की अभ्यर्थना में जीवन के किसी एक अथवा एकाधिक चरणों से संबंधित है, जबकि स्त्रियों के लिए यह उनकी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा है। बचपन से ही उन्हें अपनी इच्छाओं पर अंकुश लगाना सिखाया जाता है। विवाह के बाद पत्नी होने का अर्थ है पति की इच्छाओं को सर्वोपरि मानकर चलना अर्थात समर्पण तथा त्याग की प्रतिमूर्ति बने रहना। समर्पण शब्द का स्त्री के संदर्भ में यह अर्थ है कि घर-परिवार की सेवा के लिए प्रतिक्षण तत्पर रहना, इसके अतिरिक्त अपनी देह को पुरुष के उपभोग के लिए प्रस्तुत करना। इस प्रकार इस अध्याय में जीवन के हर पड़ाव से गुजरते हुए नारी की संवेदनाओं और अस्मिताओं को केंद्र में लाने का प्रयास किया गया है।

दूसरों पर निर्भरता को स्त्री की प्रकृति और उसके जीवन की सामान्य कहानी बताने के पीछे लड़की के लालन-पालन का एक समूचा शास्त्र है। लड़की के जन्म तथा शैशव से इस शास्त्र का क्रियान्वयन प्रारंभ हो जाता है। इस लंबी प्रक्रिया का एक बड़ा हिस्सा इंद्रियों के स्वाभाविक विकास को नियंत्रण में रखना है। ऐंद्रिक नियंत्रण की इस प्रवृत्ति का जेंडर विश्लेषण करने पर हमें समाज की पुरुष-केंद्रित संरचना का घिनौना चेहरा दिखाई देता है। ऐंद्रिक सुख को स्त्री के संदर्भ में अधिकतर नकारात्मक जगह ही मिली है। उसे नैतिक कर्म से प्राप्त होने वाले सुख की प्राप्ति से संतुष्ट होने की सलाह दी गई है। नैतिक सुख की संकल्पना ऐन्द्रिक सुख के त्याग से जुड़ी है और त्याग को स्त्री व पुरुष के संदर्भ में अलग तरह से संकल्पित किया गया है। लेखक का मन्तव्य है— "पुरुष के संदर्भ में त्याग अव्वल तो विशिष्टता का संकेत है अर्थात हर पुरुष से त्याग की अपेक्षा नहीं की जाती। त्याग का जो सीमित संस्करण साधारण पुरुष के लिए विधेय है, ऐन्द्रिक सुखों का उपभोग कर चुकने के बाद नियत है। उधर स्त्री के लिए त्याग एक दैनिक विचार है, बचपन से बुढ़ापे तक हर अवस्था में अपेक्षित है और किसी बड़े या विशिष्ट प्रकरण की जगह छोटी-छोटी चीजों में उसकी संभावना छिपी है, जिसे स्त्री को पहचानकर वरण करना है।"

लेखक अकेलेपन का बोध कराने वाले आख्यानों में द्रौपदी के चीरहरण, सीता के अपहरण तथा अग्नि-परीक्षण को शामिल करते हुए द्रौपदी और सीता जैसे महाचरित्रों के जरिए चरितार्थ होने वाले स्त्री के अकेलेपन को ईश्वर की सृष्टि या प्रकृति का न्याय नहीं मानता है तथा कहता है कि

यह अकेलापन समाज की देन है, जो कि बाहरी नहीं वरन भीतरी होता है।

तीसरा अध्याय— 'चूड़ी का चिह्नशास्त्र'

इस अध्याय में लेखक ने चूड़ी के साथ-साथ अन्य सभी गहनों की व्यंजनाओं तथा उनकी अर्थवत्ता का विश्लेषण किया है। गहने, जो स्त्री की शोभा को बढ़ाते हैं, उनका एक पहलू यह भी है कि वे औपनिवेशिक और सामंती बेड़ियों में स्त्रियों के जकड़न के भी परिचायक हैं। हर गहने का अपना-अपना प्रतीक है। चूड़ी समेत सभी गहने स्त्री को लगातार अनुभव होते रहते हैं। वजन तथा आकार में कुछ गहने इतने भारी एवं बड़े होते हैं कि उन्हें पहनकर कष्ट होना स्वाभाविक है। चूड़ी कलाई में पहनी जाती है, जो कलाई की शोभा में वृद्धि करती है तथा काँच की बनी होने के कारण स्वयं नाजुक होते हुए औरत के अस्तित्व को नाजुक बनाने वाले विराट सामाजिक कार्यक्रम से इस कदर जुड़ जाती है कि इस कार्यक्रम को अंजाम देने वाले एक हथियार के रूप में हम उसे नहीं देख पाते। वह अपनी प्रतीक भूमिका के पीछे छिप जाती है। इसके अलावा कान, नाक और पैर में पहने जाने वाले अन्य गहने भी इसी सामंती मानसिकता के पोषक हैं, जो स्त्री को उसकी सौंदर्य-सामग्री होने का भुलावा देकर अपने लिए एक 'सुरक्षित स्थिति' का निर्माण कर रही होती है। इस तरह से ये सारी पीड़ा चूड़ी की चमक तथा खनक में खो-सी जाती है।

इस अध्याय के माध्यम से हम समझते हैं कि सामान्य-सी दिखने वाली चूड़ी तथा चूड़ी की दुकान के वृहत्तर एवं भयावह अर्थ क्या हैं। लेखक के शब्दों में "नाजुक होने के साथ-साथ चूड़ी रंगीन भी होती है। रंगों की विविधता तथा चमक देखकर चूड़ियों की दुकान में प्रवेश करने वाली नन्हीं बच्ची अपनी माँ या बहन के साथ एक ऐसे मायाजगत में प्रवेश करती है, जिससे अप्रभावित रहकर बाहर निकल आना लगभग असंभव है। चूड़ी की दुकान उन संस्थाओं में से एक है, जो भारत की औरतों की व्यक्तिगत जिंदगियों को पुरुष के कब्जे और काबू में रखने में संस्कृति की मदद करती है। बाजार का हिस्सा होने के नाते चूड़ी की दुकान एक अलग संस्था की तरह हमारी नजरों में आने से बच जाती है।"

लड़की के ससुराल जाने के अर्थ की मनोवैज्ञानिक विवेचना करते हुए लेखक ने इस अध्याय को विराम दिया है। हम सामान्य भाषा में कह देते हैं कि लड़की अपने ससुराल पहुँचकर वहीं की हो जाती है, पर इस छोटे-से वाक्य का भावार्थ हम एक लड़की के लिए भी नहीं समझ सकते, उन करोड़ों लड़कियों की क्या बात की जाए, जो इस नाटकीय परिवर्तन से चुपचाप गुजरती हैं। घर यदि एक संबंध-जगत न होकर सिर्फ ईंट-गारे का ढाँचा हो, तो भी एक घर को अपना मानना एक शाम अचानक छोड़कर किसी दूसरे घर में रम जाना, पीड़ा को कब्र में छिपा देने जैसा होगा। चूड़ी की चमक तथा खनक में यही पीड़ा छिपी होती है।

चौथा अध्याय— 'ताज की कक्षा'

इस अध्याय में लेखक ने आगरा भ्रमण के दौरान कुछ रोचक व विचारोत्तेजक घटनाओं एवं जानकारियों को शब्दांकित किया है। वैसे तो आगरा भ्रमण का मुख्य उद्देश्य ताजमहल का सौंदर्यावलोकन होता है, किंतु इस भ्रमण के दौरान वस्तुस्थिति कुछ और थी। लेखक तथा उनकी छात्राओं के मानस में एक दिन पहले की फिरोजाबाद की उद्वेलित करने वाली

कई असामान्य स्थितियों के बीज अंकुरित हो रहे थे। इस विचारोत्तेजक अंतर्द्वंद्व का निस्तारण अपरिहार्य था, इसलिए लेखक ने ताज के चबूतरे पर ही अपनी छात्राओं की कक्षा आयोजित की एवं छात्राओं से फिरोजाबाद की यात्रा के अनुभव बताने को कहा। "ताज की कक्षा में की जा रही टिप्पणियाँ सुनते-सुनते आखिर मेरी संज्ञान-क्षमता उस किनारे पर पहुँची जहाँ मुझे यकायक लगा कि फिरोजाबाद यात्रा से उपजे सवालों में इन लड़कियों के लिए एक ऐसी धार या चुभन है, जिसे मैं देख भर सकता हूँ, स्वयं अनुभव नहीं कर सकता।" और जो चीज उनके एहसास के दायरे से इतनी बाहर थी, वह थी— एक लड़की का उसकी कलाइयों में पड़ी चूड़ियों से संबंध। उन खूबसूरत चूड़ियों के निर्माण में, जिन्हें हर लड़की बचपन से ही पहनना चाहने लगती है, इतने मासूम बच्चों का इतना भयावह इस्तेमाल होता है, यह तथ्य उन लड़कियों को चूड़ियों के मोह से दूर ले जा रहा था। यही वह बिंदु था, जहाँ से लेखक ने उस मानस को समझने की शुरुआत की जिसकी दैहिक उपस्थिति को हम स्त्री के रूप में चीन्हते हैं। चूड़ी उद्योग में छह-सात वर्ष की उम्र के बच्चों के सफेद बाल देखकर कुछ लड़कियों ने आजीवन चूड़ी के बहिष्कार का इरादा जताया। लेखक ने लिखा है— "इस विकल्प को भावी जीवन में अपना सकने की शक्ति के विचार से जुड़ा निश्चय इन लड़कियों के मन में उपजा ही इस कारण था, क्योंकि वे लड़कियाँ थीं।" इन लड़कियों के साथ चूड़ी का तथा उन सभी स्त्रियोचित उपादानों का यह रिश्ता कैसे बनता है, जिनके माध्यम से हम एक व्यक्ति को स्त्री के रूप में भिन्न ढंग से पहचानते हैं और इस रिश्ते को बनाने में भारतीय समाज, संस्कृति एवं शिक्षा-तंत्र की क्या भूमिका होती है, यही जानना और बताना इस अध्याय का उद्देश्य है।

फिरोजाबाद मुख्यत: चूड़ी उद्योग का केंद्र है। इस चूड़ी उद्योग में कई गरीब लड़कियाँ शामिल हैं, जिन्हें अँधेरे कमरे में चूड़ी के दो किनारे मोमबत्ती की लौ में रखकर जोड़ने के लिए हजार चूड़ियों पर बीस रुपए मिलते हैं। इस तरह कई गरीब बच्चे चूड़ी उद्योग में किस प्रकार संलग्न हैं, इसे इस अध्याय में वर्णित किया गया है। जिस उम्र में बच्चों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, उस उम्र में उन्हें पेट भरने के लिए श्रम करना पड़ता है। इस तरह व्यवस्था के तहत बच्चे गरीबी की मार झेलते हुए चूड़ी उद्योग में संलग्न हैं। इस प्रकार इस अध्याय के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था, शिक्षा-व्यवस्था, बाल-श्रम, गरीबी और बेरोजगारी का अत्यंत त्रासद रूप दिखाई पड़ता है।

भारत में गरीबी तथा शोषण के दायरों को स्त्री के दमन से अलग करके देखने का प्रयत्न एक प्रकार का छल है एवं समय की बर्बादी भी है। यह सही है कि स्त्रियाँ भी पृथक आर्थिक वर्गों में अलग जीवन जीती हैं, किंतु एक सीमा से अधिक इस वर्गीयता पर बल देंगे, तो हम भारतीय स्त्रियों के जीवन की सांस्कृतिक एकता का संज्ञान करने में असमर्थ हो जाएँगे। हमारे घोर विषमतावादी समाज में जाति, वर्ग तथा जेंडरभाव परस्पर मिलकर ही उस हाहाकार की रचना करते हैं, जो लड़कियों के अंतर्मन में लगातार गूँजता है, पर जिसे कभी व्यक्त न करना उनके जीवन में शांति की शर्त बन जाता है।

पाँचवाँ अध्याय— 'अभिमन्यु की शिक्षा'

पुस्तक के इस अंतिम अध्याय में लेखक ने घर, परिवार, समाज, शिक्षा, देह, मानस, सौंदर्य, ऐंद्रिय

निग्रह आदि के चक्रव्यूह में फँसी लड़की को 'अभिमन्यु' की संज्ञा दी है। लेखक ने अपने जीवन से संघर्ष करती बच्चियों और बड़ी होती लड़कियों की समस्याओं पर बल दिया है। बचपन में लड़की को अपनी पढ़ाई के साथ-साथ परिवार की भी जिम्मेदारी सँभालनी पड़ती है। उसका पूरा जीवन-क्रम संघर्षों से भरा रहता है। बड़ी होती लड़की के लिए उसके हाव-भाव, चरित्र तथा सामाजिक क्रियाकलापों पर नजर रखी जाती है। शिक्षा लड़कियों के लिए एक प्रकार की जमानत का काम करती है। (जोशी, 2015) "शिक्षा के नाम पर उन्हें क्या पढ़ने को मिलता है अथवा बौद्धिक कौशलों के विकास के कितने और कौन-से अवसर मिलते हैं, ये सवाल उनके लिए विशेष महत्व नहीं रखते। महत्व इस बात का रह जाता है कि पढ़ाई के नाम पर वे जीवन के उस चरण को कुछ वर्ष स्थगित रख लेंगी, जिसमें उनकी वह प्राकृतिक चाह, जो मनुष्य होने के नाते उनके मन में स्वायत्त सोच और व्यवहार के साथ जीने की इच्छा पैदा करती है, बेमानी हो जाएगी।" (कुमार, 2022) आशय यह है कि शिक्षा लड़कियों के लिए ज्ञान या चेतना का जरिया कम, मुख्यतः एक अवधि है, जिसमें उनके दमित आत्म की लौ कुछ वर्ष इस पूर्वज्ञान के साथ जल लेती है कि उसे विवाह में निहित हस्तांतरण के तहत एक आक्रामक फूँक के बल से बुझ जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इस अध्याय में लेखक ने आज के भारत में लड़कियों की शिक्षा का विश्लेषण करने के लिए उन तीन पेशों को संदर्भ बनाना उपयोगी समझा है, जिनका आधुनिकता के निर्माण में योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। ये तीन पेशे हैं— डॉक्टरी, इंजीनियरी और वकालत। इन पेशों के जरिए जीवन तथा मरण संबंधी मान्यताएँ, प्रकृति एवं मनुष्य के संबंधों की संरचना और समाज के ढाँचे में व्यक्ति के अधिकारों की अवधारणा का विकास हुआ है। लेखक ने इन तीनों पेशों में लड़कियों की संख्या में कमी के कारणों पर बड़ी ही सूक्ष्मता व गहनता से बड़ा ही विशद विश्लेषण किया है।

"शिक्षा स्त्री की अकेली राह की पाथेय बने, यह तभी संभव है, जब हम शिक्षा की परिकल्पना और तैयारी स्त्री के अभिमन्युत्व को ध्यान में रखकर करें। लड़कियों की शिक्षा की पुनर्रचना हमें उस चक्रव्यूह को समझने के उद्देश्य से करनी होगी, जो जन्म के साथ ही हर बच्ची को घेर लेता है। जैसे-जैसे वह बड़ी होती है, चक्रव्यूह को देख पाने की क्षमता बढ़ती है और साथ ही, उसे मंजूर और आत्मसात करने की विवशता बढ़ती जाती है।" (कुमार, 2022) अभिमन्यु होने के कई अर्थ संभव हैं, पर जिस अर्थ से लड़की के अस्तित्व की व्यंजना सबसे स्पष्ट रूप में व्यक्त होती है, यह एक दुर्जेय संघर्ष से अकेले निपटने की नियति का है। अभिमन्यु का शौर्य उसे बचा नहीं सकता, जिता भी नहीं सकता, यह शुरू से तय था। लड़कियों के जीवन में भी उनके अकेलेपन की अनिवार्यता दैनिक से लेकर स्थायी किस्म के संघर्षों को समेटती है। अतः शिक्षा का पहला तथा सबसे बड़ा उद्देश्य हर लड़की को ऐसे बौद्धिक एवं भावनात्मक कौशल देना होगा, जो उसे अपने अकेलेपन को पहचानने और उसे स्पष्टतः देखकर उत्पन्न होने वाली घबराहट तथा आत्मदया पर

काबू पाने की क्षमता दे। दूसरा उद्देश्य भविष्य की संभावनाओं पर विश्वास उत्पन्न करना होगा— इस संभावना पर कि एक ऐसे संसार का जन्म संभव है, जिसमें लड़कियाँ सुरक्षित जी सकेंगी तथा जीवन की पूर्णता का अनुभव कर सकेंगी। आज की दुनिया को देखते हुए यह बात एक आस्था का विषय ही हो सकती है, जिसे पल्लवित करना शिक्षा का काम है।

उपसंहार

लेखक ने अपनी इस पुस्तक के माध्यम से समाज की प्रतिकूल परिस्थिति में बड़ी होती लड़की के संघर्षों को दिखाया है। बड़े होने के दौर में शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ सामाजिक वर्जनाओं का सामना करना, लोगों की तीखी नजरों को सहना, कटु टिप्पणियों को बर्दाश्त करना इत्यादि भी शामिल है। पितृसत्तात्मक, औपनिवेशिक, सामंती एवं जर्जर मान्यताओं के साथ समायोजित होती लड़की की एक अनदेखी छवि को दिखाया गया है। पुस्तक में स्त्री के अस्तित्व एवं उसकी अस्मिता को एक मानवीय इकाई के रूप में प्रतिष्ठित किए जाने पर बल दिया गया है। नारी की इसी बदलती छवि तथा सामंती बंधन को तोड़ने के मुक्ति-संघर्ष को भी दिखाया गया है।

व्यक्तिगत टिप्पणी

लेखक द्वारा इस पुस्तक में पर्याप्त उदाहरणों तथा व्यंजनाओं का प्रयोग किया गया है। पुस्तक की भाषा संयत, सुरुचिपूर्ण, बोधगम्य एवं सरल है। इसको पढ़कर पाठक अपने समाज के सांस्कृतिक क्रूरता के विषय में जानकर पीड़ादायी विस्मय से भर जाता है। पुरुष पाठक आत्मनिरीक्षण करता है कि क्या वह भी कभी जाने-अनजाने में स्त्रियों के प्रति इस सुनियोजित क्रूरता, अन्याय, अनीति तथा दमन का हिस्सा रहा है अथवा नहीं। वह स्त्रियों को लेकर अपनी दृष्टि, सोच व अभिवृत्ति को उल्लेखनीय रूप से परिवर्तित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पाठकों में स्त्री-विमर्श को एक नए कोण से देखे जाने की जिस वैचारिक क्रांति के बीज के प्रस्फुटन के उद्देश्य के साथ लेखक ने इस क्लासिक कृति की रचना की है, उसकी प्राप्ति में उसे अपेक्षित सफलता मिली है।

लेखक अपने सरोकारों तथा उनकी भाषागत अभिव्यक्ति में कितने सुलझे हुए रहे हैं और अपनी चिंता का विश्लेषण वे कितने सूक्ष्म रूप से करते हैं, यह पुस्तक इसकी परिचायक है। इस पुस्तक में प्रचलित स्त्री-विमर्श का कोई भी मान्य मुहावरा प्रयोग नहीं किया गया है, तथापि इसको पढ़ने के दौरान ही, हम (पुरुष) अपने आस-पास फैले स्त्री-जीवन को एक नई दृष्टि से देखने के लिए लगभग बाध्य हो जाते हैं। हमारे मन में यह कल्पना घर बनाने लगती है कि हम, हमारा समाज, हमारी संस्कृति, शिक्षा तथा पुरुष की सत्ता अगर चाहती तो यही स्त्री किसी और तरह की भी हो सकती थी।

इस पुस्तक को पढ़ने के उपरांत यह निश्चित रूप से अनुभव होता है कि अपनी अहंसत्ता तथा उसके आभा-वलय में सुरक्षित पुरुष सत्ता यदि अपने अस्तित्व में पिरोए गए नारी-भाव का आमूल दमन नहीं कर चुकी है और क्रूरता को उसने अपना आभूषण नहीं बना लिया है, तो वह अपने सबसे निकट मौजूद

'अभिमन्यु' जैसी किसी स्त्री की दयनीय दशा को देखकर अवश्य करुणार्द्र हो उठेगी। यह पुस्तक उसे बता चुकी होती है कि इस व्यक्ति को इसी रूप में जड़ीभूत करने की प्रक्रिया कितने अनजाने तरीके से, लेकिन कितने स्वार्थी इरादों से हमारे समाज में सतत चलती रहती है।

संदर्भ

आर्य, एस., एन. मेनन, एवं जे. लोकनीता, 2012. *नारीवादी राजनीति : संघर्ष एवं मुद्दे*. हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय. दिल्ली विश्वविद्यालय. नई दिल्ली.

काकर, एस. 1982. *द इनर वर्ड— ए साइको-एनालिटिकल स्टडी ऑफ चाइल्डहुड एंड सोसाइटी इन इंडिया* (सेकेंड एडिशन). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. न्यूयार्क.

कुमार, के. 2022. चूड़ी बाजार में लड़की. राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड. दिल्ली.

खेतान, पी. 2002. *स्त्री: उपेक्षिता*. हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड. नई दिल्ली.

——— 2003. *उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति-कामना की दस वार्ताएँ*. राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड. नई दिल्ली.

जॉन, एस. एम. 2009. *स्त्रियों की पराधीनता*. राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड. नई दिल्ली.

जोशी, जी. 2015. *भारत में स्त्री असमानता: एक विमर्श*. हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय. नई दिल्ली.

नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग. 2023. *नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति. 2020.* भारत सरकार, नई दिल्ली.

युंग, सी. 1994. *आर्केटाइपल डाइमेन्शंस ऑफ द साइकी*. शम्बाला पब्लिकेशंस, बॉस्टन.

About Our Journals and Magazine

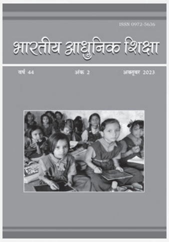

भारतीय आधुनिक शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका है। यह पत्रिका शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थी-शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा पर अपने मौलिक शैक्षिक विचार रखने का एक मंच प्रदान करती है।

Indian Educational Review

A bi-annual journal which publishes articles and researches on educational policies, practices, and values that are useful to practitioners in the contemporary times. The journal also provides a forum for teachers to share their experiences and concerns about schooling processes, curriculum, textbooks, teaching-learning, and assessment practices.

Journal of Indian Education

A quarterly periodical that provides a forum for teachers, teacher educators, educational administrators, and researchers through presentation of novel ideas, critical appraisals of contemporary educational problems, and views and experiences on improved educational practices. The journal reviews educational publications other than textbooks.

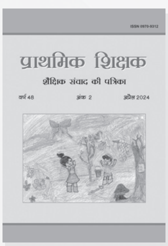

प्राथमिक शिक्षक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की इस त्रैमासिक पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है — शिक्षकों और संबद्ध प्रशासकों तक केंद्रीय सरकार की शिक्षा नीतियों से संबंधित जानकारियाँ पहुँचाना, उन्हें कक्षा में प्रयोग में लाई जा सकने वाली सार्थक और संबद्ध सामग्री प्रदान करना और देशभर के विभिन्न केंद्रों में चल रहे पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों आदि के बारे में समय-समय पर अवगत कराना। बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

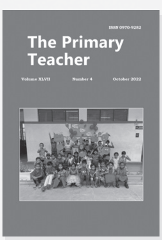

The Primary Teacher

A quarterly journal that carries articles and research papers on educational policies and practices, and material that is useful for practitioners in contemporary times. The journal also provides a forum to teachers and teacher educators to share their experiences and concerns about the schooling processes, curriculum, textbooks, teaching-learning, and assessment practices, particularly for the Foundational and Preparatory Stages.

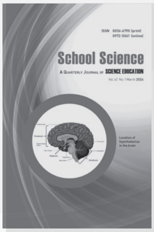

School Science

A peer-reviewed quarterly journal that aims to bring within easy reach of teachers and students the recent developments in the areas of science, mathematics, and environmental education by serving as a platform to disseminate research findings, sharing innovative pedagogies, present theoretical work, and report other advances towards improving teaching-learning in sciences.

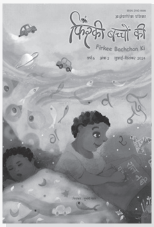

Firkee Bachchon Ki

A half-yearly bilingual magazine (Hindi and English) consisting of poems, prose, and activities which appeal to children. It aims to develop reading culture among children at the Foundational Stage.

Indian Journal of Educational Technology

A bi-annual online peer-reviewed journal that aims at covering disciplinary areas of educational technology (ET) for school and teacher education. It also promotes research on the integration of technology in school and teacher education. The PDF format of the journal is available for free access on the NCERT portal.

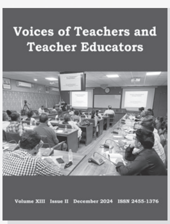

Voices of Teachers and Teacher Educators

A bi-annual peer-reviewed e-journal that highlights the vital role of teacher education in India. It aims to facilitate the dissemination of ideas of various stakeholders and make their engagement visible. It is a bilingual journal and the PDF format of the journal is available for free access on the NCERT portal.

Bank details for making payment through NEFT/RTGS

Account Number: 10137881342
Account Name: NCERT Publication Division
Bank Name: State Bank of India
Bank Location: NCERT, New Delhi
IFSC Code: SBIN0001690
GSTIN: 07AAOCS9078D2ZT
Pan No.: AAOCS9078D
E-mail: ncertpdaccts@gmail.com

Please take a printout of the proforma on the next page, fill and send it via post to the **Chief Business Manager, Publication Division, B.R. Ambedkar Khand, NCERT, New Delhi 110 016** or e-mail a scanned copy to **cbm.ncert@nic.in.**

The subscriber may intimate NCERT in case of change in address.

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

Phone No.: 011- 26592345

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
Sri Aurobindo Marg, New Delhi 110 016

Subscription Form for NCERT Journal(s)

S. No.	Name of Journals	ISSN	Single Copy (₹)	Annual (₹)	Triennial (₹)
1.	भारतीय आधुनिक शिक्षा (A **Quarterly** Journal of Education in ***Hindi***) Print Month: January, April, July, October	0972-5636	155 ☐	620 ☐	1860 ☐
2.	**Indian Educational Review** (A **Half-yearly** Research Journal in ***English***) Print Month: January, July	0019-4700 (Print) 0972-561X (Online)	175 ☐	350 ☐	1050 ☐
3.	**Journal of Indian Education** (A **Quarterly** Journal of Education in ***English***) Print Month: February, May, August, November	0377-0435 (Print) 0972-5628 (Online)	210 ☐	840 ☐	2520 ☐
4.	प्राथमिक शिक्षक (A **Quarterly** Journal for Primary Teachers in ***Hindi***) Print Month: January, April, July, October	0970-9312	230 ☐	920 ☐	2760 ☐
5.	**The Primary Teacher** (A **Quarterly** Journal for Primary Teachers in ***English***) Print Month: January, April, July, October	0970-9282	130 ☐	520 ☐	1560 ☐
6.	**School Science** (A **Quarterly** Journal for Secondary Schools in ***English***) Print Month: March, June, September, December	0036-679X (print) 0972-5061 (online)	205 ☐	820 ☐	2460 ☐
7.	फिरकी बच्चों की/**Firkee Bachchon Ki** (A **Bilingual** (**Hindi** and **English**) **Half Yearly** Magazine) Print Month: June, December	2582-8606	100 ☐	200 ☐	600 ☐

**Please tick the appropriate box(es) of the journal(s) you would like to subscribe.*

Particulars of Subscriber

Contact Person's Name: ______________________

Organisation: ______________________

____

Designation: ______________________

Mailing Address: ______________________

______________________ Pin Code/Digi PIN: ______________________

Phone (Office): ______________________ Phone (Residence): ______________________

E-mail: ______________________ Mobile: ______________________

Address for Dispatch: ______________________

____

NEFT/RTGS Remittance Details

Bank Name: ______________________ Ref./UTR: ______________________

Amount: ₹ ______________________

Dated: ______________________

रा.शै.अ.प्र.प. के कुछ अन्य प्रकाशन

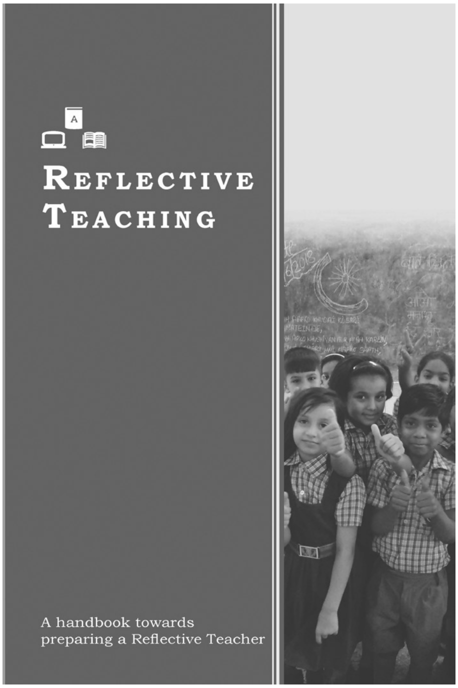

Reflective Teaching
₹ 100.00/ Page 186
Code: 13221
ISBN: 978-93-91444-25-9

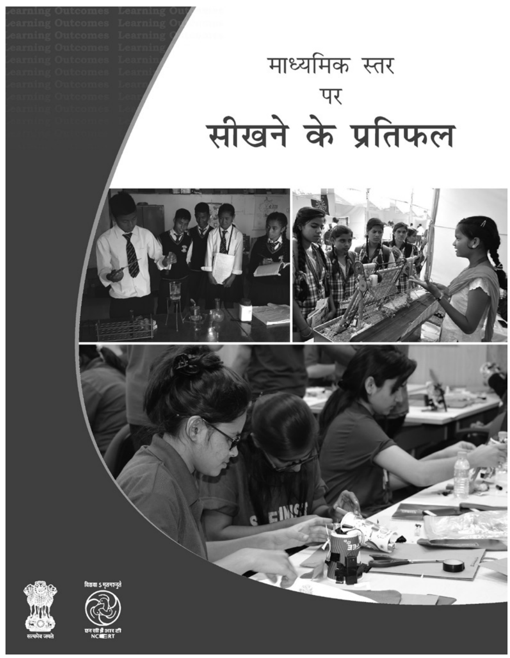

माध्यमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल
पृष्ठ 140
कोड— UN81
ISBN—978-93-5292-205-5

फार्म 4

(नियम 8 देखिए)

भारतीय आधुनिक शिक्षा

1.	प्रकाशन स्थान	नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	त्रैमासिक
3.	मुद्रक का नाम	रितेश अग्रवाल शगुन ऑफसेट प्रेस
	(क्या भारत का नागरिक है?)	हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	लागू नहीं होता
	पता	प्लॉट नं. 82, इकोटेक -12, ग्रेटर नोएडा 201 009 (उ.प्र.)
4.	प्रकाशक का नाम	अमिताभ कुमार
	(क्या भारत का नागरिक है?)	हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	लागू नहीं होता
	पता	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110 016
5.	अकादमिक मुख्य संपादक का नाम	विनोद कुमार शनवाल
	(क्या भारत का नागरिक है?)	हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	लागू नहीं होता
	पता	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110 016
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110 016 (शिक्षा मंत्रालय)

मैं, अमिताभ कुमार, *अध्यक्ष* (प्रभारी), प्रकाशन प्रभाग एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर लिखे विवरण सत्य हैं।

अमिताभ कुमार
अध्यक्ष (प्रभारी)
प्रकाशन प्रभाग

नोट

लेखकों के लिए दिशा-निर्देश

लेखक अपने मौलिक लेख/शोध पत्र की सॉफ्ट कॉपी (जहाँ तक संभव हो यूनीकोड फोंट में) के साथ निम्नलिखित पते या ई-मेल journals.ncert.dte@gmail.com पर भेजें —

अकादमिक संपादक
भारतीय आधुनिक शिक्षा
अध्यापक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016

लेखक ध्यान रखें कि लेख/शोध पत्र —

- सरल एवं व्यावहारिक भाषा में हो, जहाँ तक संभव हो लेख/शोध पत्र में व्यावहारिक चर्चा एवं दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों का समावेश करें।
- विषय-वस्तु लगभग 2500 से 3000 शब्दों या अधिक में हिंदी यूनीकोड फोंट में टंकित हो।
- विषय-वस्तु के साथ ही तालिका एवं ग्राफ हो तथा व्याख्या में तालिका में दिए गए तथ्यों एवं ग्राफ का उल्लेख हो।
- ग्राफ अलग से Excel File में भी भेजें।
- विषय-वस्तु में यदि चित्र हो, तो उनके स्थान पर खाली बॉक्स बनाकर चित्र संख्या लिखें एवं चित्र अलग से JPEG फॉर्मेट में भेजें, जिसका आकार कम-से-कम 300 dots per inch (dpi) हो।
- लेखक/शोधक अपना संक्षिप्त विवरण भी दें।
- संदर्भ वही लिखें जो लेख/शोत्र पत्र में आए हैं अर्थात् जिनका वर्णन लेख/शोध पत्र में किया गया है। संदर्भ लिखने का प्रारूप एन.सी.ई.आर.टी. के अनुसार हो, जैसे–

  पाल, हंसराज. 2006. *प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान*. हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

लेख —

- लेख की वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर आधारित सार्थक प्रस्तावना लिखें, जो आपके लेख के शीर्षक से संबंधित हो अर्थात् वर्तमान में शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा पर राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर जो नीतिगत परिवर्तन आए हैं, उनका समावेश करने का प्रयास करें।
- निष्कर्ष या समापन विशिष्ट होना चाहिए।

शोध पत्र —

- शोध पत्र की वर्तमान प्ररिप्रेक्ष्य पर आधारित सार्थक प्रस्तावना एवं औचित्य लिखें, जो आपके शोध पत्र के शीर्षक से संबंधित हो अर्थात् वर्तमान में शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा पर राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर जो नीतिगत परिवर्तन आए हैं एवं जो शोध कार्य हुए हों, उनका समावेश करने का प्रयास करें।
- न्यादर्श की पूरी जानकारी लिखें अर्थात् न्यादर्श की प्रकृति, न्यादर्श चयन का तरीका आदि।
- प्रदत्त संकलन के लिए उपयोग किए गए उपकरणों की संक्षिप्त जानकारी दें।
- प्रदत्त विश्लेषण में तथ्यों का गुणात्मक आधार बताते हुए विश्लेषण करें।
- उद्देश्यानुसार निष्कर्ष लिखें तथा समापन विशिष्ट होना चाहिए।
- शोध पत्र के शैक्षिक निहितार्थ भी लिखें अर्थात् आपके शोध निष्कर्षों से किन्हें लाभ हो सकता है।

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 के द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसेट प्रेस, प्लॉट नं. 82, इकोटेक -12, ग्रेटर नोएडा 201 009 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

रजि. नं. 42912/84

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित शैक्षिक पत्रिकाओं के मूल्य

Rates of National Council of Educational Research and Training Journals and magazine

पत्रिका	प्रति कॉपी शुल्क	वार्षिक सदस्यता शुल्क	त्रैवार्षिक सदस्यता शुल्क
School Science (Quarterly) A Journal for Secondary Schools *स्कूल साइंस (त्रैमासिक)* *माध्यमिक विद्यालयों के लिए पत्रिका*	₹ 205.00	₹ 820.00	₹ 2,460.00
Indian Educational Review A Half-yearly Research Journal *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (अर्द्ध वार्षिक शोध पत्रिका)*	₹ 175.00	₹ 350.00	₹ 1,050.00
Journal of Indian Education (Quarterly) *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (त्रैमासिक)*	₹ 210.00	₹ 840.00	₹ 2,520.00
भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक) *Bharatiya Aadhunik Shiksha (Quarterly)*	₹ 155.00	₹ 620.00	₹ 1,860.00
Primary Teacher (Quarterly) *प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)*	₹ 130.00	₹ 520.00	₹ 1,560.00
प्राथमिक शिक्षक (त्रैमासिक) *Prathmik Shikshak (Quarterly)*	₹ 230.00	₹ 920.00	₹ 2,760.00
फिरकी बच्चों की (अर्द्ध वार्षिक पत्रिका) *Firkee Bachchon Ki (Half-yearly)*	₹ 100.00	₹ 200.00	₹ 600.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पत्रिकाओं की सदस्यता लेने हेतु शिक्षाविदों, संस्थानों, शोधार्थियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए पते पर संपर्क करें।

मुख्य प्रबंधक अधिकारी, प्रकाशन प्रभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016
ई-मेल – gg_cbm@rediffmail.com, फोन – 011-26562708, फैक्स – 011-26851070

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 के द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसेट प्रेस, प्लॉट नं. 82, इकोटेक -12, ग्रेटर नोएडा 201 009 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING